



मुनि श्री बल्लभ विजयजी जन्म स० १९२६.

जन्म-बन्नादा, बालि-श्रीमाली, पीना-दीपवन्, माना-उज्जवाड
दीप्ता, स ४४ म गधणपुर

श्रीम मन्नेपायाय श्री लक्ष्मीविजयजीके गिण्य - श्री हवनिचयजीक गिण्य

पञ्जाम इनके उपदेशमे पुस्तक भटार आत्मानन्द जन पत्रिका, आत्मानन्द जन पाठशाला,
पाइ फन् आदिकी स्थापना हुइ

पञ्जायदेश तीर्थस्तयनावली आदिके कर्ता
इस ग्रंथके सशोधन कर्ता



॥ उपाध्याय श्री मोहनलालजी महाराज
श्री बीकानेर जैन लक्ष्मी मोहन पाठशाळा ॥
अधिपति

॥ ❀ ॥ श्री ॥ ❀ ॥

॥ खरतरगद्य, तपगद्यादि सर्व जैन उपयोगी ॥

॥ ❀ ॥ पांच प्रतिक्रमण ॥ ❀ ॥

मूल सूत्र जूदी जूदी विधिसहित

॥ कलकत्ता ॥ ॥ बीकानेर ॥ ॥ मुम्बई ॥

॥ ❀ ॥ जैन लक्ष्मीमोहन शाखा तरफसें ॥ ❀ ॥

पुज्य महोपाध्याय श्री लक्ष्मीप्रधानजी गणीकेशिष्य

उपाध्याय श्री मोहनलालगणीनें

संशोधन करके

मुंबईमें

'ज्ञानसागर' मुद्रायंत्रमें उपाके

प्रकाशित कियाहै

बीर स । २७३०

विक्रम स । १९६०

सं । १९०३

कलकत्ता

जैनलक्ष्मी

विद्याशाळा.

॥ पांच प्रतिक्रमण सूचीपत्र ॥

सुंवाई

मोहन

पाठ शाळा.

॥❀॥ संख्या ॥❀॥	॥❀॥ प्रकरण ॥❀॥	॥ पत्रांक ॥
॥ १ ॥	लँकार वर्णान पंच परमेष्ठी नमस्कार ।	१
॥ २ ॥	गुरु नमस्कार, दीर्घाहारे सरस्वती नमस्कार ।	२
॥ ३ ॥	स्वर, व्यंजन, युक्तादि वर्ण माला ।	३
॥ ५ ॥	शिख्यावाक्य दूहा. (वाक्यमंजरी)	४
॥ ६ ॥	संधिसुत्र, सिद्धोवर्णः समाम्नायः ।	५
॥ ७ ॥	हितोपदेश, अर्द्रतो जगवंत० अर्थसहित	६
॥ ८ ॥	त्रिंशुं जिन नाम ।	८
॥ ९ ॥	श्री नवकार मंत्र, जयजसामि० प्रतिक्रमण सर्वपाठ	९
॥ १० ॥	माधु प्रतिक्रमण, चत्तारि मंगल सूत्र ।	२०
॥ ११ ॥	श्रावक प्रतिक्रमण, बंदित्तू सूत्र ।	२५
॥ १२ ॥	नवकारस्यादि १० पञ्चखाण ।	२८
॥ १३ ॥	दश पञ्चखाण आगारार्थः ।	३३
॥ १४ ॥	दश पञ्चखाण आगारसंख्या गाथा	३६
॥ १५ ॥	सुहपत्ती पमिलेहण, सुत्र अर्थ साचो सरदहुं ।	३६
॥ १६ ॥	थापनाचार्यकी १३ पमिलेहण बोल ।	३७
॥ १७ ॥	आलोयण, आजूणा चौपहर रात्री तथा दिवश ।	३७
॥ १८ ॥	पक्खी, चौमाशी, संवत्तरी, वृद्ध अतीचार ।	३८
॥ १९ ॥	जयतिहुण वत्तीशी, श्रीअजय देवसूरी कृत ।	४९
॥ २० ॥	परकीसूत्र, तित्थंकरेय तित्थे ।	५३
॥ २१ ॥	पाहिक खामणा पाठ ।	६९

॥ २२ ॥ (साते स्मरण) अजियंजिय सव्वजयं ?	७१
॥ २३ ॥ उल्लासिकम नक्ख निग्गय पहा० २....	७४
॥ २४ ॥ नमिज्जण पणय सुरगण, स्तोत्र ३ ।	७५
॥ २५ ॥ तंजयत्त जए तित्थं० ॥ ४ ॥	७६
॥ २६ ॥ मय रहियं गुण गण रयण सायरं ५	७८
॥ २७ ॥ सिग्घ भवहरत्त विग्घं० स्तोत्र ६ ।	७९
॥ २८ ॥ उवसग्ग हरं पासं० स्तोत्र ७ ।....	७९
॥ २९ ॥ लघुशांति, शांतिं शांति निशांतं ।	८०
॥ ३० ॥ बन्नी शांति, भोभो भव्याः शृणुतवचनं० ।	८१
॥ ३१ ॥ दूजकीथुई, (महीमंणं पुन्नसोवन्नदेहं)	८४
॥ ३२ ॥ पंचमीस्तुतिः, (पंचानंतकसु प्रपंच०) ।	८४
॥ ३३ ॥ अष्टमी स्तुतिः, (चञ्चवीशे जिनवर०) ।	८५
॥ ३४ ॥ सर्वदिन स्तुतिः (मूरति मनमोहन०) ।	८५
॥ ३५ ॥ दशमीस्तुतिः, (अश्वशेन नरेसर०) ।	८५
॥ ३६ ॥ एकादशी स्तुतिः, (अरस्य प्रब्रज्या०) ।	८६
॥ ३७ ॥ चतुर्दशी स्तुतिः, (द्रें द्रें कि धपमप०) ।	८६
॥ ३८ ॥ चैत्री पूनम स्तुतिः, (सेजुंजगिरिनमियै०) ।....	८७
॥ ३९ ॥ नवपदजंजी स्तुतिः, (निरुपम सुखदायक०) ।	८७
॥ ४० ॥ पर्युषणापर्व स्तुतिः, (बलि बलि हृंघ्याजं०) ।	८८

॥ ❀ ॥ तिथोंकास्तवन (सरू) ॥ ❀ ॥

॥ ४१ ॥ सुगण सनेही साजन श्रीसीमंधरस्वामि ।	८८
॥ ४२ ॥ श्री शंखेश्वर पास जिनेसर जेटियै) ।..	८९
॥ ४३ ॥ सफल संसार अवतार ए हुं गिणुं ।	९०
॥ ४४ ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय (पंचमी वृद्धस्तवन) ।	९१
॥ ४५ ॥ पांचमि तप तुमे करो रे प्राणी ।	९३
॥ ४६ ॥ अमल कमल जिम धवल विराजे ।	९३
॥ ४७ ॥ पास जिनेसर जगति जोए ।	९४

॥ ४८ ॥ समवसरण वैशा भगवत ।
॥ ४९ ॥ तुं मेरे मनमें प्रचु तुं मेरे दिलमें ।
॥ ५० ॥ सास्वता असाधता जिन विबनमस्कारस्तवन
॥ ५१ ॥ चूलो मन चकराकाईचये (सिझाय)	१२१
॥ ५२ ॥ कनवा फलते क्रोधना (क्रोध सिझाय	१२२
॥ ५३ ॥ जगचूमामणिचूल (पोसह सिझाय) ।	१२३
॥ ५४ ॥ निस्सिहीर (राई संथारा सिझाय) ।	१२४
॥ ❀ ॥ सामायक पोशादि श्राद्ध अहोरात्रकृत्य ॥ ❀ ॥			
॥ ५५ ॥ प्रजात सामायक विधिः ।	१२५
॥ ५६ ॥ राई प्रतिक्रमण विधिः ।	१२६
॥ ५७ ॥ सामायक पारण विधिः ।	१२७
॥ ५८ ॥ संध्याकाल सामायक ग्रहण विधिः ।	१२८
॥ ५९ ॥ देवशी प्रतिक्रमण विधिः ।	१२९
॥ ६० ॥ अठ पुहरी पोसह विधिः ।	१३०
॥ ६१ ॥ पांचशक्रस्तवे देव वंदन विधिः ।	१३१
॥ ६२ ॥ पचरकाण पारण विधिः ।	१३२
॥ ६३ ॥ राई संथारा विधिः ।	१३३
॥ ६४ ॥ पोसह पारण विधि ।	१३४
॥ ६५ ॥ दिवश चौपुहरी पोसह विधिः ।	१३५
॥ ६६ ॥ रात्रि संबंधी चौपुहरी पोसह विधिः ।	१३६
॥ ६७ ॥ चौबीशर४ थंमिजा पहिलेहण पाठ ।	१३७
॥ ६८ ॥ चौबीश थंमिजा कहां २ करना ।	१३८
॥ ६९ ॥ परकी (चौमाशी) संबन्धरी प्रतिक्रमण विधिः	१३९
॥ ७० ॥ राई प्रतिक्रमणमें उम्माशीतप चिंतवन विधिः	१४०
॥ ७१ ॥ साधू श्रावक (प्रतिक्रमणहेतू) अर्थ (कारण)	१४१
॥ ७२ ॥ श्री सीमंधर जिन चैत्यवंदन (जयत्रिचुवन) ।	१४२
॥ ७३ ॥ श्री सीमंधर जिनस्तवन (पूर्व विदेह पुख लावती) ।	१४३

॥ ७४ ॥ श्री सीमंधर साहिबा वीनतनी० स्तवन	१२९
॥ ७५ ॥ जय जय नाजिनरिंदनंद । सिद्ध गिरी चैत्य०	१३०
॥ ७६ ॥ आज पुंरु गिरि जेटिया (सिद्धगिरीस्त०	१३०
॥ ७७ ॥ सिद्धाचल गिरी जेट्यारे) धन्यजागहमारा	..	१३०
॥ ७८ ॥ श्री आदिजिन चैत्यवंदन	१३१
॥ ७९ ॥ श्री शांतिजिन दोचैत्यवंदन	१३१
॥ ८० ॥ श्री नेमिजिन चैत्यवंदन	.. .	१३१
॥ ८४ ॥ श्री पार्श्वजिनका चार चैत्यवंदनजूदा २	१३२
॥ ८६ ॥ श्री महावीरस्वामीका दोचैत्यवंदन	१३३

॥ ❀ ॥ अथ तपगठ विशेष विधिसंग्रह ॥ ❀ ॥

॥ ८७ ॥ पंचेदियसंवरणो० स्थापनागाथा ।	१३३
॥ ८९ ॥ इत्तामि खमासमणो (इठकारसुहराई) ।	१३३
॥ ९० ॥ सामाडय वयजुत्तो । सामायक पारवागाथा ।	...	१३३
॥ ९१ ॥ जगचिंतामणिचैत्यवंदन (जयवीरराय)	.. .	१३४
॥ ९४ ॥ कवाणकंदं (विशाल लोचन) (जगवानहं)	...	१३५
॥ ९५ ॥ अतीचारकी आठगाथा ।	. . .	१३५
॥ ९८ ॥ सुत्रदेवता (खेत्रदेवता) (स्तुति) (अट्टाईजेसु) ।		१३६
॥ १०० ॥ वरकनक (सागरचंदो०) पोसहपारवागाथा	. .	१३६
॥ १०१ ॥ जरहेसर बाहुवली, अजैकुमारो० सिंजाय ।	१३७
॥ १०२ ॥ मन्ह जिणाणं आणं, सिंजाय ।	..	१३७
॥ १०३ ॥ सकल तीर्थ वंरुं कर जोरु० ।	. ..	१३८
॥ १०४ ॥ सकलार्हव प्रतिष्ठान, (पख्खी वृद्ध स्तोत्र) ।	..	१३९
॥ १०५ ॥ शांतिकरं शांतिजिणं० (शांतिकरस्तोत्र) ।	१४०
॥ १०६ ॥ सीमंधर परमात्मा० (श्री सीमंधर जगधणी) ।	..	१४१
॥ १०९ ॥ श्री परमात्मा० (विमल कमल) श्रीशेठुंजय चैत्य० ।		१४२
॥ १११ ॥ सुणो चंडाजी सीमंधर० (आंखनियै रेमें आज) ।	..	१४३
॥ ११३ ॥ सेठुंजा द्वितीय स्तवन (पंचतीर्थ स्तुति) ।	...	१४४

॥ ❀ ॥ पांच प्रतिक्रमण सूचीपत्र. ॥ ❀ ॥

॥ ११४ ॥ पिनुजीर रै नाम जपुंदिनरातियां, नेमराजुज सि० ।	१४५
॥ ११५ ॥ आजुखो तूदाने सांधोको नहीरे, सि० ।	१४५
॥ ११७ ॥ पंचतीर्थ चै० (२ तिथको चै०) ।	१४६
॥ १२० ॥ पंचमी अष्टमी (तथा) एकादशीको चैत्यवंदन ।	१४७
॥ १२२ ॥ श्रीसीमंधर जिनकी (२) दोय स्तुति ।	१४८
॥ १२३ ॥ दिन सकल मनोहर०, बीजकीस्तुति ।	१४९
॥ १२४ ॥ श्रावण सुदि दिन०, पंचमी स्तुति ।	१४९
॥ १२५ ॥ मंगल आठकरी०, (८) अष्टमी स्तुति ।	१५०
॥ १२६ ॥ एकादशी अतिरुवनी । (११) एकादशी स्तुति ।	१५०
॥ १२७ ॥ स्नातस्या प्रतिमस्य मेरु शिखरे०, (१४) स्तुति ।	१५१
॥ १२८ ॥ श्रीशत्रुंजय गिरि तीरथ सार, स्तुति ।	१५१
॥ १२९ ॥ महाविदेह क्षेत्रे सीमंधर स्वामी०, स्तुति ।	१५२
॥ १३० ॥ सत्तर जेदी जिनपूजा०, पर्युषण स्तुति ।	१५२
॥ १३१ ॥ सामायक लेवा विधि ।	१५२
॥ १३२ ॥ सामायक पारवा विधि ।	१५३
॥ १३३ ॥ संध्याकाल, देवशी प्रतिक्रमण विधि १ ।	१५३
॥ १३४ ॥ प्रजातकाले रात्रीप्रतिक्रमण विधि २ ।	१५५
॥ १३५ ॥ पक्खी प्रतिक्रमण विधि ३ ।	१५७
॥ १३७ ॥ चौमाशी ४ (संबद्धरी प्रतिक्रमण विधि५)	१५८
॥ १३८ ॥ पनिलेहण करवानो विधि ।	१५९
॥ १३९ ॥ पञ्चक्खाण पारवानो विधि ।	१५९
॥ १४० ॥ पांच शक्रस्तवे देववंदन विधि ।	१७३
॥ १४१ ॥ (२४) जिनचै०, थुई, स्त०, (चौमाशी देव वंदन)	१७३

॥ ❀ ॥ अथ षंड स्तवन संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ १४२ ॥ सेवो वीरने चित्तमां० । महावीर षंड ।	१५९
॥ १४३ ॥ वंजित पूर विविधपरें, श्री नवकार षंड ।	१६१
॥ १४४ ॥ सुखकारण ऋवियण०, श्री नवकारषंड ।	१६२

॥ १४५ ॥ ॐ परमेष्ठी नमस्कारं, आत्मरक्षाबंद ।	१६३
॥ १४६ ॥ सेवो पास शंखेसरो ० । श्री पार्श्व जिन बंद । ...	१६३
॥ १४७ ॥ वीरजिनेसर केरोसीस, श्री गौतम बंद ।	१६४
॥ १४८ ॥ आदिनाथ आदौ ०, शोलसतीनो बंद ।	१६४
॥ १४९ ॥ शेठुंजरुषत्र समो सरया (तीर्थमाला स्त०) ।	१६५
॥ १५० ॥ श्री राणपुरो रजियामणोरे राणपुरास्त० ।	१६६
॥ १५१ ॥ पुख्लवइ विजये जयोरे ० सीमंधर स्त० ।	१६७
॥ १५२ ॥ माता त्रिशला कूलावे पुत्र पालणे (हालरियो) ।	१६७
॥ १५३ ॥ निंदा मकरजो कोईनी पारकीरे (सि०) । ...	१६९

॥ ❀ ॥ आनंद घनजी कृत स्तवन संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ १५५ ॥ रूपत्र जिनेसर प्रीतम० (पंथनो निहारुं बीजा ०) ।	१६९
॥ १५७ ॥ संत्रव देवत धुर० (अत्रिनंदन जिन०) ।	१७०
॥ १५९ ॥ सुमति चरणकज० (शीतल जिनपति ०) । ...	१७१
॥ १६० ॥ मनडुं किमही न वाजैहो कुंधुजिन म० ।	१७२
॥ १६१ ॥ शाश्वता अशाश्वता जिन वृद्ध चैत्य० । ...	१८६
॥ १६२ ॥ शाश्वता २ जिनस्तुति (तथा) विधि । ...	१८८
॥ १६४ ॥ श्रीसिद्धगिरी स्त० (श्री गिरनारजी स्तवन) ।	१८९
॥ १६५ ॥ आवो २ नें राज श्री अर्बुद गिरवर जइयै । ...	१९०
॥ १६७ ॥ श्री अष्टापदजी स्त० (समेत सिखरजी स्त०) ।	१९३
॥ १६८ ॥ तोरणथी रथ फेरियोरे लाल (बारमाशो) ।	१९२
॥ १६९ ॥ (अजीमगंजे) श्रीनेमी नूतन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवन ।	१९३
॥ १७० ॥ जीया चतुर सुजाण, नवपदके गुणगायरे ।	१९४
॥ १७१ ॥ सद्गुणया देवलोके रविशशि, ० । शाश्वता ० ।	१९४
॥ १७२ ॥ अपठराकरती आरती जिन आगे । ...	१९५
॥ १७३ ॥ मंदर जाणेंकी पूजन करनेकी विधि:	१९६

॥ * ॥ श्री जैन लक्ष्मीमोहनशाला ॥ * ॥

॥*॥ विज्ञापन ॥*॥

॥ * ॥ सर्व गुणग्राही धर्मरागी जैन सज्जनोंकों मालुम रहै कि में बहुत श्री संघके आग्रहसे यह पांच प्रतिक्रमण पुस्तक ठपाके प्रसिद्धकराहै । इसमें खरतरगह तपगहका पांच प्रतिक्रमण परकीसूत्रादि संपूर्ण मूलपाठ जूदी जूदी विधि सहितहै । (यद्यपि) (रत्नसागर मोहनगुणमाला प्रथमत्राग) अजी फेर मुम्बईमें तीसरी बेर ठपाके प्रसिद्ध कियाहै (उसमें) सर्व जैन साधु श्रावकोंके बारे मास, रात दिन, उपियोगमें आवै । ऐसा प्रोसा, पणि कमणा स्तवन, सिआयां, लावण्यां, पूजायां, आदि संपूर्ण रत्नवस्तुवोंका संग्रह किया हुवाहै (जिसमें) साढी आठसै पृष्ठ बीसहजार आसरे ग्रंथहै ॥ सर्वोपयोगी पुस्तक होनेसे, थोने दिनोंमें दोयसे अठाईसे पुस्तक खपचूकीहै (तथापि) यह बनी पुस्तकहै ॥ पांचरुपिया लगताहे मा० म० १२ आ० (इससेती) सर्व पाठशालादिकमें प्रथम शिक्षक पाठकगणके पढने पढानेमें यह ठोटी पुस्तक बहुत उपियोगीहै निठरावल सवारुपियो माक । आ० ४

३ (रत्नसागर दूसरात्राग) ठपा हुवा तैयारहै इसमें जैन लोकका जन्म विवाहादि भरण पर्यंत शोलै संस्कारादि सर्व जैनाचार (तथा) जैनइति हासहै ॥ निठरावल

रु० । २ । ८ । मा० ४

४ श्री जिनपूजा संग्रह—(इसमें) विद्वज्जन पाठकोंकी बनाई जई अनेक राग रागणी सहित बारेमाश अठाई महौहवादिकमें अवश्य कराने लायक रसीली पूजावोंका संग्रह कियाहै

रु० आ० मा०

११ । ४ । ४

५ स्तवन संग्रह (इसमें) ऊरती प्रजाके मनलायक रागरागणी सहित लक्ष्मी मोहन स्तवनमालाहै

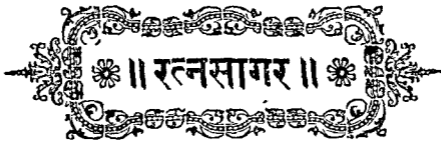
१० । ४ । ॥

६ राई देवशी प्रतिक्रमण खरतर

१० । ६ । ॥

इत्यादि बहुतसी जैनपुस्तकपण ऊपर लिख्ये तीनों ठिकाणोंमें मिलतीहै जिसकों जहां सुबीता होय उहां लेकर अपना प्रथममंगलधर्म कृत्य करै करावै अनुमोदना करै (तो) अह्य लक्ष्मी संपदा सुक्तिपदप्राप्तहोय श्री रस्तु ॥*॥

॥श्रीः॥



(वा)

॥ मोहनगुणमाला ॥



॥ प्रथम जग ॥



॥ मंगलाचरण ॥

॥ उँकारं बिंदुसंयुक्तं । नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।
कामदं मोहदं चैव । उँकाराय नमोनमः ॥ १ ॥

॥ उँकार उदार अगम्म अपार संसारमें सार पदारथ नामी,
सिद्धि समृद्धि सरूप अनूपन्नयो सबही सिरभूप सुधामी,
मंत्रमें यंत्रमें ग्रंथके पंथमें जाकुं कियो धुर अंतरजामी, पंचही-
इष्ट वसे परमिष्ट सदा ध्रमसी करे ताहि सिलामी ॥ १ ॥
नमो निसदीश नमायकेशीश जपो जगदीश सही सुखदाता,
जाकी जगत्तमें कीरति जागत जगतिहे सब ईति असाता
इंद नरिंद दिणिंद फुणिंद नमाएहें वृंद आनंद विधाता, धोरी
धरम्मको धीर धराधर ध्यान धरे ध्रमसी गुणध्याता ॥ २ ॥

॥ अथ गुरुमहमा नमस्कार ॥

॥ सर्वारिष्टप्रणाशाय । सर्वज्ञीष्टार्थ दायिने ।

सर्वलब्धि निधानाय । गौतमस्वामिने नमः ॥ १ ॥

॥ महिमा जिणकी महिमें महिमें जिन दीनो महा इक
ग्यान नगीनो, दूरजग्यो भ्रमसोतम देषत पूरजग्यो परकास
नवीनो, देतहि देतहि दूनोवधै अरु खायोहि खूटत नाहिं खजीनो,
ऐसो पसाय कियो गुरुराय तिणें ध्रमसी पदपंकज लीनो ॥ १ ॥

॥ अज्ञानतिमिरान्धानां । ज्ञानाञ्जनशलाकया ॥

नेत्रमुन्मीलितं येन ॥ तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ १ ॥

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्री सारदायै नमः ॥

॥ सरस्वती महाज्ञागे । बरदे कामरूपिणी । विश्वरूपी विशा-
लाक्षी । दे विद्या परमेश्वरी ॥ १ ॥ सरस्वती मया दृष्टा । बीणा-
पुस्तक धारिणी । हंसबाहन संयुक्ता । विद्या दान वरप्रदा ॥ २ ॥

॥ दीर्घाक्षरं सरस्वती नमस्कार ॥

सिद्धारूपी साची देवा सारे जीकी नीकी सेवा रागे आए
लागे पाए जागे मोटी माई है, चंगी रंगी बीणा वावे रागे सारे
रागे गावे हावे नावै सोनापावे ग्याता जाकुं गाई है, हंसी
कैसी चाली चाले पूजी बंदी पीडा टाले लीला सेती लालेपाले
सुद्धी बुद्धी दाई है, सोहेवानी नीकी बानी जाकुंग्यानी प्राणी
जानी ऐसी माता शाता दानी धर्मसीहे ध्याई है ॥ १ ॥

(स्वरवर्णः)

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ
ए ऐ ओ औ अं अः

(व्यञ्जनवर्णः)

क ख ग घ ङ। च छ ज झ ञ। ट ठ ड
ड ढ ण । त थ द ध न । प फ ब भ

म । य र ल व । श ष स ह । कः झः
क का कि की कु कू के कै को कौ कंकः

कृ गृ तृ दृ पृ मृ वृ शृ सृ ह

क्य ख्य ग्य ध्य च्य त्र्य ज्य व्य व्य एय त्य द्य
ध्य न्य प्य भ्य म्य र्य ल्य र्य प्य स्य ह्य क्ष्य

क्र ग्र व्र ज्र त्र द्र प्र भ्र म्र व्र श्र ख्र झ्र

कृ ग्व एव त्व द्व ध्व न्व म्व स्त्व श्व ष्व स्व क्र

श्र घ्न त्न प्र म्न श्र ण्ण स्न क्म ग्म ध्म च्म

एम झ्र न्म र्म ष्म स्म ह्र क्ष्म ॥ कर् खर् गर् घर्

अडक डख श्र उछ एट एठ एरु एठ एण न्त न्थ न्द

न्ध न्न म्म ष्क स्क स्ख श्व र्छ्र पृ छ्र स्त स्थ स्प

ण्प स्फ क्क क्त्व ग्ग च्च छ्र व्र ज्ञ्र ज्ञ्र दृ त्त

त्थ दृ डृ प्प ल्क ल्प ल्म ल्ल्र द्र्र द्र्र ग्द न्ध व्द

व्ध ल्म क्त स्र त्क त्प त्स ॥

न्त्य न्द्य न्ध्य न्य छ्य न्ह्य म्ब्य ल्क्य ष्ट्य व्द्य

द्व्य स्त्य स्ल्य न्ल्य क्त्य त्र्य स्त्व ।

त्क च्छ्र न्त्र न्द्र ष्र्र ख्र त्र प्र ज्व पृ त्व स्त्व

१ २ ३-४ ५ ६ ७ ८ ९ (१० १०० १००० १००००)

—॥ स्वस्तिश्री कृष्णावह्नस्था, ण्विन्द्रावहा स्युश्च स्वस्करा,
—पृथ्वीभृद्वल्गु श्रेष्ठात्म, त्रम्पास्ते हृद्यज्ञप्तिदा ॥ १ ॥

(शिक्षा वाक्य)

॥ गुरु शुश्रूषयाविद्या । पुष्कलेन धनेन वा । अथवा विद्यया विद्या । चतुर्थं
नैव कारणं ॥ १ ॥ विद्मन्त्वंच नृपत्वंच । नैव तुल्य कदाचन । स्वदेशे
पूज्यते राजा । विद्मान् सर्वत्र पूज्यते ॥ २ ॥ पाण्डिते च गुणाः सर्वे । मूर्खे

दोषाहि केवलं । तस्मान्मूर्खं सहस्रेषु । प्राज्ञ एको विशिष्यते ॥ ३ ॥
 नक्षत्रचूषणं चन्द्रो । नारीणां चूषणं पतिः । पृथिव्या चूषणं राजा । विद्या
 सर्वस्यचूषणं ॥ ४ ॥ माताशत्रुः पिता वैरी । बालो येन न पाठितः । न
 शोचते सजा मध्ये । हंस मध्ये बको यथा ॥ ५ ॥ जालयेत्पंच वर्षाणि ।
 दशवर्षाणि ताडयेत् । प्राप्तेषु षोडशे वर्षे । पुत्रं मित्रं वदाचरेत् ॥ ६ ॥
 वरमेको गुणी पुत्रो । नच मूर्खं शतान्यपि । एकचन्द्रं स्तमो हन्ति । नच
 तारागणादपि ॥ ७ ॥ अविद्यं जीवनं शून्यं । दिशः शून्यास्त्व बांधवा ।
 पुत्रहीनं गृहं शून्यं । सर्वं शून्या दरिद्रता ॥ ८ ॥ नच विद्या समो बंधु
 र्नचव्याधि समो रिपुः । नचापत्य समः स्नेहो । नच दैवात्परं बलं ॥ ९ ॥
 किं तथा क्रियते धेन्वा । या न सूते न दुग्धदा । कोऽर्थः पुत्रेण जातेन ।
 यो न विद्वान् न ऋक्तिमान् ॥ १० ॥ उपदेशो हि मूर्खाणां । प्रकोपाय न
 शान्तये । पयः पानं जुजंगानां केवलं विषवर्धनं ॥ ११ ॥ मातृवत्परदारं-
 श्च । परद्रव्याणि लोष्टृवत् । आत्मवत् सर्वचूतानि । विहृन्ते धर्मबुधयः ॥ १२ ॥

॥ अथ वाक्यमंजरी ॥

॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः ॥ श्रीवाग्वादिभ्यै नमः ॥ प्रातरुत्थाय श्रीपरमेश्वरं
 चिन्तयेत् । तदनन्तरं, हस्तौ पादौ सम्यक् प्रक्षाल्य स्नात्वा आगन्तव्यं ।
 परमेश्वरस्य पूजा विधेया (देवः पूज्यः) ॥ धर्मशास्त्र मध्ये किं किमुक्तं
 नास्ति, धर्मशास्त्रे सर्वं वर्तते । धर्मशास्त्रं मृत्यन्तं समीचीनं ॥ सरस्वती स्तोत्रं
 सर्वीर्यं ऋवति । सद्यः प्रीतिजनकं ऋवति । इदं सरस्वती स्तोत्रं सद्यः
 प्रत्यय कारकं ऋवति ॥ कविता समीचीना । कवित्वं कथमायाति । गुरु-
 समीपे गत्वा सम्यक् पठनीयं । ततो ज्ञानं ऋवति । तदा कवित्वमायाति ।
 तस्मादादौर्बुद्धौ ज्ञानं सम्पादनीयं । सदा प्रियं ब्रूयात् । प्रियवादी सर्वस्य
 प्रियो ऋवति । विद्याहि परमं धनं । यस्य विद्याधनमस्ति । स सदा सुखेन
 कालं नयति । श्रमेण यत्नेन च विद्या ऋवति । तस्मात् विद्यालाभायश्रमो
 यत्नश्च विधेयः । विद्यां विना वृथा जीवनं ॥ आलस्यं सर्वेषां दोषाणामा-
 करः । अलसा विद्यामुपार्जयितुं न शक्नुवन्ति । धनं न लभन्ते । अलसानां
 चिरमेव दुःखं । तस्मादालस्यं परित्यजेत् ॥ योऽस्मानध्यापयति ।

सोऽस्माकं परम गुरुः । सहि पितृवत् पूजनीयः । विद्यादाता ज-
न्मदाताच द्रावेव समानौ । समं माननीयो च ॥ क्रोधं यत्नेन वर्जयेत् ।
क्रोधवशेन परुषं ज्ञापते । ततः प्रहरेत् । क्रोधोहि महान् शत्रुः ॥ सर्वं पर-
वशं दुःखम् । सर्वमात्मवशं सुखम् । एतदेव सुखदुःखयोर्लक्षणम् ॥ परार्हे-
सायां परापकारेच बुद्धिर्नकार्या । तयोः समं पापं नास्ति ॥ यथाशक्ति-
परेषा सुपकारं कुर्यात् । परोपकारो हि परमो धर्मः ॥ अहंकारं परिहरेत् ।
नाहंकारात् परोरिपुः ॥ संतुष्टस्य सदा सुखम् । आत्मनः सुखमन्विठेत् ।
सन्तोषमूलं हि सुखम् ॥

॥ अथ सन्धिसुत्र ॥

सिद्धे वर्णः । समान्नायः । तत्र चतुर्दशदौ स्वरा. दशसमाना । तेषां
द्वौ द्रावन्त्यो । अन्यस्य सवर्णौ । पुर्व्वो ऋस्वः । परो दीर्घः । स्वरोवर्णः
वर्ज्जोनामी । एकारादीनि संध्यहाराणि । कादीनि व्यंजनानि । ते वर्गाः ।
पंच पंच । वर्गाणां प्रथम द्वितीयौ । शपसाश्च घोषाः । घोषवंतोऽन्ये । अ-
नुनासिकाः ङणनमा. । अन्तस्थाः यरलवाः । उष्माणः शपसहाः । अ-
इति विसर्जनीयः । कः इति जिब्हा मूलीयः । पः इत्युपध्मानीयः । अं इ-
त्यनुस्वारः । पूर्वपरयो रथोपलवधौ पदम् । अस्वरं व्यंजनं । परं वर्णनयेत् ।
अनतिक्रमयन् विश्लेषयेत् । लोकोपचारात् ग्रहण सिद्धिः ॥ इति संधौ-
सूत्रतः प्रथमश्रवणः समाप्तः ॥

॥ हितोपदेशः ॥

—अर्जन्तो जगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता । आ-
चार्या जिनसासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः । श्रीसि-
द्धांत सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रया राधकाः । पंचैते परमेष्ठिनः
प्रति दिनं कुर्वंतु वो मंगलं ॥ १ ॥

॥ अर्थः ॥

(एते पंचपरमेष्ठिनः प्रतिदिनं वः गुप्माकं मंगलं कुर्वन्तु) । यह
पंचपरमेष्टि निरन्तर श्रीसंवप्रतं मंगलकरो । (कैसे है पंचपरमेष्टि) (अ-

ज्ञानतो जगवंत इन्द्रमहिता) । प्रथम परमेष्टि । श्रीअरिहंत देवः । अष्ट-
 कर्म शत्रुकुंहरणं (सो) अरिहंत कहियै । अरिहंत कैसे है । (जगवंत-
 ज्ञानवंत है । केवल ज्ञान केवल दर्शन संयुक्त है । (तथा) जगशब्द-
 के १४ अर्थ है ॥ जगोऽर्क (सूर्य) १ । ज्ञान २ । महात्म ३ । यश
 ४ । वैराग्य ५ । मुक्ति ६ । रूप ७ । वीर्य ८ । प्रयत्न ९ । इडा १० ।
 श्रीलक्ष्मी ११ । धर्म १२ । ऐश्वर्य १३ । योनि १४ । यह चवद्वै अर्थोंमेंसें ।
 सूर्य १ योनि २ । दो अर्थ वर्जकर । १२ अर्थ जग शब्दका मिलै (जि-
 ससे) जगवंत कहियै (पुनः किंविशिष्ट) फेर अरिहंत कैसे है (इन्द्र-
 महिता (चौसठ इन्द्रोंके पूजनीक । द्वादशगुणें करी विराजमान है (सो
 द्वादश गुण कैसे) प्रथमतो अरिहंतको अद्भुतरूप । रोगादि रहित । प्र-
 स्वेद मलादि रहित । सुगंध शरीर होय ॥ १ ॥ सासोस्वासकी कमलजैसी
 सुगन्ध होय ॥ २ ॥ लोही मांस गायके दूध जैसा सपेद होय ॥ ३ ॥ आ-
 हारनीहारकी विधि अदृश्यहोय । प्राणी देख सक्ते नहीं ॥ ४ ॥ ए च्यार
 अतिसय गुणतो जन्मथकासे होय । (शेषआठगुण) केवल ज्ञान उत्पन्न
 होणेंसें प्रगट होय । (अशोकवृक्षः) जगवन्तके शरीरसें । चारै गुणो
 नुंचो अशोकवृक्ष होय । जिसकी ढायां बैठणेंसें रोगसोकादिक दूर होय ॥ १ ॥
 (सुरपुष्पवृष्टिः) देवगण पंचवर्ण फूलोंकी जानूपर्यंत वर्षा करै । आका-
 ससें पडता सीधापडै विटनींचै रहै । पंषडी ऊपर रहै ॥ २ ॥ (दिव्य-
 ध्वनि) योजनपर्यंत । देवता । मनुष्य । तिर्यच । सब जीव । अपणी २
 ज्ञाषामें । यथावस्थित समजै (जाणें) जगवंत मेरी ज्ञाषामें उपदेस देते
 है ॥ (कहावी है) एगाइं गिराणेंगे । संदेह देहिणं समंभित्ता । तिहुअण
 मणुंसा संता । अरिहंता हुंतिमे सरणं ॥ १ ॥ ३ ॥ (श्रामर ४) जग-
 वंतके दोनुं पासे इन्द्रचामर ढालता रहे ॥ ४ ॥ (आसनंच ५) जगव-
 न्तके बैठणेंको । इन्द्रादिक रचित । फिटक रत्नमई सिंहासण रहे ॥ ५ ॥
 (जामंडलं ६) जगवन्तके पिठाडी जामंडल रहे (जिसमें) जगवंतके
 च्यार मुख । च्यारुंदिश तरफ मालुम होय जगवंत तो पूर्वदिशा मुख
 कर बेठे । आरे तीन दिशमे । जगवन्तके प्रतिबिंब इन्द्रादिक स्थापन

करे। परंतु जगवन्तके अतिशयसें । च्यारुंदिशे । वारेई परपदाकों । अपणेसन्मुख उपदेश देता माळूम होय ॥ ६ ॥ (डुंडुजी ७) आकाशमें देव डुंडुजी बाजित वाजे ॥ ७ ॥ (रातपत्रं) जगवन्तके विहार काले । वा स्थिति काले । हमेसां मस्तकपर । तीन उत्र रहे ॥ ८ ॥ (यह आठ गुण देवगणके किये होय) ऐसे अरिहंत । देवाधिदेव । चौतीस अतिशय विराजमान । पैंतीस वचनगुण शोभित । एक हजार आठ लक्षणांलं-कृत । अठारै दूषण रहत । शांत दांत । कृपासागर । त्रैलोक्यनाथ । जग-त्रयके गुरु (वर्तमानकाले) महाविदेह खेत्रे । केवलज्ञान । केवलदर्शनसे । लोकालोकका ज्ञाव देखते थके । पृथ्वीमंडलपर जव्य जीवुंके मनोरथ पूरण करते थके । विचरते है (ऐसे) अनंतगुणें सुसोभित । अरिहंत देव श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ १ ॥ (तथा सिद्धाश्च सिद्धि स्थिता) (दूसरे पदे) सिद्ध महाराजको नमस्कार हुवो । (सिद्ध महाराज कैसे है) अष्ट कर्म काष्टकों । शुक्लध्यान रूप अग्निसें जस्पकर सिद्धगतिकों प्रा-प्तजये (ऐसे) अनंत ग्यान । अनंतदर्शन । अनंत चारित्र । अनंत तप । अनंत वीर्यसंयुक्त । जन्म जरा मरण रोग सोक जयादिकसे विप्रसुक्त । चवठे राजलोकमें सब जीवोंके मनोगत ज्ञाव । एक समयमें जाणते थके । देखते थके पिण आत्मगुणां में मग्न रहे है (ऐसे) सिद्ध महा-राज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ २ ॥ (आचार्या जिनशासनोन्नति कराः) (तीसरा परमेष्टि) श्रीआचार्य महाराजकों नमस्कार हुवो । (सो कैसे है) (उत्तीस गुण करी विराजमान । मुक्तिमार्गके साधक । कर्म श-त्रुके विराधक । अबुध जीव प्रतिबोधक । कृमागुण जंडार । समदृष्टी । तरण तारण । धर्मके धोरी । जिन सासनकी उन्नतिके करण हार (ऐसे) पर उपगारी आचार्य महाराज श्रीसंघ में सदा मंगलकरो ॥ ३ ॥ (पुज्या उपाध्यायका । श्रीसिद्धांत सुपाठका (चौथा परमेष्टि । श्रीउपाध्याय महा-राजकों नमस्कार हुवो । (सोकैसे है) द्वादशांगी सुत्रार्थके जाणकार । नय निक्षेपा गमां पर्याय युक्त । सिद्धांतको पढाणेंवाले । ज्ञानचक्रु देणेंवाले । (ऐसे) २५ गुण करी विराजमान । श्रीउपाध्याय महाराज श्रीसंघमें

सदा मंगल करो ॥ ४ ॥ (मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः) (पंचम परमेष्ठि)
 सब साधु मुनिराज (सो कैसे है) ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ यह तीन
 रत्नके आराधक है । पांचे सुमते सुमता । तीने गुप्तेगुप्ता । ढक्कायके पीहर
 कुक्खी संबल । चारित्रपात्र । मोहमार्गके साधक । (ऐसे) सब साधु
 मुनिराज । सत्ताईस गुणें करी सोप्रित । श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ ५ ॥
 इति हितोपदेशः उन्नय श्रेयार्थम् ॥

॥ विंशति नामः ॥

(अतीत चौबीसी.)

- | | | |
|------------------------|------------------------|----------------------|
| १॥ श्रीकेवलज्ञानीजी । | ९॥ श्रीदामोदरजी । | १७॥ श्रीअनिलनाथजी । |
| २॥ श्रीनिर्वाणीजी । | १०॥ श्रीसुतेजनाथजी । | १८॥ श्रीयशोधरजी । |
| ३॥ श्रीसागरजी । | ११॥ श्रीस्वामीजी । | १९॥ श्रीकृतार्धजी । |
| ४॥ श्रीमहायशजी । | १२॥ श्रीमुनिसुव्रतजी । | २०॥ श्रीजिनेश्वरजी । |
| ५॥ श्रीविमलदेवजी । | १३॥ श्रीसुमतिनाथजी । | २१॥ श्रीशुद्धमतीजी । |
| ६॥ श्रीसर्वानुभूतिजी । | १४॥ श्रीशिवगतीजी । | २२॥ श्रीशिवकरजी । |
| ७॥ श्रीश्रीधरजी । | १५॥ श्रीअस्तागजी । | २३॥ श्रीस्पन्दनजी । |
| ८॥ श्रीदत्तस्वामीजी । | १६॥ श्रीनमीश्वरजी । | २४॥ श्रीसंप्रतिजी । |

॥ इति अतीत चतुर्विंशति तिर्थ करेभ्यो नमः ॥

(वर्तमान चौबीसी)

- | | | |
|-------------------------|-----------------------|------------------------|
| १॥ श्रीरुषभदेवजी । | ९॥ श्रीसुविधिनाथजी । | १७॥ श्रीकुंथुनाथजी । |
| २॥ श्रीअजितनाथजी । | १०॥ श्रीशीतलनाथजी । | १८॥ श्रीअरनाथजी । |
| ३॥ श्रीसंभवनाथजी । | ११॥ श्रीश्रेयांसजी । | १९॥ श्रीमल्लिनाथजी । |
| ४॥ श्रीअग्निनन्दनजी । | १२॥ श्रीवासुपुज्यजी । | २०॥ श्रीमुनिसुव्रतजी । |
| ५॥ श्रीसुमतिनाथजी । | १३॥ श्रीविमलनाथजी । | २१॥ श्रीनमिनाथजी । |
| ६॥ श्रीपद्मप्रभुजी । | १४॥ श्रीअनन्तनाथजी । | २२॥ श्रीनेमनाथजी । |
| ७॥ श्रीसुपार्श्वनाथजी । | १५॥ श्रीधर्मनाथजी । | २३॥ श्रीपार्श्वनाथजी । |
| ८॥ श्रीचंद्राप्रभुजी । | १६॥ श्रीशान्तिनाथजी । | २४॥ श्रीमहावीरजी । |

(अनागत चौवीसी)

- १॥ श्रीपद्मनाभजी । ९॥ श्रीपोष्टिल प्रनुजी । १७॥ श्रीसमाधिनाथजी ।
 २॥ श्रीसूरदेवजी । १०॥ श्रीशतकीर्त्तिजी । १८॥ श्रीसंबरनाथजी ।
 ३॥ श्रीसुपार्श्वजी । ११॥ श्रीसुब्रतनाथजी । १९॥ श्रीयशोधरजी ।
 ४॥ श्रीस्वयंप्रनुजी । १२॥ श्रीअममनाथजी । २०॥ श्रीविजयनाथजी ।
 ५॥ श्रीसर्वानुभूतिजी । १३॥ श्रीनिष्कपायजी । २१॥ श्रीमहिप्रनुजी ।
 ६॥ श्रीदेवश्रुतजी । १४॥ श्रीनिष्पुलाकजी । २२॥ श्रीदेवप्रनुजी ।
 ७॥ श्रीउदयप्रनुजी । १५॥ श्रीनिर्ममनाथजी । २३॥ श्रीअनन्तजी ।
 ८॥ श्रीपेढालप्रनुजी । १६॥ श्रीचित्रगुप्तिजी । २४॥ श्रीअद्रंकरजी ।

॥ इति अविष्यच्चतुर्विंशति तिर्यकरेभ्योनमः ॥

(बीसविहरमान नामानि)

- १॥ श्रीसीमन्धरजी । ८॥ श्रीअनन्तवीर्यजी । १५॥ श्रीनेमप्रनुजी ।
 २॥ श्रीयुगमन्धरजी । ९॥ श्रीसूरप्रनुजी । १६॥ श्रीईश्वरजी ।
 ३॥ श्रीवाहुजी । १०॥ श्रीविमलजी । १७॥ श्रीवयरसेनजी ।
 ४॥ श्रीसुवाहुजी । ११॥ श्रीवज्रधरजी । १८॥ श्रीमहाअद्रजी ।
 ५॥ श्रीसुजातजी । १२॥ श्रीचंद्राननजी । १९॥ श्रीदेवजसजी ।
 ६॥ श्रीस्वयंप्रनुजी । १३॥ श्रीचंद्रवाहुजी । २०॥ श्रीअजितवीर्यजी ।
 ७॥ श्रीरूपज्ञाननजी । १४॥ श्रीचुजंगजी ।

॥ इति विंशति विहरमानतिर्यकरेभ्योनमः ॥

(च्यार सास्वतानामः)

- १॥ श्रीरूपज्ञाननजी । ३॥ श्रीवारिषेणजी ।
 २॥ श्रीचंद्राननजी । ४॥ श्रीवर्द्धमानजी ।

॥ इति चत्वार सास्वता जिनवरेभ्योनमः ॥

॥ पांच प्रतिक्रमणसूत्र विधि ॥

श्रीपंचपरमेष्ठिने नमः ॥ एमो अरिहंताणं ॥ एमो सिद्धाणं ॥
 एमो आयरियाणं ॥ एमो उवज्जायाणं ॥ एमो लोए सब-
 साहूणं ॥ एसौ पंच एमुक्कारो ॥ सबपाव प्पणासणो ॥ मंग-
 लाणंच सब्बेसिं ॥ पढमंहवइ मंगलं ॥ १ ॥ पद ९ ॥ संपदा ८ ॥
 अक्षर ६८ ॥ गुरु ७ ॥ लघु ६९

॥ अथ सकल तिर्थेकर नमस्कार लि० ॥

॥ * ॥ श्रीइष्टदेवाय नमः ॥ * ॥ जयउसामिहि ॥ २ ॥ रिस-
 ह सेत्तुंजि उज्जित पडू नेमिजिण । जयउ बीर सच्चउरमंरुण ।
 न्जरवञ्चहि मुणि सुवय । महुरिपास दुह डुरिअ खंरुण । अवर
 विदेहजि तित्थयर । चिहुं दिसि विदिसि जंकेवि । तीआणागय
 संपयं । वंडुं जिण सब्बेवि ॥ २ ॥ कम्मभूमिहि ॥ २ ॥ पढम
 संघयण उक्कोसन सत्तरिसन । जिणवराण विहरंतलपुइ । नव-
 कोडी केवलिण । कोडिसहस नवसाहु संपय । संपइ जिणवर
 वीसमुणि । डुइकोडीवरणाणि । समणाकोडीसहसडुइ । थुणिजइ
 निच्चविहाण ॥ १ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा । लक्खा उप्पन्न अठको-
 डीआो । चउसय गायसीआ । तिखुक्के चेइए वंदे ॥ २ ॥ वंदे नव-
 कोडिसयं । पणवीसंकोडि लक्खतेवन्ना । अठ्ठावीससहस्सा
 चउसय अठ्ठासिआ पडिमा ॥ ३ ॥ जंकिंचि नामतित्थं । सग्गेपा-
 यालेमाणुसेलोए । जाइंजिणविंबाइं । ताइं सब्बाइं वंदामि * ॥ ४ ॥
 एमोत्थुणं अरिहंताणं न्गवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थग-
 राणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरसोत्तमाणं पुरस सीहाणं पुरसवर
 पुंरुरीआणं पुरसवर गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोग-
 नाहाणं लोगाहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥

अज्ञयदयाणं चक्रुदयाणं मग्ग दयाणं सरणदयाणं बोहि-
दयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं धम्म देसिआणं धम्मनायगाणं ।
धम्मसारहीणं धम्मवरचावरंतं चक्रवटीणं ॥ ६ ॥ अप्पनिह-
यवणणं दंसणधराणं विअट्ठवणमाणं ॥ ७ ॥ जिन्नाणं जा-
वयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहिआणं मुत्ताणंमोअ-
गाणं ॥ ८ ॥ सबन्नूणं सबदरिसीणं सिव मयल मरुअ मणंत
मक्खय मत्तावाह मपुणरावत्ति सिद्धिगइ नामधेयं द्वाणंसंपत्ताणं
णमोजिणाणं जिअज्ञयाणं ॥ ९ ॥ जेअ अईआसिद्धा जेअ
अविस्संति अणागएकाले संपइअ वट्टमाणा सबे तिविहेण
वंदामि ❀ ॥ १ ॥ ❀ पद ॥ ३३ ॥ संपदा ॥ ९ ॥ अक्षर ॥ २९७ ॥
गुरु ॥ ३३ ॥ लघु ॥ २६४ ॥ ❀ ॥ जावंति चेइआइं । उट्ठेअ अ-
हेअतिरिअलोएय । सबाइंताइंवंदे । इहसंतो तत्थसंताइं ॥ १ ॥
इच्छामिखमा० इत्ताका० अगवन् । जावंति केविसाहू । अरहे
रवए महाविदेहेअ । सबेसि तेसिपणओ । तिविहेण तिदंरु
विरआणं ॥ २ ॥ अक्षर ॥ ९२ ॥ ❀ नमो क्तं सिद्धाचार्योपा
ध्याय सर्वसाधुभ्यः ॥ ❀ ॥ उवसग्ग हरंपासं । पासं वंदामि
कम्मघण मुक्कं । विसहर विसनिन्नासं । मंगल कल्लाण
आवासं ॥ १ ॥ विसहर फुलिंग मंतं । कंठे धारेइ जो सया
मणुओ । तस्सगहरोगमारी । दुठ्ठजराजन्ति उवसामं ॥२॥चिठ्ठ
दूरे मंतो । तुज्ज पणामोवि बहुफलो होइ । नरतिरिए सुवि जीवा ।
पावंति नदुक्ख दोहग्गं ॥ ३ ॥ तुहसम्मत्ते लद्धे । चिंतामणि क-
प्पपाय वप्रहिए । पावंति अविग्घेणं । जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥
इअ संथुओ महायस । अत्तिअरनिअरेण हिआणण । तादेव दिज्ज
बोहिं । अवे अवे पास जिणचंदं ॥५॥ इति श्रीपार्श्व जिनस्तुतिः ॥

❀ ॥ जय वीयराय जगगुरु । होत्रममं तुहपन्नावत्रो । नयवं
 न्नवनिब्बेत्रो । मग्गाणुसारिञ्चा इठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोम
 विरुद्ध च्चात्रो । गुरुजण पूञ्चा परत्थकरणंच सुह गुरुजोगो
 तब्बयण सेवणा आन्नवमखंमा ❀ ॥ २ ॥ ❀ ॥ अरिहंत
 चेइयाणं । वंदणवत्तिया । अनत्थूकही । एक नवकारनोका-
 वसग्गकरी एकथूईनीगाथा कहै ॥ इतिचैत्यवंदनकं ॥ ❀ ॥

॥ अथ इरियावही ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदित्तं जावणिज्जाए निसीहि आए
 मत्थणवंदामि ॥ इतिक्षमाश्रमणदंरुकः ॥ गुरु ३ लघु २५ ॥
 (इच्छाकारेण संदिसह न्नगवन्) इरिआवहिअं पफिक्कमामि,
 इच्छं इच्छामि पफिक्कमित्तं । इरिआवहियाए विराहणाए ।
 गमणा गमणे पाण क्कमणे वीअक्कमणे हरिअ क्कमणे । उसा
 उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा । संताणा संकमणे । जेमे जीवा
 विराहिआ । एगिंदिआ वेइंदिआ तेइंदिआ चउरिंदिआ पं-
 चिंदिआ अजिहया वत्तिआ लेसिया संघाइआ संघट्टिआ ।
 परिआविया किलामिआ उहविआ ठाणा उठाण संकामिआ
 जीवियाओववरोविआ । तस्समिच्छामिदुक्कमं ❀ ॥ ७ ॥ ❀ तस्स
 उत्तरी करणेणं । पायच्छित्त करणेणं । विसोही करणेणं । विसल्ली
 करणेणं । पावाणं कम्माणं । णिग्घायणठाए । ठामिकानुसग्गं
 ॥ पद ३२ संपदा ८ गुरु २४ लघु १७५ ॥ एवं ॥ १९९ ॥ ❀ ॥
 अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं ठीएणं जंजाइएणं
 उड्डुएणं वाय निसग्गेणं न्नमलिए पितमुब्बाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं
 अंग संचालेहिं । सुहुमेहिं खेल संचालेहिं । सुहुमेहिं दिठि
 संचालेहिं ॥ २ ॥ एव माइएहिं आगारेहिं । अन्नग्गो

अविराहित्रो ह्युज्ज मे कान्तसग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं ज-
 गवंताणं एमोक्कारेण नपारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं जाणे-
 णं अप्पाणं वोसरामि ❀ ॥ ४ ॥ ❀ लोगस्स उज्जोअगरे । धम्म
 तित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइसं । चत्तवीसंपि केवली ॥ १ ॥
 उसन्न मज्जिअं च वंदे । संजव मज्जिनंदणं च । सुमइच्च पत्तम
 प्पहं सुपासं । जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहंच पुप्फदंतं ।
 सीअल सिज्जंस वासुपुज्जंच । विमल मणंतं च जिणं । धम्मं
 संतिच वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथु अरंच मल्लिं । वंदे मुणिसुव्वयं न
 मि जिणंच । वंदामि रिठ्ठनेमि । पासं तह वद्धमाणंच ॥ ४ ॥
 एवं मए अज्जिथुआ । विहुअ रयमला पहीण जर मरणा ।
 चत्तवीसंपि जिणवरा । तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिअ
 वंदिअ महिआ । जेते लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरोग्ग वोहि
 लाजं । समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा ।
 आइच्चेसु अहिअं पयासयरा । सागर वर गंजीरा । सिद्धा सिद्धिं
 मम दिसंतु ॥ ❀ ॥ ७ ॥ ❀ पद २८ संपदा २८ गुरु २८ लघु २२८
 [एवंसर्वअक्षर ॥ २५६] सबलोए अरिहंतचेइआणं करेमिका
 त्तस्सग्गं ॥ ❀ ॥ १ ॥ ❀ ॥ ३ ॥ ॥ पुक्खरवर दीवट्ठे । धायइ
 संनेअ जंबुदीवेअ । जरहे रवय विदेहे । धम्माइगरे नमंसा-
 मि ॥ १ ॥ तम तिमिर पक्खल विद्धंसणस्स । सुरगण नरिद
 महिअस्स । सीमाधरस्स वंदे । पुप्फोमिअ मोह जालस्स ॥ २ ॥
 जाई जरा मरणसोग पणासणस्स । कल्लाण पुक्खल विसाल सुहा
 वहस्स । को देव दाणव नरिद गणाञ्चिअस्स । धम्मस्ससार मुवल
 प्रकरेपमायां ॥ ३ ॥ सिद्धेन्नोपयत्त एमोजिणमए नंदीसयासंजमे । देव
 नाग सुवन्न किन्नरगण स्सब्भुअ जावच्चिए । लोगो जत्थ पयट्ठिओ

जगमणं तेलोक मञ्चासुरं । धम्मो बहुवसासओ विजयत्त धम्मो
 त्तरं बहुओ ॥ ४ ॥ सुअस्सत्तगवत्तं करेमि कान्तसग्गं ॥ * ॥ (पद
 १६संपदा १६ गुरुअ ३४ लघुअ १८२ एवं २१६) ॥ * ॥ वंद-
 णवत्ति आए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए
 बोहिलान्नवत्तिआए निरुवसग्ग वत्तिआए सिद्धाए मेहाए धिईए
 धारणाए अणुप्पेहाए वद्धमाणीए ठामिकान्तसग्गं ॥ १ ॥ अन्न
 त्थक्कससिएणं नीससिएणं इत्यादि ॥ * ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं । लोगग्ग
 मुवगयाणं । एमो सया सब सिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणविदेवो
 जंदेवा पंजली नमंसंति । तं देव देवमहिअं । सिरसावंदे म-
 हावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि एमुक्कारो । जिणवर वसहस्स वद्धमा-
 णस्स । संसार सागराओ । तारेइ नरंव नारिंवा ॥ ३ ॥ उज्जित
 सेल सिहरे । दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्म
 चक्कवट्ठिं । अरिठ्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस
 दोअ वंदिआ । जिणवरा चत्तवीसं । परमट्ठ निट्ठिअट्ठा । सि-
 द्धा सिद्धिं ममदिसंतु ॥ ५ ॥ * ॥ वेयावच्चगराणं । संतिग-
 राणं । सम्महिट्ठि समाहिगराणं । करेमिकान्तसग्गं ॥ १ ॥
 अणत्थक्कससिएणं इत्यादि (संपदा २० पद २० गुरु अक्षर
 ३१ लघु १६७ एवं १९८) ॥ * ॥ संसार दावानल दाह
 नीरं । समोहधूली हरणे समीरं । मायारसा दारण सार सीरं ।
 नमामि वीरं गिरिसार धीरं ॥ १ ॥ ज्ञावावनाम सुर दानव मा-
 नवेन । चूला विलोल कमलावलि मालितानि । संपूरिता त्रि-
 नत लोक समीहि तानि । कामं नमामि जिनराज पदानि
 ॥ २ ॥ बोधा गाधं सुपद पदवी नीर पूरात्तिरामं । जीवा

हिंसाविरल लहरी संग मागाहदेहं । चूलावेलं गुरु गम मणी
संकुलं दूरपारं । सारं वीरागम जलनिधिं सादरं साधुसेवे ॥ ३ ॥
आमूला लोलधूली बहुल परिमला लीढ लोलालिमाला ।
जंकारा राव सारा मलदलकमला गारभूमी निवासे । गया
संभारसारे वरकमलकरे तारहारान्तरामे । वांणीसंदोहदेहे नव-
विरहवरं देहिमे देविसारं ॥ ४ ॥ इति वीरस्तुतिः ॥

॥ वांदणां ॥

॥ ❀ ॥ इत्थामिखमासमणो बंदिउंजावणिज्जाए निसीहिआए ।
अणुजाणह मेमिउग्गहं निसीही । अहो कायं काय । संफासं
खमणिज्जो जेकिलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुत्तेणजे दिवसो-
वइकंतो । जत्ताजे जवणि जंचजे । खामेमि खमासमणो देव-
सिअं वइकमं । आवसिआए पफिक्कमामि खमासमणाणं । देव
सिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिचिमिठ्ठाए । मणउक्क-
डाए वयउक्कडाए कायउक्कडाए । कोहाए माणाए मायाए लोत्ताए ।
सव्वकालिआए सव्वमिठ्ठोवयाराए सव्वधम्मइक्कमणाए आसाय
णाए । जोमेअईयारोकओ तस्सखमासमणो पडिक्कमामि
निदामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥ ❀ ॥ ॥ अक्षर ॥ १९८ ॥

॥ साध्वालोयणा ॥

—❀❀ इत्थाकारेण संदिसह जगवन् देवसिअं आलोएमि ।
इत्थंआलोएमि । जोमेदेवसिओ अईआरोकओ । काईओ वा
ईओ माणासिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अक्कप्पो अकरणिज्जो
उज्जाओ उव्विचिंतिओ । अणायारो अणत्ठियव्वो । असम-
णपावग्गो । नाणेत्तहदंमणेचरित्ते । सुएसामाइए तिएहंगुत्तीणं-
चउएहंकसायाणं । पंचएहं महवयाणं । उएहं जीवनिकायाणं ।

सत्तएहंपिमेसणाणं अठ्ठएहं पवयणमाईणं । नवएहं वंनचेर
गुत्तीणं दसविहेसमणधम्ममे । समणाणं जोगाणं । जंखंमिअं
जं विराहिअं । तस्समिठ्ठामिडुक्कं ॥*॥

॥ श्रावकआलोयणा ॥

॥*॥ इठ्ठाकारेण संदिसह जगवन् । देवसियं आलोएमि
इठ्ठं आलोएमि । जोमे देवसिअो अइयारोकअो । काईअो
वाईअो माणासिअो । उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो । अकरणिज्जो
डुज्जाअो डुविचिंतिअो । अणायारो अणत्थियवो । असावग-
पावग्गो । नाणेत्तह दंसणे चरित्ता चरित्ते । सुए सामाइए
तिएहंगुत्तीणं । चत्तएहंकसायाणं । पंचएहंमणुवयाणं । तिएहं
गुणवयाणं । चत्तएहं सिक्खावयाणं । वारसविहस्स सावग ध-
म्मस्स । जंखंमिअं जंविराहिअं । तस्स मिठ्ठामिडुक्कं ॥*॥

॥*॥ ठाणेकमणे चंकमणे आउत्ते । अणाउत्ते हरिअकाय
संघट्टे बीयकायसंघट्टे थावरकायसंघट्टे उप्पइयासंघट्टे । सबस्स
वि देवसिअ । डुच्चिंतिय डुप्पासिय डुच्चिठ्ठिअ । इठ्ठाकारेण
संदिसह । इठ्ठंतस्समिठ्ठामिडुक्कं ॥ १ ॥*॥ संथाराउवट्टण-
की । आउट्टणकी । परिअट्टणकी । पसारणकी । उप्पइयासं
घट्टणकी । अच्चक्खु विसयकायकी । सब्बस्सविराइअ । डुच्चिं
तिअ डुप्पासिअ डुच्चिठ्ठिअ । इठ्ठाकारेणसंदिसह । इठ्ठ-
तस्स मिठ्ठामिडुक्कं ॥ १ ॥*॥ इठ्ठाकारेणसंदिसह जगवन्
अभूठ्ठिअोमि अण्णितर । देवसिअंखामेउं । इठ्ठंखामेमि देव-
सिअं । जंकिंचि अपत्तिअं परपत्तियं । जत्ते पाणे विणए वेया-
वच्चे । आलावे संलावे । उच्चासणे । समासणे अंतरजासाए
उवरिजासाए । जंकिंचि मज्जविणय परिहीणं सुहुमंवा वायरंवा ।

तुभ्रेजाणह अहंनजाणामि । तस्स मिच्चामिउक्कमं ॥ ❀ ॥
॥ इति गुरुवंदणा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ करेमि जंते सामाइयं । सावज्जंजोगं पच्चक्खामि ।
जावनियमं पज्जुवासामि । डुविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए
काएणं । न करेमि न कारवेमि । तस्स जंते । पडिक्कमामि । निंदामि
गरहामि । अप्पाणं बोसिरामि ॥❀ ॥ करेमि जंते पोसहं । आहार
पोसहं, देसउ । सवउ वा । सरीरसक्कार पोसहं । सवउ वंजचेर
पोसहं । सवउ अवावार पोसहं । सवउ चउविहे पोसहे । साव
ज्जंजोगं पच्चक्खामि । जावदिवसं अहोरात्तिं वा पज्जु वासामि ।
डुविहं तिविहेण । मणेणं वायाए काएणं । न करेमि न कारवेमि ।
तस्स जंते । पडिक्कमामि निंदामि । गरहामि अप्पाणं बोसिरामि
॥❀॥ आयरियउवज्जाए सीसेसाहम्मिए कुलगणेवा । जेमे कया-
कसाया । सवे तिविहेण खामेमि ॥१॥ सवस्स समणसंघस्स । जग
वउ अंजलिं करिय सीसे । सव्वं खमावइत्ता । खमामि सव्वस्स अहि-
यंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीव रासिस्स । जावउ धम्मनिहियनिय-
चित्तो । सव्वं खमावइत्ता । खमामि सव्वस्स अहियंपि ॥ ३ ॥❀॥
सुवर्णशालिनी देयाद् । द्वादसांगी जिनोद्भवा । श्रुतदेवी सदा-
मह्य । मसेपश्रुतसंपदं ॥ १ ॥ चतुवर्णायसंधाय । देवी जवन-
वासिनी । निहत्य दुरितान्येषा । करोतुसुखमकृतं ॥ २ ॥ यासां
क्षेत्रगतास्संति । साधवः श्रावकादयः । जिनाज्ञां साधयंतस्ता ।
रहंतु क्षेत्रदेवताः ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय महायश २ जय महाजाग जय चिंतिय
सुहफलय । जय समत्थ परमत्थजाणय । जय २ गुरु
गरिम गुरु । जय उहत्तसत्ताणताणय । थंजणयाठिय पासजिण ।

नवियहन्नीमन्नवत्थु । नय अविण्तिताणंतगुण । तुज्जतिसंज
नमोत्थु ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ अथ सामायक पोसहपारवागाथा ॥

॥ ❀ ॥ नयवं दसन्नन्नदो । सुदंसणो थूलन्नद्वयरोय । सफ-
लीकय गिहचाया । साहू एवंविहा हुंति ॥ १ ॥ साहूण वंद-
णेणं । नासइ पावं असंक्रियात्तावा । फासुअदाणे निज्जर ।
अग्निग्गहो नाणमाईणं ॥ २ ॥ ठठमत्थो मूढ मणो । कित्तिय-
मित्तंपि संनरइजीवो । जंचन संनरामि अहं । मिठामेदुक्कडं
तस्स ॥ ३ ॥ जंजंमणेण चित्तिय । मसुहं वायाइत्तासियं
किंचि । असुहं काएणकयं । मिठामे दुक्कं तस्स ॥ ४ ॥
सामाइय पोसहसंठियस्स । जीवस्स जाइ जो कालो । सोसफलो
बोधवो । सेसो संसारफलहेऊ ॥ ५ ॥ ❀ ॥ सामायकविधै लीधी
विधै कीधी विधिकरतां अवधि आसातना लागी होय
दसमनका दस वचनका बारै कायाका । बत्तीस दूषणां मांह
जो कोई दूषण लागो होय सो सहू मनकर वचनकर कायायेंकरी
मिठामिदुक्कडं ॥ ❀ ॥ इति सामायिक पोसहपारवागाथा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिरिथंनणयठियपाससामिणो । सेसतित्थसामीणं ।
तित्थसमुन्नयकारणं । सुरासुराणंच सबेसिं ॥ १ ॥ एसमहं
सरणत्थं । कानसग्गं करेमि । सत्तीए नत्तीए गुणसुठियस्स ।
संघस्स समुन्नयनिमित्तं ॥ २ ॥ ❀ ॥ नमोस्तु वर्द्धमा-
नाय । स्पर्द्धमानाय कम्मणा । तज्जया व्याप्त मोहाय ।
परोहाय कुतीर्थिनां ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या । ज्यायः
कमकमलावल्लिं दधत्या । सदृशै रिति संगतं प्रशस्यं ।

कथितं संतु शिवायते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्दित
जंतुनिर्वृतिं । करोति यो जैनमुखांबुदोद्गतः । सशुक्रमासोद्भव
वृष्टिसन्निभो । ददातु तुष्टि मयि विस्तरौ गिरां ॥ ३ ॥
श्वसितसुरजिगंधा लीढभृंगीकुरङ्गं । मुखशशिनमजस्रविभ्रती
याविभ्रतिं । विकचकमलमुञ्जेः सास्त्वचित्यप्रज्ञावा । सकल
सुखविधात्री । प्राणज्ञाजां श्रुताङ्गी ॥ ४ ॥ ❀ इति वीरस्तुतीः ॥

॥ ❀ ॥ परसमयतिमिरतरणिं । जवसागरवारितरणवरत-
रणिं । रागपरागसमीरं । वंदे देवं महावीरं ॥ १ ॥ निरुद्ध
संसारविहारकारी । दुरन्तज्ञावारिगणानिकामं । निरन्तरं
केवलि सत्तमावो । जवावहं मोहजरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेहकारि
कुनयागम रूढगूढ । संमोहपंकहरणामलवारिपूरं । ससार-
सागरसमुत्तरणोरुनावं । वीरागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥
परिमलजरलोचा लीढलोलालिमाला । वरकमलनिवासे हार-
नीहारहासे । अविरलजवकारा गारविहित्तिकारं । कुरुकम-
लकरेमे मङ्गलं देविसारं ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इति वीरस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कमलदलविपुलनयना । कमलमुखी कमलगर्भ
समगौरी । कमलेस्थिता जगवती । ददातु श्रुतदेवतासौख्यं
॥ १ ॥ ज्ञानादिगुणयुतानां । स्वाध्यायध्यान संयमरतानां ।
विदधातुभुवनदेवी । शिवंसदासर्व साधूनां ॥ २ ॥ यस्याः क्षेत्रं
समाश्रित्य । साधुभिः साध्यते क्रिया । साक्षेत्रदेवतानित्यं ।
भूयान्नः सुखदायिनी ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इति स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीसेढीतटनीतटे पुरवरे श्रीस्थंजनेस्वर्गिरौ ।
श्रीपूज्याजयदेवसूरिविवुधा धीशैः समारोपितः । संसक्तः स्तुति
भिर्जलैः शिवफल स्फूर्धतफणापल्लवः । पार्श्वः कल्पतरुः समे

धणेणं दोसबंधणेणं । पडिक्कमामि तिहिंदंमेहिं । मणदंमेणं
 वयदंमेणं कायदंमेणं । पडिक्कमामि तिहिंगुत्तीहिं । मणगु-
 त्तीए वयगुत्तीए कायगुत्तीए । पडिक्कमामितिहिंसल्लेहिं ।
 मायासल्लेणं नीयाणासल्लेणं । मित्रादंसणसल्लेणं । पडिक्कमामि
 तिहिंगारवेहिं । इट्ठीगारवेणं रसगारवेणं सायागारवेणं ।
 पडिक्कमामि तिहिं विराहणाहिं । नाणविराहणाए दंसणविरा-
 हणाए चारित्तविराहणाए । पडिक्कमामि चउहिंकसाएहिं । कोह-
 कसाएणं माणकसाएणं मायाकसाएणं लोहकसाएणं । पडि-
 क्कमामि चउहिंसल्लाहिं । आहारसल्लाए नयसल्लाए मेहुणसल्लाए
 परिग्गहसल्लाए । पडिक्कमामि चउहिंविगहाहिं । इत्थिकहाए
 नत्तकहाए देसकहाए रायकहाए । पडिक्कमामि चउहिंजा-
 णेहिं । अट्टेणंजाणेणं रुद्धेणंजाणेणं धम्मेणंजाणेणं सुक्केणंजा-
 णेणं । पडिक्कमामि पंचहिं किरिआहिं । काइयाए । अहि-
 गरणियाए पाउसिआए पारितावणीआए पाणाइवायकि-
 रिआए । पडिक्कमामि पंचहिं कामगुणेहिं । सद्देणं रूवेणं
 रसेणं गंधेणं फासेणं । पडिक्कमामि पंचहिं महवएहिं । पाणाइ
 वायानुवेरमणं मुसावायानुवेरमणं अदिन्नादाणानुवेरमणं मेहु-
 णानुवेरमणं परिग्गहानुवेरमणं । पडिक्कमामि पंचहिंसमई-
 एहिं । इरिआसमिईए नासासमिईए एसणासमिईए आयाणन्नं
 रुमत्तनिक्खेवणासमिईए उवारपासवणं खेलजल्लसंधाणं पारिष्ठा
 वणिआसमिईए । पडिक्कमामि षहिं जीविकाएहिं । पुढविका-
 एणं आउकाएणं तेउकाएणं वाउकाएणं वणस्सइकाएणं तसका-
 एणं । पडिक्कमामि षहिंलेसाहिं । किन्हलेसाए नीललेसाए काउ
 लेसाए तेउलेसाए पउमलेसाए सुक्कलेसाए । पडिक्कमामिसत्तहिं

नयछाणेहिं । अछहि मयछाणेहि । नवाहिं वंनचेरगुत्तीहिं ।
 दसविहेसमणधम्मे । एगारसहिं उवासगपदिमाहि । वारसहिं
 त्रिक्खुपदिमाहि । तेरसहिंकिरिआछाणेहि । चउसदसहिं
 भूयगामेहि । पन्नरसहि परमाहम्मिएहिं । सोलसएहिंशाहाहिं
 सतरसविहे असंजमे । अछारसविहे अवंने । इगुणवीसाए-
 नायज्जयणेहिं । वीसाए असमाहिछाणेहिं । इकवीसाएस-
 र्वलेहिं । वावीसाएपरीसहेहि । तेवीसाएसुअगरुज्जयणेहि ।
 चउवीसाएअरिहंतेहिं । पचवीसाएजावणाहि । उब्बीसाएदसा-
 कप्पववहाराणं उद्देसणकालेणं । सत्तावीसाएअणगारगुणेहि ।
 अछावीसाए आयारपकप्पेहिं । एगुणतीसाए पावसुअप्पसं-
 गेहिं । तीसाएमोहणिअ छाणेहिं । इगतीसाएसिद्धाइगुणेहिं ।
 वत्तीसाएजोगसंगहेहिं । तित्तीसाएआसायणाए । अरिहंता-
 णंआसायणाए । सिद्धाणंआसायणाए । आयरिआणंआसाय-
 णाए । उवज्जायाणंआसा० । साहुणंआसा० । साहुणीणंआ-
 सा० । सावयाणंआ० । सावियाणंआ० । देवाणंआसा० ।
 देवीणंआ० । इहलोगस्सआ० । परलोगस्सआसायणाए ।
 केवलिपन्नत्तस्सधम्मस्सआ० । सदेवमणुआसुरस्सलोगस्सआ० ।
 सब पाण भूअ जीव सत्ताणं आसायणाए । कालस्सआ० ।
 सुअस्सआसा० । सुयदेवयाएआसा० । वायणारिअरसआ० ।
 जंवाइहं । वच्चामेलिअं । हीणक्खरिअं । अच्चक्खरिअं । पयहीण ।
 विणयहीणं । जोगहीणं । घोसहीणं । सुद्धुदिअं । दुद्धुपदिअियं ।
 अकाले कउ सज्जाउ । कालेनकउ सज्जाउ । असज्जाइए ।
 सज्जाइअं । सज्जाइए नसज्जाइयं । तस्समिअमिदुक्कडं ॥
 णमोचउवीसाए तित्थयराणं । उसजाइ महावीरपज्जवसाणाणं ।

इणमेव निग्गंथं पावयणंसच्चं । अणुत्तरं । केवलियं पण्णिपुत्तं ।
 नेअणुत्तं । संसुद्धं । सल्लगत्तणं । सिद्धिमग्गं । मुत्तिमग्गं । नि-
 ज्जाणमग्गं । निव्वाणमग्गं । अवितहमविसंधि । सब्बुक्खपही-
 णमग्गं । इत्थिअजीवा । सिज्जंति । बुज्जंति मुच्चंति । परि-
 निव्वायंति । सब्बुक्खाणमंतंकरंति । तंधम्मं सदहामि । पत्ति-
 आमि । रोएमि । फासेमि । पालेमि । अणुपालेमि । तंधम्मंस-
 दहंतो । पत्तिअंतो । रोअंतो । फासंतो । पालिंतो अणुपालिंतो ।
 तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स । अभुत्तिअमि । आराहणाए ।
 विरत्तमि विराहणाए । असंजमं परिअ्राणामि । संजमं उवसं-
 पज्जामि । अबंजं परिअ्राणामि । बंजं उवसंपज्जामि । अकप्पं
 परिअ्राणामि । कप्पं उवसंपज्जामि । अन्नाणं परिअ्राणामि ।
 नाणं उवसंपज्जामि । अकिरिअं परिअ्राणामि । किरिअं उव-
 संपज्जामि । मिच्चत्तं परिअ्राणामि । सम्मत्तं उवसंपज्जामि ।
 अबोहिं परिअ्राणामि । बोहिं उवसंपज्जामि । अमग्गं परि-
 अ्राणामि । मग्गं उवसंपज्जामि । जंसंजरामि । जंचन संजरामि ।
 जं पण्णिकमामि । जंचन पण्णिकमामि । तस्स सब्बस्स ।
 देवसिअस्स । अइअरस्स पण्णिकमामि । समणोहं संजय
 विरय पण्हिय पच्चक्खाय । पावकम्मो । अनियाणो । दिठ्ठि
 संपन्नो । मायामोसविबज्जिअ । अट्ठाइज्जेसु दीव समुद्देसु ।
 पन्नरस कम्मभूमीसु । जावंति केविसाहू । रयहरण गुह-
 पण्णिग्गहधारा । पंचमहवयधारा । अठारसहस्स सीलांगधारा ।
 अक्खयायारचरित्ता । तेसब्बे । सिरसा मणसा । मत्थएणवंदा-
 मि ॥ खामेमि सब्ब जीवे । सब्बे जीवा खमंतुमे । मित्तीमे स-
 ब्बभूएसु । वेरंमज्ज न केणई ॥ १ ॥ एवमहं आलोइअ नंदिअ ।

गरहिअरुगुंभ्रं सम्मं । तिविहेण पम्किंतो । वंदामि जिणे
 चउवीसं ॥ २ ॥ ❀ ॥ इति श्रीसाधुप्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥ ❀ ॥
 ॥ ❀ ॥ सच्चित्त १ । दब २ । विगई ३ ॥ वाहण ४ । तंबो-
 ल ५ । बत्थ ६ । कुसुमेसु ७ ॥ पाणहि ८ । सयण ९ । विले
 वण १० ॥ बंज ११ । दिसि १२ । एहाण १३ । जत्तेसु १४ ॥
 इति चउद नियम गाथा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वंदित्सूत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वंदित्सु सबसिद्धे । धम्मायरिएअर सबसाहूअर । इठा-
 मि पम्किमिउं । सावगधम्माइअररस्स ॥ १ ॥ जोमे वया इअर-
 रो । नाणे तह दंसणे चरित्तेअर । सुहमोअर वायरोवा । तंनिंदे
 तंच गरिहामि ॥ २ ॥ उविहे परिग्गहम्मी । सावजे बहुविहे-
 अर अरंजे । कारावणे अकरणे । पम्किमे देसिअंसवं ॥ ३ ॥
 जंबद्ध मिंदिएहिं । चउहिं कसाएहि अप्पसत्थेहिं । रागेणव
 दोसेणव । तं निंदे तंच गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे
 ठाणेचंक्रमणे अणाजोगे । अनिउगे अनिउगे । पम्किमे ॥ ५ ॥
 संकाकंखविगंगा । पसंसतहसंथवो कुलिगीसु । सम्मत्तस्सइ
 अररे । पम्किमे ॥ ६ ॥ उक्काय समारंजे ॥ पयणेअर पयावणेअर
 जेदोसा । अत्तठाय परठा । उन्नयठाचेव तंनिंदे ॥ ७ ॥ पंच-
 एहमाणवयाणं । गुणवयाणंचतिएहमइअररे । सिक्खाणंच
 चउएहं ॥ पम्किमे ॥ ८ ॥ पढमे अणुवयम्मी । थूलगपा-
 णाइवायविरईउं । आयरिएअर मप्पसत्थे । इत्थपमायप्पसंगेणं
 ॥ ९ ॥ बहबंधउविठ्ठेए । अइजारेजत्तपाणवुठ्ठेए । पढम वयस्स
 इअररे । पम्किमे ॥ १० ॥ वीए अणुवयम्मी । परिथूलग
 अलिअवयण विरइअरो । आयरिएअर मप्पसत्थे । इत्थपमाय

प्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहस्सारहस्सदारै । मोसुवएसेअ कूलेहे-
 अ ॥ बीअवयस्सइअरे । पम्किमे० ॥ १२ ॥ तइएअणवय
 म्मी । थूलगपरदब्बहरणविरइत्त । आयरिअमप्पसत्थे । इत्थ
 पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहरुप्पत्तगे । तप्पफिरूवे विरुद्ध
 गमणेअ । कूरुत्तुल्लकूरुमाणे । पम्कि० ॥ १४ ॥ चत्तथेअणवय
 म्मी । निच्चं परदारगमण विरइत्त । आयरिअमप्पसत्थे । इत्थ-
 पमा० ॥ १५ ॥ अपरिग्गहीया इत्तर । अणंग वीवाह तिव-
 अणुरागे । चत्तथवयस्सइअरे । पम्कि० ॥ १६ ॥ इत्तोअ-
 णव्वए पंचमम्मी । आयरिअमप्पसत्थंमि । परिमाणपरिञ्जेए ।
 इत्थ० ॥ १७ ॥ धणधन्नखित्तवत्थु रूपसुवणेअ कुविअ परि-
 माणे । दुप्पएचत्तप्पयम्मी पम्कि० ॥ १८ ॥ गमणस्सय परि-
 माणे । दिसासुत्तद्धं अहेयतिरिअंच । बुद्धिस्सइ अंतरद्धा ।
 पढमम्मिगुणव्वएनिंदे ॥ १९ ॥ मज्झमिअ मंसंमिअ । पुप्फे-
 अ फलेअ गंधमल्लेअ । उवन्नोग परीन्नोगे । बीअम्मिगुणव्वए
 निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पम्फिद्धे । अप्पोलदुप्पोलिएअ आहारे ।
 तुत्तोसहिन्नक्खणया । पम्कि० ॥ २१ ॥ इंगाली वणसामी ।
 ज्ञानी फोमीसु वज्जए कम्मं । वाणिज्जं चेव दंत लक्ख । रस
 केस विसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खुज्जंतपिल्लणंकम्मं । निच्छंठ-
 णंच दवदाणं । सरदह तलावसोसं । असईपोसंच वज्जिजा
 ॥ २३ ॥ सत्थग्गिमूसल जंतग । तणकठेमंतमूलत्तेसिज्जे ।
 दिस्सेदिवावएवा । पम्कि० ॥ २४ ॥ एहाणवट्टण वन्नगविलेवणे
 सहरूवरसगंधे । वत्थासणअन्नरणे । पम्कि० ॥ २५ ॥ कंदप्पे
 कुक्कइए । मोहारि अहिगरण न्नोगअइरित्ते । दंममिअण्ठाए
 तईअम्मिगुणव्वएनिंदे ॥ २६ ॥ तिविहेदुप्पणिहाणे । अणवठा

एतहासइ विहुणे । सामाइय वितहकए । पढमे सिक्खा
 वएनिंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे । सदेरूवेअ पुग्गलक्खेवे ।
 देसाविगासिअम्मि । वीएसिक्खावएनिंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चार-
 विही । पमायतह चेव ज्ञोयणाज्जोए पोसहविहिविवरीए । तइ
 एसिक्खावएनिंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्तेनिक्खमणे ॥ पिहणेववएस-
 मवरेचेव । काजायक्कमदाणे । चउत्थेसिक्खावएनिंदे ॥ ३० ॥
 सुहिएसुअ दुहिएसुअ । जोमे असंजएसुअणुकंपा । रागेणव-
 दोसेणव । तंनिदेतंचगरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसुसंविजागो । नक
 उ तव चरण करण गुत्तासु । संतेफासुअदाणे । तंनिदे तंचगरिहा-
 मि ॥ ३२ ॥ इहलोएपरलोए । जीविअमरणेअ आससपउगे ।
 पंचविहो अइआरो । मामअं हुज्जमरणंते ॥ ३३ ॥ काएण
 काइअस्स । पक्कमे वाइअस्सवायाए । मणसा माणसिअस्स ।
 सबस्सवयाइयारस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवयसिक्खागारवेसु । सणा
 कसाय दंसेसु । गुत्तीसुअ समिईसुअ । जोअइआरो तंनिंदे ॥
 ॥ ३५ ॥ सम्मदिठीजीवो । जइविहुपावं समायरेकिचि । अप्पो
 सिहोइवंधो । जेणननिद्धंधसंकुणइ ॥ ३६ ॥ तंपिहुसपक्कमणं ।
 सप्परिआवंस उत्तरगुणंच । खिप्पं उवसामेई । वाहिब सुसि
 विखउ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहाविसं कुठगयं । मंतमूल विसारया ।
 विज्जाहणंत मंतेहि । तोतं हवइ निविसं ॥ ३८ ॥ एवं अछविहं
 कम्मं । राग दोस समाज्जिअं । आलोअंतोअ निदंतो । खिप्पं
 हणइसुसावउ ॥ ३९ ॥ कयपावोविमणस्सो । आलोइअनिदिअ
 गुरुसगासे । होइअइरेगलहुउ । उहरिअन्नरुवन्नारवहो ॥ ४० ॥
 आवस्सएण एएण । सावउ जइवि बहुरउ होइ । उक्खाणमंत
 किरिअं । काही अचिरेणकालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणाबहुविहा

सह० । पञ्च० । दिसा० । साहु० । सब० । एकासणं व्यासणं (वा)
 पञ्चक्खाइ । उविहं । तिविहंपि आहारं । असणं । खाइमं ।
 साइमं । अण्ण० । सह० । सागारि आगारेणं । आनट्टणपसारेणं ।
 गुरुअण्णुठाणेणं । पारि० । मह० । सब० । वो० देसावगासियं ।
 इत्यादिपूर्ववत् ॥ ४ ॥ इति एकासण व्यासण पञ्चक्खाण ॥
 आगार ॥ ८ ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥

॥ * ॥ पोरसिं साढपोरसिं (वा) पञ्चक्खाइ । उग्गएसूरे चउ
 विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्ण० ।
 सह० । पञ्च० । दिसा० । साहु० । सब० । एकासणं एगठाणं
 पञ्चक्खाइ । उविहं । तिविहं । चउविहंपि आहारं । असणं ।
 खाइमं । साइमं । अन्न० । सह० । सागारि आगारेणं । गुरुअ
 ण्णुठाणेणं । पारि० । मह० । सब० । वोस० । देसाव० । इत्यादि
 पूर्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकठाणा पञ्चक्खाण । आगार ॥ ७ ॥ * ॥

॥ * ॥ पोरसिं साढपोरसिं (वा) पञ्चक्खाइ । उग्गएसूरे चउ
 विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्ण० ।
 सह० । पञ्च० । दिसामो० । साहु० । सब० । आयंबिलं पञ्चक्खाइ ।
 अण्णत्थ० । सह० । लेवालेवेणं । गिहत्थसंसिठेणं । उक्खित्तवि
 वेगेणं । पडुच्चमक्खियेणं पारिष्ठा० । मह० । सब० । एकासणं
 पञ्चक्खाइ । तिविहंपि आहारं । असणं । खाइमं । साइमं ।
 अण्ण० । सह० । सागारिआगारेणं । आनट्टणपसारेणं । गुरुअण्णु
 ठाणेणं । पारिष्ठा० । मह० । सब० । वोसरइ ॥ ६ ॥ * ॥

इति आंबिल पञ्चक्खाण । आगार ॥ ८ ॥

॥ * ॥ पोरसिं साढपोरसिं (वा) पञ्चक्खाइ उग्गएसूरे । च
 उविहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्ण

त्थ० । सह० । पञ्च० । दिसा० । साहु० । सब० ॥ निविगइयं
 पञ्चखाइ । अन्न० । सह० । जेवाजेवेणं । गिहत्थसंसिठेणं ।
 उक्खित्तविवेगेणं । पडुच्चमक्खिएणं । पारि० । मह० । सब० ॥
 एकासणं पञ्चखाइ । तिविहंपि आहारं । असणं । खाइमं ।
 साइमं । अन्न । सह । सागा० । आउट्ट० । गुरु० । पा० । मह० ।
 सब० । वोसरइ ॥ देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥

इति निवीपञ्चखाण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सूरे उग्गए अप्रत्तठं पञ्चखाइ चउविहंपि आहारं ।
 असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण० । सह० । मह० । सब० ।
 वोसरइ ॥ देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥

इति चउविहार उपवास पञ्चखाण ८ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सूरे उग्गए अप्रत्तठं पञ्चखाइ । तिविहंपि आहारं ।
 असणं । खाइमं । साइमं । अण० । सह० । पाणहार पोरसिं ।
 साढपोरसिं । पुरमट्टं । अवट्टंवा । पञ्चखाइ । अण० । सह० ।
 पण्ण० । दिसा० । साहु० । सब० । वोसरइ । देसावगासियं इत्या
 दि पूर्ववत् ॥ ❀ ॥ इति तिविहार उपवास पञ्चखाण ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पोरसिं साढपोरसि पुरमट्टं अवट्टं वा पञ्चखाइ । उग्ग
 एसूरे चउविहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अ
 ण० । सह० । पञ्च० । दिसा० । साहु० । सब० । एकासणं एगछाणं
 दत्तियं पञ्चखाइ तिविहं चउविहंपि आहारं । असणं । पाणं ।
 खाइमं । साइमं । अण० । सह० । सागा० । गुरु० । मह० ।
 सब्ब० । वोसरइ । विगइउ ॥ देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥
 इति दत्तिपञ्चखाण ॥ ९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दिवसचरमं पञ्चखाइ चउविहंपि आहारं । अस

एणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्ण० । सह० मह० । सब्ब० ।
वोसरइ ॥ इति दिवसचरमपच्चक्खाण १० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दिवसचरमं पच्चक्खाइ डुविहंपि आहारं । असणं ।
खाइमं । अण्ण० । सह० । मह० । सब्ब० । वोसरइ ॥

इति दिवसचरमडुविहार पच्चक्खाण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पाणहारदिवसचरमं पच्चक्खाइ अण्ण० । सह० ।
मह० । सब्ब० । वोसरइ ॥ ❀ ॥ इति पाणहार पच्चक्खाण० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ञवचरमं पच्चक्खाइ । तिविहं चउविहंपि आहारं ।
असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्ण० । सह० । मह० ।
सब्ब० । वोसरइ ॥ आगार ॥ ४ ॥ (ञवचरम दोआगार का पिण
होय) ॥ इति ञवचरमपच्चक्खाण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तथा गंठसहि । मुंठसहि । अंगुठसहि । प्रमुख अ
ग्निग्रह पच्चक्खाणके पिण यह च्यार आगार । अण्ण० । सह० ।
मह० । सब्ब० । वोसरइ । पांचमो चोलपट्टागारेणं सो साधुके
होय ॥ ❀ ॥ इति अग्निग्रह पच्चक्खाण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अहसं ञंते । तुम्माणं समीवे । देसावगासियं पच्च
क्खामि । दवउ । खित्तउ । कालउ । ञावउ । दव्वउणं देसा
वगासियं । खित्तउणं इत्थवा अणत्थवा । कालउणं महत्तधा
रणापमाणे । जावनियमं पच्चक्खामि । ञावउणं जावगहेणं
नगहिज्जामि । उलेणं नउलिज्जामि । अण्णकेविरायंकेणवा ।
एसो परिणामो नपन्निवज्जइ । ताअग्निग्रह । अण्णत्थणाओ
गेणं सहस्सागारेणं । महत्तरागारेणं । सब्बसमाहिवत्तियागारे
णं । वोसराइ ॥ इति देसावगासीपच्चक्खाण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तथा साधु पच्चक्खाणकरै । तवदेसावगासी नहिं

पचखै । अरुतिविहार उपवासमें । आविलमें निवीमें एकासण
प्रमुखमें पाणस्सका ६ आगारपचखै (सो दिखावेहै) पाणस्स॥
जेवाडेणवा । अजेवाडेणवा अत्थेणवा वहलेणवा ससित्थेणवा
असित्थेणवा बोसरइ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ प्रत्याख्यान आगारार्थ लिख्यते ॥

॥ उगए सूर नमोकार सहियं पचक्खाइ चउविहंपि आहारं । (अर्थ)
इहां गुरु कहै पचक्खाइ शिष्य कहै पचक्खामि ॥ पचक्खाइका अर्थ सर्व-
ठिकाणें अंगीकार वाचक । जाणनो (जैसे) सूरज उदय हुवावाइ । नवका
रसी व्रत अंगीकार करूं । यह पचक्खाण (महूर्त) दोघडी काल उपरांत ।
जहां तक नवकार गुणकर पारूं नहि । तहां तक (चउवि०) चारु आहारनो
त्यागरूप व्रत अंगीकार करूं ॥ (चार प्रकारको आहार लिखते हैं) ।
असण ॥ पाण ॥ खाइमं ॥ साइम । (असणं व्याख्या) असण कहतां
अन्न । चोषा ज्वारि वरटी मूंग चिणा गहु प्रमुख सर्वधान । सत्तु गहुंको
आदिलेके सर्व तरैको आटो ॥ सर्व तरैका साग । लाइ
प्रमुख सर्वपक्वान । सूरणादिक सर्वकंद । दूध दही मांनदिक । सर्वक-
वली वस्तु । हींग विरहाली । लूण सेंधवादिक । इत्यादिक सर्व
अशणमांहि जाणना ॥ १ (पाणं । व्याख्या) आण जवोटक
तुषोदक तंडुलोदक उष्णीदक शुद्धोदक सर्वतरैकाजल पाण आगारमें
जाणना ॥ २ ॥ (खाइमं । व्याख्या) खादिम । सुखनी नालेर
खजूर द्राख सेक्योधान आंवा केला काकनी अखरोट खारक विदाम
प्रमुख सर्व जातनोमेवो । सर्व जातनाफल ॥ खादमजाणना ॥ ३ ॥
(साइमं । व्याख्या) स्वादिम । तंबोल सूठि मिरच पीपर हरमै वहेना
तुलसी कसेलो काथो जेष्ठीमधु तज । तमालपत्र उलायची लवंग वायवि-
डंग । अजमो अजमोद । कुलिजण चिणकवोवा कचूर नागरमोथ पांन
सुपारी पुहकरमूल जवासामूल वावची बाउलतालि धवतालि खेजूर
बाल खयरमार ए सर्वस्वादिम जाणना ॥ ४ ॥ अब अनाहार लिखतेहैं ॥
नांबतालि मूल पांन सिली गोसुत्र गिलोय किरायतो अतिविष कूडन सुक

डिराख रोहिणीमाल पींपलामूल बच धमासुन्न रीगणी एलियो चिणोठी कयर
 बोरिनामूल (इत्यादि) अणाहार पिण इन्नासंयुक्त भोरुना (यहजो) इन्ना
 विना अनिष्ट पणें लीजै । जबतो अनाहारहै । जो इन्नासंयुक्त आवता ली-
 जै तो आहार को दूषण लगै । (अबपञ्चक्खाणके आगारोंका अर्थ लिखते
 हैं) जिस पञ्चक्खाणमें जितने आगार होय ॥ सो आगार रखके पञ्चक्खाण
 नियम करै ॥ अन्नत्थणा जोगेणं ॥ १ ॥ (व्याख्या) अनाजोगटाली ।
 अनाजोग कहियै अत्यन्त विस्मृत होणेंसें) किया जो (पञ्चक्खाण
 यादनरहै । चूलकर कोई चीज मुंहमें घाली होय वा खाणेंमें आई होय
 पिण जाण्यां पीठे तत्काल नाख देवै तो पञ्चक्खाण जाजै नही । जाण्यां
 पठे प्रहण करै तो पञ्चक्खाण जाजै ॥ १ ॥ पञ्चन्न कालेणं ।
 (व्याख्या) कालकी प्रवृत्तता । आकाशै गई नुडतीहोय । वा
 आकाशै वहलढाया होय । तथा पर्वत प्रमुखकी ओट आजावे । सूरज
 न दीसै । तब प्रमसुं पञ्चक्खाण काल संपूर्ण हुवो जाण कर जोजन
 करै तो व्रत जंग न होय ॥ ३ ॥ सहस्सागारेणं । (व्याख्या) सहसा-
 कार कहियै अत्यन्त उतावलकै जोगे । अथवा । अकस्मात् विलोवतां
 तोलतां घृत प्रमुखनो ठांटो मुखमें । पमे तो । व्रतजंग न होय ॥ २ ॥ दि-
 सा मोहेणं (व्या०) दिशकों अजाणतो वैसे । जो दिशा चूल मनुष्य ।
 पूर्वदिशाकुं पश्चिम दिशि जाणें । इस कारणसें । पञ्चक्खाण काल पूर्ण-
 हुवा विनां जोजन करै तो व्रतजंग न होय ॥ ४ ॥ साहुवयणेणं (व्याख्या)
 साधूकै बचनसे उग्याडा पोरिसी आदिक प्रमसंयुक्त सुणके । पञ्चक्खाण
 काल पूरण हुवो जाण कर जोजन करै तो व्रतजंग न होय ॥ ५ ॥ सब
 समाहि बत्तिया गारेणं (व्याख्या०) पञ्चक्खाण काल पूरण हुवां प्रथम
 हीज अकस्मात् शूलादिक रोग नुपजै । तिससें कदास परिणामोंकी थिरता
 नरहै । आर्त्त रौद्र ध्यान उत्पन्न होय । तब उसरोगीकुं रोग मिटावन वावत
 औषधादिक देवै । वा आपजेवै । तो पञ्चक्खाण जंग नही होय ॥ ६ ॥
 महत्तरागारेणं (व्या०) पञ्चक्खाण पालणेंसें । जितनी कर्मोंकी निर्जरा
 होती है । उसनिर्जरासें अधिक निर्जरा होनेका कारण । और कोई

पुरुषसें वन नहीआवे । औसा जो । चैत्यसंघादि प्रयोजन होनेसें । पञ्चखाण काल पूरण हुवा विनां जोजन करै तो व्रत जंग न होय ॥ ७ ॥ सागारी आगारेणं (व्या०) गृहस्थ देखतां साधु जोजन न करै । औसी जिनराजकी आज्ञाहै । डसीसें कोई साधुनें एकासनादिक पञ्चखाण किया है । जोजन करनेकुं वैठाहै । तिस वखत कोईक गृहस्थ साधु पास आय वेठे । तत्र साधु उस ठिकाणेंसुं उठ कर और-ठिकाणें जायके जोजन करै तो व्रत जंग नहोय ॥ और गृहस्थकों यह आगार ऐसें है) कि जिस पुरुषकी निजर लगती होय तो उस आयां उठि कर और ठिकाणें जोजन करै तो पञ्चखाण जंग नहोय ॥ ८ ॥ आनु-द्वण पसारैणं (व्या०) पगप्रमुख जो एकठे करनेसें । तथा पसारनेसें । थोनासा आसन चल जाय । तो व्रतजंग नहोय ॥ ९ ॥ गुरु अञ्जु-छाणेणं (व्या०) आपका गुरु आपोंसें । तथा । आपसें । कोई वना पुरुष आपोंसें । विनय निमित्तै । एकासणादि व्रतमें । जोजन करतो पिण आसन गोरु उठ खडो होय । तोपिण व्रत जंग नहोय ॥ १० ॥ पारिछाव-णियागारेणं (व्या०) (सर्व पञ्चखाणां मे यह आगार साधुका है) जो आहार नाखणेंसें बहुत जीव विराधना होती जाण कर (गुरु कहै) वह सरस आहार है परठोमति । ऐसी आज्ञा देवे (तो) एकासणादि व्रतधारी साधु । दूसरी वखत आहार करै । तो पिण व्रतजंग नहोय ॥ ११ ॥ लेवालेवेणं (व्या०) जोजन करनेका थाल प्रमुख ज्ञाजन । तिसके मांहि घृतादिक विगय द्रव्यका अंश लगाहै । तिसकुं हाथ प्रमुख सें पूंठगेरा । परंतु किंचित वेमालुमसा रह गया होय । उस ज्ञाजनमें आयंविजादि व्रतधारी जोजन कर लेवे । तो व्रत जंग नहोय ॥ १२ ॥ उक्खित्तविवेगेणं (व्याख्या) आयंविजादि पञ्चखाणमें ॥ नही खार्णे जोग्य जो विगय द्रव्य प्रमुख । (तिसका फरस) खार्णे जोग्य द्रव्यसें किंचित होगया होय । वहखार्णे में आजवै । तो व्रत जंग नहोय । ॥ १३ ॥ गिहत्य संसिद्धेणं (व्या) जोजन पुरुषे जिस सेती । औसा कुडडा आदि ज्ञाजन । विगय प्रमुख द्रव्य सें वेमालुम खरडा होय । प्रत्यरू निजरसें कदाचित्मालुम न होय । जो उस वासणसें जोजन पुरसे

तो व्रत जंग न हो ॥ १४ ॥ पञ्चसुखिणां (व्या०) सर्वथा लूखी
रोटी खाकरापसुख द्रव्य किंचिन्मात्र घृतादिकसुं वेमालुम चौपडनें में आया
होय । परंतु घृतादिक का सवाद मालुम नही पडता होय । जो (नीवी)
पञ्चखाण मध्य ऐसा द्रव्यकुं खाणेंमें आजवेतो व्रतजंग न होय ॥ १५ ॥

॥ इति पंचदशा गाराणां लेशतोऽर्थ संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ दोचेव नमुकारो । आगाराञ्चहुंति पोरमिए । सत्तेवय पुरमहे । एगास
णामि अठेव ॥ १ ॥ सत्तेग छाणस्सओ । अठे वय आयंविळंमि आगारा । पंचे
वयजत्तठे । षण्णाणे चरिमचत्तारी ॥ २ ॥ पंचचत्तरो अजिग्गहे । निवीए
अठ नवय आगारा । अण्णावरणे पंचत्त । हवंति सेसेसु चत्तारी ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ इति आगार संख्यागाथा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण ॥ ❀ ॥

॥ सूत्र अर्थ साचो सरदहुं १ ॥ सम्यक्तमोहनी २ ॥
मिथ्यात्वमोहनी ३ ॥ मिश्रमोहनी ४ ॥ परिहरुं ४ ॥
(यहच्यार पडिलेहण मुहपत्तीखोलतीवखत कही जै) काम
राग १ ॥ स्नेहराग २ ॥ दृष्टिराग ३ ॥ परिहरुं (यह
सातेवोल प्रथम कही जै) । सुगुरु १ ॥ सुदेव २ ॥ सुधर्म ३ ॥
आदरुं ॥ कुगुरु १ ॥ कुदेव २ ॥ कुधर्म ३ ॥
परिहरुं ॥ ज्ञान १ ॥ दर्शन २ ॥ चारित्र ३ ॥
आदरुं । (यहनवपडिलेहणमावै हाथे करीजै) । ज्ञानविरा-
धना १ ॥ दर्शनविराधना २ ॥ चारित्रविराधना ३ ॥
परिहरुं ॥ मनोगुप्ति १ ॥ वचन गुप्ति २ ॥ कायगुप्ति ३ ॥
आदरुं ॥ मनोदंरु १ ॥ वचनदंरु २ ॥ कायदंरु ३ ॥
परिहरुं ॥ (यह नव पडिलेहण जीमणै हाथे करीजै ।
यह पचवीस बोल मुहपत्तीका जाणना ॥ अब पचवीस पडिलेहण
अंगनी कहतेहैं ॥ कृष्णलेस्या १ ॥ नीललेस्या २ ॥

कापोतलेस्या ३ ॥ परिहरुं ॥ माथै निजाडै ॥ रुद्धिगारव
 १ ॥ रसगारव २ ॥ सातागारव ३ ॥ मुखै परिहरुं
 मायाशल्य १ ॥ नियाणाशल्य २ ॥ मिठादंशणशल्य
 ३ ॥ हीयै परिहरुं ॥ क्रोध १ ॥ मान २ ॥ (जीमणैकांधै
 काखे परि०) ॥ माया १ ॥ लोचन २ ॥ (मावे कांधै वगले
 परि०) । हास्य १ ॥ रति २ ॥ अरति ३ ॥ (मावे हाथेपरिहरुं) ॥
 जय १ ॥ शोक २ ॥ दुर्गंगा ३ ॥ (जीमणे हाथे परिहरुं) ॥
 पृथ्वीकाय १ ॥ अप्पकाय २ ॥ तेऊकाय ३ ॥ (मावे पगे परि
 हरुं) । वाऊकाय १ ॥ वनस्पतीकाय २ ॥ त्रसकाय ३ ॥ (जी
 मणैपगे परिहरुं) ॥ इति मुहपत्ती पडिलेहणसंपूर्णम् ॥ * ॥
 ॥ * ॥ थापनाचार्यनी पफिलेहणकरतां ॥ १३ ॥ बोलचिंतवी
 जै सो लिखिते हैं ॥ सुद्धस्वरूपधारुं १ ॥ ज्ञान २ ॥ दर्शन
 ३ ॥ चारित्रसहित ४ ॥ सरदहणासुद्धि ५ ॥ प्ररूपणासुद्धि ६ ॥
 दर्शनसुद्धि ७ ॥ सहित पंचाचारपालुं ८ ॥ पलावुं ९ ॥ अनु
 मोडुं १० ॥ मनोगुप्त ११ ॥ वचनगुप्त १२ ॥ कायगुप्त १३ ॥
 एवं १३ ॥ बोल श्रीधर्मरत्नप्रकरण सूत्रवृत्तौ ॥ * ॥

॥ * ॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥ * ॥

॥ * ॥ आजूणा चार पहर दिवसमें । जोमें जीव विराध्या
 होय । सातलाख पृथ्वीकाय । सातलाख अप्पकाय । सातला
 ख ते ऊकाय । सातलाख वाऊकाय । दशलाख प्रत्येक वनस्प
 ती काय । चवदौलाख साधारण वनस्पतीकाय । दोयलाख
 वेन्द्री । दोयलाख तेंद्री । दोयलाख चउरिद्री । चारलाख देव
 ता । चारलाख नारकी । चारलाख पंचेन्द्रीतिर्यच । चवदौला
 ख मनुष्य । एवं चारगती । चौरासीलाख जीवायोनिमें । जो

कोई जीवहणयो होय । हणायो होय । हणतां प्रते जलोजा
 एयो होय । तेसहू । मन । वचन । कायाइं करी । मिठामिडुक्कडं ॥
 प्राणातिपात १ । मृषावाद २ । अदत्तादांन ३ । मैथुन ४ ।
 परिग्रह ५ । क्रोध ६ । मांन ७ । माया ८ । लोभ ९ । राग
 १० । द्वेष ११ । कलह १२ । अभ्याख्यान १३ । परपरीवा
 द १४ । पैशुन्य १५ । अरति रति १६ । मायामृषावाद १७ ।
 मिथात्वशल्य १८ । एअद्धारहपापस्थानक सेव्या होय । सेवा
 या होय । सेवतांप्रते जलाजाण्यां होय । ते सहू मन वचन
 कायाइं करी । मिठामि डुक्कडं ॥ ❀ ॥ ज्ञान । दर्शन । चारित्र
 पाटी । पोथी । ठवणी । कमली । नवकरवाली । देवगुरुधर्म
 नी आसातनाकरी होय । पनरैकर्मादाननी आसेवनाकरी होय
 राजकथा । देशकथा । स्त्रीकथा । जोक्तकथा । करी होय ।
 और जो कोई परनिंदा ये करी । पाप कियो होय । करायो होय
 करतांप्रते अणुमोद्युं होय । ते सर्व । मन । वचन । कायाये
 करी । दिवसअतीचार आलोयणेंकरी । पम्किमणा माहें
 आलोउं । तस्स मिठामि डुक्कडं । इति लघुअतीचार ॥

॥ ❀ ॥ अथ पाखी चौमासी संवठरी वृद्धअतीचार ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नाणंमिदंसणंमिअ । चरणंमितवेय तहयविरयंमि ।
 आयरणंआयारो । इह एसो पंचहाजणिउं ॥ १ ॥ अर्थः ॥ ज्ञाना
 चार १ ॥ दर्शनाचार २ ॥ चारित्राचार ३ ॥ तपाचार ४ ॥
 वीर्याचार ५ ॥ एवं पांचविधि आचारमांहि जोअतीचार ।
 पक्षदिवसमांहि । सूक्ष्म बादर । जाणतां अजाणतां । हुओ
 होय तेसहू मन वचन कायाइं करी मिठामिडुक्कडं ॥ ❀ ॥ (तत्र

ज्ञानाचारना आठअतीचार ॥ काले विणए बहुमाणे । उवहाणे
तहयनिन्नवणे । वंजण - अत्थतडुजए । अठविहो नाणमायारो
॥ १ ॥ ज्ञान कालवेलामांहि पढिउंगुणिसं नही । अकालेपढिसं ।
विनयहीन । बहुमांनहीन । उपधांनहीन । श्रीउपाध्यायकर्ने ।
नहीपढिसं । अथवा अनेराकर्ने पढिसं । अनेरो गुरु कह्यो ।
व्यंजन अर्थ तडुजय कूडोपढ्यो । देववांदणें । पढिक्कमणें ।
सिज्झाय करतां पढतां गुणतां । कूडोअक्षर कानेंमात्रें । अधिको
उगो । आगलपाठलजणयो । सूत्र अर्थ कूडाजणया । जणीनें
वीसारयो । तपोधनतणेंधर्मे । काजो अणऊधरयै । दांभीअण
पमिलेही । वसती अणसोधी । असिझाई अणोजकालवेला
मांहि । दसवैकालिक प्रमुख । सिद्धांतजणयो गुणयो । योगव
ह्यांपखें जणयो ॥ ज्ञानोपगरण ॥ पाटी पोथी उवणी कवली
सांपना सांपनी वहीदस्तरी उलियाकागलप्रमुख प्रतें । आसातना
हुई । पगलागो । थूकलागो । उसीसैमूंक्यो कनेंढतां आहार
नीहारकीधो । ज्ञानद्रव्य नक्षणउपेक्षणकीधो । प्रज्ञापराधे
विणास्यो । विणसतोउवेख्यो । ढतीसक्तें सार संजाल नकीधी । ज्ञान
वंत प्रतें मठरवह्यो । अवज्ञा आसातना कीधी । कोईप्रतें जणतां
गुणतां प्रद्वेष मत्सर अंतराय अपघातकीधो । मतिज्ञान ।
श्रुतिज्ञान अवधिज्ञान । मनपर्यवज्ञान । केवलज्ञान । ए पांच
ज्ञानतणी । असद्वहणाकीधी । कोई तोतलो वोवमोहस्यो वितक्यो ।
आपणा जाणपणातणो गर्वचिंतव्यो ॥ ❀ ॥ अष्टविधज्ञा
नाचारविषय जोअतीचार । पक्षदिवसमांहि । सूक्ष्मवादर
जाणतां अजाणतां हुवोहोय । तेसहू मन वचन कायाइंकरी
मिठ्ठामिडुक्कं ॥ ❀ ॥ दशनाचारनाआठअतीचार ॥ ❀ ॥

निस्संकिय निक्कंखिअ । निवितिगिढा अमूढ दिठीअ । उववू
हथिरीकरणे । वल्लपजावणे अठ ॥ १ ॥ देवगुरुधर्मतणेंविषे
निस्संकपणोनकीधो । तथाएकांत निश्चयधरयो नही । सगलाई
मत जलाणे । एहवी श्रद्धाकीधी । धर्मसंबंधियाफलतणें विषे ।
निःसंदेहबुद्धिधरीनही । चारित्रिया साधु साधवीतणा मलिमली
नगात्रदेखी । दुगंठाजपजावी । मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रजावना
देखी । मूढदृष्टि पणोकीधो । संघमांहे गुणवंततणी । अनुप
वृंहणा । अस्थिरीकरणं । अवात्सल्य अप्रीति अज्ञक्ति चिंतवी ।
संघमांहे थिरीकरण । वात्सल्यशक्तिठतें प्रजावनानकीधी ।
देवद्रव्यविणासिउ । विणसतुं उवेषीउ । ठतीशक्तें सारसं
जाल नकीधी । साधर्मिकस्युं कलहकर्मकीधो । जिनजवनतणी
चौरासी आसातनाकीधी । गुरुप्रतें तेतीस आसातना कीधी ।
अधौत वस्त्रे देवपूजाकीधी । त्रिहुंठामपाखे देवपूज्या । वासकूपी
कलसतणो ठबकोलागो । मुखतणीवाफलागी । ठवणारिय
हाथ थकी पमिउ । पमिलेहवो वीसारयो । नवकरवालीनें पगलागो
॥ * ॥ दर्शनाचार विषय जोअतीचार० ॥ ३ ॥ * ॥

॥ * ॥ चारित्राचारना आठअतीचार ॥ पणिहाणयोगजुत्तो ।
पंचहिंसमईहिं तिहिंगुत्तीहिं । एस चरित्तायारो । अठविहो होइ
नायवो १ ॥ इरियासुमती १ ॥ ज्ञाषासुमती २ ॥ एषणासुमती
३ ॥ आयाणजंरुमत्तनिकखेवणासुमती ४ ॥ उच्चारपासवणखे
लजल्लसंधाणपारिठावणियासुमती ५ ॥ मनोगुप्ती १ ॥ वचनगुप्ती
२ ॥ कायगुप्ती ३ ॥ एवं पंचसुमती तीनगुप्ती । रूमीपरें पाली
नही ॥ * ॥ साधुतणेंसदैव अष्टविध चारित्राचार विषईउजिको
अतीचार० ॥ ४ ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥

॥ ❀ ॥ विशेषतः श्रावकतणे धर्मं श्रीसम्यक्तमूल बारहव्रत
 श्रीसम्यक्ततणा पांच अतीचार ॥ ❀ ॥ संका कंख विगंठा । पसंत
 तहसंथवो कुलिगीसु ॥ संका श्रीअरिहंत तणी । बल अति
 सय ज्ञानलक्ष्मी गांजीर्यादिकगुण । सास्वतीप्रतिमा । चारित्रि
 याना चारित्र । जिनवचनतणो संदेहकीधो । (आकांक्षा) ब्रह्मा
 विष्णु महेश्वर क्षेत्रपाल गोगो गोत्रदेवता ग्रहपूजा विणायग ।
 हनुमंत । इत्येवमादिक । ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ । देव
 देहराना प्रजावदेखी । रोगि आतंकै । इहलोक । परलोकार्थे पू
 ज्या मान्या । बौद्ध सांख्यादिक सन्यासी । जरमा । जगत ।
 लिगिया । योगी । दरवेश । अनेराई दर्शनियानो । कष्टमंत्र
 चमतकारदेखी । परमार्थ जाण्यांविन चूल्या । अनुमोद्या ।
 कुशास्त्रसीख्या । सांजल्या । सराध । संवठरी । होली ।
 बलेव । माहीपूनिम । अजापडिवा । प्रेतबीज । गोरत्रीज ।
 विनायगचोथ । नागपांचम । जूलणाठठ । शीलसातम । द्रो
 आठम । नउली नवम । अहवदसम । व्रतइग्यारस । वठ
 बारस । धनतेरस । अनंतचौदस । आदित्यवार । उत्तराइण ।
 नवोदक । ज्यागजोगउतारणा कीधा । पीपलपाणीघाल्या । घ
 लाव्या । घरवाहिर । कूई तलाव नदी समुद्र कुंभपुन्यहेतु
 स्नानकीधा । दांनदीधा । ग्रहण शनीश्वर माहमास नवरात्रि
 नाहिया । अजाणनाथाप्या । अनेराई व्रतोलाकीधा कराव्या
 विचिकिठा । धर्मसंबन्धियाफलतणो संदेहकीधो । जिणअरि
 हंत । धर्मनाआगर । विश्वोपकार सागर । मोक्षमार्ग दातार ।
 देवाधिदेववुद्धै सुद्धजावै नपूज्या नमान्या । महातमाना जात
 पाणीतणी दुगंठाकीधी । कुचारित्रिया देखी । चारित्रियाऊप

रि अज्ञावहुत । मिथ्यात्वीतणी प्रज्ञावना देखी । प्रसंसाकीधी ।
 प्रीतिमांसी । दाक्षिण्यलगे तेहनोधर्म मान्युं ॥ * ॥ श्रीसमकित
 विषय । जो अतीचार । पक्षदिवसमांहि । सूक्ष्म वादर
 जाणतां अजाणतां हुत होय ते सहू मन वचन कायाइंकरी मि
 ष्टामिदुक्कडं ॥ १ ॥ * ॥ पहिले प्राणातिपात विरमणव्रतें पांच
 अतिचार ॥ * ॥ वह बंध ठविष्ठेए । अइजारेत्तपाणवुष्ठेए० ।
 द्विपद चौपद प्रतें रीस वसें गाढोघान प्रहारघाल्यो । गाढे बंध
 नवांध्या । घणें नारपीड्या । निर्लाभन कर्मकीधा । चारपांणी
 तणी वेला सारसंज्ञालनकीधी । लहिणेंदेणें किणही प्रतें लंघा
 व्युं । तेणें नूखे आपणजीम्या । अणगलपाणी वावरघो । रूमै
 गल्यो नही । गलाव्योनही । अणगलपांणीजील्या । लूगमा
 धोया । ईंधण अणसोध्योजाल्युं । साप कानखजूरा । सुलह
 ला । माकरु । जूआं । गोगिंमा । साहतां मूआंदूषव्यां । रूडै
 थानकनमूंक्या । कीडी । मकोमी । उदेही । घीवेली । कातरा
 चूमेलि । पतंगिया । मेरुका । अलसिया । ईली । कूति ।
 मांस । मसा । बगतरा । माखीप्रमुख । जेकेईजीव । विणठा
 चांपिया । दूहव्या । माला हलावतां । पंखी काग चिरुकला
 ना ईमा फूटा । अनेरा एकेंद्रियादिक जिकेजीव । विणठा ।
 चांप्या । दूहव्या । हालतां । चालतां । अनेरुं कांइकामकाज
 करतां विडंसपणुं कीधूं । जीवरुकरूडै नकीधी । संखारोसूक
 व्यो । सुल्याधान तावडैदीधा । दलाव्या । नरडाव्या । खाट
 लातावमैजाटक्या । मूंक्या । मूंकाव्या । जीवाकुलनूमिनीपावी ।
 बासीगार राखी । रखावी । दलणें खांडणें नीपणें । रूडी जय
 णा नकीधी । आठमचउदसना नियमजागा । धूणीकरावी ॥

पहिला प्राणातिपातव्रतविषईउ । अनेरो० ॥ १ ॥ ❀ ॥ बीजो थूल
मृषावाद विरमणव्रतें । पांचअतीचार ॥ ❀ ॥ सहस्सारहस्स
दारे । मोसुवएसेय कूडलेहेय ॥ सहसाकार । किणएकप्रतें ।
अयुक्तोआलदीधो । किणएकप्रतें । एकातें वातकरतांदेखी ।
तुह्ने तो राजविरुद्धचितवोगो । इत्यादिक कहुं । स्वदारमंत्र
चेदकीधो । अनेराई किणहीनो । मंत्र आलोचमर्मप्रकास्यो ।
किणहीनें कूडी बुद्धिदीधी । कूडो लेखलिख्यो । कूडीसाखज
री । थापणमोसोकीधो । कन्या । ढोर । गो । चूमि । संबंधि
या । लहणें । दयणें । व्यवसायवाद वढावढिकरतां । मोटको
जूठ वोल्युं । हाथ पग जणी गालदीधी । करमकामोज्या ।
अधर्मवचन बोल्या ॥ ❀ ॥ बीजे मृषावादव्रत० ॥ २ ॥ ❀ ॥
तीजे अदत्तादानविरमणव्रतना पांच अतीचार ॥ तेनाहडप्प
उंगे । घरबाहिर खेत्र खलैपराईवस्तु । अणमोकलावी । लीधी
दीधी । वावरी । चोरीनीवस्तु मोललीधी । चोरधामीत प्रतें
संबलदीधुं । संकेतकहुं । विरुद्ध राज्यातिक्रमकीधो । नवापु
राणा सरसविरस सजीव निर्जीव वस्तुतणा जेजसंजेज कीधा
खाटै तोल मान माप बुहत्या । माणचोरीकीधी । साटे लांच
लीधी । माता पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची । जूदीगांठ
कीधी । किणहीनें लेखैपलेखे जूलव्युं । पडीवस्तु उलवीलीधी
तीजे अदत्तादान व्रत० ॥ ३ ॥ ❀ ॥ चौथे स्वदारसंतोषमैथुनव्रतें
पांच अतीचार ॥ अपरिग्गहियाइत्तर । अणंग वीवाह तिष्ठ
अणुरागे ॥ अपरिग्गहीतागमन । इत्वर परिग्गहीतागमन ।
विधवा । वेस्या । स्त्रीकुलांगना । स्वदार सोकतणें विषे ।
दृष्टिविपर्यासकीधी । सरागवचन बोल्या । आठम चउदस

अनेराई पर्व तिथितणा नियमजागा । घरघरणा कीधा । करा
 व्या । अनुमोदीया । कुबिकल्प चितव्या । अनंगक्रीमा कीधी ।
 परायाविवाहजोड्या । कामजोग तणै विषै तीव्रानिलाषकीधो ।
 कुस्वप्नलाधा । नटविटपुरुषसुं हासुंकीधुं ॥ * ॥ चौथेमें
 थुनव्रतवि० ॥ ४ ॥ * ॥ पांचमेंपरिग्रह परिमाणव्रतैपांचअति
 चार । धण धन्नखित्तवत्थु । धनधान्य खेत्र वस्तु रूप सुवर्ण
 कुप्प द्विपद चतुष्पद नवविध परिग्रहतणा । नियम उपरांत
 वृद्धिदेखी । मूर्खालगै संक्षेपनकीधो । माता पिता पुत्र कलत्रा
 दिक्कतणै लेखैकीधो । परिग्रहपरिमाणलेई पढ्यो नही । पढी
 वीसारिउ । नियम वीसारिया ॥ पांचमें परिग्रहपरिमाण व्र०
 ॥ ५ ॥ * ॥ ठठेदिगविरमणव्रते पांच अतीचार ॥ * ॥ गमण
 रसय परिमाणे । ऊर्ध्वदिसि । अधोदिसि । तिर्यग्दिसि । जाय
 वाआयवातणो नियम जे कोई अजाणैजागो । एकगमा संको
 डी । बीजी गमावधारी । विस्मृतिलगै । अधिकचूमिगया । पा
 ठवणी आधी मोकली ॥ * ॥ ठठेदिग्व्रतवि० ॥ ६ ॥ * ॥
 सातमें जोगो पजोगपरिमाणव्रत ॥ जेहना जोजनआश्री पांचअ
 तीचार ॥ अने कर्म हुंती १५ ॥ एवं २० अतीचार ॥ * ॥ सच्चि
 त्तै पम्बुद्धे । अपोलडुपोलयंचआहारे ० ॥ सच्चित्ततणै नियम
 लीधै अधिक सच्चित्तलीधुं । तथा सच्चित्तमिलीवस्तु । अपक्का
 हार । डुपक्काहार । तुडोषधीतणोचहणकीधुं । होलाउंबी पहुं
 क काकडीचरुथाकीधा । सुल्याधानप्रमुख चहण कीधा ॥ स
 च्चित्तदवविगइ । पाणह तंबोलवत्थ कुसुमेसु । वाहणसयणविले
 वण । बंजदिसिएहाणचत्तेसु ॥ १ ॥ एचवदै नियम । दिनप्रतें
 संजारयासंहेप्यानही । लेईनियम जांग्या । बावीस अजक । व

तीस अनंतकायमांहि । आदो मूला गांजर पींमालू सूरण सेल
 रा । काचीआंबली । गोल्हांखाधा । चोमासा प्रमुखमांहें । वा
 सो कठोलनीरोटी खाधी । त्रिहुंदिवसनो दहीलीधुं । मधु म
 हुडा माखण माटी । वेंगण पीलू पीचू पपोटा । पीपी विष ।
 हीम । करहा । घोलवना । अणजाण्याफल ठीवरुं । अथा
 णूं । आमण बोर काचुं मीतुं । तिल । खसखस । काचाकोठ
 वडाखाधा । रात्रीजोजन कीधुं । लगवगतीवेलाइं व्यालूकीधुं ।
 दिवसउग्यांविणसीराव्या । तथा पनरैकम्मर्मा दान । इंगालीक
 म्मे । बणकम्मे सामीकम्मे । जामीकम्मे । फोमीकम्मे । दंत
 वाणिज्ये । रसवाणिज्ये । केशवाणिज्ये । विषवाणिज्ये । जंत
 पीलणकम्मे । निर्लैणकम्मे । दवग्गिदावणया । सरदहतलावसो
 सणया । असईपोसणया । पांचवाणिज्य । पांचकम्मं । पांचसा
 मान्य । महारंज लीहाला कराव्या । ईटवाहनीवाहपचाव्या ।
 धाणी चिणा पकवान करीवेच्या । वासीमाखणतपाव्या । अं
 गीठाकीधा । कराव्या । तिलादिकसंचीया । फागुणमासउपरां
 तरारुया । कूकमा । सूडाप्रमुखपोस्या । अनेरुंजैकोईबहुसाव
 द्य कठोर कम्मर्मादिक समाचरयो ॥ ❀ ॥ सातमाजोगोपजोगव्रत
 विष० ॥ ❀ ॥ ७ ॥ ❀ ॥ आठमा अनर्थं दंरु विरमणव्रतना पांच
 अतीचार ॥ कंदप्पे कुक्कइए० । कंदर्पजगैविटनीपरै । हास्यकुतू
 हल मुखादि अंगकुचेष्टाकीधी । मूरखपणालगै । किणहींनैअ
 सबद्धवाक्य बोल्या । खांडा । कटारी । कुसि । कुहामा ।
 रथ । ऊखल । मूसल । अगन । घरटीआदिक । सजकरी
 भेल्या । मांग्या आप्या । कनकवस्तुदोरलेवराव्या । अनेरुंकांड
 पापोपदेसदीधुं । अंधोल नाहण दांतण पगंधोअणपाणी ।

तेलअधिकआणया । हींडोलैहीच्या । राजकथा । देसकथा ।
 चुक्तकथा । स्त्रीकथा । पराईवात कीधी । आर्त्त रोद्र ध्यान
 ध्याया । कर्कसबचन बोलया । करडकामोडया । संजेडालाया
 जेंसा सांढकूकड मींढा श्वानादिजुता कलहकरताजोया खा
 धिलगै अदेखाई चिंतवी । माटी । मीतुं । कण कपासिआ ।
 काजविण चांप्या । तेह ऊपरवयठा । आलेवनस्यतीखुंदी ।
 बाठ । पाणी । घी । रस । तेल । गुल । आमलवेतस । वेरजादिक
 तणा जाजनउघाडा मूक्या । तेमाहि । कीडी कंथुआ माखी
 उंदर । गिरोली प्रमुखजीवविणठा । सूडा प्रमुख जीव क्रीडा
 हेतें वांधिराख्या । घणीनिद्राकीधी । रागद्वेष लगै । एकनेरिद्धि
 परिवारबांठी । एकनें मृत्यु हाणि विमासी ॥ आठमाअनर्थ
 दंडव्रतविष० ॥ ८ ॥ * ॥ नवमें सामायकव्रतै पांच अती
 चार ॥ * ॥ तिविहेडुप्पणिहाणे । सामायकलीधै । मनआहट
 दोहट चिंतव्युं । वचनसावद्यबोल्नुं । कायअणपडिलेह्युंहलाव्युं ।
 उतीवेलाइं सामायकनलीधुं । सामायकलेई उघाडैमुखबोल्या । ऊं
 घआवीकीधी । बीजदीवातणी उजोहीलागी । कण कपासी
 या माटी मीतुं नील फूल हरीकायना संघट्टहुआ । पुरुष तिर्यं
 चना संघट्ट हुआ । तथा स्त्री तिर्यंची आनडी । मुहपत्तीउसंघ
 ट्टी । सामायकअणपूरुं पारिउं । पारउंवीसारिउं ॥ नवमैसामा
 यकव्रतविषय० ॥ ९ ॥ * ॥ दशमैदेशावकासिक व्रतै पांचअ
 तीचार ॥ * ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पउगे । पेसवण
 प्पउगे । सहाणुवाए । रूवाणुवाए । बहियापुग्गलपक्खेवे । नि
 यमितनूमिकामांहि । वाहिरथकीकांई अणाव्युं । आपकन्हाथी
 बाहिरमोकल्या । सादकरी । रूपदेखाडी । काकरोनाखी

आपणपुं ठतुं जणाव्युं ॥ ❀ ॥ दशमें देशावकासिकव्रत० ॥ १० ॥
 इग्यारमेपोषधोपवासव्रतं पांच अतीचार ॥ ❀ ॥ संथारुच्चार
 विही । पमायतहचेव नोअणानोए० ॥ पोसहलीधै । संथारात
 णीचूमि बाहिरलाथंफिला । दिवसै सोध्यापडिलेह्या नही ।
 मातरुं अणपडिलेहुं वावरिउं । अणपुंजी चूमिकाइं परठ
 विउं । परठवतां चिन्तवणानकीधी । अणुजाणहजस्सुग्गहोन
 कह्युं । परठयांपूठै बारत्रिणि बोसिरामि २ नकह्युं । पोसहशा
 लामांहिं । पइसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहवी वी
 सारी । पृथवीकाय । अप्पकाय । तेऊकाय । वाऊकाय ।
 वनस्पतीकाय । त्रसकाय । तणा संघट्टपरिताप उपद्रवहुआ
 संथारा पोरसितणो । विधि नणउ वीसारिउं । पोरसिमांहिउं
 ध्या । अविधिसंथारुंपाथरुं । कालवेलायें पडिक्कमणुं नकीधुं
 पारणादिकतणीचिंतानिपजावी । कालवेला देववांदवावीसारि
 या । पोसहअसुरोलियो । सवारोपारियो । पव्वतिथि आवी
 पोसहलीधोनही ॥ इग्यारमें पोषधोपवासव्र० ॥ ११ ॥ ❀ ॥
 वारमें अतिथि संविजागव्रतै पांच अतीचार ॥ ❀ ॥
 सच्चित्ते निक्खवणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेठै । ऊपरिथकै ।
 महातमाप्रतेंअसुज्जतुं दानदीधुं । अदेवातणीबुद्धै सूज्जतुं फेडी
 असूज्जतुंकीधुं । देवातणीबुद्धै असूज्जतुं फेडी । सूज्जतुंकीधुं । आ
 पणफेडीपरायुं कीधुं । विहरवावेला टलगयां । असुरकरी महा
 तमातेड्या । मत्तरलग्गैदानदीधुं । गुणवंत आव्यै जगति नसाचवी
 । ठतीसक्तिसाधर्मिक वात्सल्यनकीधुं । अनेराईधम्मक्षेत्रसी
 दाता । ठतीशक्तैऊधख्यानही ॥ ❀ ॥ वारमेंअतिथिसंविजागव्र०
 ॥ १२ ॥ ❀ ॥ संलेहणातणा पांचअतीचार ॥ इहलोए परलोए०

इहलोकासंसप्पन्नगे । परलोगासंसप्पन्नगे । जीविआसंसप्पन्नगे ।
 मरणासंसप्पन्नगे । कामजोगासंसप्पन्नगे । इहलोक मनुष्यजव
 मान महत्व लोकतणी सेवा ठकुराई । बलदेव वासुदेव च-
 कवर्त्ति पदवांग्या । परलोक । इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी
 वांगी । सुखआये जीववातणी वांगकीधी । दुखआये मर
 वातणी वांग कीधी । काम जोग तणीइवा कीधी ॥ * ॥ संलेह
 णाव्रतवि० ॥ * ॥ तपाचारबारेजेदै ॥ उअभ्यंतर । उवाहिर ।
 अणसणमूणोइरिया ॥ अणसणकहीयेउपवास । ते पव्वति
 थि उतीशक्तिकीधुं नही । (उणोदरी) कवल पांचसातऊणार
 ह्यानही । (द्रव्यसंक्षेप) विगयप्रमुख परिमाणकीधुं नही ।
 आसनादिक कायकिलेस नकीधुं । (संलीणता) अंगोपांगसं
 कोच्यानही । नवकारसी । पोरसी । गंठसी । मूठसी । साढपो
 रसी । पुरमुट्टु । एकासणो । वैआसणो । निवी । आंबिलप्रमुख प
 च्चकखाण पारवावीसाख्या । बैसतां नवकारणयुनही । ऊठतां
 दिवश्वरम नकीधुं । निवीआंबिल उपवासादिकतपकरी । का
 चोपाणीपीधुं । वमनथयुं ॥ * ॥ बाह्य तपव्रतवि० ॥ * ॥ अभ्यं
 तरतप ॥ * ॥ पायडित्तंविणउ० । गुरुकनें मनसुद्धै आलोयण
 लीधीनही । गुरुदत्तप्रायडित्ततप लेखासुद्ध पुहचाड्युं नही ।
 देवगुरु संघसाहम्मीप्रतें विनयसाचव्योनही । वाचना पृष्ठना
 परावर्त्तना अनुप्रेक्ष्या धर्मकथा लक्षण पंचविध सिज्जायकी
 धोनही । धम्म ध्यान शुक्लध्यान ध्यायोनही । कम्म क्य नि
 मित्त लोगस्स दस वीसनुं काउसग्गकनकीधो ॥ * ॥ अभ्यंतरत
 पविषइउ० ॥ वीर्याचारना तीनअतीचार ॥ * ॥ अणगुहियव
 लविरिउ । परक्कमइजोजहुंतठाणेसु । जुंजइ अजहाथामं । ना

यवोवीरियाचारो ॥ १ ॥ पढवै गुणवै विनय वेयावच्च देवपूजा
सामायक दान शील तप ज्ञाना प्रमुख धम्मकृत्य तणे विषे ।
मन वचन कायातणो उतुं बलवीर्यगोपव्युं । रूडापंचांग खमा
समण नदीधा वैठांपडिक्कमणंकीधुं ॥ * ॥ वीर्याचारविष० ॥
॥ * ॥ नाणाइअठ अइवय । सम संजेहण पण पनरकम्मेषु ।
बारसतव विरिअ तिगं । चउवीसं सय अईयारा ॥ १ ॥ ॥ * ॥

॥ * ॥ पमिसिद्धाणंकरणे० । जिनप्रतिषिद्ध । बावीसअचह ।
वत्तीसअनंतकाय । बहुबीजचहण । महाअरंज महापरिग्रहादि
क कीधा । नित्य कृत्य देवपूजासामायकादिक । तथा तीर्थ यात्रा
दिक नकीधा । जीवाजीवादिविचारसद्वहियानही । आपणी कुम
तिलगै उतसुत्रपरूपणाकीधी । प्राणा तिपात १ । मृषावाद २ । अद
त्तादानं ३ । मैथुन ४ । परिग्रह ५ । क्रोध ६ । मान ७ । माया ८ ।
लोभ ९ । राग १० । द्वेष ११ । कलह १२ । अभ्याख्यान १३ ।
परपरिवाद १४ । पैशुन्य १५ । अरतिरति १६ । मायामृषावाद
१७ । मिथ्यात्वशल्य १८ । एअद्वारहपापस्थानकमांहि ।
जेकांइ कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एवंप्रकारै श्रावकधर्मे ।
श्री सम्यक् मूलवारहव्रत चोवीसासो अतीचारमांहि जिको
अतीचार । पद्ददिवसमांहि । सूक्ष्म वादर जाणतां अजाण
तां हुवो होय ते सहू मन वचन कायायेंकरी मिठामिडुक्कडं ।
इति श्री श्रावकूकैवारहव्रतका अतीचार संपूर्णम् ॥ * ॥

॥ * ॥ अथ जय तिहुअण वत्तीसीलि० ॥ * ॥

॥ * ॥ जय तिहुअण वर कप्परुक्ख जय जिणधनंतरि ।
जयतिहुअण कल्लाणकोस दुरिअ कारि केसरि । तिहुअण जण

अविलंघियाण न्रुवणत्तय सामिअ । कुणसु सहाइ जिणेसपास
 थंनणयपुरछिअ ॥ १ ॥ तइं समरंत लहंतिजत्ति वर पुत्त कलत्ताहि
 ॥ धसु सुवसु हिरसु पुसु जण नुंजहि रज्जाहि । पिक्खहि
 मुक्ख असंखसुक्ख तुहपासपसाइण । इयतिहुअण वरकप्प
 रुक्ख सुक्खहि कुणमहजिण ॥ २ ॥ जरजज्जर परिजुसु कसु
 नहुद्ध सुकुठिण । चक्खुक्खीण खण्णखुसु नरसल्लिअ सूलिण । तु
 हजिणसरण रसायणेण लहुहुंति पुणसुव । जयधसंतरिपास
 महवि तुहुं रोगहरोत्तव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस मंत तंत सिद्धिउ
 अपयत्तिण । न्रुवणप्पुअ अठविह सिद्धि सिज्जइ तुहनामिण ।
 तुह नामिण अपवित्तउवि जणहोइ पवित्तउ । तंतिहुअण क
 ल्हाणकोस तुहुंपासनिरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद्दपत्तइ मंत तंत जंताइं
 विसुत्तइ । चर थिर गरल गहुग्गखग्ग रिउवग्ग विगंजइ । दुत्थि
 यसत्थ अणत्थ घत्थ नित्थारइदयकरि । डुरिअइं हरउ सुपा
 सदेव डुरिअकरिकेसरि ॥ ५ ॥ तुहआणा थंनेइत्तीम दप्पुद्धर
 सुरवर । रक्खसजक्ख फणिंदविंद चोरानलजलहर । जलथल
 चारि रउद्दखुद्द पसुजोइणिजोइअ । इयतिहुअण अविलंघिआ
 णजयपास सुसामिअ ॥ ६ ॥ पत्थिअअत्थ अणत्थाहित्थ न्ति
 अरनिप्पर । रोमंचंविअ चारुकाय किस्सरनर सुरवर । जसु
 सेवहिं कमकमलजुअल पक्खालिअकलिमलु । सोत्तवणत्तय
 सामिपास महमद्दउरिउवलु ॥ ७ ॥ जय जोइअ मणकमलन
 सल नयपंजरकुंजर । तिहुअणजण आणंदचंदनवणत्तय दि
 णयर । जयमइमेयणि वारिवाह जयजंतुपिआमह । थंनणय
 छिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥ ८ ॥ बहुविहवसुअवसु सु
 सुवसिउत्तप्पसाहि । मुक्खधम्मकामत्थकाम नरनियनियसत्थ

हि । जंजायइ बहुदरसणत्थ बहुनामपसिद्धव । सोजोइअम
 णकमलजसल सुहपासपवद्धव ॥ ९ ॥ नयविप्रलरणाणोर
 दसण थरहरिअ सरीरय । तरलिअनयण विसुअसुअ गग्गर
 गिरकरुणय । तइं सहसत्ति सरंतिहुंति नरनासिअ गुरुदर ।
 महाविज्जवि सिअसइपास नयपंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइं पासवि
 विअसंतनित्त पत्तंतपवत्तिय । वाहपवाहपवूढरूढ दुहदाहसुपु
 लिय । मअहिमअसउअपुअअप्पाणंसुरनर । इयतिहुअण आ
 णंदचंद जयपासजिणेसर ॥ ११ ॥ तुहकल्लाणमहेसुघंट टंका
 रवपिल्लिअ । वल्लिरमल्लमहल्लनत्तिसुरवरगंजुल्लिअ । हल्लुप्फ
 लिअ पवत्तयंतिनवणेहिमदूसव । इयतिहुअणआणंदचंद ज
 यपास सुहुअनव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणानियर विदुरिय
 तमपयहर । दंसिअसयल पयत्थसत्थ वित्थरिअपहाअर । क
 लिकल्लसिअ जणघूअलोय लोयणहअगोयर । तिमिरइं निरु
 हरपासनाह नुवणत्तयदिणयर ॥ १३ ॥ तुहसमरणजल वरि
 ससित्त माणवमइमेइणि । अवरारवरसुहुमत्थबोह कंदलदलरेइ
 णि । जायइफलअर अरियहरिय दुहदाहअणोवम । इयमइ
 मेइणिवारिवाह दिसपासमइं मम ॥ १४ ॥ कयअविकल क
 ल्लाणवल्लि उल्लूरिअउहवणुं । दाविअसग्ग पवग्गमग्ग दुग्गइग
 मवारणुं । जयजंतुहजणाएणातुल्ल जंजणियहियावहु । रम्मघ
 म्मसोजयवपास जयजंतुपिआमहु ॥ १५ ॥ भुवणारअनिवा
 सदरिअ परदरसणदेवय । जोइणिपूअणखित्तवाल खुद्दासुरपसु
 वय । तुहउत्तअसुनअसुहु अविसंवुलचिअहि । इयतिहुअण व
 णसींहापास पावाइ पणासहि ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरय
 ण करंजिअनहयल । फलिणीकंदलदल तमाल निल्लुप्पल

सामल । कमठासुरत्रवसग्गवग्ग संसग्गअग्गंजिअ । जयपच्च
 क्वजिणेसपास थंनणयपुरठिअ ॥ १७ ॥ महमणुतरखुपमा
 णुनेय वायाविविसंठल । नियतणुरविअविणयसहाव आलस
 विहिलंघल । तुहमाहप्पपमाणदेव कारुणपवत्त । इयमइमा
 अवहीरपासपालहिविलवंत ॥ १८ ॥ किंकिंक्किप्पिणयकल्लण
 किंकिंवनजंपिण । किंवनचिठ्ठिणकिठ्ठदेव दीणयमविलंबिण ।
 कासनकियनिप्फल्लल्ल अह्महिंदुहत्तइं । तहविणपत्तताणकिं
 पि पइंपहुपरिचत्तइं ॥ १९ ॥ तुहुं सामिहुतुहुं मायवप्प तुहुं मि
 त्तपियंकरु । तुहुंगइतुहुंमइतुंहिजताणतुहुंगुरुखेमंकरु । हउंदु
 प्ररत्तारिअवरात्रात्रलनिप्पग्गत्त । लीणत्तुहकमकमल स
 रण जिणपालहिचंगत्त ॥ २० ॥ पइंकिविकयनीरोयलोयकिविपा
 वियसुहसय । किविमइंमंतमहंतकेवि किविसाहियसिवपय ।
 किविगंजिअरिणवग्गकेवि जसधवलिअनूअल । मइंअवहीर
 हिकेणपाससरणागयवत्तल ॥ २१ ॥ पच्चुवयारनिरीहनाह निप्प
 पत्तअण । तुहुंजिणपासपरोवयार करुणिकपरायण । सत्तुमित्त
 समचित्तवित्तिनयनिंदिअसममण । माअवहीरिअजुग्गत्तवि म
 इंपासनिरंजण ॥ २२ ॥ हउंबहुविहदुहत्तत्तत्तुहुंदुहनासणप
 रु । हउंसुयणहकरुणिकठाणतुहुंनिरुकरुणाकरु । हउंजिणपा
 सअसामिसालतुहुंतिहुअणसामिअ । जंअवहीरहिमइंज्खंत
 इयपासनसोहिय ॥ २३ ॥ जुग्गाजुग्गविजागनाहनहुजोअणत्तु
 हसम । त्रवणुवयारसहावत्ताव करुणारससत्तम । समविसमइ
 किंघणनिणइ नुविदाहसमंतत्त । इयदुहबंधवपासनाहमइंपालथु
 णंतत्त ॥ २४ ॥ नयदीणहदीणयमुएविअणविकिविजुग्गय ।
 जंजोइय त्रवयारुकरइ त्रवयारसमुज्जय । दीणहदीणनिहीणजेण

तइंनाहिणचित्तत्त । तोजुग्गत्तअहमेवपास पालाहिमइं चंगत्त ॥
 ॥ २५ ॥ अहअणुविजुग्गयविसेसकिविमणहिदीणह । जंपा
 सवित्तवयारुकरइ तुहुंनाह समग्गह । सुच्चिअकिलकछाणजेण
 जिणतुहपसीयह । किंअणुण तंचेव देव मामइंअवहीरह ॥
 ॥ २६ ॥ तुहपत्थण नहु होइ विहल जिणजाणत्त किंपुण ।
 हउंदुक्खित्त निरु सत्तत्त दुक्कत्तत्तस्सुयमण । तंमणत्त निमि
 सेणएण एत्त विज्झइ लभ्भइ । सच्चंजंभुक्खियवसेण कि उंबरुप
 च्चइ ॥ २७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइंअप्पपयासित्त ।
 किज्जत्तजंनियरूवसरिसुनमणुंवहुजंपित्त । अणुणजिणजगतुह
 समोविदस्खिस्सदयासत्त । जइअवगिस्ससित्तुंहिजअहहकिहहो
 सुहयासत्त ॥ २८ ॥ जइतुहरूविणकिणविपेअ पाइणवेत्तवित्त
 तत्तजाणुंजिणपासतुह हत्तंअंगीकरिअत्त । इयमहयत्तिअजंन
 होइसातुहत्तहावण । रक्खंतहनियकित्तिणोयजुज्झइअवहीरण ॥
 ॥ २९ ॥ एवमहारिहत्तदेवइअणवणमहूसत्त । जंअणलिय
 गुणगहण तुम्हमुणिजणअणिसिद्धत्त । इयमइंपसियसु पासना
 हत्थंअणयपुरट्ठिअ । इयमुणिवर सिरिअन्नयदेव विणवइअणि
 दिअ ॥ ३० ॥ इतिश्रीस्थंजनक पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ परकीसुत्र लि० ॥ ❀ ॥

तित्थंकरेअ तित्थे । अतित्थसिद्धेयतित्थसिद्धेय । सिद्धेयजिणे
 यरिसी । महारिसिनाणंचवंदामि ॥ १ ॥ जेयइमंगुणरयणसायर ।
 मविराहिअणत्तिन्नसंसार । तेमंगलंकरित्ता । अहमविआराह
 णात्तिमुहो ॥ २ ॥ मममंगलमरिहंता । सिद्धासाहूसुयंचवम्मो
 यः । खंतीगुत्तीमुत्ती । अज्जवयामहवंचेव ॥ ३ ॥ लोगंमिसंज

याजंकरंति । परमरिसिदेसियमुयारं । अहमविभ्वड्डित्तं । म
 ह्वयउच्चारणंकाञ्चं ॥ ४ ॥ सेकिंतंमह्वयउच्चारणा । मह्वयउच्चा
 रणापंचविहापन्नत्ता ॥ राईन्नोयणवेरमणठठा (तंजहा) सवा
 उपाणाइवायाउवेरमणं । सवान्मुसावायाउवेरमणं । सवान्अ
 दन्नादाणाउवेरमणं । सवान्मेहुणाउवेरमणं । सवान्परिग्गहा
 उवेरमणं । सवान्राईन्नोयणाउवेरमणं । तत्थइखलु पढमेञ्जंतेम
 ह्वए पाणाइवायाउवेरमणं ॥ सवञ्जंतेपाणाइवायंपच्चरकामिं ।
 सेसुहुमंवा बायरंवा तसंवा थावरंवा नेवसयं पाणेअइवाएज्जा
 नेवन्नेहिं पाणेअइवायाविज्जा पाणेअइवायंतेवि अन्नेनसमणु
 जाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए का
 एणं नकरोमि नकारवेमी करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि
 तस्सञ्जंतेपडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥
 सेपाणाइवायाएचउविहेपन्नत्ते ॥ (तंजहा) दवउ खित्तउ कालउ
 चावउ दवउणंपाणाइवाए उसुजीवनिकाएसु खित्तउणं पाणा
 इवाए सयललोए कालउणं पाणाइवाए दियावा राउवा चावउणं
 पाणाइवाए रागेणवा दोसेणवा जंपियमएइमस्सधम्मस्स केव
 लिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिड्डियस्स विणयमूलस्स
 खंतीपहाणस्स अहिरणसोवस्सियस्स उवसमप्य चवस्स नववं
 चचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स त्रिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स
 निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स
 निवियारस्स निवित्तीलरकणस्स पंचमह्वयजुत्तस्स असंनिहि
 संचयस्स अविंसंवाइयस्स संसार पारगामियस्स निव्वाणगमण
 पज्जवसाण फलस्स पुब्बिं अन्नाणयाए असवणयाए अवोहि
 ए अण्णिगमेणं अण्णिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिव

द्वयाए वालयाए मोहयाए मंदयाए किडुयाए तिगारब गरुयाए
 चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसहेणं पडिपुन्नजारीयाए सायासोक्ख
 मणुपालयंतेणं इहंवाजवे अन्नेसुवाजवग्गहणेसु पाणाइवाउ
 कउवा कारिउवा कीरंतोवा परेहिंसमणुन्नाउ तंनिंदामी गरि
 हामी तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयंनिंदामि
 पडुपन्नसंबरेमि अणागयंपच्चरकामि सबंपाणाइवायं जावळीवाए
 अणिसिसउहि नेवसयं पाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवा
 याविज्जा पाणेअइवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि (तंजहा) अ
 रिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्प
 सक्खियं एवंहवई जिक्खूवा जिक्खूणीवा संजय विरय पडिहय
 पच्चक्खायपावकम्मे दियावा राउवा एगोवा परिसागउवा सुत्ते
 वा जागरमाणेवा एसखलु पाणाइवायस्स वेरमणे हिए सुहे
 खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सबेसिं पाणाणं सबे
 सिं चूयाणं सबेसिंसत्ताणं अडुक्खणयाए असोयणयाए अजू
 रणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणयाए
 अणुइवणयाए महत्थे महागुणे महाणुजवे महापुरिसा
 णचिन्ने परमरिसिदेसिएपसित्थे तंडुक्खक्खयाए कम्मरकयाए
 मोक्खयाए बोहिलान्नाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्ट उवसंपज्जा
 ताणं विहरामि पढमेजंते महव्वए उवठ्ठिउमि सबानपाणाइ
 वायाउवेरमणं ॥ १ ॥ अहावरेदोच्चेजंतेमहव्वए मुसावायाउवेरम
 णं । सबंजंतेमुसावायंपच्चक्खामि । सेकोहावा लोहावा चयावा
 हासावा नेवसयं मुसंवएज्जा नेवन्नेहिंसुसं वायाविज्जा मुसंवा
 यंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावळीवाए तिविहं तिविहेणं म
 णेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नंसमणु

जाणामि तस्सज्जते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पा
 णं वोसरामि । सेमुसावाएचउविहेपन्नत्ते (तंजहा) दवउ खित्तउ
 कालउ जावउ दवउणं मुसावाएसवदव्वेसु खित्तउणं मुसावाए लोए
 वा अलोएवा कालउणं मुसावाए दियावा राउवा जावउणं मुसावा
 ए रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्सधम्मस्स केवल्लिपन्नत्तस्स
 अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाण
 स्स अहिरणसुवस्सियस्स उवसमप्पन्नवस्स नववन्नचेरगुत्तस्स
 अप्पयमाणस्स त्तिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिस
 रणस्स संपरकालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निविया
 रस्स निवित्ती लक्खणस्स पंचमहवय जुत्तस्स असंनिहि
 संचयस्स अविसंवाईयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमण
 पक्कवशाणफलस्स पुविंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए
 अण्णिगमेणं अण्णिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिवद्धयाए
 वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउ
 क्कसाओवगएणं पचेदियवसट्टेणं पप्पिपुन्नंनारियाए सायासोक्ख
 मणु पालयंतेणं इहंवाज्जवे अन्नेसुवा जवग्गहणेसु मुसावाओ
 जासिओवा जासाविज्जवा जासिज्जंतोवा परेहिंसुमण्णान्ण तंनि
 दामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईयं
 निंदामि पडुपन्नंसंबरेमि अणागयंपच्चक्खामि सबंमुसावायं जा
 वज्जीवाए अण्णिस्सिउहिं नेवसयंमुसंवएज्जा नेवन्नेहिं मुसंवाया
 विज्जा मुसंवायंतेवि अन्नेनसमण्णजाणामि (तंजहा) अरिहंतस
 क्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं
 एवंहवई त्तिक्खूवात्तिक्खूणीवा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय
 पावकम्मेदियावा राउवा एगउवा परसागउवा सुत्तेवा जागरमाणे

वा एसखल्लुमुसावायस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणु
 गामिए पारगामिए सवेसिपाणाणं सवेसिन्नूयाणं सवेसिंजीवाणं
 सवेसिसत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अति
 प्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणयाए अणुहवणयाए महत्थे
 महागुणे महाणुज्जावे महापुरसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्थे
 तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलान्नाए संसारु
 त्तरणाए तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि ॥ दोच्चेजंतेमहव्वए उव
 छिउमिसवाउमुसावायाउवेरमणं ॥ २ ॥ अहावरेतच्चेजंतेमहव्वए
 अदिन्नादाणाउवेरमणं सव्वंजंते अदिन्नादाणंपच्चक्खामि ॥ सेगा
 मेवा नगरेवा रण्णेवा अप्पंवा वहुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अ
 चित्तमंतंवा नेवसयंअदिन्नंगिण्हियज्जा नेवन्नेहिअदिन्नंगिएहावि
 ज्जा अदिन्नंगिएहंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविं
 हं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरोमि नकारवेमि करंतंपि
 अन्नंन समणुजाणामि तस्सजंते पडिक्कमामि निदामि गरिहा
 मि अप्पाणंवासरामि सेअदिन्नादाणेचउविहे पन्नत्ते (तंजहा)
 दव्वओ खित्तओ कालओ जावओ दव्वउणं अदिन्नादाणे गहणं
 धारणिज्जेसु दव्वेसु खित्तउणं अदिन्नादाणे गामेवा नगरेवा रण्णेवा
 कालउणं अदिन्नादाणे दियावा राउवा जावउणं अदिन्नादाणे रा
 गेणवा दोसेणवा जांपियमए इमस्सधम्मस्स केवल्लि पन्नत्तस्स अ
 हिसाल्लक्खणस्स सच्चाहिठ्ठियस्स विणायमूलस्स खंतीपहाणस्स
 अहिरण सुवस्सियस्स उवसमप्पज्जवस्स नवव्वंजचेरगुत्तस्स अप्प
 यमाणस्स निरकावित्तियस्स कुक्खीसंबल्लस्स निरग्गिसरणस्स
 संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स नि
 व्वित्ति लक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसचयस्स अवि

संवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफल
 स्स पुब्बिंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणन्निगमेणं अ
 न्निगमेणवा पमाएणं रागदोसपक्खिद्वयाए वात्तयाए मोहयाए मं
 दयाए किड्डयाए तिगारवगरुआए चउक्कसानुवगएणं पंचेदिय
 वसट्टेणं पडिपुन्न न्नारियाए सायासोक्खमणुपालयंतंतेणं इहंवाअवे
 अन्नेसुवा अन्नवग्गहणेसु अदिन्नादाणं गहियंवा गहावियंवा धिप्पं
 तंवा परेहिंसमणुन्नान्तंनिंदामि गरिहामि तिविहंतिविहेणं मणे
 णं वायाए काएणं अईयं निंदामि पडुपन्नसंबरोमि अणागयंपच्च
 क्खामि सबंअन्तेअदिन्नादाणं जावजीवाए अणिसिउहिं नेवस
 यंअदिन्नांगिएहज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नांगिएहाविज्जा अदिएहंगि
 एहंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि (तंजहा) अरिहंतसक्खियं सिद्धस
 क्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवई निक्खू
 वा निक्खूणीवा संजय विरय पक्खिय पच्चक्खायपावकम्मं दिया
 वा राउवा एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलु
 मेहुणस्सवेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगा
 मिए सब्बेसिंपाणाणं सब्बेसिंनूयाणं सब्बेसिंजीवाणं सब्बेसिंसत्ताणं
 अडुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपी
 डणयाए अपरिआवणयाए अणुइवणयाए महत्थे महागुणे म
 हाणुअवे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिएपसत्थे तंडुक्ख
 क्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलान्नाए संसारुत्तारणा
 ए त्तिकट्ट उवसंपज्जत्ताणं विहरामि ॥ तच्चेअन्तेमहवएअशुठिउ
 मिसवाउ अदिन्नादाणाउवेरमणं ॥ ३ ॥ अहावरेचउत्थेअन्तेमहवए
 मेहुणाउवेरमणं सबंअन्तेमेहुणं पच्चक्खामि । सेदिवंवा माणुसं
 वा त्तिरिक्खजोणियंवा नेवसयं मेहुणंसेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं

सेवाविज्ञा मेहुणंसेवंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावजीवाए
 तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवोमि
 करंतपी अन्नंन समणुजाणामि तस्सजंतो पडिक्कमामि निंदामि
 गरिहामि अप्पाणंवोसरामि ॥ सेमेहुणेचउविहेपन्नत्ते (तंजहा
 दवउ खित्तउ कालउ जावउ दवउणंमेहुणे रूवेसुवा रूवसहग
 एसुवा खित्तउणंमेहुणे उट्टलोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा
 कालउणं मेहुणे दियावा राउवा जावउणं मेहुणे रागेणवा दोसे
 णवा जंपियमए इमस्सधम्मस्स केवलपणत्तस्स अहिंसाल
 क्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स अहिर
 न्न सुवणियस्स उवसमप्प नवस्स नववंनचेरगुत्तस्स अप्पय
 माणस्स निक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गीसरणस्स
 संपक्खालियरस चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निवियारस्स निवि
 तीलक्खणस्स पंचमहवय जुत्तस्स असंनिहि संचयस्स अ
 विसंवाहियस्स संसारपारगामियस्स निवाणगमण पक्कवसाण
 फलस्स पुविंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहीए अण्णिगमेणं
 अन्निगमेणवा पमाएणं रागदोषपडिवद्धयाए वालयाए मोहयाए
 मंदयाए किडुयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचे
 दियवसट्टेणं पडिपुन्नचारियाए सायासोरक मणुपालयंतेणं इहं
 वाजवे अन्नेसुवा नवग्गहणेसु मेहुणंसेवियंवा सेवावियंवा से
 विज्जंतंवा परेहिंसमणुणाउ तंनिदामि गरिहामि तिविहं तिवि
 हेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निदामि पडुपन्नंसंबरेमि अ
 णागयं पच्चक्खामि सबंमेहुणं जावजीवाए अणिसिउहि नेव
 सयं मेहुणंसेविज्ञा नेवन्नेहि मेहुणं सेवाविज्ञा मेहुणं सेवंतेवि
 अन्नेन समणुजाणामि (तंजहा) अरिहंतसक्खियं सिद्धस

क्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइ त्ति
 क्खूवा त्तिक्खूणीवा संजयविरयपफिहय पच्चक्खाय पावकम्मं
 दियावा रात्तवा एगोवा परिसागत्तवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस
 खल्लु मेहुणस्सवेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए
 पारगामिए सब्बेसिं पाणाणं सब्बेसिं नूयाणं सब्बेसिंजीवाणं सब्बेसिं
 सत्ताणं अट्टुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणया
 ए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्वणयाए महत्थे महागु
 णे महाणुजावे महापुरिसाणुचिस्से परमरिसिदेसिएपसित्थे तंदु
 क्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिल्लान्नाए संसारु
 त्तारणाए त्तिक्कट्टु त्तवसंपज्जत्ताणं विहरामि ॥ चत्तत्थेत्तंते महव्वए
 त्तवत्तित्तमिसत्तत्तं मेहुणत्तं वेरमणं ॥ ४ ॥ अहावरेपंचमेत्तंतेमहव्व
 ए परिग्गहात्तं वेरमणं सब्बंत्तंतेपरिग्गहं पच्चक्खामि सेअप्पंवा व
 हुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं परि
 ग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवत्तेहिं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा परि
 ग्गहं गिण्हंतेवि अत्तेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं
 तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरोमि नकारवेमि करंतंपि
 अत्तंनसमणुजाणामि तस्सत्तंते पक्कमामि निंदामि गरिहामि
 अप्पाणंवोसरामि । सेपरिग्गहेत्तत्तत्तिहेपत्तत्ते (तंजहा) दव्वत्तं खि
 त्तत्तं कालत्तं त्तावत्तं दव्वत्तंणंपरिग्गहे सच्चित्ताचित्तमीसेसु दव्वेसु खि
 त्तत्तंणं परिग्गहे गामेसुवा नगरेसुवा रत्तेसुवा कालत्तंणं परिग्गहे
 दियावा रात्तवा त्तावत्तंणंपरिग्गहे अप्पग्घेवा महग्घेवा रागेणवा
 दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवल्लिपत्तत्तस्स अहिंसाल
 क्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरत्त
 सवन्नियस्स त्तवसमप्पत्तवस्स नवत्तंत्तं ० अप्पय ० त्तिक्खावित्थियं

स्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गीसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोस
 स्स गुणगाहियस्स निवियारस्स' निवत्तीलक्खणस्स पंचमहव्वय
 जुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविंसंवाइयस्स संसारपारगामिय
 स्स' निव्वाणगमणपक्कवसाणफलस्स पुविंअन्नाणयाए असवण
 याए अबोहिए अणत्तिगमेणं अत्तिगमेणवा पमाएणं रागदोसप
 डिबद्धयाए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारव गरु
 आए चउक्कसानवगएणं पंचेदियवसट्ठेणं पडिपुन्न जारियाए सा
 यासोक्ख मणुपालयंतेणं इहंवाजवेअन्नेसुवा जवग्गहणेसु परि
 ग्गहो गहिज्जवा गहाविज्जवा धिप्पंतोवा परेहिंसमणुन्नाज तंनिदा
 मि गरिहामि तिविहंतिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईयंनिदा
 मि पडुप न्नंसंबरेमि अणागयं पच्चक्खामि सबंधपरिग्गहं जावळी
 वाए अणिस्सिज्जहिं नेवसयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिप
 रिग्गहं परिगिण्हिज्जा परिग्गहं परिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणु
 जाणामि (तंजहा) ॥ अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुस
 क्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइत्तिक्खूवा त्तिक्खूणी
 वा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा रान्जवा
 एगोवा परिसागज्जवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुपरिग्गहस्सवे
 रमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए स
 वेसिंपाणाणं सबेसिज्जूयाणं सबेसिजीवाणं सबेसिसत्ताणं अड
 क्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीड
 णयाए अपरियावणयाए अणुद्वणयाए महत्थेमहागुणे महा
 णुज्जावे' महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तंजुकक्ख
 याए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिज्जाजाए संसारुत्तारणाए
 त्तिकट्ट उवसंपक्कत्ताणंविहरामि ॥ पंचमेज्जंतेमहव्वए उवठ्ठिज्जमि

सञ्चान् परिग्गहान्तवेरमाणं ॥ ५ ॥ अहावरे उठेनतेवए राईन्नोयणा
 उ वेरमाणं सवन्नतेराईन्नोयणं पञ्चकखामि ॥ सेअसणंवा पाणंवा
 खाइमंवा साइमंवा नेवसयं राईं नुंजिजा नेवनेहिं राईं नुंजावि
 जा राईंनुंजंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावजीवाए तिविहं
 तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करतंपि
 अन्नंनसमणुजाणामि तस्सन्नते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि
 अप्पाणं बोसरामि । सेराईन्नोयणेचउविहेपन्नत्ते (तंजहा) दव्वउ
 खित्तउ कालउ जावउ दव्वउणं राईन्नोयणे असणेवा पाणेवा खाइ
 मेवा साइमेवा खित्तउणं राईन्नोयणे समयखित्ते कालउणं राईन्नो
 यणे दियावा रान्वा जावउणं राईन्नोयणे तिकखेत्ता कडुएवा कसा
 इलेवा अंबिलेवा महुरेवा लवणेवा रागेणवा दोसेणवा जंपिय
 मए इमस्स धम्मस्स केवल्लिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चा
 हिठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरन्नसुवस्सियस्स
 उवसमप्पन्नवस्स नवबंनचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स त्तिकखावि
 त्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खाल्लियस्स च
 त्तदोसस्स गुणगाहियस्स निवियारस्स निवित्तीलक्खणस्स पं
 चमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स सं
 सारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुविंअन्ना
 णयाए असवणयाए अबोहिए अणत्तिगमेणं अत्तिगमेणवा
 पमाणं रागदोसपम्बिद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए कि
 ड्डयाए तिगारव गरुआए चउक्कसान्त्वगएणं पंचेंदियवसट्टेणं
 पडिपुन्नत्तारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहंवात्तवेअन्नेसुवा
 त्तवग्गहणेसु राईन्नोयणं नुत्तंवा नुंजावियंवा नुंजंतंवा परेहिंस
 मणुन्नाउ तंमिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणंवायाए

काएणं अइयं निंदामि पटुपन्नसंबरेमि अणागयं पच्चक्खामि स
 वं राईन्नोयणं जावळीवाए अणिससन्नहिं नेवसयं राईञ्जि
 ज्जा नेवन्नेहिराईञ्जुजाविज्जा । राईञ्जुजंतेवि अन्नेनसमणुजाणा
 मि (तंजहा) अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं दे
 वसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइ ञ्जिक्खूवा ञ्जिरकूणीवा संज
 य विरय पमिहय पच्चक्खायपावकम्मे दियावा राञ्जवा एगोवा प
 रसागञ्जवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलु राईन्नोयणस्सवेरमणे
 हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सब्बेसिंपाणा
 णं सब्बेसिंजूयाणं सब्बेसिंजीवाणं सब्बेसिसत्ताणं अट्टक्खणयाए
 असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरि
 यावणयाए अणुइवणयाए महत्थेमहागुणे महाणुजावे महापु
 रिसाणुचिन्हे परमरिसिदेसिएपसत्थे तंजुक्खक्खयाए कम्मरक
 याए मोक्खयाए बोहिलाजाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंप
 ज्जत्ताणं विरामि ॥ ७ ॥ उठ्ठेजंतेवए उवठ्ठिउमि सब्बान्, राईन्नोयणाञ्जवे
 रमाणं ॥ ६ ॥ इच्चेइयाइंपंचमहब्बयाइं । राईन्नोयणवेरमाणउठाइं । अत्त
 हियठाए उवसंपज्जित्ताणंविहरामि ॥ १ ॥ अप्पसत्थायजेजोगा । प
 रिणामायदारुणा । पाणाइवायस्स वेरमाणे । एसवुत्तेअइक्कमे ॥ २ ॥
 तिब रागायजाजासा । तिबदोसातहेवय । मुसावायस्सवेरमाणे ।
 एसवुत्ते अइक्कमे ॥ ३ ॥ उग्गहंचअजाइत्ता । अविदिन्नेवउग्गहे ।
 अदिन्नादाणस्सवेरमाणे । एसवुत्तेअइक्कमे ॥ ४ ॥ सदारूवारसागं
 धा । फासाणंपवियारणा । मेहुणस्सवेरमाणे । एसवुत्तेअइक्कमे
 ॥ ५ ॥ इत्थामुत्थायगेहीय । कंखालोत्तेयदारुणे । परिग्गहस्सवे
 रमाणे । एसवुत्तेअइक्कमे ॥ ६ ॥ अयमत्तेआहारे । सूरखित्तेयसं
 किए । राईन्नोयणस्सवेरमाणे । एसवुत्तेअइक्कमे ॥ ६ ॥ दंसणना

णचरित्ते । अविराहिताच्छिन्नसमणधम्ममे । पढमंवयमणुरक्खे ।
 विरयामोपाणाइवायान् ॥ १ ॥ दंसणनाणचरित्ते । अविराहिता
 छिन्नसमणधम्ममे । वीयंवयमणुरक्खे । विरयामोमुसावायान् ॥ २ ॥
 दंसणनाणचरित्ते । अविराहिताच्छिन्नसमणधम्ममे । तइयंवयमणु
 रक्खे । विरयामोअदिन्नादाणान् ॥ ३ ॥ दंसणनाणचरित्ते । अ
 विराहिताच्छिन्नसमणधम्ममे । चउत्थंवयमणुरक्खे । विरयामोमे
 हुणान् ॥ ४ ॥ दंसणनाणचरित्ते । अविराहिताच्छिन्नसमणधम्ममे ।
 पंचमवयमणुरक्खे । विरयामोपरिग्गहान् ॥ ५ ॥ दंसणनाणच
 रित्ते । अविराहिताच्छिन्नसमणधम्ममे । उठंवयमणुरक्खे । विर
 यामोराईन्नोयणान् ॥ ६ ॥ आलयविहारसमिन्न । जुत्तोगुत्तोछि
 न्नसमणधम्ममे । पढमंवयमणुरक्खे । विरयामोपाणाइवायान् ॥ १ ॥
 आलयविहारसमिन्न । जुत्तोगुत्तोछिन्नसमणधम्ममे । वीयंवयमणु
 रक्खे । विरयामोमुसावायान् ॥ २ ॥ आलयविहारसमिन्न ।
 जुत्तोगुत्तोछिन्नसमणधम्ममे । तइयंवयमणुरक्खे । विरयामोअदि
 न्नादाणान् ॥ ३ ॥ आलयविहारसमिन्न । जुत्तोगुत्तोछिन्नसमण
 धम्ममे । चउत्थंवयमणुरक्खे । विरयामोमेहुणान् ॥ ४ ॥ आल
 यविहारसमिन्न । जुत्तोगुत्तोछिन्नसमणधम्ममे पंचमवयमणुरक्खे ।
 विरयामोपरिग्गहान् ॥ ५ ॥ आलयविहारसमिन्न । जुत्तोगुत्तो
 छिन्नसमणधम्ममे । उठंवयमणुरक्खे । विरयामोराईन्नोयणान्
 ॥ ६ ॥ आलयविहारसमिन्न । जुत्तोगुत्तोछिन्नसमणधम्ममे । ति
 विहेणपक्किंतो । रक्खामिमहवएपंच ॥ ७ ॥ सावज्जजोगमेगं
 मिठत्तंएगमेवअस्साणं । परिवज्जंतोगुत्तो । रक्खामिमहवएपंच
 ॥ १ ॥ अणवज्जजोगमेगं । सम्मत्तंएगमेवनाणंतु । उवसंपन्नोजुत्तो
 रक्खामिमहवएपंच ॥ २ ॥ दोचेवरागदोसे । दुन्नियजाणाइअट्टरु

द्वाइं । परिवर्जंतोगुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३ ॥ डुविहंचरित्तध
 म्मं । डुन्नियजाणाइधम्मसुक्काइं । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्व
 एपंच ॥ ४ ॥ किन्हानीलाकाउ । तिन्निअलेसानअप्पसत्थाउ । परि
 वर्जंतोगुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ५ ॥ तेऊपह्लासुक्का । तिन्नि
 यलेसानसुप्पसत्थाउ । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच
 ॥ ६ ॥ मणसामणसच्चविकु । वायासच्चैणकरणसच्चैण । तिन्नि
 हेणविसच्चविकु । रक्खामि महव्वएपंच ॥ ७ ॥ चत्तारियडुहसि
 ज्जा । चत्तरोसन्नातहकसायाय । परिवर्जंतोगुत्तो । रक्खामि
 महव्वएपंच ॥ ८ ॥ चत्तारियसुहसिज्जा । चउविहंसंबरंसमाहिं
 च । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ९ ॥ पंचेवयकामगु
 णे । पंचेवय अन्हवेमहादोसे । परवर्जंतोगुत्तो । रक्खामिमहव्व
 एपंच ॥ १० ॥ पंचेदियसंबरणं । तत्तोपंचविहसंवसज्जायं । उव
 संपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ११ ॥ उज्जीवनिकायवहं
 उप्पियजासानअप्पसत्थाउ । परिवर्जंतो गुत्तो । रक्खामि मह
 व्वएपंच ॥ १२ ॥ उविहमभ्रित्तरयं । वज्जंपियउविहंतवोकम्मं ।
 उवसंपन्नो जुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १३ ॥ सत्तन्नयछाणाइं ।
 सत्तविहंचेवनाणविभ्रंगं । परिवर्जंतो गुत्तो । रक्खामिमहव्व
 एपंच ॥ १४ ॥ पिंसणपाणेसण । उग्गहसतिक्या महज्जाय
 णा । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामि महव्वएपंच ॥ १५ ॥ अठमय
 छाणाइं । अठयकम्माइतेसिवंधच । परिवर्जंतो गुत्तो रक्खामि
 महव्वएपंच ॥ १६ ॥ अठयपवयणमाया । दिछाअठविहनिठि
 अठेहि । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १७ ॥ नवपाव
 नियाणाइं । संसारत्थाय नवविहाजीवा । परिवर्जंतोगुत्तो ।
 रक्खामि महव्वएपंच ॥ १८ ॥ नववंचेवरगुत्तो । डुनवविहंवं

नचेरपमिसुद्धं । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १९ ॥
 उवघायंचदसविहं । असंबरंतहयसंकिलेसंच । परिवज्जंतोगुत्तो ।
 रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २० ॥ चित्तसमाहिष्ठाणा । दसचेवदसा
 उसमणधम्मंच । उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २१ ॥
 आसायणंचसव्वं । तिगुणंइक्कारसंविज्जंतो । उवसंपन्नोजुत्तो ।
 रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २२ ॥ एवंतिदंरुविरत्तं । तिगरणसुद्धोतिसल्ल
 निसल्लो । तिविहेणपमिक्कंतो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २३ ॥ इच्चेयं
 महव्वयत्तच्चारणं थिरत्तं सल्लुद्धरणं धिइवलंवसात्तं साहणत्तो पाव
 निवारणं निकायणा नावविसोही पमाग्गहणं निज्जुहणाराह
 णागुणाणं संबरजोगो पसत्थजाणोवत्तया जुत्तयानाणे परमत्तो
 उत्तमत्तो एसतित्थंकरेइ रागदोसमहणेहिं देसित्तपवयणस्ससारो
 ठज्जीवनिकायसंजमं उवसंवसित्तं तिब्बुक्कसक्कयंठाणं अणुवगया
 नमोत्थुते सिद्धबुद्धमुत्तनीरय निस्संगमाणमूरण गुणरयण सायर
 मणंतमप्पमे नमोत्थु ते महइ महावीर वद्धमाण सामिस्स नमोत्थु
 ते अरिहत्तं नमोत्थुते जगवत्तं (तिकट्टु) इच्चेसा खलुमहव्वयत्तच्चा
 रणाकया इच्चासोत्तकित्तणं कात्तं नमोत्तेसिंखमासमणाणं जेहिं
 इमंवाइयं ठविहमावस्सयंजगवंतं (तंजहा) सामाइयं १ चत्तवीस
 त्थत्त २ वंदणयं ३ पमिक्कमणं ४ कावसग्गो ५ पच्चक्खाणं ६
 सबेहंपिण्यंमि ठविहे आवस्सए जगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गथे
 सन्निज्जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा नावावा अरिहंतेहिं जग
 वंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेनावेसइहामो पत्तियामो रोएमो
 फांसेमो पालेमो अणपालेमो तेनावेसइहंतेहिं पत्तयंतेहिं रोयं
 तेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं (अंतोपरकस्स) जंवाइयं
 पढियं परियट्ठियं पुत्ठियं अणुपेहियं अणुपालियं तं दुक्ख

क्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिजात्ताए संसारुत्तार
 णाए त्तिकद्दु उवसंपज्जात्ताणं विहरामी (अंतोपक्खस्स) जंनवाइ
 यं नपढियं नपरियट्ठियं नपुत्ठियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संते
 वले संतेवीरिए संतेपुरसक्कारपरक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमा
 मो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अप्पुत्ठेमो
 अहारिहंतवोकम्मं पायत्ठित्तंपडिवज्जामो ॥ तस्समिद्धामिडुक्क
 ङं ॥ नमोतेसिखमासमणाणं जेहंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उक्का
 लियं जगवंतं तंजहा दसवेयालियं कप्पियाकप्पियं चुल्लकप्प
 सुयं महाकप्पसुयं उववाइयं रायप्पसेणियं जीवान्निगमो पन्नव
 णा महापन्नवणा नंदीअणुत्तंगदाराइं देविदत्तं तंजुलवेयालियं
 चंदाविज्जयं पमायप्पमायं पोरसिमंडलं मंरुलप्पवेसो गणिवि
 ज्जा विज्जाचरणविणित्तं जाणविज्जती आणविज्जती आयवि
 सोही मरणविसोही संलेहणासुयं वीयरगसुयं विहारकप्पो च
 रणविसोही आत्तरपच्चक्खाणं महापच्चक्खाणं सर्वेहिंपिएयंमि
 अंगवाहिरिए उक्कालिए जगवंते ससुत्ते सअत्थेसग्गंथे सन्निज्जुत्ती
 ए ससंगहणीए जेगुणावा चावावा अरिहंतैहिं जगवंतेहि पन्नत्ता
 वा परूवियावा तेजावे सहहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पा
 लेमो अणुपालेमो ते जावेसहहंतैहि पत्तियंतेहि रोइंतेहि फा
 संतेहि पालंतेहि अणुपालंतेहि (अंतोपरकस्स) जंवाइयं पढियं
 परियट्ठियं पुत्ठियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुक्खक्खयाए
 कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिजात्ताए संसारुत्तारणाए त्तिकद्दु
 उवसंपज्जात्ताणं विहरामि (अंतोपक्खस्स) जंनवाइअं नपढियं
 न परियट्ठियं नपुत्ठियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेवले संतेवी
 रिए संतेपुरसक्कारपरक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमामो निदा

मो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अणुठेमो अहा
 रिहंतवोकम्मं पायच्चित्तंपफिवज्जामो ॥ तस्समिञ्चामिउक्कडं ॥
 ॥ नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं अंगवाहरियं कालि
 यं जगवंतं (तंजहा) उत्तरज्जयणाइं दसानकप्पो ववहारो इसि
 चासियाइं निसीहं महानिसीहं जंबूहीवपन्नत्ती सूरपन्नत्ती चंद
 पन्नत्ती दीवसागरपन्नत्ती खुड्डियाविमाणपविन्नत्ती महल्लियावि
 माणपविन्नत्ती अंगचूलीयाए वंगचूलीयाए विवाहचूलीयाए
 अरणोविवाए वरुणोविवाए गरुलोविवाए वेसमणोविवाए वेलं
 धरोविवाए देविंदोविवाए उष्ठाणसुए समुष्ठाणसुए नागपरियाव
 लियाणं निरयावलीयाणं कप्पियाणं कप्पवडिंसियाणं पुप्फि
 याणं पुप्फचूलियाणं वण्हीदसानं आसीविसजावणाणं दिष्ठीविस
 जावणाणं चारणसमणजावणाणं महासुविणजावणाणं तेअग्गि
 निसग्गाणं सबेहिंपिएयंमि अंगवाहिरए कालिए जगवंते ससुत्ते
 सअत्थे सग्गंथे सन्निज्जुत्तीए ससंगहिणीए जेगुणावा जावावा
 अरिहंतेहिं जगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेजावे सदहामो प
 त्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेजावेसदहंतेहिं
 पत्तहिंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं (अंतो
 पक्खस्स) जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुच्चियं अणुपेहियं अणु
 पालियं तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए वोहिलान्ना
 ए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टू उवसंपज्जत्ताणं विहरामि (अंतोप
 क्खस्स) जंनवाइयं नपढियं नपरिट्टियं नपुच्चियं नाणुपेहियं
 नाणुपालियं संतेवले संतेवीरिए संतेपुरसक्कारपरक्कमे तस्सआ
 लोएमो पम्पिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो
 अकरणयाए अणुठेमो अहारिहंतवोकम्मं पायच्चित्तं पफिवज्जा

मो तस्समिद्धामिडुक्कडं ॥ नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिइमंवा
इयं डुवालसंगं गणिपिडगं ऋगवंतं (तंजहा) आयारो सूअ्रग
डो छाणांग समवाउ विवाहपन्नत्ती नायाधम्मकहाउ उवासगदसा
उ अंतगडदसाउ अणुत्तरोववाइदसाउ पन्हावागरणं विवागसु
यं दिठ्ठिवाउ सब्बेहिपि एयंमि डुवालसंगं गणिपिडगं ऋगवंतेहि
पन्नत्तावा पख्वियावा तेजावे सदहामो पत्तियामो रोएेमो फा
सेमो पालेमो अणुपालेमो तेजावे सदहंतोहिं पत्तियंतेहि रोयंते
हि फासंतेहि पालंतेहि अणुपालंतेहि (अंतोपक्खस्स) जंवाइ
यं पडियं परियट्ठियं पुडियं अणुपेहियं अणुपालियं तंउक्ख
क्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए वोहिलाजाए संसारुत्तारणा
ए तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणंविहरामि (अंतोपक्खस्स) जं नवाइयं
न पडियं न परियट्ठियं न पुडियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेव
ले संतेवीरिए संतेपुरसक्कार परिकमे तस्सअलोएमो पडि
कमामो निदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अ
पुठेमो अहारिहंतवोकम्मं पायत्तित्तंपडिवज्जामो तस्समिद्धा
मि डुक्कडं ॥ नमो तेसिंखमासमणाणं जेहिइमंवाइयं डुवाल
संगं गणिपिडगं ऋगवंतं सम्मं काएण फासंति पालंति पूरंति
तीरंति किट्ठंति सम्मंआणाए आराहंति अहंचनाराहंमि त
स्समिद्धामि डुक्कडं ॥ सुयदेवया ऋगवई । नाणावरणीय क
म्मसंघायं । तेसंखवेउसययं । जेसंसुयसायरेत्तात्ति १ इतिश्री
पाहिकसूत्रं समाप्तं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पाहिकखामणा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इद्धामिखमासमणो पियंचमे जंने ह्छाणं तुछाणं

अप्पायंकाणं अन्नग्ग जोगाणं सुव्वयाणं सायरिय उवञ्जायाणं
 नाणेणं दंसणेणं चरित्तेणं तवसाअप्पाणं जावेमाण्णं बहुसुत्तेण्णे
 दिवसो पक्खो चोमासियो संवत्तरिअो वइक्कंतो अन्नोयत्तेकल्लाणेणं
 पज्जु वट्ठिअ सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि तुप्पेहिंसम्मं । इतिगुरु
 वचनं ॥ इहामिखमासमणो पुविंचेइयाइं वंदित्ता नमंसित्ता तुप्पेणं
 पायमूले विहरमाणेणं जेकेई बहुदेवसिया साहुणोदिष्ठा सम
 णावा गामाणुगामउइज्ज माणावा रायणिया संपुत्तंति उमराय
 णिया वंदंति अज्जयावंदंति अज्जयाअवंदंति सावयावंदंति
 सावयाअवंदंति अहंपिनिसत्तो निक्कसाअ तिकट्टु सिरसा मण
 सा मत्थएणवंदामि ॥ इतिशिष्यसाधू वचनं ॥ इहां गुरुववचन
 अहमविवंदामेवि चेइयाइं ॥ २ ॥ अञ्जुठिअमि तुप्पेणं संतियं
 अहाकप्पंवा वत्थंवा पफिग्गहंवा कंबलंवा पायपुत्तणंवा रजहर
 णंवा अक्खरंवा पायंवा गाहंवा सिलोगंवा अठंवा हेअंवा पसि
 णंवा वागरणंवा तुप्पेवि यत्तेणंदिअं मएअविणए अपफित्ठियं ॥
 तस्समिह्वामि उक्कमं ॥ इतिसाधुवचनं ॥ ॥ इहां आय
 रियसंतियं ॥ इति गुरुवाक्यं ॥ २ ॥ इहामि खमासमणो
 अहमविपुत्ताइं कयाइंच मेक्कियकम्माइं आयारमंतरे विणयमं
 तरे सेविअ सेवाविअ अवग्रहिअ सारिअ वारिअ चोइअ पडिचो
 इअ वियत्तामे पडिचोयणा उवट्ठिअहिं तुप्पेणं तवतेयसिरिए
 इमाअचाअरंतसंसारकंताराअसाहट्टु नित्थरिस्सामि तिकट्टु सिर
 सा मणसा मत्थएणवंदामि ॥ इति शिष्यवचनं ॥ इहाचार्यव
 चनं नित्थारगपारगाहोह ॥ इति श्रीपाहिकखामणकानि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सातेस्मरणस्तोत्र महाप्रजाविक ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अजियंजिअसवन्नयं । संतिं च पसंत सवगयपावं । जयगुरुस्तं
तिगुणकरे । दोविजिणवरेपणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववगयमंगुलजावे ।
तेहंविउलतवनिम्मलसहावे । निस्वममहप्पजावे । थोसामिसुदिठसप्रावे ॥ २ ॥
गाहा ॥ सबडुक्खप्पसंतिणं । सबपावप्पसंतिणं । सयाअजिय संतिणं । नमो
अजियसंतिणं ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥ अजियजिणसुहपवत्तणं । तवपुरिसुत्तमनाम
कित्तणं । तहयधिडमइपवत्तणं । तवयजिणुत्तमसंतिकित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिआ ॥
किरिआविहिसंचिय कम्मकिलेस विमुक्खयरं । अजियंनिचियंच गुणेहि
महासुणिसिद्धिगयं । अजियस्सय संति महासुणियोविअ संतिअरं । सययं म
मणिवुडकारणयंचनमंसणिअं ॥ ५ ॥ आलिंणणिअं ॥ पुरिसाजइ ड
क्खवारणं । जइयविमग्गह सुक्खकारणं । अजियं संतिं च जावउ । अज
यकरे सरणंपवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइरइ तिमिरविरहिय । सुव
रय जरमरणं । सुर असुर गरुड चुअगवड । पयय पणिवडयं । अजिय
महमविय सुनयनयनिउण मन्नयकरं । सरणमुवसरिअ चुविदिविज्जमहियं
सययसुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तंचजिणुत्तम मुत्तमणित्तमसत्तधरं । अज्जव
मद्व खंतिविमुत्ति समाहिनिहिं । संतिअरंपणमामि दमुत्तमतित्थयरं । सं
तिसुणीममसंतिसमाहिवरंदिसउ ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुवपत्थिवंचवर
हत्थि मत्थयपसत्तवित्थिणसंथियं थिरसरिद्ववत्तं । भयगजलीलाय माणव
गंधहत्थिपत्थाणपड्डिअं । संथवारिहं हत्थिहत्थिवाहुं । धंतकणगरुप्रगनि
स्वहयपिंजरं । पवरलक्खणोवचिअ सोमचारुरूवं । सुडसुहमणाजिराम परम
रमणिज्जवरदेवडुंहुहि । निनायमहुरयरयसुहगिरं ॥ ९ ॥ वेढउ ॥ अजिअजिआ
रिगणं । जिअसवन्नयंन्नवोहरिउ । पणमामिअहंपयउ । पावंपसमेउमेन्नयवं
॥ १० ॥ रासालुधुन ॥ कुरुजणवयहत्थिणानर । नरीसरोपदमं । तउमहा
चक्खट्टिओए । महप्पजावो । जोवावत्तरिपुरवरसहस्स । वरणगराणिगमजण
वयवई । वत्तीसारायवरसहस्साणजायमग्गो । चउदसवररयण नवमहानिहि
चउसठिसहस्सपवरज्जुवईण सुन्दरवई । चुजसीहयगयरहसयसहस्ससामी उन्न
वइगामकोणिसामी । आसी जो जारहम्मिन्नयवं ॥ ११ ॥ वेढउ ॥ तंसंतिंसंति

अरं । संतिहं सवन्नया । संतिथुणामिजिणं संतिविहेनुमे ॥१२॥ रासाणंदियअं
 इख्खागुविदेहनरीसर नखसहासुणिवसहा । नवसारयससिसकलाणण विग
 यतमा विहुअरया । अजियउत्तमतेअगुणेहिमहासुणि अमिअबला विजलकु
 ला । पणमामितेअवन्नयसूरण जगसरणामसरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव
 दाणाबिंदचंदसूर वंदहठतुठजिठपरम । लठरूवधंतरुपपट्टसेय सुघनिधिधव
 ल । दंतपंति संतिसत्ति कित्तिमुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर । दित्ततेयबिंदधेयसवलोय
 आविअप्पआवणे । पइअसमेसमाहिं ॥ १४ ॥ नारायण ॥ विमलससिक
 लाइरेअ सोमं । वितिमिरसूरकलाइरेअ तेयं । तिअसवईगणाइरेअ रूवं । धर
 णीधरपवराइरेअसारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्तेय सयाअजियं । सारीरेय
 बले अजिअं । तवसंजमेय अजिअं । एसथुणामि जिण मजिअं ॥ १६ ॥
 चुअंगपरिरिंगिअं ॥ सोमगुणेहिं पावइनतं नवसरयसासि । तेय गुणेहिं पावइ
 नतं नवसरयरवि । रूव गुणेहिं पावइनतं तियसगणवई । सारगुणेहिं पावइन
 तं धरणीधरवई ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥ तित्थवरपवत्तअं तमरयरहिअं ।
 धीरजण थुअच्चिअं चुअकलिकलुसं । संतिसुहपवत्तयं तिगरणपयणं ।
 संतिमहंमहासुणिं सरणसुवणमे ॥ १८ ॥ ललियअं ॥ विणउणाय सिरर
 इअंजलि रिसिगुणसंथुअंथिमिअं । विवुहाहिव धणवइनखइ । थुअमहि
 अच्चिअंबहुसो । अइरुगय सरयदिवायर । समहिअ सप्पअंतवसा । गयणं
 गणविअरण । समुइअ चारण वंदिअंसिरसा ॥ १९ ॥ किसलयमाला ॥
 असुरगरुलपरिवंदिअं । किन्नरोरगनमंसिअं । देवकोफिसयसंथुअं । समण
 संघपरिवंदिअं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अजयं अणहं अरयं अरुअं । अजियं अजियं
 पयणपणमे ॥ २१ ॥ बिज्जुविलसियं ॥ आगयावरविमाणदिवकणग रहतुरय
 पहकरसइहिंहुलिअं । ससंजमोरयणखुअिअल्लिअचलकुंमलं । गयतिरीड
 सोहंतमनलिमाला ॥ २२ ॥ वेढण ॥ जंसुरसंघासासुरसंघा । वेरविउत्ताअत्तिमुज्ज
 ता । आयरअसिअसंजमपिंफिअ । सुहसुविह्निअ सवबलोघा । उत्तमकंचणार
 यणपरुविअ । आसुरअसणआसुरिअंगा । गायसमोणयअत्तिवसागय । पंज
 लिपेसिअसीसपणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिऊणथोऊणतोजिणं । ति
 गुणमेवय पुणोपयाहिणं । पणमिऊणयजिणंसुरासुरा । पमुइआ सन्नवणाइ

तोगया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महासुणिमहंपिपंजली । रागदोसत्रयमोहवज्जि
 अं । देवदाणवनरिदवंदिअं । संतिमुत्तममहातवंनमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंवर
 रंतर वियारणिआहि । ललियहंसवहुगामिणिआहिं । पीणसोणित्यणसालणि
 आहिं । सकलकमलदललोयणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवर्यं ॥ पीणनिरंतरथणजर
 विणमिअगायलयाहिं । माणिकंचणपसिदिलमेहल सोहियसोणितडाहिं । वर
 खिखिणि नेजर सतिलय वलय विञ्चूसणिआहिं । रयकर चजर मनोहर सुंदर
 दंसणिआहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा ॥ देवसुंदरीहिं पायवंदिआहिं वंदिआयज
 स्सतेसुविक्रमाकमा । अप्पणोनिलाडएहिं मंरुणोड्डणप्पगारएहिं केहिंकेहिवी ।
 अवंगतिलयपत्तलेह नामएहिं चित्रएहिं संगयंगयाहिं । जत्तिसन्निविठिवंदणाग
 याहिं हुं तितेवंदिआ पुणोपुणो ॥ २८ ॥ नारायण ॥ तमहंजिणचंदं । अजिअं
 जिअमोहं । धुअसव्वकिलेसं । पयउणमामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥ थुअवंदि
 अस्सा । रिसिगण देवगणेहिं । तोदेववहुहिं । पयउणमिअस्सा । जस्सजगुत्त
 मसासणयस्सा । जत्तिवसागयपिभियआहिं । देववरवरसावहुआहिं । सुरवरउ
 गुणपंभियआहिं ॥ ३० ॥ ज्ञासुरिअं ॥ वंससद्वर्तितालमेणए । तिउक्खराजि
 राम सदमीसएकएअ । सुउसमाणणे असुअसङ्गीअपायजालवंदिआहिं ।
 वलयमेहला कलावनेउरा जिराम सदमीसएकएय । देवनट्टिआहिं । हावजाव
 विअमप्पगारएहिं । नच्चिऊणअंगहारएहिं । वंदिआय जस्सतेसुविक्रमाकमा ।
 तयंतिलोयसव्वसत्त संतिकारयं । पसंतसवपावदोसमेसहं । नमामिसंतिमुत्तमं
 जिणं ॥ ३१ ॥ नारायण ॥ उत्तचामर पडागञ्जुअजव मंभिया । ऊयवर मगर तुरग
 सिरिवठसुलंठणा । दीव समुद्व मंदिर दिसागय सोहिआ । सत्थिअ वसहसीह
 सिरिवठ सुलंठणा ॥ ३२ ॥ ललिययं ॥ सहावलठा समपडछा । अदोसपुछा
 गुणोहीजिछा । पसायसिछा तवेणपुछा सिरीडंडछा रिसीहिञ्छा ॥ ३३ ॥
 वाण वासिआ ॥ तेतवेण धुअमवपावया । मव्वलोअहिअमूलपावया । संथु-
 आ अजिअसंति पावया । हुंतुमेमिवसुहाण दावया ॥ ३४ ॥ अपरंतिका ॥
 एवंतववल विञ्जं ॥ थुअंमए अजियसंति जिणञ्जुअलं । ववगयकम्मरयमलं ।
 गयंगयं सासयंविमलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तंवहुगुणप्पसायं । सुक्खसुहेणपरमेण
 अविसायं । नासेउमे विसायं । कुणउअपरिसाविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥

तंमोएनत्र नंदिं । पावेनुत्र नंदिसेणमन्निनंदिं । परसाविय सुहनंदिं । ममय
दिमन संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअचानुम्मासे । संवठ्ठर राइएय-
दिअहेअ । सोअवो सवेहिं । उवसग्गनिवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो
निसुणइ । उन्नकालंपि अजिअ संति थुअं । नहु हुंति तस्सरोगा । पुव्वुप्पणा
विनासंति ॥ ३९ ॥ जइइव्वह परमपर्यं । अहवाकित्तीसु वित्थना नवणे तातिङ्कु-
कुधरणे । जिणवयणे आयरंकुणह ॥ ४० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
॥ ❀ ॥ इति श्रीअजितशांतिस्तवनं प्रथम स्मरणं ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उव्वासिकम नक्खनिग्गयपहादंरुव्वलेणंगिणं । वंदा रूण दिसंतइ
वपयनं निव्वाण मग्गावलं । कुंदिं पुज्जल दंतकंति मिसन नीहंतनाणंकुरु ।
केरेदोवि दुइज्जसोलसजिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरमजलहिनीरं जोमि-
णिज्जं जलीहिं । खयसमयसमीरं जोजणिज्जा गईए ॥ सयलनहयलंवा लंघए
जोपएहिं ॥ अजिअ महवसंतिं सोसमत्थोथुणेनं ॥ २ ॥ तहविहु बहुमाण
व्वासिअत्तिअरेण । गुणकणमिवक्त्ते हामिचिंतामणिव । अलमहव अचिंता
एंतसामत्थजसिं । फलहइ लहुसवं वंठ्ठिअं णिठ्ठिअंमे ॥ ३ ॥ सयलजयहि
आणं नामिमित्तेणजाणं । विहडइलहुपुठ्ठा । निठ्ठदोवट्टवट्टं । नमिरसुरकिरीडू
वठ्ठपायारविंदे । सययमजिअसंती ते जिणिं देअिवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती
वट्टएदेहदित्ती । विलसइ चुविमित्ती जायए सुप्पवित्ती । फुरइ परमतित्ती
होइसंसारठित्ती । जिणजुअपयअत्ती हीअचिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ लालियपयपयारं
चूरिदिवंगहारं । फुडवणरसअवो दारसिंगारसारं । अणिमिसरमणिज्ज दंसण-
हेअनीया । इवपणमणमंदा कासि नट्टोवहारं ॥ ६ ॥ थुणहअजिअसंती ।
तेकयासेससंती । कणयस्यपसंगा ठज्जएजाणमुत्ती । सरअसपरिरंजा रंनिनिव्वा
णलठी । घणथणयुसिणंकु प्पंकपिंगीकयव ॥ ७ ॥ बहुविहनयअंगं वत्थुणिच्चं
अणिच्चं । सदसदणअिलप्पा लप्पमेअंअणेगं । इयकुनयविरुद्धं सुप्पसिधं चजेसिं ।
वयणमवयणिज्जं ते जिणे संजरासि ॥ ८ ॥ पसरइतिअलोए ताव मोहं वयारं ।
अमइजय मसणं ताव मिठ्ठत्तठ्ठणं । फुरइफुरु फलंता एंतणाणं सुपूरो । पयन
मजिअसंती जाणसूरोनजाव ॥ ९ ॥ अरिंकरि हरि तिणहु एहं वुचोराहि वाही ।
समरुमर मारी रुद्धुद्धोवसग्गा । पलयमजिअसंती कित्तेणजत्तिजंती । निवि

डतरतमोहा जक्खरा लंखिअव ॥ १० ॥ निचिअर्दुअदारु दित्तजाणग्गिजालां ।
परिमय मिव गोरं चित्तिअं जाण रूवं । कणर्यानहसरेहा कंतिचोरं करिजा ।
चरथिर मिह लद्धिं गाढसं थंजिअव ॥ ११ ॥ अडविनिवडिआणं पत्थिबुत्तासि-
आणं । जलहिलहरिहीरं ताणयुत्तिठियाणं । जलिअ जलणजाला लिंगिआणं
चजाणं । जणयइ लहुसंतिं संतिनाहाजिआणं ॥ १२ ॥ हरिकरिपरिकिणं पक्कपा-
इक्कपुणं । सयलपुहवि रज्जं गड्डिअणसज्जं । तणमिच पमिलग्गं जेजिणासु-
त्तिमग्गं । चरण मणुपवणा हुंतुतेमे पसणा ॥ १३ ॥ ढणससिवयणाहिं । फुल्लनि-
त्तुप्पलाहिं थणअरन मिरीहिं सुठिगिज्जोदरीहिं । लज्जिअनुअलयाहिं पीण-
सोणित्थलीहिं । सयसुर रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिस किमिअ
कुठ गंठि का साइसार । खयजर वणलूआ साससोसोदराणि । नहसुह दस-
ण्ठी कुठिकणाइरोगे । महजिण अउपाया सुप्पसायाहरंतु ॥ १५ ॥ इययुरु-
पुहतासे पक्खि ए चानुमासे । जिणवरपुगथुत्तं वड्ढेवा पवित्तं । पढह सुणह सि-
ज्जाएहजाएहचित्ते कुणह सुणह विग्घं जेण धाएहसिग्घं ॥ १६ ॥ डयविजया
जियसत्तुत्त सिरि अजिअ जिणेसर । तहअइरा विससेण तणय पंचमचक्कीसर ।
तित्यंकरसोल समसंति जिणवड्ढसंतह । कुरुमंगल ममहरसुपुरिअ मखिलंपि
थुणंतह ॥ १७ ॥ इति श्रीलघुअजितशांतिस्तवनं द्वितीयं स्मरणं २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमिअणपणयसुरगण । चूडामणिकिरणंजिअंमुणियो । चलणअ
अलं महाअय । पणासणंसंथवंबुठं ॥ १ ॥ सडिअकररणनहसुह । निबुड्डनासा
विवणलावणा । कुठमहारोगानल । फुलिंगनिदड्डसवंग्गा ॥ २ ॥ तेतुहचलणा
राहण । सलिलंजलिसेअवद्वियत्ताया । वणदवदट्ठागिरिपायपुव पत्तापुणोलद्धि
॥ ३ ॥ पुवायखुअजलनिहि । उअरुक्कलोलजीसणारावे । संअंतअयविसं-
बुल । निज्जाअयसुकवावारे ॥ ४ ॥ अवदलिअजाणवत्ता । खणेणपावंतिडडि-
यंक्कलं । पासजिणचलणअअलं । निचंचिअजेनमंतिनरा ॥ ५ ॥ खरपवणुअ-
अवणदव । जालावलिमिलिअसयल पुमगहणे । रुज्जंतमुअमयवहु । जीस-
णरवजीसणंमिवणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणोकमअअलं । निवावियसयलतिहुअणा-
जोयं । जेसंअरंतिमणुआ नकुणइजलणोअयंतेसि ॥ ७ ॥ विलसंतअोगजी-
पण । फुरिआरणनयणतरलजीहालं । उग्गअु अंगंनवजलय । सड्डहंजीसणा-

यारं ॥ ८ ॥ मणंतिकीडसरिसं । दूरपरिच्छूढविसमविसवेगा । तुहनामक्खरफुड-
 सिद्ध । मंतगुरुआनरालोए ॥ ९ ॥ अडवीसुजिद्धतकर । पुलिंदसद्दलसद्दजी-
 मासु । जयविहवुवणकायर । उल्लूरिअपहियसत्थासु ॥ १० ॥ अविदुत्तविहव-
 सारा । तुहनाहपणाम मित्तवावारा । ववगयविग्वासिग्घं । पत्ताहियइत्तियंठाणं
 ॥ ११ ॥ पज्जालिआनलनयणं । दूरवियारिअमुहंमहाकायं । नहकुलिसघाय-
 विअलिय । गयंदकुंजत्थलाज्जोयं ॥ १२ ॥ पणयससंजमपत्थिव । नहमणिमा-
 णिक्कपडिअपनिमस्स । तुहवयण पहरणधरा । सीहंकुंघंपि नगिणंति ॥ १३ ॥
 ससिधवलदंतसुसलं । दीहकरूद्धालवद्धि उवाहं । महुपिंगनयणज्जुअलं । स-
 सलिलनवजलहरायारं ॥ १४ ॥ जीमं महागइंदं । अच्चासन्नंपितेनविगिणंति ।
 जेतुह्णचलणज्जुअलं सुणिवइत्तुंगंसमद्धीणा ॥ १५ ॥ समरम्मतिक्खखग्गा ।
 जिघायपविद्धनद्धुअकवंदे । कुंतविणिज्जिन्न करिक्कलह । सुक्कसिक्कारपत्तरम्मि ॥
 ॥ १६ ॥ निज्जिअदप्पुधररिउनरिंदं । निवहाज्जडाजसंधवलं । पावंतिपावपस-
 मण । पासजिणतुहप्पज्जावेण ॥ १७ ॥ रोगजलजलणविसहर । चोरारिमयंदग-
 यरणज्जाइं । पासजिणनामसंकित्तणेण । पसमंतिसवाइं ॥ १८ ॥ एवंमहाज्जय
 हरं । पासजिणिंदस्ससंधवसुआरं । जवियजणाणंदयरं । कद्धाणपरंपरनिहाणं
 ॥ १९ ॥ रायज्जयजक्खरक्खस्स । कुसुमिणत्तुस्सत्तणरिक्खपीडासु । संजासु-
 दोसुपंथे उवसग्गेतहययणीसु ॥ २० ॥ जोपढइजोअनिसुणइ । ताणंकइणो
 यमाणत्तुंगस्स । पासोपावंपसमेउ । सयलत्तुवणच्चिअच्चलणो ॥ २१ ॥ ❀ ॥
 इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं तृतीयस्मरणं ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तंजयउजएतित्थं । जमित्थतित्थाहिवेणवीरेण । सम्मंपवत्तिअंज-
 वसत्त । संताणसुहजणयं ॥ १ ॥ नासिअसयलकिलेसा निहयकुलेसापसत्थ
 सुहलेसा । सिरिवधमाणतित्थस्स । मंगलंदित्तुतेअरिहा ॥ २ ॥ निद्वक्कम्म-
 वीआ । बीआपरमेठिणो गुणसमिद्धा । सिद्धा तिजयपसिद्धा । हणंतुत्तुत्थाणि-
 तित्थस्स ॥ ३ ॥ आयारमायरंता । पंचपयारंसयापयासंता । आयरिआत-
 हतित्थं । निहयकुतित्थंपयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअवायगावायगाय । सिअ-
 वायवायगावाए । पवयणपनिणीयकए । वणंतुसवस्ससंधस्स ॥ ५ ॥ निवा-
 णसाहुण्णज्जअ । साहुणंजणिअसवसाहज्जा । तित्थप्पज्जावगाते । हवंतुपरमे

ऋणोजङ्गो ॥ ६ ॥ जेणाणुगयंनाणं । निवाणफलंचरणमविहवइ । तित्थ
 स्सदंसाणंतं । मंगुलमवणेउसिद्धियरं ॥ ७ ॥ निव्वम्मोसुअधम्मो । समग्गज्ज्वंगि
 वग्गकयसम्मो । गुणसुद्धिअस्ससंवस्स । मंगलंसम्ममिहदिसउ ॥ ८ ॥ रम्मोच
 रिच्चधम्मो संपाविअजवसत्तसिवसम्मो । नीसेसकित्तेसहरो । हवजसयासयल
 संवस्स ॥ ९ ॥ गुणगणगुरुणो गुरुणो । सिवसुहमइणो कुणंतु तित्थस्स । सिरि
 वध्माणपहुपयन्निअस्स । कुसलंसमग्गस्स ॥ १० ॥ जियपन्निक्खाजक्खा ।
 गोसुहमायंगगयसुहपसुक्खा । सिरिवंजसंतिसहिआ । कयनयरक्खासिवदिंतु
 ॥ ११ ॥ अंवापडिहयंत्रा । सिद्धासिद्धाइआपवयणस्स । चकेसरिवइरुट्टा ।
 संतिसुरादिसउसुक्खाणि ॥ १२ ॥ सोलसविज्जादेवीउ दिंतुसंवस्समंगलंविज्जलं ।
 अबुत्तासहिआउ । विस्सुअसुयदेवयाइसमं ॥ १३ ॥ जिणसासणकय रक्खा ।
 जक्खाचउवीससासणसुरावि । सुहजावासंतावं । तित्थस्ससयापणासंतु ॥ १४ ॥
 जिणपवयणांमिनिरया । विरहाकुपहाउसवहासब्बे । वेयावच्चकराविअ । तित्थ
 स्सहवंतुसंतिकरा ॥ १५ ॥ जिणसमय सुद्धसमग्ग । वहिअजवाण जणिअसाह
 ज्जो । गीयरई गीयजसो । सपरिवारोसुहंदिसउ ॥ १६ ॥ गिहगुत्तखित्तज
 लथल । वणपब्बयवासिदेवदेवीउ । जिणसासणठिआणं । उहाणिसवाणिनि
 हणंतु ॥ १७ ॥ दसदिसिपालासक्खित्तपालया नवग्गहासनक्खत्ता । जोडणि
 राहुग्गहकालपास कुलिअधपहरेहि ॥ १८ ॥ सहकालकंटएहिं । सविठिवत्येहिं
 कालवेलाहि । सवेसवत्थसुहं । दिसंतुसवस्ससंवस्स ॥ १९ ॥ जवणवडवाण
 मंतर । जोडसवेमाणिआयजेदेवा । धरणंदसकसहिआ । दलंतुपुरिआइंति
 त्थस्स ॥ २० ॥ चक्कंजस्सजलंतं । गहउ पुरजंपणासिअतमोहं । तंतित्थस्स
 जगवउ । नमोनमो वध्माणस्स ॥ २१ ॥ सोजयउजिणोवीरो । जस्सक्काविसा
 साणंजएजयड । सिद्धिपहसाहणंकुपहं । नासाणंसवजयमहणं ॥ २२ ॥ सिरिउस
 जसेणपसुहा । हयजय निवहा । दिसंतुतित्थस्स । सबजिणाणंगणिहारिणो ।
 एहंवंडिअंसवं ॥ २३ ॥ सिरिवध्माणतित्थाहिवेण । तित्थंसमपिअंजस्स ।
 सम्मंसुहम्मसामी । दिसउसुहं सयलसंवस्स ॥ २४ ॥ पयडएअहिआजे । जहा
 णदिसंतुसयलसंवस्स डयरसुराविहुसम्मं । जिणगणहरकहियंकारिस्स ॥ २५ ॥

इयजोपठइतिसंजं । दुस्सज्जंतस्सनत्थिक्किंपिजए । जिणदत्ताणा एठिउ । सुनि-
ठिअठोसुहीहोइ ॥२६॥ ❀ ॥ इतिगणधरदेवस्तुतिः । चतुर्थस्मरणं ॥४॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मयरहिअंगुणगणरण । सायरं सायरं पणमिऊणं । सुगुरुजण
पारतंतं । उहिव थुणामितंचेव ॥ १ ॥ निम्महियमोहजोहा । निहयविरोहाप
णठिसंदेहा । पणयंगिवग्गदाविअ । सुहसंदोहासुगुणगेहा ॥ २ ॥ पत्तसुज
इत्तसोहा । समत्तपरतित्थजणियसंखोहा । पन्निअग्गमोहजोहा । दंसिअसुम
हत्थसत्थोवा ॥ ३ ॥ परिहरिअसत्थवाहा । हयदुहदाहासिवंवतरुसाहा । संपा
विअसुहलाहा । खीरोदहिणुअग्गाहा ॥ ४ ॥ सुगुणजणजणिअपुज्जा ।
सज्जोनिखज्जागहिअपवज्जा । सिवसुहसाहणसज्जा । अविगिरिगुरुचूरणेवज्जा ॥
॥ ५ ॥ अज्जसुहम्मप्पसुहा । गुणगणनिवहासुरिंदविहियमहा । ताणतिसंजं
नामं । नामंनपणासइजियाणं ॥ ६ ॥ पन्निवज्जिअजिणदेवो । देवायरिउंउरंत
अवहारी । सिरिनेमचंदसूरि । उज्जोयणसूरिणोसुगुरु ॥ ७ ॥ सिरिवअमा
णसूरी । पयनीकयसूरिमंतमाहणो । पन्निहयकसायपसरो । सरयससंकुवसुह
जणउं ॥ ८ ॥ सुहसीलचोरधप्परण । पच्चलोनिच्चलोजिणमयंमि । जुगपवरसुअ
सिअंतं । जाणउंपणयसुगुणजणो ॥ ९ ॥ पुरउंदुअह महिवअहस्स । अणहि
अवाडएपयडं । सुक्काविअरिऊणं । सीहेणवदवलिंगिगया ॥ १० ॥ दसमअरे-
यनिसिविप्फुरंतं । सअंदसूरिमयतिमिरं । सूरैणवसूरीजिणेसरेण । हयमहिअ-
दोसेण ॥ ११ ॥ सुकइत्तपत्तकित्ती । पयडिअगुत्ती पसंतसुहसुत्ती । पहयपर-
वाइदित्ती । जिणचंदजईसरोमंती ॥ १२ ॥ पयडिअनवंगसुत्तत्थ । स्यणुको-
सोपणासिअपज्जसो । अविअअविअजणमण । कयसंतोसोविगयदोसो ॥१३॥
जुगपवरागमसारपरूवणा । करणबंधुरोधेणिअं । सिरिअअयदेवसूरी । सुणिप-
वरोपरमपसमधरो ॥ १४ ॥ कयसावय संतासो । हरिअसारंगअग्गसंदेहो । गय
समयदप्पदलणो । आसाइअपवरकवरसो ॥ १५ ॥ जीमअवकाणणम्मिअ ।
दंसिअगुरुवयणरणसंदेहो । नीसेससत्तगुरुत्तं । सुरीजिणवअहोजयइ ॥ १६ ॥
उवरठिअसअरणो । चनरणुअणप्पहाणसअरणो । असममयरायमहणो । उअसु-
होसहइजस्सकरो ॥ १७ ॥ दंसिअनिम्मलनिच्चल । दंतगणोगणिअसावउत्थ-
अत्तं । गुरुगिरिगरुत्तसरहुव्व । सूरिजिणवअहोहोत्था ॥१८॥ जुगपवरागमपी-

उसपाण । पीणियमणाक्यात्रवा । जेणजिणवत्तहेणं । गुरुणातंसवहावंदे ॥१९॥
 विष्फुरिअपवरपवयण । सिरोमणी बूढपुवह खमोय जोसेसाणंसेसुव । सहइ-
 सत्ताण ताणकरो ॥ २० ॥ सच्चरिआणमहीणं । सुगुरूणंपारतंतमुवहइ जयइ-
 जिणदत्तसूरी । सिरिनिलजपणयमुणितिलज ॥ २१ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥
 ॥ ❀ ॥ इति श्रीगुरुपारतंत्र्यं पंचमस्मरणं ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिग्घमवहरजविग्घं । जिणवीराणाणु गामिसंघस्स । सिरिपास जि-
 णोथंजण । पुरठिजनिठिआनिठो ॥ १ ॥ गोयमसुहम्मपमुहा । गणवइ णोविहि-
 अजवसत्तसुहा । सिरिवध्माणजिणतित्थ । सुत्थयंतंकुणंतुसया ॥ २ ॥ सक्काइ
 णोसुराजे । जिणवेयावच्चकारिणोसंति । अ्वहरिअविग्घसंवा । हवंतु तेसंघसंति-
 करा ॥ ३ ॥ सिरिथंजणयठियपाससामि । पयपत्तमपणयपाणीणं । निद्वलिअ-
 पुरिअविंदो । धरणिंदोहरजपुरिआइं ॥ ४ ॥ गोमुहपमुक्खजक्खा । पडिहय
 पन्निक्खपक्खलक्खाते । कयसगुणसंघरक्खा । हवंतुसंपत्तिसिवसुक्खा ॥ ५ ॥
 अप्पडिचक्कापमुहा । जिणसासण देवयानजिणपणिआ । सिद्धाइआ समेया ।
 हवंतुसंघस्सविग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काएसासच्चरपुरठिजं । वध्माण जिणजत्तो ।
 सिरिवंजसंतिजक्खो । रक्खजसंघं पयत्तेण ॥ ७ ॥ खित्तगिह गुत्तसंताण । देस
 देवाहिदेवयातानं । निवइपुरपहियाणं । जवाणकुणंतुसुक्खाणि ॥ ८ ॥ चक्के
 सरिचक्करा । विहिपहरिजठिणिकंधराधणिअं । सिवसरणलग्गसंघस्स । सब
 हाहरजविग्घाणि ॥ ९ ॥ तित्थवडवध्माणो । जिणेसरोसंगजंसुसंघेण । जिण
 चंदोअयदेवो । रक्खजजिण वत्तहपहुमं ॥ १० ॥ सोजयजवध्माणो । जिणेसरो
 णेसस्वहयतिमिरो । जिणचंदाअयदेवा । य हुणो जिणवत्तहाजेय ॥ ११ ॥ गुरु
 जिणवत्तहपाए अयदेवपहुत्तदायगेवंदे । जिणचंदजिणेसरवध्माण । तित्थस्स
 बुट्टिकाए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणंसम्मं । मत्तंतिकुणंतिजेयकारंति । मणसावयसा
 वत्तसा । जयंतु साहम्मिआतेवि ॥ १३ ॥ जिणदत्तगुणेनाणाडणो । सयाजेध-
 रंतिधारंति । दंसिअसियवायपए । नमामिसाहम्मिआतेवि ॥ ६ ॥ ❀ ॥ इति
 षट्ठं स्मरणं ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ उवसग्गहरंपासं । पासवंदामिकम्मवणसुकं ।
 विसहरविसनिणासं । मंगलकत्ताणआवासं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ जवेअवेपास-
 जिणचंद ॥ २ ॥ ❀ ॥ इतिश्रीपार्थं जिनस्तवनं ॥ इति सप्तस्मरणानि ॥ ❀ ॥

धर । १९ । विजय । २० । मद्धि । २१ । देव । २२ । अनन्तवीर्य । २३ ।
चंद्रंकर । २४ ॥ ❀ ॥ एते ज्ञावितीर्थकराजिनाः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शान्ताः शान्तिकराः प्रवतु मुनयो मुनिप्रवरा । रिपुविजयदुर्भि
हकान्तोरेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु वो नित्यं । ॥ ॐ श्रीनाम्नि । १ । जितशत्रु
। २ । जितारि । ३ । संवर । ४ । मेघ । ५ । धर । ६ । प्रतिष्ठ । ७ । मह
सेननरेश्वर । ८ । सुग्रीव । ९ । दृढरथ । १० । विष्णु । ११ । वसुपूज्य । १२ ।
कृतवर्म । १३ । सिंहसेन । १४ । जानु । १५ । विश्वसेन । १६ । शूर । १७ ।
सुदर्शन । १८ । कुंज । १९ । सुमित्र । २० । विजय । २१ । समुद्रविजय
। २२ । अश्वसेन । २३ । सिद्धार्थ । २४ ॥ ❀ ॥ वर्त्तमान चतुर्विंशतिजि-
नजनकाः ॥ ❀ ॥ ॐ श्रीमरुदेवा । १ विजया । २ । सेना । ३ । सिद्धार्था
। ४ । सुमंगला । ५ । सुसीमा । ६ । पृथिवीमाता । ७ । लक्ष्मणा । ८ ।
रामा । ९ । नंदा । १० । विष्णु । ११ । जया । १२ । स्यामा । १३ । सुयशा
। १४ । सुव्रता । १५ । अचिरा । १६ । श्री । १७ । देवी । १८ । प्रजावती
। १९ । पद्मा । २० । वप्रा । २१ । शिवा । २२ । वामा । २३ । त्रिशला । २४ ।
॥ ❀ ॥ वर्त्तमानजिनजनन्यः ॥ ❀ ॥ ॐ श्री गो मुख । १ । महायक्ष । २ ।
त्रिमुख । ३ । यक्षनायक । ४ । तुंबरु । ५ । कुसुम । ६ । मातंग । ७ । विजय
। ८ । अजित । ९ । ब्रह्मा । १० । यक्षराज । ११ । कुमार । १२ । षण्मुख
। १३ । पाताल । १४ । किन्नर । १५ । गरुड । १६ । गंधर्व । १७ । यक्षराज
। १८ । कुवेर । १९ । वरुण । २० । नृकुटि । २१ । गोमेध । २२ । पार्श्व । २३ ।
ब्रह्मशांति । २४ ॥ ❀ ॥ वर्त्तमानजिनयक्षाः ॥ ❀ ॥ ॐ चक्रेश्वरी । १ ।
अजितबला । २ । दुरितारी । ३ । काली । ४ । महाकाली । ५ । श्यामा
। ६ । शांता । ७ । नृगुटी । ८ । सुतारका । ९ । अशोका । १० । मानवी
। ११ । चंदा । १२ । विदिता । १३ । अंकुशा । १४ । कंदर्पा । १५ ।
निर्वाणी । १६ । बला । १७ । धारणी । १८ । धरणाप्रिया । १९ । नरदत्ता
। २० । गांधारी । २१ । अंबिका । २२ । पद्मावती । २३ । सिद्धायिका । २४ ।
॥ ❀ ॥ वर्त्तमानचतुर्विंशति तीर्थकरशाशनदेव्यः ॥ ❀ ॥ ॐ स्त्री श्रीधृति
कीर्त्ति कांति बुद्धि लक्ष्मी मेधा विद्या साधन प्रवेशनिवेशनेषु । सुगृहीतना-

मानो जयंति ते जिनेन्द्राः ॐ रोहिणी । १ । प्रज्ञप्ती । २ । वज्रशृङ्खला । ३ ।
 वज्राङ्कुशा । ४ । चक्रेश्वरी । ५ । पुरुषदत्ता । ६ । काली । ७ । महाकाली । ८ ।
 गौरी । ९ । गांधारी । १० । सर्वस्त्रमहाज्वाला । ११ । मानवी । १२ । वैरोद्या
 । १३ । अञ्जुष्ठा । १४ । मानसी । १५ । महामानसी । १६ । एताः पोरुशवि-
 द्यादेव्यो रक्षंतु मे स्वाहा । ॐ आचार्योपाध्यायप्रचृति चातुर्वर्णस्य श्रीश्रमण-
 संघस्य शान्तिर्भवतु । ॐ तुष्टिर्भवतु । पुष्टिर्भवतु । ॐ ग्रहाश्रंद्र सूर्यां गारक
 बुध वृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु सहिताः सलोकपालाः सोम यम वरुण
 कुबेर वासवादित्य स्कन्द विनायक येचान्येपि ग्राम नगर क्षेत्रदेवतादय स्ते
 सर्वे प्रीयंतां २ अह्नीणकोस कोष्ठागारा नरपतयश्च ऋवंतु स्वाहा । ॐ पुत्र मित्र
 भ्रातृ कलत्र सुहृत् स्वजनसंबंधिवंधुवर्गसहिताः नित्यंचामोदप्रमोदकारिणो
 ऋवंतु । अस्मिश्च चूमंरुजे आयतननिवासिनां । साधु साध्वी श्रावक श्रावि-
 काणां । रोगोपसर्गं व्याधिदुःख दौर्मनस्योपशमनाय शांतिर्भवतु । ॐ तुष्टि
 पुष्टि ऋद्धि वृद्धि माङ्गल्योत्सवाः ऋवंतु । सदा प्रादुर्भूतानि दुरितानि पापानि
 शाम्यंतु । शत्रवः पराङ्मुखा ऋवंतु स्वाहा । श्रीमते शान्तिनाथाय । नमः ।
 शान्तिविधायिने । त्रैलोक्यस्यामराधीश । मुकुटाभ्यर्चितां ह्ये ॥ १ ॥ शान्तिः
 शान्तिकरः श्रीमान् । शान्तिः दिशतु मे गुरुः । शान्तिरेव सदातेषां । येषां
 शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ ॐ उन्मृष्टरिष्ट दुष्ट ग्रहगति दुःस्वमदुर्निमित्तादि संपा-
 दितहितसंपत् नामग्रहणं जयतुशांतेः ॥ ३ ॥ श्रीसंघपौरजनपद राजाधिपराज
 संनिवेशानां । गोष्ठीपुरमुख्यानां । व्याहरणैर्व्याहरेत्वांति ॥ ४ ॥ श्री श्रमणसंघस्य
 शांतिर्भवतु । श्रीपौरलोकस्य शांतिर्भवतु । श्रीजनपदानां शांतिर्भवतु ।
 श्रीराजाधिपानां शांतिर्भवतु । श्रीराजसंनिवेशानां शांतिर्भवतु । श्रीगो-
 ष्टिकानां शांतिर्भवतु । ॐ स्वाहा २ ॥ ॐ क्षी श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा । एषा
 शांतिः प्रतिष्ठा यात्रास्नात्रावसानेषु । शांतिकर्तृशं गृहीत्वा । कुंकुम चंदन
 कर्पूरा गुरुधूप वास कुसुमांजलिसमेतः । स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः । शुचिः शुचि
 वस्त्र श्रद्धना चरणालंकरणैः । पुष्पमाला कंठेकृत्वा । शांतिमुद्रवोषयित्वा शांति-
 पानीयं मस्तके दातव्यमिति । नृत्यंतिनृत्यं मणिपुष्पवर्षं । सृजंति गायंति च
 मंगलानि स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान् । कल्याणजाजोहि जिनाजिपैके

॥ १ ॥ अहंतित्थयरमाया शिवादेवी । तुह्य नयरनिवासिनी अह्य शिवं तुह्य
शिवं । असुहोवसमं शिवं ऋवतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः । परहित-
निरताऋवंतु ऋतगणाः । दोषाःप्रयांतु नाशं । सर्वत्र सुखी ऋवतु लोकः ॥ २ ॥
उपसर्गाः ह्यं यांति । ऋघंते विघ्नवह्नयः । मनः प्रसन्नतामेति । पूज्यमाने
जिनेश्वरे ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इति श्रीवृहत्कांतिः समाप्ता ॥ ❀ ॥

॥ अथ दूजकी स्तुति ॥

॥ ❀ ॥ महीमंरुणं पुत्र सोवन्न देहं । जणाणंदणं केवल चाण गेहं । महा
नंद लठी बहु बुधिरायं । सुसेवामि सीमंधरं तित्थरायं ॥ १ ॥ पुरा तारगा जेह
जीवाण जाया । ऋवस्संति ते सब ऋवाणताया । तहा संपयं जेजिणा वट्टमाणा
सुहं दिंतु तेमे तिलोयप्पहाणा ॥ २ ॥ डुरुत्तार संसार कुबारपोयं । कलंका-
वली पंक पक्खाल तोयं । मणोवंठियत्थे सुमंदार कप्पं । जिणंदगमं वंदिमो
सुमहप्पं ॥ ३ ॥ विकोसे जिणंदगणं ऋजलीणा । कला रूव लावण सोहग्ग
पीणा । वहंतस्स चित्तंमि णिच्चंपि जाणं । सिरी ऋरही देहिमे सुव्वनाणं
॥ ४ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ इति श्री सीमंधरजीरी स्तुतिः ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ पंचमी स्तुती ॥

॥ ❀ ॥ पंचानंतक सु प्रपंच परमानंद प्रदान ह्यमं । पंचानुत्तर सीम
दिव्य पदवी वश्याय मंत्रोपमं । येन प्रोज्ज्वल पंचमी वस्तपो व्याहारि तत्का
रिणां । श्रीपंचानन लांठनः सतनुतां श्री वर्धमानः श्रियं ॥ १ ॥ ये पंचाश्रव
रोदसाधनपराः पंचप्रमादी हराः । पंचाणुव्रत पंचसुव्रत विधि प्रज्ञापना सादराः
कृत्वा पंचरुषीक निर्जयमथो प्राप्तागतिं पंचमीं । तेमी संतु सुपंचमी व्रतचृतां
तीर्थकराः शंकराः ॥ २ ॥ पंचाचार धुरीण पंचम गणाधीशेन संसूत्रितं । पंच ज्ञान
विचारसार कलितं पंचेषु पंचत्वदं । दीपाऋंगुर पंचमार तिमिरे ष्वेकाः दशी
रोहिणी । पंचम्यादि फल प्रकाशनपटुं ध्यायामि जैना गमं ॥ ३ ॥ पंचानां
परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरु श्रियां । ऋक्तानां ऋविनां गृहेषु बहुशो या पंच-
दिव्यं व्यधात् । प्रह्ये पंचजने मनोमृत कृतौ स्वास्तनपंचालिका । पंचम्यादि
तपोवतां ऋवतु सा सिधायिका त्रायिका ॥ ४ ॥ इति श्री ज्ञान पंचमीस्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ वीरं । देवं । नित्यं वंदे ॥ १ ॥ जैनाः । पादा । युष्मान् पांतु

॥२॥ जैनं । वाक्यं । चूया । हृत्ये ॥३॥ सिद्धा । देवी । दद्यात् । सौख्यं ॥ ४॥
 ॥ ❀ ॥ इति लक्ष्मीखीण्डासि श्रीवीर स्तुतिः ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ अष्टमी स्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ चञ्चुवीसे जिनवर प्रणसुंहुं नितमेव । आठम दिनकरिये चंद्राप्र-
 चुनी सेव । मूरति मनमोहे जाणें पूनिमचंद । दीठां दुख जायै पामेपरमानंद
 ॥ १ ॥ मिल चोसठ इंद्र पूजे प्रचुजीना पाय । इंद्राणी अपठराकरजोनी गुण-
 गाय । नंदीश्वर छीपें मिल सुखरनी कोड । अछाही महोठवकरतां होना होन
 ॥ २ ॥ सेहुंजा सिखें जाणी लाज अपार । चौमामे रहिया गणधर मुनि परि-
 वार । जवियणनें तारे देड धरम उपदेश । दूध साकरथी पिण वाणी अधिक
 विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पडिकमणो करिये व्रतपचखाण । आठम तप करतां
 आठकरमनी हाण । आठमंगल थायें दिन २ कोडि कट्याण । जिन सुखसूरि
 कहै डम जीवत जनम प्रमाण ॥ ❀ ॥ इति अष्टमी स्तुतिः ॥ ८ ॥

॥ सर्वदिन स्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ मूरति मनमोहन कंचन कोमलकाय । मिश्ररथ नंदन त्रिसला
 देवि सुमाय । मृगनायक लंठन सातहाथ तनु मान । दिन दिन सुख दायक
 स्वामी श्रीवधमान ॥ १ ॥ सुर नखर किन्नर वंदित पद अरिर्विंद । कामित
 जर पुरण अजिनव सुरतरुंकंद । जवियणनें तारे प्रवहण समनिसि दीस ।
 चोवीसे जिनवर प्रणसुं विसवावीम ॥ २ ॥ अरथें करि आगम ज्ञाप्या श्रीज-
 गवंत । गणधर तेगुंथ्या गुणनिधि ग्यान अनन्त । सुरगुरु पिण महिमा कहि-
 नसके एकन्त । समरुं सुखदायक मनसुध सुत्रसिद्धन्त ॥ ३ ॥ सिन्धायिका
 देवी वारे विघनविशेष । सहु संकट चूरे पूरे आम असेप । अहनिंसि करजोडी
 मेवे सुर नर इंद्र । जंपई गुणगण डम श्रीजिनलाज सुरिंद ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥
 ॥ ❀ ॥ इति श्रीमहावीर जिनस्तुतिः ॥ ९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ दशमी स्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ अश्वसेन नरेसर वामा देवी नंद । नवकर तनु निरुपम नील
 वरण सुखकंद । अहिलंठण सेवित पठमावड धराणद । प्रहज्जती प्रणसुं नि-

तप्रति पासजिणिंद ॥ १ ॥ कुलगिरि वेकड्डइ कणयाचल अन्निराम । मानु-
षोत्तर नंदी रुचिक कुंमल सुखठाम । प्रवणोसर व्यंतर जोइस वेमाणीय
धाम । बरतै जेजिनवर पूरो मुज मनकाम ॥ २ ॥ जिहां अंगइग्यारै वारैउ-
पांग उद्वेद । दसपइन्ना दाख्या मूलसूत्र चउन्नेद । जिन आगम षट्द्रव्य
सत्तपदारथ जुत्त । सांजलि सरदहतां तूटै करम तुरत्त ॥ ३ ॥ पठमावइदेवी
पार्श्वयह परतह । सहु संवना संकट दूरकरेवा दह । तेसमरो जिनप्रक्ति सूरि
कहै इकचित्त । सुख सुजस समांपो पुत्र कलत्र बहुवित्त ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तुतिः ॥ १० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ एकादशी स्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ अस्य प्रब्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं । तथा मत्ते जन्म व्रत
मपमलं केवलमलं । बलहै कादश्यां सहसिलस पुदाम महासि ॥ द्वितौ
कल्याणानां कृपतु विपदः पंचक मदः ॥ १ ॥ सुपूर्वेद्र श्रेण्या गमन गमनै
र्भूमिवलयं । सदा स्वर्गत्यैवा हमहमकया यत्र सलयं । जिनानामप्यापुहण
मति सुखं नारकसदः ॥ (द्वितौ ०) ॥ २ ॥ जिना एवं यानि प्रणिजग
दुरात्मीय समये । फलं यत्कर्तृणा मितिच विदितं सुद्धसमये । अनिष्टा रिष्टानां
द्विति स्तुत्रवेयु बहुमुदः ॥ (द्वितौ ०) ॥ ३ ॥ सुरास्सेद्रा सर्वे सकल
जिन चंद्र प्रमुदिताः तथाच ज्योतिष्का खिल प्रवननाथा समुदिताः ।
तपो यत्कर्तृणां विदधति सुखं विस्मितहृदः (द्वितौ ०) ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ इति मोनै कादशीस्तुतिः ॥ ११ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ चतुर्दशी स्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ द्रेंद्रैकि धपमप धुधुमि धोंधों ध्रसकि धर धप धोरवं । दोंदोंकि
दोंदों दाग्निदि दाग्निदिकि द्रमकि द्रण रण द्रेणवं । ऊज्जिद्रेंकि ड्रें ड्रें ड्रू णण
रण रण निजकि निज जन रंजनं । सुरशेल सिखरे प्रवति सुखदं पार्श्वजिन-
पति मज्जनं ॥ १ ॥ कट रेंगिनि थोंगिनि किटति गिगडदां धुधुकि धुट नट
याटवं । गुण गुणण गुण गण रणकिणैणै गुणण गुण गण गौरवं । ऊ ड्रि
ड्रेंकि ड्रेंड्रें ड्रूणण रण रण निजकि निज जन सज्जना । कलयंति कमला

कलित कलमल मुकलमीस महेजिनाः ॥ २॥ ठकि ठकि ठे ठे ठे ठकि ठकि
 ठकिपट्टा ताड्यते । तललोकि लो लो त्रैषि त्रैषिनि त्रैषि त्रैषिनि वाद्यते ।
 उँ उँकि उँ उँ थुंगि थुंगिनि धोंगि धोंगिनि कलरवे । जिन मत मनंतं महिम
 तनुता नमति सुर नर मुद्भवे ॥ ३ ॥ पुढांकि पुढां पुपुडदि पुढां पुपुडदि दोंदों
 अँवरे । चाचपट चचपट रणकि ऐँऐँ रणण रँरँ रँवरे । तिहां सरग मपद्युनि
 निधप मगरस सस समस सुर सेवता । जिन नाद्वरंगे कुशलमुनिसं दिसठ
 शासन देवता ॥ ४ ॥ इति श्रीजिन कुशलसूरिजीकृत पार्श्वजिन स्तुति ॥ १४ ॥

॥ अथ चैत्रीपूनम स्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ सेतुंज गिरि नमिये ऋषभ देव पुंफरीक । शुभ्रतपनी महिमा सुणि
 गुरु मुख निरञ्जीक । शुधमन उपवासै विधिमुं चैत्यवंदनीक । करिये जिन
 आगल टाली वचन अलीक ॥ १ ॥ शक्र स्तवनादिक प्रथम तिलक
 दश वीस । अहूत गिण तीसे चढता तिम चालीस । पंचासनी पूजा जा
 षड् इम जगदीस । तेहीज नितप्रणमुं स्वामी जिन चउवीस ॥ २ ॥ सुदि
 पहनी पूनम चैत्रमास शुभ्रवार । विधिसेतो लहीये आगमसाख विचार । उम
 सोलवरस लग धरिये न्यान उदार । करतां नरनारी पामे जवनोपार ॥ ३ ॥
 सोवन तनचरणे नयणे तिम अरिर्विंद । चक्केमरी देविय सेविय नर सुर वृंद ।
 कामितसुखदायक पूरयमन आणंद । जंपै गणनायक श्रीजिनलाज सूरिंद
 ॥ ४ ॥ इति श्रीचैत्री पूनमस्तुतिः ॥ १५ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ नवपदस्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी जी ।
 कर्णासागर निजगुण आगर सुभ्र समता रस धामी जी । श्री सिद्ध चक्र
 क्षिरोमणि जिनवर ध्यावै जे मन रंगै जी । ते मानव श्रीपाल तणी परि पामे
 सुख सुर संगे जी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक साधु महा गुणवंता
 जी । दरसन नाण चरण तप उत्तम नवपद जग जय वंता जी । एहनो ध्यां-
 नधरंता लहीये अविचल पद अविनामी जी । तेमगला जिननायक नमीये
 जिनए नीति प्रकामी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनोहर तिमवालि चैत्रकमास
 जगीसै जी । उजवाली सातमथी करिये नव आंवल नव दिवसे जी । तेर-

सहस्र बलि गुणिये गुणयो नवपदकेरो सारो जी । इण परि निरमल तप
आदरिये आगम साख उदारो जी ॥३॥ विमल कमलदल लोयण सुंदर श्री
चक्रेशरि देवी जी । नवपद सेवक नविजन कैरा विघनहरो सुरसेवीजी ।
श्रीखरतरगढ नायक सदगुरु श्रीजिनभक्ति सुरिंदाजी । तासु पसायें इणपरि
पत्रणें श्रीजिनलाज सुरिंदा जी ॥४॥ ❀ ॥ इति श्रीनवपदस्तुतिः ॥ ❀ ॥ १६ ॥

॥ अथ पर्युषणस्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ बलि बलिहुं ध्यावुं गाऊं जिणवरवीर । जिण परब पजूसण
दाख्या धरमनी सीर । आसाढ चौमासे हुंती दिनपंचास । पडीकमणो
संवहरी करियै त्रिणउपवास ॥ १ ॥ चौवीसे जिनवर पूजा सतरप्रकार ।
करियै नलनारवें नरिये पुण्यनंकार । बलिचैत्यप्रवाडें फिरतां लाज अनंत ।
इम परब पजूसण सहुमें महिमावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वाचना
यें वचाय । श्रीकल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय । प्रतिदिन परनावना
धूप अगर नक्खेवो । इम नवियण प्राणी परब पजूसण सेवो ॥ ३ ॥ बलि
साहमी बहल करियै वारंवार । केइ नावना नावे केइ तपसी सीलधार ।
अरुदीह पजूसण इम सेवत आणंद । सुयदेवी सानिध कहै जिनलाज-
सूरिंद ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इति श्रीपर्युषणापर्व स्तुतिः ॥ ❀ ॥ १७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पनरैतिथोंका स्तवन लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुगुण सनेही साजण श्री सीमंधरस्वामि । अरज सुणो इक जग
गुरु मुऊ आसा विसराम । पूरबविदेहें विजयनली पुष्कलावई नाम । जिहां
विचरै जिनवरजी धनते नयरीगाम ॥ १ ॥ धनते लोक सुणै जे जोजनगा
मनी वाणि । धनते महीयल चरणधरै जिहां जिनवर जाण । धनते नविजन
जे रहै प्रनुताहरे परसंग । वदनकमल निरखी नितमाणै उहवअंग ॥२॥ सुगुरु
मुखै प्रनु सुजस तुह्णीणो सांनलकान । मिलवानें उलसै मनमाहरो धरुं इक
ध्यान । नगति जुगति करवानी ठै मुजसगली जोरु । पिण प्रनु लग पुहची
जे तेहनही पगदोरु ॥ ३ ॥ आका डुंगर अतिघणा विचवहै नदियांपूरि
किम मुऊथी अवरायै प्रनुजी एतलीदूर । आंखडली उलजों करै जोयवा
सुख जिनराज । पांखडली पाई नही ते विन किमसरै काज ॥ ४ ॥ वाट

डली-बहतो कोई न मिले सँगसाथ । कागलियो लिख आपूंहें जिम
 तेहने हाथ । जाणूं ससिहर साथे कहूं संदेशाजेह । पिण अलगो थई ऊपरि
 वानै निकलै तेह ॥ ५ ॥ जो कोई रीते प्रनुजी तुमथी एथ अवाय । तो डण
 अस्तनावासी अविजन पावन थाय । साहिबनीतो सुनिजर सगलै सरिषी
 होय । पिणपोतानी प्रापति सारू फलप्रतिजोय ॥ ६ ॥ अलगोटुं पिणमाहरे
 तुमसुं साचीप्रीति । गुण गुणवंतना आवै हीयने खिण २ चीत । हुंहुं सेवक
 तुंढे माहरो आतमराम । नहिय विसारूं जीबुं जांलगि ताहरो नाम ॥ ७ ॥
 साचै दिलथी मुऊसुं धरज्यो धरमस्नेह । करुणाकर प्रनु कर जो मोपरि महिर
 अन्नेह । दूसमकाल तणो दुखदालो दीनदयाल । पालो विरुद संजालो
 निज सेवकसुं कृपाल ॥ ८ ॥ आसविलूधा अलग थकी पिण करै अरदास ।
 पिण मोटानी महिरबतां नविथाय निरास । केईवसै प्रनु पासे केई वसेढे
 दूर । राजमहिरनी रीते सकलनें जाणें हजूर ॥ ९ ॥ शिवसुख दायक नायक
 लायक स्वामिसुरंग । ध्यायक ध्येय स्वरूपलहे निज आत्मउमंग । सहिजे एक
 पलक जोथायै प्रनु तुजसंग । लाजउदय जिनचंद्र लहै नितप्रेम अजंग १० ॥
 ॥ ❀ ॥ इति श्री सीमंधरस्वामी स्तवनं ॥ ❀ ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ श्रीसंखेश्वरपार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ ❀ ॥ श्रीसंखेसर पास जिनेसर जेटियै । जवना संचित पाप परा सब
 मेटियै । मनधर जाव अनंत चरणयुग सेवता । अणहुंतें इककोमि चतुरविध
 देवता ॥ १ ॥ ध्यानधरूं प्रनुदूरथकी हुं ताहरो । जल जिमलीनो मीन
 सदा मनमाहरो । जव २ तुमहीजदेव चरणहुं सिरधरूं । जवसायरथी तार
 अरज आहीजकरूं ॥ २ ॥ नूख त्रिपा तप सीत आतम एनविसहै । तप जप
 संयम चारतणो नविनिरवहै । पिण जिणवरना नामतणी आसतघणी । एहिज
 ठे आधार जगतगुरु अह्वजणी ॥ ३ ॥ तुम दरसण विनसामि जवो दाधि हुं
 फिरयो । सहिया दुख अनेक न कारज कोसरथो । मिलिया हिव प्रनु मुज्ज
 सदासुख दीजीयै । चउगइ संकट चूर जगतजस लीजीये ॥ ४ ॥ यादवपति
 श्रीकृष्ण तणी आरति हरी । सेनाकीध सचेत जरा दूरैकरी । परचा पूरण पास

रयण जिमदीपतो । जयवंतो जिणचंदसयल रिपुजीपतो ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
॥ ❀ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ द्वितियादिन सीमंधरस्तवन ॥

॥ ❀ ॥ सफल संसार अवतार ए हुं गिणुं । सामि सीमंधरा तुह्य जगतै
जणुं । जेठ्वा पायकमल जाव हीयमै घणो । करीय सुपमाय जे वीनहुं ते
सुणो ॥ १ ॥ तुह्यसुं कूड अरिहंतसुं राखियै । जिसो अठै तिसो कर जोफि करि
जाषियै । अति सबल मुज हियै मोह माया घणी । एक मन जगति किमकरुं
त्रिनुवन धणी ॥ २ ॥ जीव आरति करै नव नवी परिगडै । रीसचटको चढे
लोज वयरी नडै । नयण रस वयण रस काम रस रसीयो । तेम अरिहंत तूं
हियडै नवि वसीउ ॥ ३ ॥ दिवसनें राति हियडै अनेरो धरुं । मूढमन रीजवा
वलिय माया करुं । तूंहीज अरिहंत जाणें जिसो आचरुं । तेम कर जेम
संसार सागर तरुं ॥ ४ ॥ कम्मवसि सुखनें दुख जेहुंसहुं । मनतणी वात
अरिहंत किणनें कहुं । करि दया करि मया देव करुणापरा । दुख हरि सुख
करि सामि सीमंधरा ॥ ५ ॥ जाण संयोग आगम वयण पिणसुणुं । धर्म
नकराय प्रनुपाप पोते घणुं । एक अरिहंततूं देव बीजो नही । एह आधार जग
जाणज्यो अह्य सही ॥ ६ ॥ धण कणाय माय पिय पुत्त परियण सहू । हस्यो
बोड्यो रम्यो रंगरातो बहू । जय जयो जगतगुरु जीव जीवन धरा । तुह्य सम-
वरु नही अवर वाड्हे सरा ॥ ७ ॥ अमिय सम वांणि जाणुं सदा सांजहुं ।
वार वर परषदा मांहि आवी मिलुं । चित्तजाणुं सदा सामि पायजुंजगुं । किम
करुं ठाम पुंनर गिरि वेगलुं ॥ ८ ॥ ज्ञोलडा जगतितूं चित्तहारै किस्यै । पुण्य-
संयोग प्रनु दृष्टिगोचर हुस्यै । जेहनें नाम मन वयण तन उद्वस्यै । दूरथी
दूकना जेम हियडै वसै ॥ ९ ॥ जल जलो एणि संसार सहू ए अठै । सामि
सीमंधरा ते सहू तुम पठै । ध्यान करतां सुपन मांहि आवीमिलै । देखियै
नयण तो चित्त आरति टलै ॥ १० ॥ सामि सोहा मणा नाम मन गह गहै ।
तेहसुं नेह जे वात तुह्यची कहै । तुह्य पाय जेठ्वा अति घणुं टलवलुं ।
पंख जो होयतो सहिय आवीमिलुं ॥ ११ ॥ मेरुगिर लेखणी आज्ञकागल करुं ।
खीर सागर तणा दूध खडिया जरुं । तुह्य मिलवा तणा सामि संदेसना । इंद्र

पिण लिखिय नसके अठै एवमा ॥ १२ ॥ आपणें रंग जरि वात सुण जेतली ।
 ऊपजै सामि न कहाय मुख तैतली । सुणो सीमंधरा राज राजेसरा । लान्ने
 कोरि प्रचुपूरि सवि माहरा ॥ १३ ॥ पुव्व जवि मोह वसि नेह हुवै जेहनें ।
 समरिये एणि संसार नित तेहनें । मेहनें मोर जिम कमल जमरोरमें । तेम
 अरिहंततू चित्त मोरै गमें ॥ १४ ॥ खरो अरिहंतनो ध्यान हियमें वस्युं । वापनो
 पापहिव रहिय करस्यै किंसुं । ठामि जिम गुरुडवर पंख आवे वही । ततखिण
 सर्पनी जाति नसकै रही ॥ १५ ॥ पापमें कज्ज सावज्ज सहु परिहरो । सामि
 सीमंधरा तुह्ल पाय अणु सरी । सुद्ध चारित्र कहियै प्रचू पालसुं । दुक्ख जंकार
 संसार जय दालसुं ॥ १६ ॥ तुह्ल हुंदास हुं तुह्ल सेवकसही । एहमें वात अरि-
 हंत आगलिकही । एवडी माहरी जगति जाणी करी । आप ज्यो वापजी सार
 केवल सही ॥ १७ ॥ कलश ॥ उम रुद्धि वृद्धि समृद्धि कारण पुरित वारण
 सहुकरो । उवज्जाय वर श्री चक्तिलाजै थुण्यो श्रीसीमंधरो । जयजयो जगत
 गुरु जीव जीवन करो सामि मया वणी । करजोडि वलि वलि वीनहुं प्रचु
 पूरि आस्या मनतणी ॥ १८ ॥ ॥ श्री ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ श्री ॥ ॥ ❀ ॥
 इति श्री सीमंधरजीरी वीनती संपूर्ण ॥ २ ॥ ॥ श्री ॥ ❀ ॥ श्री ॥ ❀ ॥

॥ अथ पंचमी वृद्धस्तवन ॥

॥ ❀ ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय । निरमल न्यानउपाय । पांचमि तप जणुं ए ।
 जन्म सफल गिणुं ए ॥ १ ॥ चतुर्वीसमो जिनचंद । केवल न्यान दिणंद ।
 त्रिगणै गहगह्यो ए । जवियणें कह्यो ए ॥ २ ॥ न्यान वनो संसार । न्यान
 सुगति दातार । न्यान दीवो कह्यो ए । साचो सरदह्यो ए ॥ ३ ॥ न्यान लोचन
 सुविलास । लोकालोक प्रकास । न्यान विना पसु ए । नर जाणें किंसुं ए ॥ ४ ॥
 अधिक आराधक जाण । जगवती सूत्रप्रमाण । न्यानी सर्वतु ए । किरिया देश-
 तु ए ॥ ५ ॥ न्यानी सासोसास । करम करै जेनास । नारकिने सही ए । कोड
 वरस कही ए ॥ ६ ॥ न्यानतणो अधिकार । वोल्या सूत्र मजार । किरिया तै
 सही ए । पिण पाठै कही ए ॥ ७ ॥ किरिया सहित जो न्यान । हुवैतो अति
 परधान । सोनेनें सुरो ए । संख दूधै जरयो ए ॥ ८ ॥ महा निशीथ मजार ।
 पांचमि अहूर सार । जगवंत जापीयो ए । गणधर साखियो ए ॥ ९ ॥ (ढाल १

पहिली काल हरानी) ॥ ❀ ॥ पांचमि तप विधि सांजलो । जिम पामो ऋव
 पारोरे । श्रीअरिहंत इम उपदिसै । ऋवियणनें हित कारोरे ॥ पां० ॥ १० ॥
 मिगसर माह फागुण ऋला । जेठ आसाढ वैसाखोरे । इण षट्मासै लीजियै ।
 शुभदिन सद्गुरु साखोरे ॥ पां० ॥ ११ ॥ देव जुहारी देहरे । गीता रथ गुरु
 बंदीरे । पोथी पूजो न्याननी । सगति हुवै तो नंदीरे ॥ पां० ॥ १२ ॥ बेकर
 जोनी ऋवसुं । गुरु मुख करो उपवासोरे । पांचमि पडिक्रमणो करै । पढो पंडित
 गुरु पासोरे ॥ पां० ॥ १३ ॥ जिण दिन पांचमि तप करो । तिण दिन
 आरंज टालोरे । पांचमि तवन थुई कहो । ब्रह्म चारिज पिण पालोरे ॥
 ॥ पां० ॥ १४ ॥ पांचमास लघुपंचमी । जाव जीव उत्कृष्टीरे । पांच
 वरस पांच मासनी । पांचमि करो शुभ दृष्टीरे ॥ पां० ॥ १५ ॥ (ढाल २ उद्धा-
 लानी) ॥ ❀ ॥ हिव ऋवियणरे पांचमि नुजमणो सुणो । घर सारूरे वारू
 धन खरचो घणो । ए अवसररे आवंतां वलि दोहिलो । पुण्य जोगैरे धनपा-
 मंता सोहिलो । (उद्धालो) सोहिलो वलीय धन पामतां पिण धर्म काज
 किहां वली । पंचमी दिन गुरु पास आवी कीजीयै कावसग रली । तिण न्यान
 दरसण चरण टीकी देइ पुस्तक पूजीयै । थापना पहिली पूजकेसर सुगुरु सेवा
 कीजीयै ॥ १६ ॥ सिद्धांतनीरे पांच परत वीटांगणा । पांच पूठारे मुख मल
 सूत्र प्रमुख तणा । पांच कोरारे लेखण पांच मजी सणा । वासकुंपारे कांबी
 वारू वरतणा । (उद्धालो) वरतणा वारू वलिय कमली पांच जिल मिल
 अति ऋली । थापना चारिज पांच ठवणी सुहपती परु पाटली । पट सूत्र पाटी
 पंचकोथल पंच नव कर वालियां । इण परै श्रावक करै पांचमि नुजमणो
 नुजवालियां ॥ १७ ॥ वलि देहरैरे स्नात्र महोद्धव कीजीयै । घर सारूरे दान-
 वली तिहां दीजियै । प्रतिमानेरे आगलि ढोवणो ढोइयै । पूजानारे जे जे
 उपगरण जोइयै । (उद्धालो) जोइयै उप गरण देव पूजा काज कलशचंगार
 ए । आरती मङ्गल थालदीवो धूपधाणो सारए । धनसार केसर अंगर सूकरु
 अंगुलुहणो दीसए । पंचपंच सगली वस्तु ढोवो सगतिसुं पचवीस ए ॥ १८ ॥
 पांचमीतारे साहमी सर्व जीमामियै । रात्री जोगेरे गीत रसाल गवाडियै । इण
 करणीरे करता न्यान आराधियै । न्यान दरसणरे उत्तम मार्ग साधियै ।

(उल्लाजो) साधियें मारग एह करणी न्यान लहीये निरमजो । सुर लोकनें नरलोक माहें न्यान वंतते आगलो । अनुक्रमें केवल न्यान पामी सासता सुख जेलहै । जे करे पांचमी तप अखंभित वीर जिणवर इम कहै ॥ १९ ॥ कलश ॥ इम पंचमी तप फल प्ररूपक वर्द्धमान जिणोसरो । मैथुण्यो श्रीअरिहंत जगवंत अतुल बल अलवेसरो । जयवंत श्रीजिनचंद सूरिज सकल चंद नमुंसीयो । वाचना चारिज समय सुंदर जगति जाव प्रसंसीयो ॥ २० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ २० ॥ इति श्रीपंचमी बृह स्तवन संपूर्ण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ पंचमी लघुस्तवन ॥

॥ ❀ ॥ पांचमि तप तुमे करोरे प्राणी । निरमल पामो न्यानरे । पहिली न्याननें पने किरिया । नही कोई न्यान समानरे ॥ पां० ॥ १ ॥ नंदी सूत्रमें न्यान बखाण्यो । न्यानना पंच प्रकारे । मति श्रुत अवधि अनें मनपर्यव । केवल न्यान श्रीकारे ॥ पां० ॥ २ ॥ मति अठावीस श्रुति चवद्वीस । अवधि ठ असंख प्रकारे । दोय जेद मन पर्यव दाख्यो । केवल एक प्रकारे ॥ पां० ॥ ३ ॥ चंद्र सूरज ग्रह नक्षत्र तारा । तेस्युं तेज आकासरे । केवल न्यान समो नही कोई । लोका लोक प्रकासरे ॥ पां० ॥ ४ ॥ पारसनाथ प्रसाद करीनें । महारीपूरो उमेदरे । समय सुंदर कहै हुंणिण पामुं । न्याननो पंचमों जेदरे ॥ पां० ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्थ जिनस्तवनं ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ अष्टमी लघुस्तवन ॥

॥ ❀ ॥ अमल कमल जिम धवल विराजे । गाजे गोमी पास । सेवा सारे जेहनी । सुर नर मन धरिय उलास ॥ १ ॥ सोजागी साहिव मेरावे । अरिहां सुग्यानी पास जिणंदावे । (आंकणी) सुंदर सूरति भूरति सोहै । मोमन अधिक सुहाय । पलक २ में पेखतां । मानुं नव नवी उवीय देखाय ॥ २ ॥ सोजागी० अ० ॥ अवजुख जंजण जनम निरंजन । खंजन नयन सुरंग । श्रवण सुणी गुण ताहरा । माहरा विकस्या अंगो अंग ॥ ३ ॥ सो० ॥ अ० ॥ दूरथकी हुं आयो वहनें । दे वहलो दीदार । प्रारथियां पहिडेनही । साहिवा एह उत्तम आचार ॥ ४ ॥ सोजागी० अ० ॥ प्रनु सुख चंद विलोक्ति हरखित । नाचत नयन चकोर । कमल हसे रवि दे

न कल्याण । जनम दिहानें केवल न्यान । अरि दीक्षा लीधी ख्वनी
 ॥ मि० ॥ २ ॥ नमिनें ऊपनो केवल न्यान । पांच कल्याणक अति पर
 धान । ए तिथिनी महिमा ए वनी ॥ मि० ॥ ३ ॥ पांच ऋत ऐरवत इम
 हीज । पांच कल्याणक हुवै तिम हीज । पंचासनी संक्षा परगनी
 ॥ मि० ॥ ४ ॥ अतीत अनागति गिणतां एम । दोढसै कल्याणक थायै
 तेम । कुण तिथठै एतिथ जे वनी ॥ मि० ॥ ५ ॥ अनंत चौवीसी इण परि
 गिणो । लाज अनंत उपवासां तणो । ए तिथि सहु तिथि सिर राखनी
 ॥ मि० ॥ ६ ॥ मोन पणें रह्या श्री मखिनाथ । एक दिवस संयम व्रत सा
 थ । मोनतणी परि व्रत इम पनी ॥ मि० ॥ ७ ॥ अठपुहरी पोसो लीजीयै ।
 चौविहार विधसुं कीजीयै । पिण परमादन कीजै घनी ॥ मि० ॥ ८ ॥ वरस
 इग्यार कीजै उपवास । जावजीव पिण अधिक उल्हास । ए तिथ मोहू त
 णी पावनी ॥ मि० ॥ ९ ॥ ऊजमणो कीजै श्रीकार न्यानना उपगण इ
 ग्यार २ ॥ करो कानसगग गुरुपाये पनी ॥ मि० ॥ १० ॥ देहरै स्नात्र
 करी जै वली । पोथी पूजी जै मनरली । सुगति पुरी कीजै हूकनी ॥ मि० ॥
 ११ ॥ मोन इग्यारस मोटो पर्व । आराध्यां सुखलहीयै सर्व । व्रत पञ्चक्खा
 ण करो आखनी ॥ मि० ॥ १२ ॥ जेसल सोल इक्यासी समें । कीधो तवन
 सहू मन गमै । समय सुंदर कहे करो द्याहनी ॥ मि० ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥
 इति श्री एकादसी वृद्ध स्तवनं संपूर्णं ॥ ११ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुमेरे मनमें प्रनु तुंमेरे दिलमें । ध्यान धरं पल २ में । पास
 जिणोसर अन्तर जामी । सेवकरं ढिन २ में ॥ (तुं० १) ॥ काहू को
 मन तरुणीसुं राच्यो । काहू को चित्त धनमें । मेरो मन प्रनु तुमहीसुं रा
 च्यो । ज्युं चातक चित्तधनमें । (तुं० २) जोगीसर तेरी गति जाणें ।
 अलख निरंजण ढिनमें । कनक कीरति सुख सागर तुमही । साहिब तीन
 ऋवनमें ॥ (तुं० ३ ॥ इति पार्श्व जिन स्तवनं ॥ ११ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ सास्वता असास्वता जिन बिंब नमस्कार स्तवन ॥

॥ ❀ ॥ (देशी सूरती) प्रहनुगी प्रनु ध्यानधरं नसुं सिद्ध अनन्त । त्रिनुवन
 मांहे नमणकरं जेबिबरहंत । नुवन पति व्यन्तर योतषि बैमानिक मांह । अ-

द्रुत सास्वता विवनमुं मनधरि उवाह ॥१॥ पंचमेरु वेताद्व्य हिमाचल निपथ
 प्रमाण । नीलवंत चित्रसेल कुंजल गजदंत वखाण ॥ रुचक नंदीसग मानु
 पौत्तर आदि सास्वता जाण । रिषज्ञानन चंद्रानन वारिषेण ब्रधमाण ॥ २ ॥
 आठकोरु अरुण्यन लाख सत्ताणुं हजार ॥ चवसै उयासी चैत्य सास्वता
 मंगलकार । सहस अठावीस नवसै पचवीस कोरु मिलाय । तेपन लख
 चवसै अरुयासी जग जिनराय ॥ ३ ॥ केइ आचार्य मते आठकोरु सत्ता
 वन लाख । दोयसै अठाणुं त्रिजुवनमां सहुचैत्यनी साख । अठावन लख
 पनरसै वयालीसकोरु । अरुतीस सहस विवसहु सतअसीकी जोरु ॥ ४ ॥
 मगध कोसल अंग बंग कलिंग काशी कुस्देस । सोरठ कठ विदेह जां
 गल कुसावर्त्त कहेस । जंग सोवीर वैराट मलय सांफिल सूरसेन । वरण
 पंचाल दशाण कुणाल देसमें चैन ॥ ५ ॥ लाट विदर सिंधु देससहु
 केकइ अर्ध जाण । साढा पचवीस देश भरतमें आर्य प्रधान । दोय
 कोरु अठावन लाख उयासी हजार । नवसै तिहुत्तर ग्राम नगर मांहे विव
 अपार ॥ ६ ॥ वसुसत सातअसी जंबुद्रीप सह आर्य होय । धातकी
 खंरु सहस एक सातसै चौतीस जोय । एताही अर्ध पुष्करमांहे देस गि
 णाय । ग्राम नगर मांहे विव अनेक नमुं गुणगाय ॥ ७ ॥ सिधशेल उज्जि
 त शिखरगिरि मोटाधाम । अष्टापद चंपा पावापुरि शिवसुख ठाम । तारंगा
 अर्बुद राजग्रही क्षेत्र प्रमाण । अंतरीक धूलेवा राणपुरो जगजाण ॥ ८ ॥
 द्वीप असंख्या जल थल पर्वत सिखर सुहाय । कनक धातु पाखाण रयण
 सहु विवरहाय । इम त्रिहुंजोक असास्वती सास्वती थांपना देख । त्रि
 करण सुधै नित प्रति प्रणमुं सहु गुण लेख ॥ ९ ॥ थापना जगवंते कही
 आगम मांहे प्रमाण । अंग उपांग देखी मन निश्चय राखी सुजाण । जे
 उतसुत्र वचनके जापक जासी निगोद । अनंत काल जमतां कृणजर नहिं
 पांमें विनोद ॥ १० ॥ सोम्य मूरत प्रनुनी देखी जविपांमें बोध । आद्र कु-
 मरकी रीते देखो आगम सोध । द्रव्यजाव विधिसंयुक्त सुर नर पूजे जेय ।
 गुण पिंस्थ पदस्थ रूपस्थ रूपातीत लेय ॥ ११ ॥ रिषजादिक चौवीस
 तिर्थकर नमुं मन लाय । गणधर सहु संव मंगलकारी नित प्रति थाय ।

जन्म मरण सहु दुख दूरै करो दीनदयाल । गह खरतर गुरु लक्ष्मीप्रधां
 न मोहन प्रतिपाल ॥ १२ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
 इति त्रिचुवन मंरण सर्व जिन बिंब नमस्कार स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ वैराग्य सिज्जाय लि० ॥

॥ ❀ ॥ चूलो मन जमरा कांइजमें । जमियो दिवसनें रात । माया
 रोवांध्यो प्राणीयो । जमीयो परमल जात ॥ १ ॥ जू० ॥ कुंज काचो
 काया कारमी । जेहना करोरे जतन्न । विणसतां वार लागै नही । निरम
 ल राखोरे मन्न ॥ २ ॥ जू० ॥ केहना ठोरू केहना वाठरू । केहनां मा
 यनें बाप । प्राणी जास्ये एकलो । साथे पुण्यनें पाप ॥ ३ ॥ जू० ॥ आ
 स्यातोभूंगर जेवनी । मरवो पगलां रै हेठ । धन संची संच कांई करो ।
 करवो देवनी वेठ ॥ ४ ॥ जू० ॥ लख पति ठत्र पति सबगए । गएलाखोंके
 लाख । गरज करीरे गोखे वैसता । जए जलबल राख ॥ ५ ॥ जू० ॥ जव
 सायर जल दुख जरयो । तिरवो ठैरे जेह । विचमें बीह सबलो अठै । क
 रमें वायनें मेह ॥ ६ ॥ जू० ॥ नलट नही मारग चालवो । जायवो पहिलै
 रे पार । आगलि नही हटवाणीयो । संबल लेज्योरे साथ ॥ ७ ॥ जू० ॥
 मूरख कहै धन माहरो । धन केहनो न थाय । वस्त्रविना जाय पोढवो । ल
 ख पति लाकरु मांय ॥ ८ ॥ जू० ॥ महमंद कहै वस्तु वोरीथै । जे कुठआ
 वैरे साथ । अपणो लाज नवारीथै । लेखो साहिब हाथ ॥ ९ ॥ जू० ॥ इति ॥

॥ अथ क्रोधनी सिज्जाय लि० ॥

॥ ❀ ॥ कडुवारे फलठे क्रोधना । ग्यानी इम बोलै । रीसतणो रस जा
 णिइं । हलाहल तोलै ॥ क० ॥ १ ॥ क्रोधें कोफि पूरवतणो । संजम फ
 ल जाय । क्रोध सहित तप जे करै । ते तो लेखे न थाय ॥ २ ॥ क० ॥
 साधु घणो तपियो हुं तो । धरतो मन बैराग । शिष्यना क्रोध थकी थयो ।
 चंफ कोसियो नाग ॥ क० ॥ ३ ॥ आगि कुठै जे घर थकी । ते पहलुं
 धरवालें । जलनो जोग जो नवि मिलै । तो पासेनुं पर जालें ॥ क० ॥ ४ ॥
 क्रोध तणी गति एहवी । कहे केवल नांणी । हांणि करे जे हेतनी । जा

जवजो इमजाणी ॥ क० ॥ ५ ॥ उदय रतन कहै क्रोधनें । काढजो गलें सा
ही । काया करजो निरमली । उपशम रसनाही ॥ क० ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
इति क्रोधसिञ्जाय सं० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ उपदेशमाला पोसह सिञ्जाय लि० ॥

॥ ❀ ॥ जगचूनामणि चूड । जसत्रो वीरो तिलोय सिरि तिलउ । एगो
लोगा इच्चो । एगो चक्खू तिहुअणस्स ॥ १ ॥ संवठर सुसत्र जिणो ।
उम्मासे वधमाण जिणचंदो । इइ विहारिया निरसणा । जएऊए उंव माणेणं
॥ २ ॥ जइता तिलोय नाहो । विसहइ बहुयाइं असरिस जणस्स । इय
जीयंत कराइं । एस खमा सव्व साहूणं ॥ ३ ॥ न चइऊइ चाजेउ । महइ
महा वधमाण जिण चंदो । उवसग्ग सहस्सेहिवि । मेरु जहा वाय गुंजा
हि ॥ ४ ॥ ऋदो विणीय विणउ । पढम गणहरो समत्त सुयनाणी । जाणंतो
वि तमत्थं । विहिय हियउ सुणइ सव्वं ॥ ५ ॥ जं आण वेइ राया । पयइउ तं
सिरेण इहंति । इय गुरुजण सुह ऋणियं । कयं जलिन डेहि सोयव्वं ॥ ६ ॥ जह
सुर गणाण इंदो । गह गण तारागणाण जहचंदो । जहय पयाण नरींदो । गण
स्सवि गुरु तहा णंदो ॥ ७ ॥ वालुत्ति मही पालो । न पया परि हवइ एस गुरु उव
मा । जंवापुरउ काउं । विहरंति सुणी तहा सोवि ॥ ८ ॥ पन्निरुवो तेयस्सी । जुग
प्पहाणा गमो महुर वक्को । गंजरीरो धिईमंतो । उवएस परोय आयरिउ ॥ ९ ॥
अपरिस्सावी सोमो । संगह सीलो अज्जिग्गह मईय । अत्रिकत्थणो अ
चवलो । पसंत हियउ गुरु होई ॥ १० ॥ कइयावि जिण वरिदा । पत्ता
अयरामरं पहं दानं । आयरिएहिं पवयणं । धारिऊइ संपयं सयलं ॥ ११ ॥
अणुगम्मए ऋगवई । राय सुयऊा सहस्स वंदेहिं । तहवि न करेइ माणं ।
परियउइ तं तहा नूणं ॥ १२ ॥ दिण दिक्खियस्स दमगस्स । अज्जिसुहा
अऊचंदणा अऊा । नेठइ आसण गहाणं । सो विणउं सव्व अऊाणं
॥ १३ ॥ वरससय दिक्खियाए । अऊाए अऊ दिक्खिउं साहू ।
अज्जिगमण वंदण नमंसणेण । विणएण सो पुऊो ॥ १४ ॥ धम्मो पुरस
प्पजवो । पुरस वर देसिउं पुरस जिहो । जोएवि पहू पुरसो । किंपुण जोरु
त्तमे धम्मो ॥ १५ ॥ संवाहणस्स रणो । तइया वाणारसीइ नयरीए । कन्ना

सहस्स महियं । आसी किररूववन्तीणं ॥ १६ ॥ तहविय सा रायसिरी । उ
 छट्ठंती न ताइया ताहिं । उयरठिएण इक्केण । ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥
 महिलाणसु बहुयाणवि । मज्जाउ इह समत्त घर सारो । रायपुरिसेहिं
 निज्जइ । जणेवि पुरसो जहिं नत्थि ॥ १८ ॥ किं परजण बहु जाणा
 वणाहिं । वर मप्प सक्खियं सुकयं । इह ञरह चक्कवट्ठी । प्रसन्न चंदोय
 दिठ्ठंता ॥ १९ ॥ वेसो वि अप्पमाणो । असंजम पणसु वट्टमाणस्स । किं परिय
 त्तियवेसं । विसं नमारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्खइ वेसो । संकइवेसेण
 दिक्खिउमि अहं । उम्मग्गेण पमंतं । रक्खइ राया जणवउय ॥ २१ ॥ अप्पा
 जाणइ अप्पा । जहठ्ठिउ अप्पसक्खिउ धम्मो । अप्पा करेइ तं तह ।
 जह अप्प सुहावहं होई ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो । आविस्सइ जेण
 जेण ज्ञावेण । सो तंमि तंमि समए । सुहा सुहं बंधए कम्मं ॥ २३ ॥
 धम्मो मएण हुंतो । तोनवि सी उन्ह वाय विज्जडिउ । संबर मणसीउ ।
 बाहुबलि तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विगप्पिय चिंतिएण । सठ्ठं
 द बुद्धि चरिएण । कत्तो पारत्त हियं । कीरइ गुरु अणुवएसेणं ॥ २५ ॥
 थच्चो निरोवयारी । अविणीउ गविउ निरवणामो । साहुजणस्स गरहिउ ।
 जणेवि वयणिज्जयं लहइ ॥ २६ ॥ थोवेणवि सण्णुरिसा । सणं कुमारुव्व के
 इब्बुज्जंति । देहे खण परिहाणी । जंकिर देवेहिं सेकहियं ॥ २७ ॥ जइ
 ता लव सत्तम सुर । विमाण वासीवि परिवमंति सुरा । चिंतिज्जंतं सेमं ।
 संसारे सासयं कयरं ॥ २८ ॥ कहतं ञन्नइ सुक्खं । सुचिरेणवि जस्स पुक्ख
 मत्ति हियए । जंच मरणावसाणे । ञव संसाराणु बंधिंच ॥ २९ ॥ उवएस
 सहस्से हिवि । बोहिज्जं तो न बुज्जई कोई । जह बंनदत्त राया । उदाइ निव
 मारउ चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंचलाए । अपरिच्चत्ताइ राय लट्ठीए । जीवा
 सकम्म कलिमल । ञरिय ञरातो पमंति अहे ॥ ३१ ॥ बोत्तूणवि जीवाणं ।
 सट्टकराइंति पावचरियाइं । ञयवं जा सा सा सा । पच्चाए सो हू इणमो ते
 ॥ ३२ ॥ पफि वज्जि ऊण दोसे । नियए सम्मंच पायवफियाए । तो किर
 मिगावईए । उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥
 इति पोसह सिज्जाय समाप्ता उपदेश माला ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥

॥ ❀ ॥ अथ राईसंधारा पोसह सिज्ज्ञाय ॥ ❀ ॥

॥❀॥ निस्सिही २ एणो खमासमणाणं । गोयमाईणं महासुणीणं ।
 (नवकार ३ करेमिज्जंते ३ कहीयै) । अणुजाणह विठिज्जा । अणुजाणह
 परमगुरु । गुण गण रयणे हिं मंनिअ सरीरा । बहु पन्निपुत्रा पोरिसी ।
 राई सथारए ठामि ॥ १ ॥ अणु जाणह संधारं । बाहु वहाणेण वामपासेणं ।
 कुक्कुन पाय पसारण । अंतरंतु पमज्जए चूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संमासं ।
 उवट्ठंतेय काय पन्निजेहा । द्वाई उवज्जं । ऊसास निरुंजणा लोयं
 जइमे हुज्ज पमानं । इमस्स देहस्सि माइरयणीए । आहार सुवहि देहं । सबं
 तिविहेण वोसरिअं ॥ ४ ॥ आसव कसाय बंधण । कलहा चक्खाण पर
 परीवानं । अरइ रई पैसुन्नं । माया मोसंच मिज्जत्तं ॥ ५ ॥ वोसरिस्सु
 इमाइं सुक्खमग्ग । संसग्ग विग्घ च्छूआइं । पुग्गइ निबंधणाइं । अट्ठारस
 पाव छाणाइं ॥ ६ ॥ एगोहं नत्थि मे कोवि । नाह मन्नस्स कस्सवि । एवं
 अदीण मणसो । अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगोमे सासउ अप्पा । नाणदं
 मण संजुज्जं। सेसामे बाहिरा जावा । सब्बे संजोग लक्खणा ॥ ८ ॥ सं
 जोग मूला जीवेणं । पत्ता पुक्खपरंपरा । तह्मा संजोग संबंधं । सबं तिवि
 हेण वोसरे ॥ ९ ॥ अरिहंतो महदेवो । जाव जीवं सुसाहुणो गुरुणो ।
 जिण पन्नत्तं तत्तं । इय सम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥ चत्तारिमंगलं । अरि
 हंता मंगलं । सिधामंगलं । साहु मंगल । केवलि पन्नत्तो धम्मो मंगलं ।
 चत्तारि लोयुत्तमा । अरिहंता लोयुत्तमा । सिधा लोयुत्तमा । साहु लो
 युत्तमा । केवलि पन्नत्तो धम्मो लोयुत्तमो ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि ।
 अरिहंते सरणं पवज्जामि । सिधेसरणं पवज्जामि । साहु सरणं पवज्जा
 मि । केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ अरिहंता मंगलं मज्ज ।
 अरिहंता मज्ज देवया । अरिहंता कित्ति अत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं
 ॥ १ ॥ सिधाय मंगलं मज्ज । सिधाय मज्ज देवया । सिधाय कित्ति
 अत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ २ ॥ आयरिया मंगलं मज्ज । आयरिया
 मज्जदेवया । आयरिआ कित्ति अत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ ३ ॥ उव
 ज्जाया मंगलं मज्ज । उवज्जाया मज्ज देवया । उवज्जाया कित्ति

अत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ ४ ॥ साहूणो मंगलं मज्ज । साहूणो मज्ज
 देवया । साहूणो कित्तिअत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग
 अगणि मारुअ । इक्किे सत्त जोणि लक्खात्त । वण पत्तेय अण्णते । दस चउ
 दस जोणि लक्खात्त ॥ १ ॥ विगलिंदिएसु दो दो । चउरो चउरोय नारय सु
 रेसु । तिरिएसु हुंति चउरो । चउदस लक्खाय मणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सब्ब
 जीवे । सब्बे जीवा खमंतुमे । मित्तीमे सब्ब चूएसु । बैरं मज्जन केणवि ॥ ३ ॥
 एवमहं आलोइअ निंदिअ । गरहिअ दुगुंत्तिअं सम्मं । तिविहेण पडिकंतो
 बंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमाविअ मइ खमिअ । सब्बहजीव
 निकाय । सिध्ह साख आलोयणह । मज्जह बैर नजाय ॥ ५ ॥ सब्बे जीवा
 कम्मवसु । चउदह राज जमंतु । तेमइं सब्ब खमाविआ । मज्जवि तेह खमंतु
 इति राई संथारा गाथा समाप्ता ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सदाकालका अवश्य कर्तव्य । सामायक, पणिकमणा
 अठपुहरी (तथा) चौ पुहरी पोसा, । देवबांदणा, पच्चक्खाण पारणा, ङ
 म्मासी तप चिंतना, सर्वकी अनुक्रमे शास्त्रानुसारे विधि लि० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रणन्य श्रीजिनार्धाशं । सदगुरुं च विशेषतः ।
 आद्धाहोरात्र कृत्यानि । लिख्यन्ते लोकनाषया ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ प्रथम प्रजात सामायक विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावक दोय घडी रात्र रखां पोशहशालायै । अथवा गुरुकने ।
 अथवा घरने एक प्रदेशे (आवी) प्रथम दिवस संव्याये पणिलेह्या वस्त्र पहिरी ।
 (जो) गुरुरो योग न हुवै (तो) आप प्रमार्जित थानकै । खमासमण पूर्व
 क तीन नवकार गुणी थापनाजी थापै (पठै) खमासमण देई कहै । इत्था
 कारेण संदिस्सह जगवन् । सामायक मुहपत्ती पणिलेहुं (गुरुकहै पणि
 लेह) पठै इत्थंकही । दूजी खमासमण देई । मुहपत्ती पणिलेहै । ऊजो हो
 य खमा० कहै । इत्था० सं० ज० । सामायक संदिस्सावूं (गुरु कहै संदि
 स्सावेह) पठै इत्थंकही । वलेख० देने कहै । इत्थाका० सं० ज० । सामायि
 क गानं (गुरु कहै गाएह) पठै इत्थं कही । खमासमण देई । अर्धावन
 तकाय ऊजो थको । तीन नवकार गुणी कहें । इत्थकार जगवन पसानकरी

सामायिकदंरु उचरावोजी (गुरु कहे उचरावेमो) पठे । करेमिजंते सामाइयं (इत्यादि) सामायकसूत्र । गुरुवचन अनुज्ञापण करतो थको । तीनवार उचरी । खमासमण देई । इत्ताका० सं० ज० । इरियावहियं पडिकमामि (गुरुकहे पडिकमह) पठे इत्तं कही । इत्तामि पडिकमिजं इरियावहियाए (इत्यादि पाठकहे) इरियावही पडिकमी । एक लोगस्सनो काउसग्गकरी । एमो अरिहंताणं कही । काउसग्गपारी । मुखें प्रगट लोगस्स कही । खमासमण देई इत्ता० सं० ज० । वैसणो संदिस्सावूं (गुरु कहे संदिस्सावेह) पठे इत्तं कही । वले खमासमण देई । इत्ताका० सं० ज० । वैसणो ठाजं (गुरु कहे ठाएह) पठे इत्तं कही । खमासमण देई । इत्ताका० सं० ज० । सिज्जाय संदिस्साजं (गुरुकहे संदिस्सावेह) पठे इत्तं कही । वलेखमासमण देई । इत्ताका० सं० ज० । सिज्जाय करूं (गुरुकहे करेह) इत्तं कही । वले खमासमण देई । ऊजो थको । आठ नवकार सिज्जाय करे । तथा शीतकाजादि हुवें (तो) खमासमण देई । इत्ताका० सं० ज० । पांगरणो संदिस्सावूं (गुरु कहे संदिस्सावेह) पठे इत्तं कही । खमासमण देई । इत्ता० सं० ज० । पांगरणो पडिघाजं (गुरु कहे पडिघाएह) पठे इत्तं कही वस्त्रग्रहण करे । तथा सामायकवंत (अथवा) पोसहीता श्रावकप्रतें (कोई) सामायकवंत (अथवा) पोसहीतो श्रावक वांटे (तो) वंदामो एहवुं कहे । जो कोई बीजो वांटे (तो) सिज्जायं करेह । एहवो कहे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति प्रजात सामायक ग्रहणविधि ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ राई प्रतिक्रमण विधि लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ (हिवें) एक खमा समण देई । इत्ताका० सं० ज० । चैत्यवंदन करूं (गुरुकहे करेह) पठे इत्तं कही । जयउ सामी २ (इत्यादि जय वांय राय सूधी चैत्यवंदन करे । पठे खमासमण देई । इत्ताका० सं० ज० । कुसुमिण पुस्सुमिण राई प्रायत्तित्त विसोहणत्थं करेमि काउसग्गं (गुरु कहे करेह) पठे इत्तंकही । कुसुमिण पुस्सुमिण राई प्रायत्तित्त विसोहणत्थं करेमि काउसग्गं । अन्नत्थू ससिपणं (इत्यादिकही) (४) लोगस्सनो काउसग्ग । चंदेसु निम्मजयरा ॥ सूधी चितवी । एमो अरिहंताणं कही । काउसग्ग

पारी । मुखै लोगस्स कहै (जो) रात्रें मोटको गुण संबंधी दूसण लागो हुवै
(तो) कानसग्ग मांहे । सागरवरगंजीरा । सूधी चिंतवीयै (इतिसंप्रदायः ।

॥ ❀ ॥ किहां इक पहिलां कुसुमिण पुस्समिण कानसग्ग करी । पठै
चैत्यवंदन करवो कह्योठै । पिण परमार्थ एकहीजठै । पठै । पम्फिमण वेला
सीम सिज्जाय ध्यान करै ॥ ❀ ॥ हिंवे पम्फिमण ठाववानो अवसर हुवां

॥ १ खमासमण देई (श्री आचार्यजी मिश्र) कही वांदीयै ॥ २
खमासमण देई (श्री नृपाध्यायजी मिश्र) कही वांदीयै ॥ ३ खमासमण ।

जंगम युग प्रधान वर्तमान ऋदारक श्रीपुज्यजी का नाम कही वांदीयै ॥

४ खमासमणें । सर्व साधूजीकुं वांदीयै ॥ इम च्यार खमासमणें पडि कम

णो ठावी । इठ्ठकार समस्त श्रावको वांदूं (कही) गोडा लीयै वैसी मस्तक

नमावी । दोय हाथे । मुहपत्ती मुखे देई । सबस्सवि राइय (इत्यादि

कहै) पिण इठा करेण संदिस्सह इठ्ठं (इसोन कहै) पठे शक्रस्तव कही ।

ऊजो थई । करोमि ऋते सामाइयं । सावज्जं जोगं पच्चक्खामि (इत्यादि

कही) इठ्ठामि ठानं कानसग्गं । जोमे राइउं (इत्यादि पाठ कही)

तस्सुत्तरी । अन्नत्थू ससिएणं कही । चारित्र शुद्धि निमित्तें ॥ १ लोगस्सनों

कानसग्ग करी (पारी) दर्शन शुद्धि निमित्तें । लोगस्स कही । सबलो

ए अरिहंत चेइयाणं करोमि कानसग्गं । वंदण वत्तिआ ए (इत्यादि

कही) १ लोगस्सनो कानसग्ग करी (पारी) ज्ञानातीचार शुद्धि निमित्तें ।

पुक्खर वर दीवट्ठे । (कही) सुयस्स भगवउं करोमि कानसग्गं । वंदणव

त्तिआए (इत्यादि कही) कानसग्ग करै । कानसग्ग मांहे । आज्जणा

चौपुहरी रात्रि मांहे । इत्यादि आलोयण पाठ चिंतवे ॥ ❀ ॥ ॥ (अने

एनावैतो) आठ नव कार चिंतवीयै । पठै कानसग्ग पारी । सिघाणं बुघाणं

(कही) संभासा प्रमार्जन पूर्वक वैसी (मुहपत्ती पम्फिलेहै) पठै दो वांद

णादें (ते इम) अविग्रह बाहिर ऊजो थको । आधो नमी ॥ इठ्ठामि खमा

स । वंदि० जाव० । नि० । अणुजाणह मेमिउग्गहं (इतरो कही)

चूमि प्रमार्जतो थको । निस्सही कही । कांइक अवग्रह मांहि पैसी । संभा

सा प्रमार्जी । ऊकडू वैसी । ऋवै हाथ मुहपत्ती लेई । ऋवे कान थी जी

मणा कान लगे निलान पुंजी । मुहपत्ती आगे मेल्ली । तेहने मध्यजागे
 गुरुवरण कल्पना करी । अहो कायं । (इत्यादि आवर्त्त करी) क्युं हिक ऊं
 चो नमी । मस्तकै अंजली करी । गुरुसांझी । दृष्टिराखी । खमणिज्जो जे
 किलामो (इत्यादि पाठ कहै) पठे । फेर जत्ताजे । (इत्यादि आवर्त्तने
 कर) ऊजो थई । पाठे पगे जूमि पुंजतो । अवग्रह बाहिर स्वस्थाने आ
 वी । आं वस्सियाए (इत्यादि पाठ) सर्व कहै । बीजी वार वले इम हीज
 करे । (पिण) अवग्रह बाहिर न नीकले । तिहां ऊजो जे सर्व पाठ कहै ।
 आविस्सियाए पद न कहै । (इम सर्वत्र जाणिवूं) पठे अवग्रह मां हि रही
 कहै । इच्चाका० सं० ज० । राइयं आलोवूं (गुरु कहै आलोएह)
 पठे । इच्चं आलोएमि जोमेराइउ (इत्यादि पाठ ऊंचे रती) काजसगग मां
 हें चितव्या । रात्रिसंबंधी अतीचार । गुरु समह आलोवे । पठे । सबस्सवि
 राइय (इत्यादि पाठ कहै) तिहां इच्चाका० सं० ज० एपद कहिवे
 करी । आलोया अतीचार नों प्रायश्चित्त मांगे (गुरु कहै पफिक मह)
 पठे । इच्चंतस्स मिच्चामि पुकडं (कही) संभासा प्रमार्जे । आसणे
 बैसी । जीमणो गोनी ऊंचे राषी । नावो गोमो नीचो करी (एहवूं कहै)
 जगवन् सूत्रजणुं (गुरु कहै जणह) पठे इच्चं कही । ३ नवकार । ३ करेमि
 जंते (अथवा) १ नवकार । १ करेमि जंते (कही) इच्चामि पफिक
 मिं उं । जोमेराइउ (इत्यादि कही) वंदित्तु सूत्र । तंनिदे तंव गरिहामि
 (सूधी कहै) पठे ऊजो थई । अब्बु छित्तमि आराहणाए (इत्यादि संपूर्ण
 कही) बे बांदणा देई ॥ अवग्रह मां हि थको हीज कहै । इच्चाका० ॥
 सं० ज० । अच्चुछित्तमि अच्चित्तं । राइयं (कही) संभासा प्रमार्जेन
 पूर्वक गोढालीये बैसी । बेवाह पडिलेही । मुहपत्ती वाम हाथसुं मुखे
 देई । दक्षिण हाथ गुरु सांझो करी । नीचो नम्यो थको । जंकिंचि अप्यत्तियं
 (इत्यादि संपूर्ण कहै) तिवारै गुरु पिण मिच्चामि पुकडं कहै) पठे । बे
 बांदणा देई । जूमि प्रमार्जेता । पाठे पगे अवग्रह बाहिर आवा । आयरिय
 उवझाए । इत्यादि गाथा ३ कहै । पठे । करेमि जंते ० । इच्चामि ठामि
 काजसगगं । तस्सुत्तरी । (इत्यादि कही) काजसगग करे । काजसगग मां हें ।

श्रीवीर कृत उम्मासीतप चिंतवै (जो) उम्मासी तपन जाणे (तो) ६ लोगस्स,
 अथवा, २४ नवकारनो कावसग्ग करै ऐसी प्रवर्त्तै है । पठै जे पञ्चखाण करावो
 हुवै (ते) हियामां हि धारी । काउसग्ग पारी । लोगस्स कही । उक्कइवैसी ।
 सुहपत्ती पडिलेही । वे वांदणा देई । सकल तीरथ नामलेई । नमस्कार करी
 (कहै) इत्थ कार प्रगवन पसाउ करी पञ्चखाण करावो जी (पठै) गुरु
 मुखें पञ्चखाण करै । गुरु अजावै थापना समद्धं (अथवा) साधर्मो मुखें
 पञ्चखाण करै (पठै) इत्थामो अणुमाठि कही, वैसै (तिवारै) गुरु १
 थुई कहां पठै । मस्तकै अंजली करी । नमो खमासमणाणं ! नमो ज्ञात्ति
 धा कही ॥ संसार दावानल इत्यादि (अथवा) नमोस्तु वर्द्ध मानाय । इ
 त्यादि (अथवा) पर समय तिमर (इत्यादि तीन गाथा जणी) शकस्त
 व कहै । पठै । ऊजो थई । अरिहंत चेईयाणं करेमि काउसग्गं । वंदणवत्ति
 आए (इत्यादि कही) काउसग्ग मांहे १ नवकार चिंतवी । एक श्रावक प्रथ
 म काउसग्ग पारी । नमोर्द्ध लिद्धा कही । एक गाथा स्तुति कहै । वीजा
 सर्व काउसग्ग मांहे रह्या सुणें (पठै) एमो अरिहंताणं कही । काउसग्ग
 पारै । इम आगे पिण जाणवो । (पठै) लोगस्स कही । सबलोए अरिहंत
 चेइआणं । वंदणवत्ति० । अन्नत्थू० । (इत्यादि कही) १ नवकारनों का
 उसग्ग करी (पारी) वीजी स्तुति कही । सिद्धाणं बुद्धाणं कहै । (पठै) वे
 यावच्च गराणं० । अन्नत्थू० कही । १ नवकारका० करी । (पारी) नमो
 र्द्धत सिद्धा कही । चौथी स्तुति कही । (वैसी) । नमोत्थुणं कहै । पठै
 तीन खमासमणें । पूर्वोक्तरीतें । आचार्य । उपाध्याय । सर्व साधूवांदे ।
 इति प्रजाती पफिकमण विधि ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः इतना विशेष है ॥ ❀ ॥

॥ ❀ इतनी विधि कियां पाठे थिरता हुवै (तो) उत्तर दिशें । सीमंधर
 स्वामी सांहमां बैसी । कम्म चूमी २ (इत्यादि) संपूर्ण चैत्यवंदन करै
 (प्रांतें) अरिहंत चेईयाणं करेमि काउसग्गं । वंदणवत्ति० अन्नत्थू० कही ।
 १ नवकार चिंतवी (पारी) सीमंधरस्वामीनी स्तुति कहै । इम हीज
 थिरता हुवै (तो) श्रीसिद्धाचलजी नो चैत्यवंदन करै ॥ पठै पफिलेहण

करै (ते इम) खमासमण देई । इत्ताका० सं० ज० । पणिलेहण संदिस्सांजं
 (गुरु कहै मंदिस्साएह) बीजे खमासमणे । इत्ता० सं० ज० । पणिलेहण
 करं (गुरु कहै करेह) पठे । इत्तं कही । सुहपत्ती पणिलेहै । (इमहीज
 दोइ खमासमणे । अंग पणिलेहण संदिस्सांजं । अंग पणिलेहण करं
 (कही) धोतियो कणदोरो पणिलेही । खमासमण देई । इत्तकार जगवन्
 पसाज करी पडिलेहण पडिलेहा वोजी (इम कही) थापनाचार्य पडिलेही ।
 राखै (अने) जो गुर्वा दिक् थापनाचार्य पणिलेहै । तोपिण । खमासमण
 देई आग्यामांगे । पठे खमासमण देई । इत्ता० सं० ज० । सुहपत्ती
 पडि लेहुं (गुरुकहै पडिलेहेह) पठे इत्तं कही । सुहपत्ती पडिलेही । दोय
 खमासमणे इत्ताका० सं० ज० । उही पडिलेहण संदिस्सांजं । करं (कही)
 कंबल वस्त्रादि पडिलेहै । पठे । पोसहशाला प्रमार्जी । काजो विधसुं
 परठी । खमासमण देई । इरियावही पडिकमें (एमूलविध जाणवी) ॥ ❀ ॥
 इतरी स्थिरतानहुवे तो पिण दृष्टि पडिलेहण करवी । हिवणां पिण प्राये
 इमहीज करता दीसै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिंवे सामायक पारणेंकी विधि कहै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पठे सामायक पारै । १ खमासमण देई । सुहपत्ती पडिलेहै
 फेर खमासमण देई इत्ता० सं० ज० । सामायक पारं (गुरु कहै पुणोवि
 कायव्यो) पठे यथाशक्ति कही । वले खमासमण देई (कहै) इत्ताका०
 सं० ज० । सामायक पारैमि (गुरु कहै आयारोनमोत्तव्यो) पठे तहात्तिक
 ही । अर्ध नम्र ऊजो थको । तीननवकारगुणी । नीचो गोमालीये बेसी ।
 मस्तक नमावी । जयवंदसन्नजहो (इत्यादी गाथा कहै) (अथवा) पहिलां
 सामायक पारी । पठे पडिलेहण करै (इहां) यथायोग्य अवसरै
 गुरुने सुहराई पठे (ते इम एक खमासमण देई कहै । इत्तकार जगवन्
 सुहराई सुखतप शरीर निरावाध संयम यात्रा सुख निरवहैजेजी ठे
 पूज्यजी साता (इत्यादि पठे) बीजी खमासमण देवे । श्रीजिन पति सुरि
 जीनी समाचारीम इम कह्यो ठे ॥ ❀ ॥ इति सामायक पारणविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ संध्याकाल सामायक विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै पाठलै पहर धर्मशाला प्रमार्जी । वस्त्रादि पफिलेहै । जो अवेलो आयो हुवै (तो) दृष्टि पफिलेहण करै । पठै । गुरु आगै (अथ वा) थापनाचार्यजी आगै आवी । चूमी प्रमार्जी । आसण बांम पास मूं की । खमासमण देई (कहै) इच्चाका० सं० ज० । सामायिक मुह पत्ती पफिलेहुं (गुरु कहै पफिलेहेह) पठै इच्छं कही । वले खमासमणदेई इच्चाका० सं० ज० । सामायक संदिस्साउं (गुरु० संदिस्सावेह) फेर खमासमण देई । इच्चाका० सं० ज० । सामायक ठाउं (गुरु० ठाएह) पठै इच्छं कही । फेर खमासमण देई । अर्धावनत थई । तीन नवकार गुणी (कहै) इच्छकार जगवन् पसाउ करी सामायिक दंन उचरावो जी (गुरु० उचरावेमो) पठै । करेमि जंते सामाईयं (इत्यादि) सामायक सूत्र गुरुवचन अनुप्राषण करतो थको । तीन वार उचरी । खमासमण देई । इच्चाका० सं० ज० । इरिया वहियं पफिकमामि (गुरु कहै पफिकमह) पठै इच्छं कही । इच्चाभि पफिकमिउं । इरिया वहियाए (इत्यादि पाठें इरियावही पडिकमी । १ लोगस्स नो कानसग्ग करी । एमो अरिहंताणं कही । कानसग्ग पारी । मुखें प्रगट लोगस्स कही । नीचावैसी । मुहपत्ती पडिलेही । वांदणा देई (कहै) इच्छकार जगवन् पसाउ करी पच्चक्खाण करावोजी पठै (गुरु) दिवस चरम पच्चक्खाण करावै ॥ गुरु अजावै थापनाचार्य समहें (अथवा) स्वमुखें (तथा) वक्केरा साधमीं मुखें पचखै (अनें) जो तिविहार उपवास कीधो हुवै (तो) मुहपत्ती पफिलेही । पच्चक्खाण करै । वांदणा नद्यै (अने) जो चउविहार उपवास हुवै (तो) पच्चक्खाण करवोठे नही । ते माटै । मुहपत्ती नही पफिलेहै । एविस्तार विधिठै । पठै १ खमासमण देई । इच्चाका० सं० ज० । सिञ्जाय संदिस्साउं (गुरु कहै संदिस्सावेह) पठै इच्छं कही । वले खमासमण देई । इच्चा० । सं० । ज० । सिञ्जाय करुं (गुरु० करेह) पठै इच्छं कही । खमासमण देई । ऊजो थको (मधुरस्वरें) ८ नवकाररनी सिञ्जाय करै । पठै खमासमण देई । इच्चा० सं० ज० । बैसणो संदिस्साउं (गुरु० सं

दिस्सावेह) फेर खमासमण देई । इत्ता० सं० ज० । वैसणो ठाउं ।
 (गुरु० ठाएह) पठे इत्तं कही । जो शीतकालादि हुवै (तो) खमास
 मण देई । इत्ता० सं० ज० । पांगरणो संदिस्साउं (गुरु० संदिस्सावेह)
 फेर खमासमण देई । इत्ता० सं० ज० । पांगरणो पन्निघाउं (गुरु०
 पन्निघाएह) इत्तं कही शुभ्रध्यान करै ॥ ❀ ॥ इति संध्यासामायिक विधिः ॥

॥ ❀ ॥ अथ देवसी पन्निक्मण विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ३ खमासमण देई ॥ इत्ता० सं० ज० । चैत्य वंदन करं
 (गुरु कहै करेह) पठे इत्तं कही । जयतिहुयण० । जय महायस (प्र
 मुख) नमस्कार कही । नमोत्थुणं कही । अरिहंत चेइयाणं (इत्यादि
 पूर्वोक्त रीतें) च्यारे थुई ए देव वांदै । च्यार खमासमणें आचार्यादिक
 बांदी । पठे इत्तकार समस्त श्रावको वांडुं । इम कही गोमालिये वैसी ।
 मस्तक नमावी । सबस्सवि देव सिय (इत्यादि) तस्स मिठामि डुक्कडं क
 है (पिण) इत्ता कारणेणं संदिस्सह इत्तं (एपढ न कहै) पठे ऊज्जा थई ।
 करेमि जंते सामाडयं ॥ इत्तामि ठाउ काउ संगं । जोमे देवसित्तं ।
 तस्सुत्तरी० ॥ अन्नत्थू ससिएणं ॥) इत्यादि कही (काउसग्ग करै ।
 काउसग्ग माहें । आजूणा चौपहरा दिवसमें) (इत्यादि पाठ मनमें चिं
 तवी) एमो अरिहंताणं कही । काउसग्ग पारी । लोगस्स कहै । संना
 शा प्रमार्जन पूर्वक वैसी । मुहपत्ती पन्निहेही । वे बांदणा देवै । पठे अवग्रह
 मांहि ऊज्जो थको कहै ॥ इत्ता० सं० ज० ॥ देवसियं आलोऊं । गुरु कहै आ
 लोएह । पठे । इत्तं आलोएमि० पाठ कहै । आजूणा चौपहर दिवस० । लघु
 अतीचार आलोवै । पठे सबस्सवि देवमिय (इत्यादि) इत्ता कारणेण संदिस
 ह । सधी कहै । तिवारै (गुरु कहै पन्निक्मह) पठे । इत्तं तस्स मिठामि
 डुक्कडं (कही) संनाशा प्रमार्जा । प्रमार्जित चूमें आसणें वैसी कहै ।
 भगवन सूत्र जणुं (गुरु कहै जणह) पठे इत्तं कही । तीन नवकार ३
 करेमि जंते (अथवा) ? नवकार ? करेमि जंते (कही) इत्तामि पन्नि
 क्रामित्तं । जोमे देवसीउं (इत्यादि कही) एक श्रावक वांदित्तू कहै । बी
 जा सर्व सुणें । पठे ऊज्जो थई । अण्णित्तमि आराहणाए (इत्यादि सं

पूर्णा पाठ कही) बे वांदणा देवै । अवग्रह मांहिज ऊजो थको । इच्चाका० सं० ज० । अष्टाष्टिनिमि अश्रितर । देव सियं खामेजं (गुरु कहै खामेह) पठै इच्चं खामेमि देवसियं (कही) गोमालीयै बैसी । वाम हाथें मुह पत्ती मुखें धरी । दक्षिण हाथ गुरु सनमुख करी । मस्तक नमावी (सर्व पाठ कहै) पठै विधिसुं बे वांदणादेइ । आयरिय उज्जाए (इत्यादि ३ गाथा कही) करेमिजंते सामाइयं ॥ इच्चामि ठाजं काजसगं (इत्यादि कही) चारित्र शुद्धिनिमित्तै दोयलोगस्सनो काजसग करै (पारी) दर्शन शुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही । सबलोए अरिहंतचे० । वंदणा० । अन्नत्थू० कही ॥ १ लोगस्सनों काजसग करै (पारी) ज्ञान शुद्धि निमित्तें । पुक्खरवर दीवट्टे (कही) सुयस्स जगवत्त० । वंदणा व० । अन्नत्थू कही । १ लोगस्सनों काजसग करै (पारी) सिद्धाणं (कही) वेयावच्च गराणं न कहै । पठै । सुयदेवयाए करेमि काजसगं । अन्नत्थू कही । एक नवकारनों काजसग करी । गुरु संयोग नहीं हुवै (तो) एक श्रावक काजसग पारी । नमोर्द्धत्सिद्धा० कही । श्रुतदेवतानी स्तुति कहै । (गुरु हुवै तो गुरु कहै) बीजासर्व स्तुति सुणकै काजसग पारें । पठै । खित्त देवयाए करेमि काजसगं । अन्नत्थू कही । एक नवकार चिंतवी । पूर्वली परें (क्षेत्र देवतानी स्तुति कहै) पठै ऊजो थको । १ नवकार कही । संमाशा प्रमार्जी । ऊकडू बैसी । मुहपत्ती पफिलेही । विधिसुं बे वांदणा देई । इच्चासो अणुसठि कही । बैसै (पठै गुरु एक स्तुति कहां पठै : श्रावक समस्त मस्तकें अंजली करी । एमो खमासणाणं । एमो र्द्धत्सिद्धा कही । एमोस्तु वर्ध मानाय) इत्यादि तीन स्तुति कहै (श्राविका । एमो खमासमणाणं । कही । संसार दावानी तीन स्तुतिकहै । पठै एमो त्थुणं कही । एक श्रावक खमासमण देई कहै । इच्चाका० सं० ज० । स्तवन जणुं । बीजा सर्व खमासमण देई कहै । इच्चा० सं० ज० । स्तवन सांजलुं (गुरु कहै जणहः सांजलह) पठै आसणें बैसी । नमो र्द्धत्सिद्धा० पूर्वक । वमो स्तवन कहै । पठै तीन खमासमणें । आचार्य उपाध्याय सर्व साधू बांदी । चोथे खमासमणे इच्चा० सं० ज० । देवसी प्रायचित्त

विशुद्धि निमित्तं काउसगग करं (गुरु कहै करेह) पठै इष्टं कही । देवसी प्रायश्चित्त विमुद्धि निमित्तं । अन्नत्थू कही । च्यार लोगस्सनो काउसगग करै (पारी) लोगस्स कहै । पठै खमासमण देई । इष्टा का० सं० ज० । खुद्दो वहव नुहनावणत्थं करेमि काउसगगं । अन्नत्थू०) इत्यादि कही) च्यार लोगस्सनो काउसगग करै (पारी) लोगस्स कहै ॥ वैसी । खमासमण देई । थंजणा पार्थनाथ जीनों चैत्य वंदन करै । जय वीयराय कहाँ पठै खमासमण पूर्वक मस्तक नमावी ॥ सिरि थंजणयछिय पास सामिणो (इत्यादि दोय गाथा कहै) ऊजा थर्ड । वंदणव० अन्न० कही ४लोगस्सनो काउसगग करै (पारी) मगट लोगस्स कहै (डम हीजे) दादा जी श्रीजिन दत्त सूरिजीनो काउसगग करै) पारी मुखे लोगस्स कहै । पठै दादाजी श्रीजिन कुशल सूरिजीनो काउसगग करै । (पारी) मुखे लोगस्स कहै पठै । ठोटी शांति कहै (जो) शांति न आवै (तो) १६ नवकारनो काउसगग करै । पठै । ३ खमासमण देई । चउकसायनो चैत्यवंदन जय वीयराय सूधी करै । सर्व मंगल कहै ॥ चउकसायनो चैत्यवंदन सूती बखत करेनकाहे (पिण) हिवणा प्रवृत्ति ऐसीजहे ॥ पठै पूर्वोक्तरितै सामा यक पारै । इति देवसी पन्धिकमण विधिः संपूर्ण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अठपुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रात्रीने पाउले विघनिये निद्रा दूर करीनं । पंचपरमेष्टि स्मरण करी । गृहचिंता परिहरी । पर्वदिवस थकी । प्रथम दिवसे । पन्जिलेही राख्याजे पोसहना उपगरण लेई । पोसह शालाये थापनाचार्य समीपे । अथवा गुरुनो संयोग हुवे (तो) गुरुने पास आवी । चूमीप्रमार्जी । एक खमासमण देई । इरियावही पन्धिकमें । पठै खमासमण देई । उद्याका० सं० ज० । पोसह सुहपत्ती पन्जिलेहुं । (गुरु कहै पन्जिलेहेह) इष्टं कही । खमासमण देई । सुहपत्ती पन्जिलेहै । पठै ऊजो थर्ड । खमासमण देई । उद्याका० सं० ज० । पोसह संदिस्ताउं (गुरु कहै संदिस्तावेह) । पठै इष्टं कही । खमासमण देई । इद्याका० सं० ज० । पोसह ठाउं) गुरुकहै । ठाएह (पठै इष्टं कही । खमासमण देई । ऊजो थर्ड । आधो सरीर नमावी ।

मुखे मुहपत्ती देई । मधुर स्वरे । तीन नवकार गुणी कहै । इठकार जग
 वन पसान करी । पोसह दंरुक उच्चरावोजी) गुरु० उच्चरावेमो) । पठै करे
 मित्रंते पोसहं । आहा० । जाव अहोरत्तंवा० । अप्पाणंबो० ॥ एपाठ तीनवार
 गुरुवचन अनुज्ञाषण करतो ऊचरै ॥ ❀ ॥ पठै एक खमासमणें । इठा
 का० सं० ज० । सामायक मुहपत्ती पफिलेहुं (गुरु कहै पफिलेहेह) बीजी
 खमासमण देई । मुहपत्ती पफिलेहै । पठै । दोय खमासमणें सामायक संदि
 स्सानं । सामायक ठांउं (कही) खमासमण देई । अर्धवनत गात्रऊजो
 थको । तीन नवकार । तीन करेमि जंते ऊचरी । दोय खमासमणें ।
 बैसणो संदिस्सानं । बैसणो ठांउं । कही । पठै दोय खमासमणें । सिझाय
 संदिस्सानं । सिझाय करुं (कही) खमासमण देई । ऊजो थको । आठ
 नवकारनी सिझाय करै । सीतादि परीसहै दोय खमासमणें । पांगरणुं संदि
 स्सानं । पांगरणुं पफिग्घांउं (कहै) । ए सर्व सामायक विधि पूर्वं कही है
 तिमहीज करवी । (पिणइतनो विशेष है) पहिलां इरियावही पफिकमीहै ।
 ते माटै । इहां सामायक दंरुक ऊचरयां पठै । इरियावही नही पफिकमी
 जै ॥ ❀ ॥ पीठै चैत्यवंदन । जय बीयराय सूधी करी । कुसुमण दुस्समिण
 कानसग्ग करै । पठै पफिकमण वेला सीम सिझाय ध्यान करै । पठै पूर्वा
 करीतें पफिकमण करै (पिण इतरो विशेषहै) च्यारे थुई ए देव वांध्यां
 पीठै । खमासमण देई (कहै) इठाका० सं० ज० । बहुवेलं संदिस्सानं
 (गुरु कहै) संदिस्सावेह (पठै इठं कही) खमासमण देई (कहै)
 इठाका० सं० ज० । बहुवेलं करुं (गुरु कहै करेह) पठै इठं कही ।
 तीन खमासमणें ॥ श्री आचार्यजी मिश्र १ । श्रीउपाध्यायजी मिश्र २ ।
 तीजै सर्व साधू वांदी । कम्म नूमिहि २ । (इत्यादि नमस्कार जणें) जो
 पफिलेहण वेला नही हुवै (तो) सीमंधर स्वामीनो चैत्य वंदनादि करी ।
 सिझाय करै । हिवै पफिलेहण वेला पफिलेहण करै) । ते विधिपूर्व्वं लि-
 खीठे । (तोपिण) संक्षेपें फेर लिखेंहें ॥ ❀ ॥ दोय खमासमणें । इठा०
 सं० ज० । पफिलेहण करुं (कही) मुहपत्ती पफिलेहै । पठै दोय खमा
 समणें । अंग पफिलेहण संदिस्सानं । अंग पफिलेहण करुं (कहै) पठै

(गुरु वचनें) इहं कही । धौतियो कणदोरो पफिलेही । वस्त्र पहिरी । खमासमण देई । इहकार जगवैन पसाउकरी पफिलेहण करावोजी । (इम कही) । थापनाचार्य पफिलेही थापे । अनें जो (गुर्वादिक) थापनाचार्य पफिलेहें । (तो) पिण (खमासमण देई । उक्त रीते आग्यामागें । पठे खमासमण देई । इहका० सं० ज० । उपधि सुहपत्ती पफिलेहुं (गुरु कहै पफिलेहेह) पठे इहं कही । सुहपत्ती पफिलेही । दोय खमास मणें । इहका० सं० ज० । उही पफिलेहण संदिस्साउं (गुरु संदिस्सा वेह) उही पफिलेहण करुं (गुरु करेह) पठे इहं कही । कंबल वस्त्रा दि पफिलेही । पोसहसाला प्रमार्जी । काजो विधि सुं परिठवी । एक खमा समण देई इरियावही पफिकमें (इहां आचार दिन करमें कह्योठे) ॥ ❀ ॥ दोयखमासमणें । इहका० सं० ज० । वसती संदिस्साउं । वसती पफिलेहुं (कही) । वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे (इत्यादि) पिण विधि प्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥ ❀ ॥ हिवै एक खमासमणें । इहका० सं० ज० । सिझाय संदिस्साउं । (गुरु कहै संदिस्सावेह) बीजे खमासमणें । इहका० सं० ज० । सिझाय करुं । (गुरु कहै करेह) पठे इहं कही । नवकार १ कथन पूर्वक (उपदेश माला) प्रमुख सिझाय करी । नवकार एक कही । धर्म ध्यान करै । जणें, गुणें, वखाण सुणें ॥ ❀ ॥ उम करतां पूण पुहुर दिन चढ्यां । जगमाना पोरिसी शागम्या । बहु पफिपुत्रा पोरिसी । कही । खमासमण देई । इरियावही पफिकमी । दोय खमासमणें । इहका० सं० ज० । पफिलेहण करुं । (गुरु वचनें) । इहं कही । सुह पत्ती पफिलेही । पान जोजनें पात्र पफिलेही राखै । पठेसिज्जाय ध्यानकरै ॥

॥ ❀ ॥ हिवै काल वेलायें । आवस्तही पूर्वक देहरै जई । पांचेशक्रस्त वे देववादै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै पांचेशक्रस्तवे देववांदण विधि दो प्रकारसें लिखिये हैं ॥ ❀ ॥ तीन प्रदक्षिणा देई । तीनवार नमस्कार करी । जूमि प्रमार्जी । पुरुष हुवै तो) प्रचूजी सुं दक्षिणपासे बैसे । स्त्रीहुवै ते वांम पासे बैसे । पठे । इहका० सं० ज० । चैत्य वंदन करुं । इहं कही । पठे नमोत्युणें

कहै । खमासमण देई । इरियावही पनिक्रमें । एक लोगस्सनो काजसग
 करे । मुखें लोगस्स कहै । संनाशा प्रमाजी बैसै । तीन (तथा) च्यार
 (तथा) पांच आदि देई । नमस्कार कहै । जंकिंघ नाम तित्थं । (इत्यादि
 कही) पठै । नमोत्थुणं कहै (ऊनो थई) अरिहंत चेई याणं करेमि का
 उमगं । वंदण वत्ती० । अन्नत्थू० । कही । १ नवकारनो काजसग करे
 (पारी) एक थुईकी गाथा कहै ॥ पठै लोगस्स । सब लोए अरि० ! वंदण०
 अन्नत्थू० । कही । १ नव० । (पारी) २ थुईकी गाथा कहै । पठै ।
 पुक्खर वरदी० । सुअस्सज्जग० । वंदण० । अन्नत्थू० । कही । १ नव०
 का० (पारी) ३ थुई कीगा० । पठै सिद्धाणं बुद्धाणं० । वेयाववगराणं० ।
 अन्नत्थू० । (इत्यादि कथन पूर्वक) चोथी थुईसे देववांदी । नमोत्थुणं कहै
 फेर अरिहंतचे० कही । इसीतरे । चार थुईए देव वांदी बैसे । नमोत्थुणं
 कहै । नमोर्द्ध सिद्धाचार्यो पा० (इत्यादि कही) पठै स्तवन कहै । पठै
 जय वीयराय कही । (नमोत्थुणं) सबे तिविहेण वंदामि पर्यंत कहै ॥ ❀ ॥
 इम पांचे शक्रस्तवे देववंदन विधिः ॥ ❀ ॥ प्रवचन सारोधार प्रमुख ग्रंथमें
 कहीठै) ॥ ❀ ॥ तथा चैत्य वंदन बृहद्भाष्यमें इम कह्योठै ॥ १ ॥ ❀ ॥
 नमस्कार कथन पूर्वक । शक्रस्तव कही । इरियावही प्रति क्रमणादि करै।वली
 नमस्कार कथन पूर्वक शक्रस्तव कही । दोयवार च्यार थुईसे देववांदै । फेर
 शक्रस्तव कही । जावंति चेइयाई गाथा जणी । खमासमण पूर्वक । जा
 वंतिके० बीजी गाथा कही । स्तवन कहै । वली नमोत्थुणं कही । जय वीय
 राय कहे ॥ ❀ ॥ इति देव वंदण विधिः ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पठै निस्सही पूर्वक पोसहशाला मांहि आवी । इरियावही पनि
 क्रमें । पठै सिझाय ध्यान करै ॥ ❀ ॥ जो तिविहार उपवास कियो हुवै
 (तो) पच्चक्खाण वेला पूर्ण हुवां । जलपीणेंकुं पच्चक्खाण पारै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै पच्चक्खाण पारणें की विधि लिखिये है ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ खमासमण देई । इरियावही पनिक्रमें । फेर एक खमा० । इ
 ढा० सं० ज० । पच्चक्खाण पारवा सुहपत्ती पडिलेहुं (गुरु कहै पनि०)
 पठै इठं कही । खमा० देई । सुहपत्ती पनिलेहै । फेर एक खमा० देई ।

इत्था० सं० ज० । पाणहार असुक पञ्चक्खाण पाहं (गुरु कहे पुणोवि कायवो) पढे यथाशक्ती कही । खमासमण देई । इत्थाका० सं० ज० । पाणहार पारियुं (गुरु कहे आयारो नमोत्तवो) पढे तहत्ति कही । १ नव कारगुणी । असुक पञ्चक्खाण फासियं । पालियं । सोहियं । तीरियं । किट्टियं । आराहियं । जंच नआराहियं । तस्स मित्तामि डुककं (कही) चैत्य वंदन करे क्खणमात्र सिज्जाय करी । यथा संजवे । अतिथि संविजाग करी पाणी पीवे

॥ ❀ ॥ तथा उपधान वाही हुवे । (तो) पोरसी प्रमुख पञ्चक्खाण पारी । आहार करे । पढे आसण बैठो थको हीज । दिवस चरम पच्चखे । पढे । इरियावही पम्किमी । चैत्य वंदन करे । (ए चैत्यवंदन आहार संवरण निमित्ते ठे) ॥ ❀ ॥ इति पञ्चक्खाण पारणोकी विधि ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पढे जो बहिर्जूमि जावणो हुवे (तो) आवस्सहीकही । उप योगीथको । निर्जीव स्थंभिले जई । अणुजाणह जस्सुग्गहो कही । पूर्व । उत्तर । सूर्य ग्रामादिकनें पूठि अणदेई । मल मुत्र परितवे । प्राशुक जले शुद्ध थई । वार तीन बोसरामि २ । एहवूं कहिवे करी । मल मुत्र बोसरावी पोसह शालायें । निस्सही पूर्वक (पैसी) इरियावही पम्किमे । खमासमण देई । कहे । इत्थाका० सं० ज० । गमणा गमणं आलोयहं (गुरु कहे आलोएह) पढे इत्थं कही । गमणागमण आलोवे ॥ ❀ ॥ (तेडम) आवस्सही करी । प्राशुक देशे जई । संभाशा पूंजी । थंडिलो पडिलेही । उच्चार प्रश्रवण बोसरावी । निस्सही करी । पोसह शालायें आव्यो आवंति जंतेहिं । जंखंडियं । जंविराहियं । तस्समित्तामि डुककं ॥ इम कही वेसे । पढे पम्जिहेहण वेला सीम सिज्जाय ध्यान करे ॥ हिवे पाठले पुहुर । इरियावही पडिकमी । खमासमण देई कहे । इत्थाका० सं० ज० । पम्जिहेहण करे । (गुरु कहेक) पढे इत्थं कही । डूजे खमास मणें । इत्थाका० सं० ज० । पोसहशाला प्रमार्ज्जु (गुरु कहे) प्रमार्जह पढे इत्थं कही । सुहपत्ती पम्जिहेही । दोय खमासमणें । अंग पम्जिहेहण संदिस्सानं । अंग पडिलेहण करे । (कहे) पढे (गुरुवचनें) इत्थं कही सुहपत्ती पम्जिहेही । टंभासणो पूंजणी प्रमुख संप्रमार्जी । पोसहशाला प्रमा

जे (पठै) काजो शुद्ध करी । ऊधरी । एकांतें बिखरतो परठवी । इरियाव
 ही पम्किमी । खमासमण पूर्वक कहै । इन्हकार जगवन पसाज करी प
 डिलेहणा पडिलेहावोजी । पठै थापनाचार्य पम्किलेही । थापे । गुरु समीपै
 (अथवा) थापनाचार्य समीपै । एक खमासमण देई । इन्हाका०
 सं० ज्ञ० । मुहपत्ती पम्किलेहुं (गुरु कहै पडिलेहेह पठै इन्ह कही) खमा-
 समण देई । मुहपत्ती पडिलेहै । पठै दोय खमासमणें । इन्हा० सं० ज्ञ०
 सिझाय संदिस्मानं । सिझाय करुं (कही) उत्तरीतें कृणमात्र सिझाय
 करी । तिविहार उपवास कीधो हुवै । (तो) गुरुशाखें । पाणिहार पञ्चखै
 ॥ उपधानवाही प्रमुख । आहार कीधो हुवै (तो) वांदणां दोय देई । पञ्च
 क्खाण करै ॥ ❀ ॥ (पठै) एक खमासमण देई । इन्हाका० सं० ज्ञ० । उप
 धि थंमिला पम्किलेहण संदिस्मानं । बीजै खमासमणें । इन्हाका० सं० ज्ञ०
 उपधि थंमिला पडिलेहुं (गुरुवचनें) इन्ह कही । दोय खमासमणें । इन्हा
 का० सं० ज्ञ० । बैसणो संदिस्मानं । बैसणोठानं । कही (बैसै) वस्त्र कंबला
 दि पम्किलेहै । पुंजणी हुवै (तो) ते पिण । मुहपत्ती सुं पडिलेहै । उपवा
 सी तोठै । तेमाटे । सर्वपाठो कम्पिटो धोतीयो कणदोरो पम्किलेहै ॥ ❀ ॥
 उपधानवाही प्रमुख जोजन कीधो हुवै (तो कम्पिट्टादि पम्किलेह्यां पठै ।
 वस्त्रकंबलादि पम्किलेहै । (एविशेष ठै) । पठै कालबेला सीम सिज्जाय ध्या
 न करै ॥ (पीछै) उच्चार प्रश्रवण २४ थंमिला पडिलेहै (जो) चउदस
 हुवै । (तो) पाखी चउमासी पम्कमणो करै । संवहरियें संवहरी पम्कि
 क्मणो करै ॥ ❀ ॥ तिहां देवसी पम्कमणो पूर्वे लिख्योठै । तिमहीज करै ।
 (पिण इतरो विशेष ठै) । इन्हा० । देवसियं आलोएमि । इत्यादि । देव
 सी आलोयां पठै । ठाणे कमणे । चंक्रमणे । (इत्यादि पाठ कहै) (तथा)
 खुदो वदव कान्सगग कियां । पठै । दोय खमासमणें । इन्हाका० सं० ज्ञ०
 सिझाय संदिस्मानं । सिझाय करुं (कही) बैठो थको । तीन नवकार
 प्रमुख सिझाय करै इति ॥ ❀ ॥ पाटिकादि तीन पम्कमणाकी विधि
 आगे लिखी है ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै पम्कमणो हुवां पठै । साधुनी वेयाच कर । पोरसी

सीम सिझाय ध्यान करे । जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवै तो आसक्त कहितो थको । जूमि प्रमार्जै । थंफिल स्थानकें जई । देहसंका निवारै । प्रश्रवण वोसरवी । स्वस्थानकें आवै । (जगवंत) बहु पन्निपुत्रा पोरसी । (इम कही) खमासमण देई । डरियावही पन्किमै । पीत्रै राई संधारा विधि करै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिंवै राई संधारा विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ खमासमण देई । इत्ता० सं० ज० । राई संधारो मुहपती पन्निजे हुं । (गुरु कहै पन्निजेह) पत्रै इत्तं कही । खमासमण देई । मुहपती पन्निजेहै । एक खमासमणें । इत्ता० सं० ज० । राई संधारो संदिस्ताउं । बीजे खमासमणें । इत्ता० सं० ज० । राई संधारो ठावूं (पत्रै) गुरुवचनें । इत्तं कही । चतकसाय पन्निम लुखरण । (इत्यादि) नमस्कार कथन पूर्वक जय बीयराय सूधी चेत्यवंदन करै । जूमि प्रमार्जौ । संधारो उत्तर पटो पाथरै । पत्रै शरीर प्रमार्जौ । निस्सही रे इम कही । संधारै वैसी । तीन नव कार । तीन करिमि जंते । कुचरी । एमो खमासमणाणं गोयमार्डणं महा सुणीणं । अणुजाणह चिठिजा । अणुजाणह परमगुरु । (इत्यादि) राई संधारा गाथा जणी । वामहाथ सिराणे देई । सोवै । निद्रानावै । जासीम । सुनि वर चरित्र चितवै । पसवानो फेरै (तो) शरीर संधारो प्रमार्जौ फेरवै । जो देह शंकाये उठै (तो) पूर्वोक्त विधे देहशंका निवारि । डरियावही पन्किमै । पत्रै जवन्ने पिए । तीन गाथानी सिझाय करी सोवै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इति राई संधारा विधि कही ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिंवै रात्रीनें प्राबिलै पुहर उठी । नवकारादि गुणी । डरियावही पन्किमै । खमासमण देई । कुसुमिण पुस्तुमिण काउसंग्ग करी । पूर्वोक्त विधे सामायिक लेवै । इहो डरियावही न पन्किमै । पत्रै दोय खमासमणें । सिझाय संदिस्तावी । आठ नवकारगुणी । पन्किमण वेलांसीम सिझाय करै । पन्किमण वेला हुवां । पन्किमणो पूर्वली परे करै । (पिए इतरों विशेषे) । राई आलोयां पत्रै संधारा नवदणकी (इत्यादि पाठ कही) इम संपूर्ण पन्किमणों करी । पन्निजेहण वेलायें । पूर्वोक्त विधे पन्निजेहण

करी । धर्मशाला पूंजी । काजो ऊधरी । इरियावही पम्किमें । दोय खमास मणें । सिझाय संदिस्सावी । उपदेशमाला प्रमुख सिझाय करै । पठै पोसहपारै ॥

॥ ❀ ॥ हिं वै पोसहपारणेंकी विधि लिखियै है ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ खमासमण देई । सुहपत्ती पम्फिलेहै । फेर । खमासमण देई कहै । इन्हा० सं० ज० । पोसह पारं (गुरु कहै पुणोवि कायबो) पठै यथा शक्ति कही । खमासमण देई (कहै) । इन्हा० सं० ज० । पोसह पारयूं । (गुरु कहै आयारो न मोत्तबो) । पठै तहत्ति कहै । खमासमण देई । तीन नवकार अर्घावनत गात्र ऊजो थको गुणी । खमासमण देई । सुहपत्ती पम्फिलेहै । पीठै खमासमण देई कहै । इन्हाका० सं० ज० । सामायक पारं (गुरु कहै पुणोवि कायबो) पठै यथा शक्ति कही । खमासमण देई । इन्हाका० सं० ज० । सामायक पारयूं (गुरु कहै आयारो न मोत्तबो (पठै तहत्ति कही) खमासमण देई । अर्घावनत गात्र ऊजो थको । हाथ जोड्यां । सुहपत्ती मुखें दियां थकां । तीन नवकार गुणी । शंभासा पम्फिले है । गोडालीयै बैसी । मस्तक नमावी । जयवं दस न्नन्नदो (इत्यादि जावनारूप गाथा कहै) पठै पोसहना उपगरण संवरी । देह रै जई । देव जुहारै । घरे आवी । आहार निष्यन्न हुवो देखी । साधु समीपें आवै । अतिथि संविज्ञाग ब्रत साचवण निमित्तें । साधु जणी नि मंत्रणा करी । घरे लेजावै । साधु पिण शुद्ध आहार लेई । स्वस्थानकें आवै । तिवार पठै साधूनें जे आहार दीधो । तेहनो हीज । शेष आहार आप करै ॥ इति अठपुहरी पोसह ग्रहण पारण विधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ हिं वै दिन ऊगां पठै पोसहलै तेहनीं विधि लि० ॥

॥ ❀ ॥ घर थकी निश्चित थई । धर्मस्थानकें आवी । सर्व उपगरण पम्फिलेही । कचरो विधिसुं परिठवी । इरिया वही पम्किमें । खमासमण पूर्व क आग्या मांगी । पोसह सुहपत्ती पम्फिलेहै । आगे पोसह ग्रहणनी विधि पूर्वें लिखी है । तिमहीज जाणवी (पिण) दिवस पोसह हीज करणो हुवै (तो) (पोसह दंरुक ऊचरतां) जावदिवसं पञ्जुवासामि । (एह बो पाठ कहै) अनें जो । अठपुहरी करवो हुवै (तो) जाव अहोरत्ति प

ज्जुवासामि । (एहवो कहै) पठै सामायिक विधि सर्व करी । चैत्यवंदण कुसुमिण दुस्सुमिण काउसगग करी । पन्किमणों करी । दोय खमासमणें बहु वेलं संदिस्सावै २ (अनें जो) पूर्वें पन्किमणो गुरु साथे करघो हुवै (तो) पन्किमणानें अंतें । पडिलेही राख्या । जे वस्त्र । ते पहरी । पोसह सामायिक सर्व विधि करी । दोय खमासमणें । बहुवेलं संदिस्सावै । २ (तथा) जो गुरु सें जूदो पडिकमणो करघो हुवै (तो) गुरु पासै आवी । पोसह सामायिक सर्व विधि करी । आलोयण खामणादि निमित्तें । सुहपत्ती पन्किलेही । वे वांदणा देई । इच्चाका० सं० ज० । राइयं आलो जुं । (गुरु कहै आलोएह) पठै राई आलोवै । फेर १ खमासमण देई । इच्चाका० सं० ज० । अब्जुठिउमि अब्जंतर । राईयं खामेमि (गुरु कहै खामेह) पीठै सर्व पाठ कहै । राई खामे । पहिलां पडिकमणामें नवकारसी पचख्योथो । तेमाटे । पठै । गुरु शाखे पचक्खाण उपवासनो करे । पठै । दोय खमासमणें । बहुवेलं संदिस्साजं ३ । (ए तीन प्रकारका विकल्प जाणवा) । हिवे पन्किलेहणतो पूर्वें करीठै । (तो पिण) । आदेश मांगवो । (तेइम) खमासमण देई । इच्चाका० सं० ज० पन्किलेहण संदिस्साजं । वीजै खमासमणें । पडिलेहण करं (कही) सुहपत्ती पन्किले है । पठै । इमहीज दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्सावी । सुहपत्ती पडिलेहै । पठै । वले खमासमण देई । इच्चाकार जगवन पसाउ करी पन्किलेहण पन्किलेहावो जी । (इम कहै) पठै । एक खमासमण देई । इच्चाका० सं० ज० । उपधि सुहपत्ती पन्किलेहुं (कही) कोई वस्त्र अण पन्किलेहो । राख्यो हुवै (तो) पडिलेहै । (नहीतो) वली आसण पडिलेहै । पठै । दोय खमासमणें । मिज्ञाय संदिस्सावी । उपदेशमाला प्रमुख सिज्ञाय करे । आगे सर्व क्रिया पूर्वें अठपुहरी पोसहमें लिखीठै । तिमहीज जाणवी । पिण इहां । अठपुहरी पोसहीतो) पाठली राते वली सामायिक न लेवै । जिणें द्विस संवंधी चौपुहरी पोसह लीधो हुवे । (ते) पाठले पुहर । पचक्खाण कियां पठै । दोय खमासमणें । उहीपडिलेहण संदिस्साजं । उही पडिलेहण करं । (कहै) पिण थंमिजा पद नकहै । अनें थंमिजा नही पडिलेहै । यह

निकेवल दिनसंबंधी पोसह ग्रहण करणेंमें विशेष विधिही सो बतलाई
॥ ❀ ॥ इति दिन संबंधी पोसह ग्रहण विधि संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अथ रात्रि संबंधी चौपहरी पोसहनी विधि लि० ॥❀॥

॥ ❀ ॥ तिहां जिणें प्रथम चौपहरी । पोसो ऊचरयो है । पठै संध्यानी
पफिलेहण करतां । रात्रि पोसहनो जावथयो । (तो) पच्चक्खाण कियां
पठै । दोय खमासमणें । पोसह सुहपत्ती पफिलेही । तीन नवकार गुणी
तीनवार पोसह दंरुक ऊचरै । (तिहां) जाव रत्ति पज्जुवासामि (इम)
पाठ ऊचरै । पठै । सामायक विधि पूर्वे लिखी है तिम करै (पिण)
सामायक उचर्यां पठै । दोय खमासमणें । सिञ्जाय संदिस्सावी । आठ
नवकार कही । बैसणो संदिस्सावी । पांगरणो संदिस्सावै । पीठै । दोय
खमासमणें । इट्ठाका० सं० ज० । उंही थंफिला पफि लेहण संदिस्साउं ।
उंही थंफिला पफिलेहण करुं (गुरु कहै करेह) इठ्ठकही । उपाधि
पफिले है) आगे सर्वक्रिया पूर्वे लिखी तिम जाणवी । (तथा) जे श्रावक
उपवासी तो । व्यग्रपणें । दिवसें पोसह न करी सक्यो । ते रात्रि पोस
हनों जावथयां । पाठलै पुहर धर्म स्थानके आवै । जो वसती प्रमार्जी
हुवै । (तो सरयो) नहींतो वसती प्रमार्जी । काजो परठवी । सर्व उपग
रण पफिलेही । इरियावही पफिकमें । पीठै चौविहार पच्चक्खाण करी ।
दोय खमासमणें । पोसह सुहपत्ती पफिलेही । दोय खमा समण देई । पो
सह संदिस्सावै । फेर । खमासमण देई । तीन नवकार गुणी । तीनबेर
पोसह दंरुक ऊचरै । (तिहां) दिवस सेसं रत्ति पज्जुवासामि (कहै) संध्या
हुवै । (तो) रत्ति पज्जुवासामि कहै पीठै । बिहुं खमासमणें सामायक
सुहपत्ती पफिलेहै । दोय खमासमण देई । सामायक संदिस्सावै ।
फेर खमासमण देई । तीन नवकार गुणी । तीन करेमिजंते ऊचरै । दोय
खमासमण देई । सिञ्जाय संदिस्सावी । आठ नवकार कहै । फेर दो खमा
समण देई । बैसणो संदिस्सावी । शीतादिके बे खमासमण देई । पांग
रण संदिस्सावै । पीठै । बे खमासमण देई । अंग पडिलेहण संदिस्सावी ।
सुहपत्ती पफिलेहै । फेर बे खमा समण देई । उंही थंफिला पफिलेहण

संदिस्सावी । (जो) अण पन्निजेह्यो उपगरण हुवै । (तो) पन्निजेहै (जो)
सर्व उपगरण पन्निजेह्या हुवै । (तोपिण) थानक शून्यता टालवा चणी ।
वले आसण पन्निजेहै । पन्निक्कमण वेलासीम सिझाय ध्यान करै । पीठै ।
उच्चार प्रश्रवणना (२४) थंमिला पन्निजेही पन्निक्कमणों करै । (तथा)
पाठलीराते । वली सामायक नलेवै । इतना निकेवल रात्रिसंबंधी पोसहलेवाना
विकल्प जाणवा) ॥ ❀ ॥ इति रात्रि पोसह विधि संपूर्णम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ २४ थंमिला पन्निजेहण पाठ लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १ ॥ आगाढे
मझे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ २ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे
अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ ४ ॥
आगाढे मझे पासवणे अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अणहियासे
॥ ६ ॥ ❀ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ७ ॥ आगाढे
मझे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ८ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहि
यासे ॥ ९ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे मझे
पासवणे अहियासे ॥ ११ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ १२ ॥ ❀ ॥
अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मझे
उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे
अणहियासे ॥ १५ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ १६ ॥
अणागाढे मझे पासवणे अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे
अणहियासे ॥ १८ ॥ ❀ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे
॥ १९ ॥ अणागाढे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २० ॥ अणागाढे
दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अहि
यासे ॥ २२ ॥ अणागाढे मझे पासवणे अहियासे ॥ २३ ॥ अणागाढे दूरे
पासवणे अहियासे ॥ २४ ॥ एथंमिला पन्निजेहण पाठकहा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिंवै थंमिला कहां २ करणा सोकहे है ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ६ थंमिला सय्याकै दोनुं तरफ दहणें पासे (३) वामपासे (३)
पन्निजे है ॥ ६ थंमिला दरवजेके नीतर पासे दाहिणें ३ वामें ३ पन्निजे है ॥

६ थंमिला दरवळे के बाहर दोनुं पासे पमिले है ॥ ६ थंमिला (जहां)
 उच्चार प्रश्रवणकी जगा दोनुं तरफ पमिले है ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
 इति २४ थंमिला पमि लेहण विधि संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ पाक्षिकादिक पडिक्रमण विधि लिख्यते ॥

॥ ❀ ॥ (तिहां) प्रथम बंदिचू सूत्र पर्यंत । देवमिक पमिक्रमी । १ ।
 खमासमण देई । देवसी आलोइयं पमिकंता । इठा० सं० ज० । पक्षी मुहप
 ती पमिलेहुं । (चौमासै) चौमासी० मुह० (संवठरीयें) संवठरी मुहपती
 पमिलेहुं । पठै (गुरुकहै पमिलेह) पठै इठं कहै । दूजी खमासणदेई ।
 मुहपती पमिलेही । वांदणाद्यै । तिहां (पक्खीमें) पक्खी वइकंतो ।
 (चौमासी में) चौमासी वइकंतो । (संवठरीमें) संवठरी वइकंतो । इम
 यथा योग्य कहै । (पठै गुरु कहै) पुण्यवंतो देवसीनें स्थानिकै पाक्खिक
 (चनुमासिक) संवठरिक जणज्यो । ठीकं जयणा करज्यो । मधुर स्वरै
 पमिक्रमज्यो । खासै सो विवरा सुध खासज्यो । मांजलमें सावचेत रहज्यो
 पठै सगलाही कहै । तहत्ति । पठै ऊठी । इठाका० सं० ज० । संबुध
 खामणेणं । अब्नुठिनंवि अखिंतर । पक्खियं (३) खामेणं (गुरु कहै खामेह)
 पठै मस्तकै अंजली करतो थको । इठं खामेमि पक्खियं (३) कही ।
 गोमालीयें वैसी । मस्तक नमावी । दक्षिण हाथ गुरु साहमो करी
 मुहपती मुखें देई । (पक्खियें) पनरसन्हं दिवसाणं । पनरसन्हं राईणं ।
 जंकिंचि अप्पत्तियं । (इत्यादि सर्वपाठ कहै) चनुमासे ॥ षण्णहं मासाणं ।
 अठ्णहं पक्खाणं । वीसोत्तरसो राइं दियाणं । जंकिंचि अप्पत्तियं
 (इत्यादि कहै) संवठरीयें ॥ दुवाल सण्हं मांसाणं । चोवीसण्हं पक्खा
 णं । तिन्निमय सठि राइं दियाणं । जंकिंचि अप्पत्तियं (इत्यादिकहै)
 तिवारे (गुरु पिण मिठामि दुक्कं कहै) । तिहां दोय साधु उचरता हुवै
 (तो) पाखियें (३) चौमासीयें (५) संवठरीयें (७) साधुनें खमावै । पठै
 ऊठी । अवग्रह मांहि रह्यो कहै । इठाका० सं० ज० । पक्खियं आलो
 वू (गुरु कहै आलोएह) पठै इठं आलोएमि । जोमे पक्खित (३) अइ
 यारो कउ (इत्यादि सूत्र जणी) संक्षेपै (अथवा) विस्तारं । पाखी

चौमासी । संवहरी । अतीचार आलोवे । पडै । सबस्सवि पक्खिय (३)
 इत्यादि । इत्थाकारेण संदिस्सह पर्यंत कहै । तिवारै (गुरु कहै) चउत्थे
 ण पक्कमह (चौमासै) ढठेण पक्कमह (संवहरीयें) । अट्टमेण पक्क
 मह । इत्थं । तस्समित्थामि पुक्कडं (कही) छ्रादशावर्त्त वांदणादेवै ।
 पडै । इत्था कारेण संदिस्सह ञगवन् । देवसियं आलोडयं पक्कंता (१)
 पत्तेय खामणेणं । अब्भुत्थिमि अत्तिंतर । पक्खियं । (३) खामेजं । (गुरु
 कहै खा०) पडै । इत्थंखामेमि पक्खियं । ३ (इत्यादि पाठ) सर्व पूर्वे
 कह्यो । तिम कही । मित्थामि पुक्कडं देई । खमावै । पडै । वे वांदणादेई ।
 ञगवन् देवसियं आलोडयं पक्कंता । पक्खियं (३) पक्कमावेह । (गुरु
 कहै सम्मं पक्कमह) । पडै इत्थंकही । करेमि ञंते सामाडयं । इत्थामि
 ठामि काजसग्गं । जोमे पक्खित्तं (३) (इत्यादि कही) तस्सुत्तरी० अन्न
 त्थू० कही । काजसग्ग करै) गुरु पाखी सूत्र कहै । ते सांजलै । अने
 गुरु थकी जूदा पक्कमता हुवै (तो) एक श्रावक खमासमण देई । कहै
 ञगवन् सूत्र ञणुं । (गुरु० ञणह) । इसो वचन मनमें धारी ।
 (इत्थं कही । ऊजो थको । हाथ जोभी । मुहपत्ती मुखें देई । तीन नवकार
 कही । मधुर स्वरै सूत्रार्थ मनमें चितवतो । (वंदित्तू सूत्र गुणें) बीजाश्रा
 वक । करेमि ञंते० । इत्थामि गतं काजसग्गं । तस्सुत्तरी (अन्नत्थू कही)
 काजसग्गमें रह्या सुणें (सूत्रांते) णमो अरिहंताणं कही (काजसग्गपारी)
 ऊजा थका तीन नवकार गुणी (वैसै) पडै तीन नवकार (३) करे
 मि ञंते कही । इत्थामि पक्कमित्तं । जो मे पक्खित्तं (३) इत्यादि कही ।
 (वंदित्तू सूत्र गुणें) पक्कमे देवसियं सबं । (एहनें ठिकाणें) पक्कमे
 पक्खियं । चौमासीयं । संवहरीयं (सबं कहै) पडै ऊजो । अब्भुत्थिमि
 आराहणाए (इत्यादि परीपूर्ण ञणी) खमासमण देई । इत्था० सं० ञ० ।
 मूल गुण उत्तरगुण अतीचार विशुद्धि निमित्तं । काजसग्ग करूं (गुरु कहै
 करेह (पडै इत्थं कही । करेमि ञंते सामा० । इत्थामि गतं काजसग्गं ।
 तस्सु० । अन्नत्थू । (इत्यादि कही) पाखियें (१२) लोगस्स । चौमासे ।
 (२०) लोगस्स । संवहरीयें (४०) लोगस्सनो काजसग्ग करै । एक नव

कार नूपर । काउसग्ग करी । (पारी) लोगस्स कहै । बैसी । मुहपत्ती
 पफिलेही । बे वांदणा देई । इच्चा० सं० ज्ञ० । समाप्ति खामणेणं । अ
 ञ्चुच्छिन्नमि अङ्घ्रितर । पक्खियं । (३) खामेजं (गुरु कहै खामेह) पठै ।
 इच्चं खामेमि पक्खियं । (इत्यादि पाठ) पूर्वे कह्यो । तिम कहै । (पठै)
 इच्चाका० सं० ज्ञ० । पाखी (३) खामणा खामूं (गुरु कहै) । पुण्यवंतो
 च्यारवेर खमासमण देई । तीन २ नवकार कही । पाखी (३) समाप्त खा
 मणा खामह । पठै । श्रावक एक खमासमण देई । मस्तक नींचो नमावी
 तीन नवकार गुणें । इम च्यार वार कहे । पठै । (गुरु कहै नित्यारग पार
 गाहोह (पठै । श्रावक कहै । इच्चं । इच्चासो अणुसठिं (कही) (गुरु कहै)
 पुण्यवंतो । पाखीनें लेखै । एक उपवास । (अथवा) दोय आंविज) अ
 थवा) तीन नीवी । (अथवा) च्यार एकासणां । (अथवा) बेहज्जार सि
 ज्जाय करी । एक उपवासनी पैठ पूरज्यो । पाखीनें स्थानकै देवसिक ज
 णिज्यो ॥ इम चौमासै एसर्व दुगणो कहणो । संवत्तरीये त्रिगुणो कहणो
 पठै जिणें तपकीधो हुवै । ते पइठियं कहै । न कीधो हुवै । ते कहै त
 हत्ति । पठै बे वांदणां देई । अञ्चुच्छिन्नमि अङ्घ्रितर । देवसियं खामेमि ।
 इत्यादि कहै) पठै बे वांदणा देई । आयरिय उवझाए० तीन गाथा कहै ।
 इम आगै सर्व विधि । देव सिक पफिकमणानी करै । पिण इतरो विशेष
 है । श्रुत देवतानो काउसग्ग करी । स्तुति कहै । पीठे जवण देवयाए करे
 मि काउसग्गं (इत्यादि विधें) जवन देवतानों काउसग्ग करी । स्तुतिकही ।
 क्षेत्र देवतानो काउसग्ग करै । (तथा) तीने पर्वे । वसो स्तवन अजित शां
 ति कहणो । लघुस्तवन । उपसर्ग हर स्तोत्र कहणो । तथा पफिकमणो
 पूरो हुवां । पठै । एक श्रावक गुर्वाज्ञायें । नमोर्द्धत्सिधा कही । शांति
 स्तोत्र १७ गाथा प्रमाण कहै । बीजा सर्वसुणें । जिणानें रात्री पोसह न
 हुवै (ते) पोसह सामायिक पारी सांजलै ॥ ❀ ॥

इति पाहिकादि (३) पडिकमणविधिः कही ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ रात्री प्रतिक्रमण मांहें उम्मासी तपचितन विधिः ॥

॥ ❀ ॥ श्रीमहावीर स्वामीना तीर्थमें उत्कृष्टो उम्मासी तपहै ॥ रे जीव

ते करि सके । नकरिसकुं । इम एक दिन उंगो । करि सके (न करिसकुं)
इम एकेक दिन उंगो करतां । उगुण तीस दिन ऊणा ढम्मास हुवै । तिहां
सूधी पूढियै । पढै । (पंचमासी) करि सके । न करिसकुं । एक दिन ऊ
णी पंचमासी करि सके (न करिसकुं) । इम एकेक दिन उंगो करतां
उगुण तीस दिन ऊणी । पंचमासी लगे पूढियै । पढै । (चउमासी) एक
दिन ऊणी । दोय दिन ऊणी । इमहीज त्रिमासी । दुमासी । यावत्
(एक मासकरि सके) । नकरि सकुं । पढै । एक दिन ऊणो कियां । सो
जह दिननो चौत्रीसम तप थाइ । ते करि सके (न करिसकुं) । पढै । वे वे
जात घटावतां पूढियै । (इम) वत्रीसम करि सके (न करिसकुं) । (इम)
त्रीसम । अठ्ठा वीसम । ढावीसम । चौवीसम । बावीसम । वीसम । अठार
सम । शोलसम । चौदसम । बारसम । दशम । अठम । ढढ । चउत्थ
तप करि सके । (न करि सकुं) । (इम) आंबिल । निवी । एकासणो
पुरिमट्ट । पोरसी । नवकारसी । (ताई) जो पच्चक्खाण करवो हुवै ।
(सो) मनमें धारी । काजसगग पारै ॥ इति ढम्मासी तप चितवन विधिः ॥

॥ ❀ ॥ अथ प्रशस्तिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दुहा ॥ श्रीजिन चंद सुरिंद । नितुराजत गढ राजान । वाचक अ
मृत धर्म गणि । सीस कृमा कल्याण ॥ १ ॥ सय अठार अरुतीस माफि ।
जेशलमेरु सुथान । श्रावक विधि संग्रह कियो । मूल ग्रंथ अनुमान ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ आचार ग्रंथनामः ॥ ❀ ॥

श्रीजिनप्रज्ञसूरि कृत विधि प्रपा ॥ १ ॥ खरतर मंजुलाचार्य तरुण प्रज्ञ सूरि
कृत पद्मावश्यक वालाबोधं ॥ २ ॥ सामाचारी शतकं ॥ ३ ॥ वंदास्वर्त्ति
॥ ४ ॥ प्रवचन सारोच्चारवृत्ति ॥ ५ ॥ आचार दिनकरं ॥ ६ ॥ श्रीजिन प
तिसूरि सामाचारी पत्रं ॥ ७ ॥ शिवनिधानो पाध्याय कृत लघु विधि प्रपा
दि ॥ ८ ॥ ग्रंथाश्च विलोक्य अयं विधि प्रकाशो निर्मित ॥ ❀ ॥

इति श्रावक विधि प्रकाश. परि पूर्णतामगात् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ * ॥ अथ साधू (अने) श्रावक । दोनुं टंक पन्धिकमणो
करे । तेहनो हेतु (नांव) मुतलब लिखतेहें ॥ * ॥

॥ * ॥ तिहां पापसेती निवर्त्तन होणो (ते) पडिकमणो कहिये ॥
तथा ॥ ग्यानाचार १ दर्शनाचार २ चारित्राचार ३ तपाचार ४ वीर्या
चार ५ (एपंच आचार सुधि निमित्तें) श्रीगुरु साखें । अनें गुरु
अजावे । थापनाचार्य शाखे पन्धिकमणो करवो (तेहना ठ अध्ययनठै)
सामाइयं १ । चउवीसत्थउ २ । वंदणयं ३ । पडिकमणं ४ । कानुसग्गो ५ ।
पच्चक्खाण ६ मिति (तिहां) सामायिकें करी चारित्राचारनी सुधियायै ।
चउवीसत्थें करी दर्शना चारनी सुधता थायै । वांदणें करी ग्यानादिक आ
चार सुध थाये । पन्धिकमणें करी ग्यानादिकना अतीचारांनी सुधि थायै ।
अनें पन्धिकमणाथी जे अतीचार शुधनथाइ (ते) कानुसग्गें शुधथाइ ।
पच्चक्खाणें करी तपाचार शुधथाइ । अनें वीर्याचार इणें ठएकरी शुध थाइ
॥ हिवै देव वांदनादि अनुक्रमें पन्धिकमणो थापै । (तेहना हेतु कहै) ॥
सुध पन्धिकमणो मोहनो कारण ठे । ते मंगल विना निर्विघ्नपणें प्रमाण नचढे ।
तिसवास्तै धुरें अवश्य मंगल करवो । तिहां मंगल तो अनेक प्रकारनो है ।
पिण श्रीदेव गुरु वंदन सरीखो बीजो मंगल कोई नही (तेमाटे) प्रथम
नमस्कार शक्रस्तव पूर्वक च्यारे थुईए देववांदी । च्यारे खमासमणो गुरुवां
दे ॥ लोकमें पिण पहिलां राजानें नमस्कार करी (पठै) प्रधान प्रमुखनें
नमें । इहां राजा समान तीर्थकर (अने) प्रधानादिक समान आचार्या
दिक ठे (इम मंगल कर) पन्धिकमणानें धुरे समस्त अतीचारनो बीजक
(सबस्सवि देवसिय) इत्यादि कही मिठामि डुक्कं देवै । पठैं ज्ञानादिक
मांहे । चारित्रना अधिकपणा हुंती । प्रथम चारित्राचार शुधि निमित्तें ।
करेमि जंतै सामाइयं (इत्यादि तीन सूत्र जणें) तिहां समता परिणामें
सर्व धर्म कार्यकरवा (ते माटे) प्रथम सामायक आवश्यक कह्यो ॥ * ॥
पठै प्रजातनी पन्धिकमण थी मांफी । दिवसना कीधा अतीचार गुरु आगै
आलोइवाठै । ते धारयां विना जली रीतें आलोवाइ नही (ते माटे) कानुसग्ग
करै । अतीचार मनमें धारै । पठै लोगस्स कहै (जे माटे) एसामायिका

दिक सुद्ध मार्ग (इहां) रिषजादि चउवीस तीर्थकरे आपसेव्यो (अनें) ज व्य जीवनें उपदिस्यो । ते कारणें । बीजै आवश्यकके चउवीस जगवंतनी स्त वना करवी कही ॥ ❀ ॥ पठै धर्ममांहे विनयना प्रधानपणा हुंती । गुरुनें वांदणा देई । अतीचार आलोइवा । अनें वांदणाठे । तेशरीर सुद्ध विना नदेणी (ते माटे) प्रथम सुहपत्ती पम्लेही । सुद्धकरी । तिणथी काया पम्नि लेहै ॥ तीजै आवश्यकके वांदणा देवी कही ॥ ❀ ॥ पठै गुरु आगै । अती चार आलोई प्रायश्चित्त मांगै (गुरु कहै पम्निक्कमह) (जे माटे) कित ना इक अतीचार तो आलोयां थी सुद्ध थया । अनें कितना इक न थया (ते सुद्ध करवानो) चोथो आवश्यक पम्निक्कमणो कह्यो ॥ ❀ ॥ तिहां उत्तम कार्य सर्व नवकार पूर्वक करवा (ते माटे) प्रथम नवकार कहै । अ नें समजाव धारी पम्निक्कमहुं (ते माटे) पठै सामायिक सूत्र कहै । तिवार पठै साधु श्रावक आप आपणा अतीचार पम्निक्कमवा निमित्तें सूत्रजणें । पठै समस्त अतीचार रूप जार निवर्त्तवे करी । हलको हुवो थको । ऊजो थई सूत्र पूर्ण करै । इम अतीचार पम्निक्कमी । श्रीगुरुनें विषै पोतानो कीधो कोई अपराध खमाइवा निमित्तें । वांदणा देवै । पठै गुरु प्रमुखनें खमावी काउसग्ग निमित्तें । फेर वांदणा देवै । ए वांदणा गुरुनें अपणो आधीन पणो जणाइवा निमित्तें पिण जाणवी । पठै (श्रावक) आयरिय उवझाए (इत्यादी तीन गाथा जणें) हिवे आलोयण पम्निक्कणा थी शुद्ध न थया (जे) चारित्रादिकना मोटा अतीचार (ते) शुद्ध करवानें अर्थे पांचमो आ बश्यक काउसग्ग करै ॥ ❀ ॥ तिहां । प्रथम सामायिकादि तीन सूत्र ज णी । चारित्राचार शुद्धि निमित्तें दोइ लोगस्स चितवै । इहां तीजी वार वले सामायक उच्चारण कीधो (ते) सर्व धर्म क्रिया समता परिणामें की धी सफल थाइ । ए अर्थे । पठै ज्ञान थी समकित अधिको है (ते माटें) दर्शनाचार शुद्धि निमित्तें लोगस्स कही । सबलोए (इत्यादि) सूत्र जणी । एक लोगस्सनो काउसग्ग करै । पठै श्रुतज्ञानाचार शुद्धि निमित्तें । पुक्खरवर दीवट्टे (कही) सुयस्स जगवउ (इत्यादि जणी) बीजो एक लोगस्सनो काउसग्ग करै (इहां) प्रथम काउसग्ग दोय लोगस्सनो कह्यो । ते ज्ञाना

दिक थी चारित्रनो अधिकपणो ठे (ते माटे) वली । ग्यानादिकनी अपेक्षा
ये, चारित्रनें अतीचार घणा लागै । तेपिण कारण जाणवो । पढै ।
ज्ञान । दर्शन । चारित्राचार । निस्तीचार पणें आचखाना फलचूत
श्रीसिद्ध जगवान, तिणारी स्तवना । सिद्धाणं बुद्धाणं (इत्यादि जणें)
पढै । हिवणां उपगारी श्री महावीर स्वामीठै (ते माटे) जो देवाण
विदेवो (इत्यादि तेहुंनी स्तवना करै) पढै महा तीर्थपणा हुंती । उज्जित
शेज सिहरे (इत्यादि तीर्थ स्तवना करै) इम । चारित्र, दर्शन, ज्ञानाचार
सुद्ध करी । समस्त धर्म क्रियानो श्रुतज्ञान कारणठै (तेमाटें) श्रुति समृ
द्धि निमित्तें । श्रुत देवतानों काजसग्ग करी स्तुति कहै । पढै जेहना क्षेत्र
में रहियै । क्षेत्र देवतानों काजसग्ग करी । स्तुति कहै । (सिद्धांत माहें)
तीजै ब्रतें निरंतर अवग्रह याचना रूप जावना कहीठै । ते साचवणें नि
मित्तें ए काजसग्ग संजवै है । ए दोनुं काजसग्ग पूर्वधारीये आचख्या ठै ।
(आवश्यक वृत्ति, चूर्णि, जाष्यादिक माहे) श्रीहरिचद्र सूरि प्रमुख मोटे
आचार्ये कहाठै (ते माटें) प्रमाण है । पढै काजसग्ग थी । केई अती
चार सुद्ध न थया ते सुद्धकरवानें । ठठो आवश्यक पचक्खाण कह्यो ॥ ❀ ॥
तेपूर्वे कीयो होय (तो) इहां तेहनें ठामें । मंगलीक निमित्तें । नवकार एक
कही । सुहपत्ती (अनें) काया पफिलेही । श्रीगुरुनें वांदणादेई । इठामो
अणुसठि कहै । तुह्यारी आजायें में पफिकमणो कीधो । एहवुं गुरुनें जणा
विवा निमित्तें । ए वांदणा कहा । इतरे पफिकमणो परिपूर्णथयो ॥ ❀ ॥
(हिवै) निर्विघ्नपणें पफिकमणो पूर्ण हुवा थकी घणो हर्ष ऊपनो । तिणें
करी । गुरु एक स्तुति कहां थकां । सर्व साधु श्रावक वर्धमान स्वरे । तीन
स्तुति कहै (इहां गुरुना वचननें अंतें) शिष्यादिक । नमो खमासमणा
णं (एहवो गुरुनें नमस्कार कहै) ते गुरु वचननो बहुमान रूपठे । पढै
शक्रस्तव कही । आचार्यादिकनें वांदै । सर्व धर्म क्रिया श्रीदेवगुरु जक्ति
पूर्वक सफल थायै (ते माटें) पफिकमणानें प्रारंजे (तथा) अंतें । देव गुरु
वंदन कह्यो ॥ ❀ ॥ हिवै पफिकमणां माहें । चारित्रादि सुद्धि निमित्तें । पूर्वे
काजसग्ग कीधा ठे । तोपिण वली विशेष शुद्धि निमित्तें । ज्यार लोगस्त

नो काउसगग करी । मंगल निमित्तें लोगस्त कहै । जे साधु श्रावक आत्मा
 र्थीहुवै । ते ए हेतु समजी । विधि पूर्वक उपयोग सुं पन्तिकमणो करै ।
 ते लीलायें जवसमुद्र तरै । सिद्धि संपदा वरै ॥ ❀ ॥ आवश्यक वृत्त्यादेः । प्र
 ति क्रमण हेतवः । निवघ्न ज्ञापयोद्भृत्य । साधु श्राद्धादि हेतवे ॥ १ ॥ वा
 चकामृत धर्माणां । शिष्येणात्म हितेष्ठना । कृमाकल्याण गणिना । वीका
 नेर पुरे मुदा ॥ २ ॥ इति प्रतिक्रमण हेतवः संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधरजिनचैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ जयजय त्रिजुवन आदिनाथ पंचमगति गामी ॥ जयजय करुणा
 शांतिदांत जविजन हितकामी ॥ जयजय इंद नरिंदबृंद सेवत सिरनामी ।
 जयजय अतिशय नंतवंत अंतर गति जामी ॥ १ ॥ पूर्व विदेह विराजताए ।
 श्री सीमंधर स्वामि । त्रिकरण सुध त्रिहुंकालमें । नित प्रति करुं
 प्रणाम ॥ २ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सीमंधरजिनस्तवन ॥ ❀ ॥

॥ पूर्वविदेह पुखलावती । जयोजगापतीरे । श्रीसीमंधरस्वामि प्रहसमनित
 नमुरे ॥ १ ॥ जमत्रय ज्ञाव प्रकाशता । जविप्रतिवो धतारे । उपगारी अरिहंत
 ॥ प्रह० ॥ २ ॥ धन्यनयरी धन्यते नरा । धन्यते धरारे ॥ विचरै जिहां जिन
 राज । प्र० ॥ ३ ॥ धन्य दिवश धन्य तैघनी । देखसुं आंखनीरे । जक्तिवडल
 जगवंत । प्रह० ॥ ४ ॥ महरनिजर अवधारजो । पतित उधारजोरे । जिनहरख
 घणें ससनेह । प्रहसम नितन सुरे ॥ ५ ॥ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ श्रीसीमंधरसाहिवा । धीनतनी अवधारलालरे । परम पुरुष परमेसरू ।
 आतम परम आधारलालरे ॥ श्री० ॥ १ ॥ केवल ग्यान दिवाकरू । ज्ञांगे
 सादिअनंत लालरे ज्ञासक लोकालोकको । ग्यायक गेयअनंतलालरे ॥ श्री०
 ॥ २ ॥ इंद्रचंद्रषकीसरू । सुरनर रहे कर जोरु लालरे । पदपंकज सेवे सदा ।
 अलहुंतें इककोरु लालरे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चरणकमल पिंजरवसे । मुऊ मन
 हंस नितमेवलालरे । चरणसरण मोहि आसरो । जवर देवाधिदेवलालरे ॥

गुणवंत । समुद्रविजय शिवा देवीमात मति सहज उदार । सुंदर स्याम सरीर
जोति सोहे सुखकार ॥ १ ॥ गढगिरनारइजिणें लह्योए । अमृत समतस बाण
ध्यानधरंता एहनो । प्रगटे परम कल्याण ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीपार्श्वजिनचैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

ॐ श्रीपार्श्वनाथाय । विश्वचिंतामणीयते । उँधरणेंद्र वैरोढ्या । पद्मादेवी
युतायते ॥ १ ॥ सिताष्ट दलमध्यस्थ । वक्ष पद्मासनायते । उँअसिआजसाँश्री ।
लब्धा लक्ष्मीं नमोनमः ॥ २ ॥ उँदिक्रपाला प्रहाधीशं । यद्गुणीयद्गु सेविता ।
प्रहायुता हूइजया । ह्यापरा जितयान्वितः ॥ ३ ॥ शांतितुष्टि महापुष्टि ।
धृति कीर्त्ति विधायिने । विम्वाला नलवेत्ताला । सर्वाधि व्याधि नाशने ॥ ४ ॥
श्रीशंखेश्वर मंरुण । पार्श्वजिन प्रणतिकल्प तरुकल्प । चूरयदृष्ट व्रातं । पूरय
मे बांढितं नाथः ॥ ❀ ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ अग्निव मंगल माला । करणं हरणं दुरंति दुरितस्य । श्री पार्श्वनाथ
चरणं । प्रतिपन्नो प्रावतः सरणं ॥ १ ॥ आयासेन विना लक्ष्मी । विनाह्येपेण
वैभवं । विनै वत्तपसा सिद्धि । र्जपतां पार्श्वनामते ॥ २ ॥ पार्श्वजिनशा सनंते ।
निवरु महामोह तिमर विध्वंसि । महिरत्न दीपकल्पं । तनोतु तेजो विवेकाख्यं
॥ ३ ॥ तुरेषां चरणो जिब्हे । कुरुस्तोत्रं चरणोनमः । हर्षासु सुचितां दृष्टी ।
आएषु परमेश्वरः ॥ ४ ॥ जवे जवांतरे वापि । दुःखेवा यदिवा सुखे । पार्श्व
ध्यानेनमयांतु । वासुराः पुन्य ज्ञासुराः ॥ ५ ॥ ❀ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ अमर तरु कामधेनु । चिंता मणि काम कुंभ माईया । तुहसामि पास
सेवय । गयांइं सबेवि दासत्तं ॥ १ ॥ खंनिज्जाति जगंदर । ज्वर काश शास
शूलतन निवहा । सिरि सामल पास पहु । तुह नाम पर्यन् पवणेण ॥ २ ॥ जय
धरणेंदनमंसिअ । पत्तमावइ पसुह सेविअ सुपास । उँक्षी अँक्षी ममसिद्धि
कुणसु पास ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ उँममहरत्तं जरं । ममहरत्तं विडुरं मरं मरं । हरत्तं चोरारि मारिवाही ।

हरञ्जं ममं पास तित्थयरो ॥ १ ॥ एगंतर जरं निच्चजरं । सीअजरं उएहजरं वेला
जरं । तह तइयजरं चउत्थजरं । हरञ्जं ममं पास तित्थयरो ॥ २ ॥ जिण
दत्ताणा पालण परस्ससंधस्स विहि समुग्गस्स । आरोग्ग सोहग्गं अपवग्गं ।
कुणउपास जिणो ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री वीरजिन चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

वंडुं जगदाधार सार सिवसंपति कारण । जन्म जरा मरणादिरूप ऋवताप
निवारण । श्री सिद्धारथ तात मात त्रिशला तनजात । सोवन वरण सरीरवीर
त्रिजुवन विह्वात ॥ १ ॥ अमृत रूपे राजताए । चञ्चवीसम जिनजाण ।
ह्मा प्रमुख कल्याण गुण आपोकरिसुपसाय ॥ २ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ वीरस्सर्व सुरासुरेण महितो वीरं बुधा संश्रिताः । वीरेणा जिहतस्स
कर्म निचयो वीराय नित्यं नमः । वीरास्तीर्थमिदं प्रवर्त्तमतुलं वीरस्य घोरं
तपो । श्री वीरे धृतिकीर्ति कांति निचयः श्री वीरऋद्रंदिशः ॥ १ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ तप गद्द विशेष विधि संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचिदिअ ॥ ❀ ॥

॥ पंचिदिअ संवरणो । तह नवविह वंजचेर शुत्तिधरो । चउविह कसाय
सुको । इअ अठारस गुणोहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंचमह वयजुत्तो । पंचविहायार
पालण समत्थो । पंच समित्तं तिगुत्तो । ष्ठीसगुणो गुरु मज्ज ॥ २ ॥ इति ॥

❀ ॥ अथ खमासमाण ॥ ❀

॥ इत्थामि खमासमाणो वंदित्तं जावणिज्जाए निसीही आए मत्थएण
वंदामि ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ सुगुरुनें शातासुख पृष्ठा ॥

॥ इठकार सुहराइ सुहदेवसी सुखतप शरीर निरावाध सुख संजम जात्रा
निर्वहोजोजी स्वामी शाताजेजी चात पाणीनो लात्र देजोजी ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ सामायक पारवागाथा ॥ ❀ ॥

॥ सामाडय वयजुत्तो । जावमाणे होइ नियम संजुत्तो । षिन्नइ असुहं

कर्म । सामाइअ जति आवारा ॥ १ ॥ सामाइअं मिउकए । समणो इव
सावत्तं हवइ जह्वा । ए ए ए कारणेणं । बहुसो सामाइअं कुञ्जा ॥ २ ॥ सामा
यिक विधिं लीधुं विधिं पारित्तं । विधिकरतां जे कोइ अविधि हुवो होय । ते
सविहुं मन बचन कायार्ये करी मिठ्ठामि दुक्कमं ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जगचिन्तामणिचैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ इठ्ठाकारेण सं० । चैत्यवंदन करुं ॥ इठ्ठं ॥ जगचिन्तामणि जगनाह ।
जगगुरु जगररकण । जगबंधव जगसत्थवाह । जगज्जाव विअरकण ॥ १ ॥
अठावय संठविअ रूव । कम्मठ विणासण । चत्तवीसंपि जिनवर जयंतु अप्पमि
हय सासण ॥ १ ॥ कम्मचूमिहिं कम्मचूमिहिं । पढमसंबयणि उक्कोसय सत्तरिसय ।
जिणवराण विहरंतलअइ । नवकोडिहिं केवलिण । कोमि सहस्स नवसाहु
गम्मइ । संपइ जिणवर वीसमुणि । विहुं कोमिहिं वरणाण । समणह कोमी
सहसइअ । थुणिजअ निच्चविहाण ॥ २ ॥ जयत्तसामी जयत्तसामी रिसह
सत्तुंजि । उज्जित पहुनेमिजिण । जयत्त वीर सच्चत्तरि मंरुण । अरु अत्तहिं
मुणिसुव्वय । महुरि पास दुहदुरिअ खंरुण ॥ अवर विदेहिं तिठ्ठयरा । चिहुं
दिसि विदिसि जंकेवि । तीआणागय संपइअ वंठुं जिण सबेवि ॥ ३ ॥ सत्ता
णवइ सहस्सा । लरकाठप्पन्न अठकोडीत्त । वत्तीस वासिआइं । तिअलोए
चेइए वंदे ॥ ५ ॥ पनरमकोडि सयाइं । कोमी बायाललरक अडवन्ना । वत्तीस
सहस असिआइं । सासय विंवाइं पणमामि ॥ ५ ॥ जंकिं चिनामतित्थं कहके
नमोत्थुणं कहे ॥ जावंति चेइयाइं । जावंति केविसाहू ॥ नमोत्तंसिद्धा० ॥
ज्वमग्गहरं पासं ॥ कहके जावपूर्वक जो स्तवन बोलना होय सो बोलके दोन्नुं
हाथ जोरु मस्तक चढाय जयवीयराय संपूर्ण कहै ॥

॥ ❀ ॥ अथ जयवीअराय ॥ ❀ ॥

॥ जयवीअराय जगगुरु । होत्तममं तुह पत्तावत्तं जयवं । जवनिवेत्तं ।
मग्गा । णुसारिया इठ फल सिद्धि ॥ १ ॥ लोग विरुद्धत्तं । गुरु जण पूआ
परत्थं करणंच । सुह गुरु जो गोतवथण सेवणा आत्तव मखंमा ॥ २ ॥ वारि
ज्जइ जइ विनिआ । एबंधणं वीअराय तुह समए । तहवि ममहुज्जा सेवा
जवे जवे तुह चलाणां ॥ ३ ॥ दुक्क रक्त्तं कम्म रक्त्तं । समाहि मरणंच

बौहिला भोत्र ॥ संपञ्जत महएत्रं । तुहनाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥ सर्वं
मंगल मांगल्यं । सर्वं कल्याण कारणम् ॥ प्रधानं सर्वं धर्माणं जैनं जयति
शासनम् ॥ ५ ॥ पीठे ऊजाहोके ॥ अरिहंत चेइयाणं ॥ वंदण वत्तिआए ।
अन्नत्थू कहके एक नवकारको कावसग्ग करके स्तुतिकहे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कल्याण कंदं स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ कल्याणकंदं पढमं जिणंदं । संतिंतवो नेमिजिणं सुणंदं । पासं पयासं
सुगणि क्ठाणं ॥ जतीय वंदे मिरि वद्ध माणं ॥ १ ॥ अपार संसार समुद्धपारं
पत्ता सिवं दिंतु सुइकसारं । सब्बे जिणंदा सुर विंद वंदा । कल्याण वल्लीण
विशाल कंदा ॥ २ ॥ निव्वाणमग्गे वरजाणकप्पं । पणा मियासे स कुवाडट्ठपं ।
मयाजिणाणं सरणं बुहाणं । नमामि निच्चंति जगप्पहाणं ॥ ३ ॥ कुंदिंङ्गो
हीरुत्तसार वन्ना । सरोज हत्थाकमले निसन्ना । वाए सिरी पुत्तय वग्गहन्ना ।
सुहायसा अहसया पसत्था ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विशाल लोचन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विशाल लोचन दलं । प्रोद्यद्दंताशुकेशरं । प्रातर्वीर जिनेन्द्रस्य
सुख पद्मं पुनातुवः ॥ १ ॥ येषा मज्जिषेक कर्म कृत्वा । मत्ता हर्षं जरात् सुखं
सुंद्राः । तृणमपि गणयन्तिनैव नाकं । प्रातःसंतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥
कलंक निर्मुक्त ममुक्त पूर्णतं । कुतर्क राहु असनं सदोदयं ॥ अपूर्व चन्द्र जिन
चन्द्र प्रापितं । दिनागमे नौमि बुधैर्नमस्कृतं ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जगवानादि वंदन ॥ ❀ ॥

॥ जगवानहं ॥ आचार्यहं ॥ उपाध्यायहं ॥ सर्वसाधुहं ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अतीचारनीटगाथा ॥ ❀ ॥

॥ नाणांमि दंसणं मिय । चरणांमि तवेअ तहय विरियंमि । आयरणं आ-
यारो । इअएसो पंचहा जणिओ ॥ १ ॥ काले विणए बहुमाणे । उवहाणे
तहय निन्हवणे । वंजण अत्य तडुअए । अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥
निस्संकिअनिकंखिअ । निव्वितिगिग्ग अमूढ दिठ्ठीअ । उववूह थिरीकरणे ।
वच्छत्त पजावणे अठ ॥ ३ ॥ पणिहाण जोगच्छत्तो । पंचहिं समइहिं तिहिं

गुत्तीहिं । एसचरित्ता यारो । अष्ठविहो होइ नायवो ॥ ४ ॥ वारस विहंमि
 वितवे । अङ्घ्रितर बाहिरे कुशलदिष्टे । अगिलाइ अणाजीवी । नायवो
 सोतवायारो ॥ ५ ॥ अणसण मूणोअरिया । वित्तीसंखेवणं रसचाओ । काय
 किलेसो संलीणआय । वझोतवोहोइ ॥ ६ ॥ पायडित्तंविणत्तं । वेयावच्चं तहेव
 सिञ्जोओ । जाणं उस्सग्गोविय । अङ्घ्रितरओ तवोहोइ ॥ ७ ॥ अणगूहिय
 वलविरिओ । परिकमइ जोजहुत्तमाज्जतो । जुंजइ अजहाथामं । नायवो
 वीरि आयारो ॥ ८ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सुत्रदेवता स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ सुअ देवया जगवई नाणा वरणी अकम्म संघायं । तेसिंखवेत्त सययं ।
 जेसिंसुअ सायरे जती ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ खेत्रदेवता स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ जीसे खित्तेसाहु । दंसणनाणेहि चरण सहिएहिं । साहंति सुरकमग्गं ।
 सादेवी हरत्त डुरिआइं ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अट्टाइजेसुमुनिवंदन ॥ ❀ ॥

॥ अट्टाइजेसु दीवसमुद्देसु । पन्नरससु कम्मचूमीसु ॥ जावंतकेविसाहु
 रयहरण गुत्तपग्गिग्गहधारा ॥ पंच महवय धारा अठारस सहस्स सीलांगधारा ॥
 अरक यायारचरित्ता, तेसवे सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि ॥१॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वरकनक ॥ ❀ ॥

॥ वरकनक शंख विट्ठम । मरकत घन सन्निभं विगतमोहं । सप्ततिशतं
 जिनानां । सर्वामर पूजितं वंदे ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पोसह पारवा गाथा ॥ ❀ ॥

॥ सागरचंदो कामो । चंदवर्णिसो सुदंसणोधत्तो । जेसिंपोसह पग्गिमा ।
 अखंमिआजीविअंतेवि ॥ १ ॥ धन्नासलाहणिज्जा सुजसा आनंद कामदेवाय ।
 जेसिंपसंसइ जयवं । दद्वयंतं महावीरो ॥ २ ॥ पोसहविधेन्दीधुंविधे पारिजं ।
 विधिकरतां जे कोइ अविधिहुओहोइ । तेसविहुं मन वचन कायायेंकरी
 मिठामिडुकमं ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जरहेसरनी सज्ञाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जरहेसर बाहुवली । अजय कुमारोअ ढंढण कुमारो ।
सिरिओ अणियाउत्तो । अयमत्तो नागदत्तोअ ॥ १ ॥ मेअज्ज थूलिअद्दो । वयं
ररिसि नंदिसेण सीहगिरी । कयवन्नोअ सुकोसल । पुंनरिओ केसि कर
कंइ ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल सुदंसण । साल महासाल सालिअद्दोअ ।
अद्दोअ दसन्नअद्दो । पसन्नचंदोअ जसअद्दो ॥ ३ ॥ जंबू पहु वंकचूलो । गय
सुकमालो अवंति सुकुमालो । धन्नो इलाड पुत्तो । चिलाइपुत्तोअ बाहुमुणी
॥ ४ ॥ अज्जागिरि अज्ज रक्खिअ । अज्ज सुहथ्थी उदायगो मणगो । कालयसू
रिसंवो । पज्जुन्नो मूलदेवोअ ॥ ५ ॥ पजवो विन्हुकुमारो । अद्दकुमारो दढ
पहारीअ । सिज्जंस कूरगड्डुअ । सिज्जंअव मेहकुमारोअ ॥ ६ ॥ एमाइ
महा सत्ता । दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता । जेसिं नाम ग्गहणे । पावपवंधा
विलय जंति ॥ ७ ॥ सुलसा चंदन बाला । मणोरमा मयणरेहा दमयंती ।
नमया सुंदरी सीया । नंदा अद्दा सुअद्दाय ॥ ८ ॥ राडमई रिसिदत्ता ।
पनुमावई अंजणा सिरि देवी । जिठ सुजिठ मिगावई । पनावई चिखणा ।
देवी ॥ ९ ॥ बंजी सुंदरी रुपिणी । रेवई कुंती मिवा जयंतीय । देवीई
दोवई धारणी । कलावई पुप्फचूलाय ॥ १० ॥ पनुमावईय गोरी । गंधारी
लप्पणा सुसीमाय । जंबूवई सच्चजाया । रुपिणी कन्हठ महिसीओ ॥
॥ ११ ॥ जक्खाय जक्खदिन्ना । चूआ तह चव चूअदिन्नाय । सेणा वेणा
रोणा । अअणीओ थूलिअद्दस्स ॥ १२ ॥ उच्चाई महासईओ । जयंति
अकलंक सील कलिआओ । अज्जावि वज्जाई जासिं । जस पडहो तिहुअणे
मयले ॥ १३ ॥ इति सत्ता सतीओनी सिज्ञाय ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मन्हजिणाणं सिज्ञाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मन्ह जिणाणं आणं । मिठं परिहरह धर सम्मत्तं । गविह
आवस्सयंमि । उज्जुत्तो होई पइ दिवसं ॥ १ ॥ पव्वेसु पोसहवयं । दाणं
शीलं तवोअ जावोअ । सज्ञाय नमुकारो । परो वयारोअ जयणाअ ॥ २ ॥
जिणपूआ जिणथुणिणं । गुरुथुअ साहम्मिआण वत्तव्वं । ववहारस्सय
सुधी । रहयत्ता तिथ्ययत्ताय ॥ ३ ॥ ज्वशम विवेक संवर । जासा समिई

बुद्धीव करुणाय । धम्मिअ जण संसग्गो । करणदमो चरिण परिणामो
 ॥ ४ ॥ संघोवरी बहुमाणो । पुथ्थय जिहणं पप्पावणा तित्थे । सट्ठाण
 किच्च मेअं । निच्चं गुख्खएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥ ५० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सकल तीर्थ वंदना ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल तीर्थ वंदूं करजोड । जिनवरनामं मंगल कोरु ।
 पहलें स्वर्गें लाख वत्तीश । जिनवर चइत्य नमुं निशिदीश ॥ १ ॥ वीजे
 लाख अठ्ठावीश कह्या तीजे बारलाख सर्दह्या । चौथे स्वर्गें अरु लाख धार ।
 पांचमे वंदूं लाखज चार ॥ २ ॥ ठठें स्वर्गें सहस पचास । सातमें चालीश
 सहस प्रसाद । आठमें स्वर्गें ठ हज्जार । नव दशमें वंदूं शत चार ॥ ३ ॥
 अग्यार बारमें त्रणशे सार । नवत्रैवेयकें त्रणशे अठार । पांच अनुत्तर सर्वे
 मली । लाख चौराशी अधिका वली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणुं त्रैवीश सार ॥
 जिनवर जुंवन तणो अधिकार । लांबा शो जोजन विस्तार । पचास जुंवा
 बोहोत्तर धार ॥ ५ ॥ एकशो अशी विंब परिणाम । सत्तासहित एक चैत्यें
 जाण । शो कोरु वावन कोरु संजाल । लाख चौराणुं सहस चौआण
 ॥ ६ ॥ सातशे ऊपर साठ विशाल । सबी विंब प्रणमुं त्रण काल । सात
 कोरुनें बोहोत्तर लाख । जुवनपतीमां देवल ज्ञाख ॥ ७ ॥ एकशो अशी
 विंब प्रमाण । एक एक चइत्यें संख्या जाण । तेरशे कोरु निव्याशी कोरु
 साठ लाख वंदूं करजोरु ॥ ८ ॥ वत्रीशैनें ओगणसाठ । तिर्नालोकमां चइ
 त्यनो पाठ । त्रण लाख एकाणुं हज्जार । त्रणशे वीश ते विंब जुहार ॥ ९ ॥
 व्यंतर योतिषीमां वली जेह । शाश्वता जिनवर वंदूं तेह । रिखज चंद्रानन
 वारिखेण । वर्द्धमान नामें गुणशेण ॥ १० ॥ समेत सिखर वंदूं जिनवीश ।
 अष्टापद वंदूं चौवीश । विमलाचल नें गढ गिरनार । आवूनुपर जिनवर जुहा
 र ॥ ११ ॥ शंखेश्वर केशरीयो सार । तारंगे श्रीअजित जुहार । अंतरीक
 वरकाणो पाश । जीरावलोनें थंजण पाश ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पाटण
 जेह । जिनवर चैत्य नमुं गुण गेह । विहरमान वंदूं जिन वीश । सिद्ध
 अनंत नमुं निशिदीश ॥ १३ ॥ अढी फ्रीपमां जे अणगार । अठार सहस
 शीलंगना धार । पंच महाव्रत मुमती सार । पाले पत्तावे पंचाचार ॥ १४ ॥

बाह्य अप्रितर तप उज्ज्वाल । ते भुनि वंदूं गुणमणिमाल । नित नित उठी
कीर्त्ति करूं । जीव कहे जव सायर तरूं ॥ १५ ॥ इति ॥ १५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सकलार्हत स्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकलार्हत्यतिष्ठान । मधिष्ठानं शिव श्रियः । चूर्नुवः स्वस्वयीशान ।
मार्हत्यं प्रणिदद्महे ॥ १ ॥ नामाकृति द्रव्यत्रावेः । पुनत खिजगज्जानं । क्षेत्रे
कालेच सर्वस्मि । नर्हतः ससुपास्महे ॥ २ ॥ आदिमं पृथिवीनाथ । मादिमं
निःपरंग्रह । मादिमं तीर्थनार्थच । ऋषभस्वामिनं स्तुमः ॥ ३ ॥ अर्हत मजितं
विश्व । कमलाकर त्रास्करं । अम्लान केवला दर्श । संक्रांत जगतं स्तुवे ॥ ४ ॥
विश्व ज्वय जनाराम । कुल्या तुल्या जयंतु ताः देशना समये वाचः ।
श्रीसंजव जगत्पतेः ॥ ५ ॥ अनेकांत मतांजोधि । ससुद्धासन चंद्रमाः ।
दद्या दमंद मानंदं । जगवान् जिनंदनः ॥ ६ ॥ द्युसत्किरीट शाणाग्रो । तेजितां
क्षि नखावलिः । जगवान् सुमतिस्वामी । तनोत्वज्जिमता निवः ॥ ७ ॥
पद्मप्रज प्रजोर्देह । त्रासः पुष्पांतु वः श्रियं । अंतरंगारी मथने । कोपाटो
पादिवारुणाः ॥ ८ ॥ श्रीसुपाश्वंजिनैद्राय । महेंद्र महितांजये । नमश्चतु
र्वर्ण संघ । गगनाजोग त्रास्वते ॥ ९ ॥ चंद्रप्रज प्रजोश्वंद्र । मरीचि नि
चियो ज्वला । मूर्त्ति मूर्त्तिसित ध्यान । निर्मितेव श्रियेऽ स्तुवः ॥ १० ॥ कराम
ल क्वद्विश्वं । कजयन् केवलश्रिया । अर्चित्य महात्म्य निधिः । सुविधिर्वो
धयेऽ स्तुवः ॥ ११ ॥ सत्वानां परमानंद । कंदो ज्जेदनवांबुदः । स्याद्ग्रादामृत
निस्पंदी । शीतलः पातुवो जिनः ॥ १२ ॥ नवरोगार्त्त जंतूना । मगदंकार दर्शनः
निःश्रेयस श्रीरमण । श्रेयांसः श्रेयसेऽस्तुवः ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकी चूत । तीर्थ
कृत्कर्म निर्मितिः । सुरासुर नरैः पूज्यो । वासुपूज्यः पुनातुवः ॥ १४ ॥ विम
ल स्वामिनो वाच । कृतकहोद सोदराः । जयंति त्रिजगच्चेतो । जलनै
र्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥ स्वयंचू रमणस्पर्धि । करुणा रस वारिणा । अनंत
जिदनंतांवः । प्रयत्नतु सुखाश्रियां ॥ १६ ॥ कल्पद्रुमसधर्माणा । मिष्टप्राप्तौ
शरीरिणां । चतुर्धा धर्मद्वेषारं । धर्मनार्थं सुपास्महे ॥ १७ ॥ सुधासोदर
वाग्ज्योत्स्ना । निर्मली कृत दिडमुखः । मृगलक्ष्मा तमःशांत्यै । शांतिनाथ
जिनोस्तुवः ॥ १८ ॥ श्रीकुंथुनाथो जगवान् । सनाथो निशयधिर्जिः । सुरा

॥ नृनाथाना । मेकनाथोऽस्तुवः श्रिये ॥ १९ ॥ अरनाथस्तु जगवां । श्र
 र्थारनजोरविः चतुर्थं पुरुषार्थश्री । विलासं वितनो तुवः ॥ २० ॥ सुरासु
 नराधीश । मयूर नव वारिदं । कर्मद्रुन्मूलने हस्ति । मल्लं मल्लि मन्निष्टु
 ॥ २१ ॥ जगन्महा मोहनिद्रा । प्रत्यूषसमयोपम । सुनि सुव्रत नाथस्य
 शना वचनं स्तुमः ॥ २२ ॥ लुठंतो नमतां मूर्ध्नि । निर्मली कार कारिणं । वा
 रे प्लवा इवनमेः । पातुं पादनखांशवः ॥ २३ ॥ यदु वंश समुद्रेंद्रुः । कर्म कहु
 हुताशनः । अरिष्टनेमि जगवान् । नूयाद्रोऽरिष्ट नाशनः ॥ २४ ॥ कमठे धर
 ण्द्रेच । स्वोचितं कर्म कुर्वति । प्रनुस्तुल्य मनो वृत्तिः । पार्थ नाथः श्रियेऽ
 स्तुवः ॥ २५ ॥ श्रीमते वीरनाथाय । सनाथायाद्भुत श्रिया । महानंदासरोरा
 ज । मरालायाहते नमः ॥ २६ ॥ कृतापराधेपिजने । कृपामंथरतारयोः ।
 ईषद्राष्यार्दयोर्जद्र । श्रीवीर जिननेत्रयोः ॥ २७ ॥ जयति विजितान्यतेजाः ।
 सुरा सुराधीश सेवितः श्रीमान् । विमलस्त्रास विरहित । स्त्रिनुवन चूफामणि
 जगवान् ॥ २८ ॥ वीरः सर्व सुरासुरेन्द्र महिता वीरं बुधाः संश्रिताः ।
 वीरेणाग्निहतः स्वकर्म निचयो वीराय नित्यं नमः । वीरातीर्थ मिदं प्रवृत्त
 मतुलं वीरस्य घोरं तपो । श्रीवीरे धृति कीर्त्ति कांति निचयः । श्रीवीरजद्रं
 दिश ॥ २९ ॥ अवनि तल गतानां कृत्रिमा कृत्रिमानां । वरभुवन गतानां
 दिव्य बैमानिकानां । इह मनुज कृतानां देवराजार्चितानां । जिनवर भुवना
 नां प्रावतोहं नमामि ॥ ३० ॥ इति ॥ ५२ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ शांतिकर स्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ संतिकरं संतिजिणं । जगसरणं जयसिरीइ दायारं । समरामि
 जत्त पालग । निवाणी गरुक्कय सेवं ॥ १ ॥ ओं सनमो विप्पोसहि प
 त्ताणं । संतिसामिपायाणं । ओं स्वाहा मंतेणं । सवाशिव डुरिअ हरणाणं
 ॥ २ ॥ ॐ संतिं नमुक्कारो । खेलोसहि माइ लद्धि पत्ताणं । सो ङ्गीं नमो स
 वो सहि । पत्ताणं चंदेइसिरीं ॥ ३ ॥ वाणी तिहुअण सामिणी । सिरी देवो
 जख्खराय गाणि पिरुगा । गह दिसिपाल सुरिंदा । सयावि रक्खंतुजिणजत्ते
 ॥ ४ ॥ रक्खंतु ममरोहिणी । पन्नत्ती वज्जासिंखला सया । वज्जाकुसि चक्केसरी
 नरदत्ता कालि महाकाली ॥ ५ ॥ गेरी तह गंधारी । महजाला माणवीअ वइ

रुद्रा । अद्भुत्ता माणसिआ । महामाणसिआओ देवीओ ॥ ६ ॥ जख्खा गोसुह
 महजख्खा । तिसुह जख्खेसु तुंवरू कुसुमो । मायंग विजय अजिओ । वंभो
 माणुओ सुर कुमारो ॥ ७ ॥ ढम्मुह पायाल किन्नर । गरुजो गंधव तहय
 जख्खिंदो । कुबेर वरुणो जिननी । गोमेहो पासमायंगो ॥ ८ ॥ देवीओ
 चकेसरी । अजिआ पुरिआरी कालि महा काली । अद्भुअ संता जाला । सु
 तारया सोअ सिरिविवा ॥ ९ ॥ चंभा विजयंकुसि पन्नइत्ति । निवाणि अद्भुआ
 धरणी । वईरुद्र वृत्त गंधारी । अंब पनुमावई सिद्धा ॥ १० ॥ इअ तिथ्य
 रक्खण स्या । अन्नेवि सुरा सुरी चक्रहावि । व्यंतर जोइणि पमुहा । कुणंतु
 रक्खं सया अहं ॥ ११ ॥ एवं सुद्धिठि सुरगण । सहिओ संघस्स संति जिण
 चंदो । मझवि करेऊ रक्खं । सुणि सुंदर सूरि थुअमहिमा ॥ १२ ॥ इअ
 संतिनाह सम्मद्धिठि । रक्खं सरइ तिकावं जो । सबोवद्व रहिओ । सलहइ
 सुह संपर्य परमं ॥ १३ ॥ तव गढ गयण दिणयर । जुगवर सिरि सोम सुं
 दर गुरूणं । सुपसाय लद्ध गणहर । विज्जा सिद्धिं जणइ सीसो ॥ १४ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर जिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सीमंधर परमात्मा । शिव सुखना दाता । पुख्खल वई विजये
 जयो । सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्व विदेह पुंफरीगिणी । नयरीयें शो
 हे । श्री श्रेयांस राजा तिहां । जविअण मन मोहे ॥ २ ॥ चउद सुपन
 निर्मल लही । सत्यकी राणी मात । कुंथु अर जिन अंतरे । श्री सीमंधर
 जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमे प्रनु जनमीया । बली यौवन पावे । मात पिता हरखें
 करी । रुकमिणी परणावे ॥ ४ ॥ जोगवी सुख संसारनां । संजम मन ला
 वे । सुनिसुव्रत नमी अंतरे । दिह्हा प्रनु पावे ॥ ५ ॥ घाती कर्मनो ह्य
 करी । पाम्या केवल नाण । वृखज लंढनें शोचता । सर्व चावना जाण ॥
 ॥ ६ ॥ चौराशी जस गणधरा । सुनिवर एक शो कोड । त्रण चुवनमां जोअ
 तां । नहिं कोइ एहनी जोड ॥ ७ ॥ दस लाख कह्हा केवली । प्रनुजीनो
 परिवार । एक समय त्रएय कालना । जाणे सर्व विचार ॥ ८ ॥ उदय पेढा
 ल जिनांतरे ए । थाशे जिनवर सिद्ध । जस विजय जिन प्रणमतां । शृअ
 वंजित फल लीध ॥ ९ ॥ इति चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः द्वितीय चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर जग धणी । आजरतें आवो । करुणावंत करु
णा करी । अमने वंदावो ॥ १ ॥ सकल जक्त तुमें धणी ए । जो होवे अम
नाथ । प्रवो प्रव हुं बूं ताहरो । नहीं मेळुं हवे साथ ॥ २ ॥ सयल संग
ठंफी करी ए । चारित्र लेइशुं । पाय तुमारा सेविनें । शिवरमणी वरिशुं ॥ ३ ॥
ए अलजो मुजने घणो ए । पूरो सीमंधर देव । इहां थकी हुं वीनवुं । अ
वधारो मुऊ सेव ॥ ४ ॥ इति द्वितीय चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सिद्धगिरी चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विमल केवल ज्ञान कमला । कलित त्रिचुवन हितकरं । सुर
राज संस्तुत चरणपंकज । नमो आदि जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर
शंग मंरुण प्रवर गुण गण नूधरं । सुर असुर किन्नर कोफि सेवित न
मो० ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरी गण गाय जिन गुण मनहरं । निर्ज
रावली नमें अहनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि साधी । को
फि पण मुनि मन हरं । श्री विमल गिरिवर शंग सिद्धा ॥ नमो० ॥ ४ ॥
निज साध्य साधन सुरिंद मुनिवर । कोफिनंत ए गिरिवरं । मुक्ति रमणी व
र्या रंगें ॥ नमो० ॥ ५ ॥ पाताल नर सुरलोक मांहीं । विमल गिरिवर तो
परं । नहि अधिक तीरथ तीर्थप ति कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ इम विमल गि
रिवर शिखर मंरुण । दुःख विहंरुण ध्याइ यें । निज शुद्ध सत्ता साधनार्थे
परम ज्योतिनें पाइए ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विठोह निद्रा । परम पद स्थि
ति जयकरं । गिरिराज सेवा करण तत्पर । पद्मविजय सुहित करं ॥ ८ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः सिद्धगिरी चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री शेत्रुंजय सिद्ध खेत्र । दीठे दुर्गति वारे । प्राव धरीनें जे
चढे । तेने प्रवपार उतारे ॥ १ ॥ अनंत सिध्नो एह ठाम । सकल तीरथ
नोराय । पूर्व नवाणुं रिखप्रदेव । ज्यां ठवीआ प्रनुपाय ॥ २ ॥ सूरज कुंरु
सोहा मणो । कवरु जहू अन्निराम । नान्निरायां कुलमंरुणो जिनवर करुं
प्रणाम ॥ ३ ॥ इति द्वितीय चैत्य ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री परमात्मा चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ परमेश्वर परमात्मा । पावन परमिष्ठ । जय जगद्गुरु देवाधि
देव । नयणे में दिष्ट ॥ १ ॥ अचल अकल अधिकार सार । करुणा रससिं
धु । जगती जन आधार एक । निःकारण बंधू ॥ २ ॥ गुण अनंत प्रचुता
हरा ए । किम ही कल्याण जाय । राम प्रचु जिन ध्यानथी । चिदानंद सु
ख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर जिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुणो चंदाजी सीमंधर परमात्म पासें जावजो । मुज
वीनतनी प्रेम धरीनें इण परें तुमें मंजलावजो । (ए आंकणी) जे
त्रण्य जुवननो नायकळे । जस चौशठ उंद्र पायकळे । नाण दरसण जेहनें
खायक ठै ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचन वरणी कायाळे । जस
धोरी लंठन पायाळे । पुंन्नीगणी नगरीनो रायाळे ॥ सुणो० ॥ २ ॥
वार पर्षदा मांहि विराजै ठै । जस चौत्रीश अतिशय ढाजैठे । गुण
पांत्रीश वाणीयें गाजे ठे । सुणो० ॥ ३ ॥ ऋविजननें ते पनि बोहेठे । तुम
अधिक शीतल गुण शोहेठे । रूप देखी ऋविजन मोहेठे ॥ सुणो० ॥
॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसीओ ठुं । पण ऋरतमां दूरें वसीओ ठुं । महा
मोह राय कर फसीओ ठुं ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण साहिब चित्तमां धरीयोठे
तुम आणा खड्ग कर गहीयोठे । तव कांइक मुज्जथी डरीयोठे ॥ सुणो० ॥
॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूठे हवे पूरो । कहे पद्म विजय थाऊं शूरो । तो वा
धे मुज मन अति नूरो ॥ सु० ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सिद्धगिरी स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आंखनीयें रे में आज । शेडुंजो दीठोरे । सवा लाख टकानो
दहानोरे । लागे मुनें भीठोरे (ए आंकणी) सफल थयो मारा मननो ऊ
माहो ॥ वाला मारा ॥ ऋवनो संशय जाग्योरे । नरक तिर्यंच गति दूर नि
वारी । चरणे प्रचुजीनें लाग्योरे ॥ शेडुं० ॥ १ ॥ मानव ऋवनो लाहो लीधो
वा० ॥ देहडी पावन कीधीरे । सोना रूपानें फूलडे वधावी । प्रेमें प्रदक्षिण
दीधीरे ॥ शेडुं० ॥ २ ॥ दूधडे पखालीनें केशर घोली ॥ वा० ॥ श्री आ

दीश्वर पूज्यारे । श्री सिद्धाचल नयणें जोतां । पाप मेवासी धूज्यारे ॥ शेत्रुं०
 ॥ ३ ॥ स्वयमुख सुधर्मा सुरपति आगें ॥ वा० ॥ वीरजिणंद इम बोलेरे ।
 त्रण नुवनमां तीरथ मोटुं । नहिं कोइ शेत्रुंजा तोलेरे ॥ शेत्रुं० ॥ ४ ॥ इंद्र
 सरीखा ए तीरथनी ॥ वा० ॥ चाकरी चित्तमां चौहारे । कायानी तो कासल
 टाले । सूरज कुंफमां नाहारे ॥ शेत्रुं० ॥ ५ ॥ कांकरे कांकरे श्रीसिद्धखेत्रे
 वा० ॥ साधु अनंता शीधारे । ते माटे ए तीरथ मोटुं । उधार अनंता की
 धारे ॥ शेत्रुं० ॥ ६ ॥ नात्रिराया सुत नयणे जोतां ॥ वा० ॥ मेह अमीरस
 वूठयारे । उदयरतन कहे आज मारे पोते । श्री आदीश्वर तूठयारे ॥ शेत्रुं०

॥ ❀ ॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विमलाचल नित वंदियें । कीजै एहनी सेवा । मानुं हाथ ए
 धर्मनो शिवतरु फल लेवा ॥ वि० ॥ १ ॥ उज्जल जिन गृह मंफली । ति
 हां दीपे उत्तंगा । मानुं हिमगिरि विभ्रमें । आई अंबर गंगा ॥ वि० ॥
 ॥ २ ॥ कोइ अनेरुं जग नहीं । ए तीरथ तोले । इम श्रीमुख हरिआगले
 श्री सीमंधर बोले ॥ वि० ॥ ३ ॥ जे सगला तीरथ करया । जात्रा फल
 लहीयें । तेहथी ए गिरि जेटतां । शत गणुं फल कहीयें ॥ वि० ॥ ४ ॥
 जनम सफल होय तेहनो । जे ए गिरि वंदे । सुजश विजय संपद लहे ।
 तेनर चिरनंदे ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री पंच तीर्थ स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ श्री शत्रुंजय मुख्य तीर्थ तिलकं श्री नात्रिराजंगजं
 वंदे रैवत शैल मौलि मुकुटं श्रीनेमिनाथं यथा । तारंगे अजितं जिनं ऋगु
 पुरे श्रीसुव्रतं स्थंजने । श्रीपार्थ प्रणमामि सत्यनगरे श्रीवर्द्धमानं त्रिधा
 ॥ १ ॥ वंदेऽनुत्तर कल्प तल्प नुवने त्रैवेयके व्यंतरे । ज्यौतिष्का मर मंदराद्रि
 वसतो स्तीर्थकरा नादरान् । जंबू पुष्कर धातकीषु रुचके नंदीश्वरे कुं
 डले । येचान्येपि जिना नमानि सततं तान् कृतिमा ऽकृत्रिमान् ॥ २ ॥
 श्री मध्नीरजिनास्य पद्म द्वादतो निर्गम्यते गौतम । गंगा वर्त्तन मेत्य या प्रवि
 ष्टेवे मिथ्यात्व वैताड्यकं । उत्पत्ति स्थिति संहति त्रिपथगा ज्ञानां बुधा
 वृद्धिगा । सामे कर्ममलं हरत्व विकलं श्रीप्रादशांगी नदी ॥ ३ ॥ शक्र श्रंद्र

रवि ग्रहाश्च धरण ब्रह्मेश्च शांत्यं विका । दिग्पालाः सकर्षादिगो मुखगणा
श्चकेश्वरी जारती । येन्ये ज्ञानतपक्रिया व्रतिविधिः श्रीतीर्थयात्रादिषु । श्री
संघस्य तुरा चतुर्विध मुरा स्ते संतु चद्रंकराः ॥ ४ ॥ इति श्रीपंचतीर्थ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेमराजुल सिज्ञाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नदी जमुनाके तीर ऊने दोय पंखीया (ए देशी) पिउजी पि
उजीरे नाम जपुं दिन रातियां ॥ पिउजी चाल्या परदेश । तपे मोरी
गतीयां । पग पग जोती वाट वालेसर कव मिले । नीर विठोह्यां मीनके ।
तेछुं टलवलै ॥ १ ॥ सुंदर मंदिर सेज साहिव विण नविगमे । जिहारे वालेसर
नाम तिहां मारुं मन जमे । जो होवे सज्जन दूर तोहि पासें वसे । किहां
सायर किहां चंद देखी मन उल्लसे ॥ २ ॥ निःस्नेहीशुं प्रीत मकरजोको
सही । पतंग जलावे देह दीपक मनमें नही । माणसनो विजोग
म होजो केहनें । सालेरे साल समान हडआमां तेहने ॥ ३ ॥
विरह व्यथानी पीरु जोवन वय अति दहे । जेनो पियु परदेश ते माणस
दुःख सहे । जुरी जुरी पंजर कीध, काया कमला जिसी । हजुअ न आ
व्योनेम मली नयणें हसी ॥ ४ ॥ जेने जेहशुं रंग टाल्यो ते नवी टलै
चकवा रयणी विजोग तेतो दिवसें मलै । आंवा केरो स्वाद निंबू ते न
वि करे । जे नाह्या गंगा नीर ते छिहर केम तरे ॥ ५ ॥ जे रम्या मालती
फूल धचूरे केम रमे । जेहनें धीयशुं प्रेम ठे तेलै केम जमें । जेहनें चतुरशुं
नेह ते अवरनें शुं करे । नव जोवन तजी प्रेम वैरागीथै फरे ॥ ६ ॥ रा
जुल रूप निधान के पोहती सहसावनें । जइ वांध्या प्रचु नेम संजम ले
ई ऐकमनें । पांम्यां केवल ज्ञान के पोहती मन रली । रूपविजय प्रचुनेम
जेटे आशा फजी ॥ ७ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आउखा सिज्ञायः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आऊखो तूटानें सांधो को नहींरे । तिण कारण मकरो जीव
प्रमादरे । जरा आव्यानें शरणुं को नहींरे । हिंसा बोनीनें दया पालरे ॥
आऊ० ॥ १ ॥ कुंडुव कवीला नारी कारणेरे । भूरख संच्यां बहुला पाप
२ । चोर तणी परे ठंणी जुरशेरे । सहीश डहलोक परलोक संतापरे ॥

आ० ॥ २ ॥ ऊंचा चणाव्या मंदिर मालियारे । दे दे धरतीमें ऊंडी नींवरे
 एक दिन अणजाण्युं ऊठी चालवुरे । सुख दुःख सहेशे आपणो जीवरे
 आ० ॥ ३ ॥ चक्रवर्ति हरिवल राणो केशवारे । जो जो वली इंद्र सुरांनो
 नाथरो ॥ ऊगी ऊगीनें उवेही आथम्यारे । जो जो कोइ अचरज वाली वा
 तरे ॥ आ० ॥ ४ ॥ अथिर संसार तजी सुनी नीसर्यारे । करता सुनि नव
 जा विहाररे । जारंरु पंखीनी दीधी उंपमारे । न धरे ममता नेह लगाररे ॥
 आ० ॥ ५ ॥ चारित्र पालै रूनी रीतशुरे । देवे सुनि अपनो उपदेशरे ।
 तीको सुनिवर सिधासी मोहनेरे । जश लेई इह लोक परलोकरे ॥ आ० ॥
 ॥ ६ ॥ शब्द रूप देखी समता धरोरे । मकरो सुनि ज्ञेयानुं अज्ञिमानरे ।
 ऋषि चोथमल सूत्र देखिनेरे । जोरु कीधी जालोर मजाररे ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ पंचतीर्थी चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज देव अरिहंत नमुं । समरुं तारुं नाम । ज्यां ज्यां प्रति
 मा जिनतणी । त्यां त्यां करुं प्रणाम ॥ १ ॥ शेजुंजय श्रीआदिदेव । नेम
 नमुं गिरनार । तारंगे श्री अजित नाथ । आवू रिखज जुहार ॥ २ ॥ अष्ट
 पद गिरि ऊपरें । जिनचोवीशी जोय ॥ मणिमय मूरति मानशुं । जरतें
 जरावी सोय ॥ ३ ॥ समेत शिखर तीरथ वडुं । ज्यां बीशे जिन पाय । वै
 जारकगिरि ऊपरें । श्री वीर जिनेश्वर राय ॥ ४ ॥ मांरुवगढनो राजियो ।
 नामें देव सुपाश । रिखज कहै जिन समरतां । पोहोचै मननी आश ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ दूज तिथीको चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढुविध धर्म जिणें उपदिश्यो । चोथा अज्ञिनंदन । बीजै ज
 न्या ते प्रनु । जवदुःख निकंदन ॥ १ ॥ ढुविध ध्यान तुह्मे परिहरो ।
 आदरो दोयध्यान । एम प्रकाश्युं सुमति जिन । ते चविया बीज दिन ।
 ॥ २ ॥ दोय बंधन राग द्वेष । तेहनें जवि ताजियें । मुऊ परे शीतल जिन क
 हे । बीज दिन शिव जजियें ॥ ३ ॥ जीवा जीव पदार्थनुं । करोनाण सुजाण
 बीज दिनें वासुपूज्य परें । लहो केवल नाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार
 दोय । एकांत न ग्रहीयें । अर जिन बीज दिनें चवी । एमजिन आगल क
 हीयें ॥ ५ ॥ वर्तमान चौबीशीये । एम जिन कल्याण । बीजदिनें केई पा

मीया । प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चौवीशीयें । हुआ बहुत
कल्याण । जिन उत्तम पद पद्मनें । नमतां होय सुख खाण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ ग्यान पंचमीको चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ त्रिगडे वेठा वीरजिन । ज्ञाखे जविजन आगे । त्रिकरणशुं त्रि
हुं लोक जन । निसुणो मन रागें ॥ १ ॥ आराहो जवि जावसे । पांच
म अजुवाली । ज्ञान आराधन कारणें । येहज तिथि निहाली ॥ २ ॥
ज्ञान विना पशु सारिखा । जाणो इण संसार । ज्ञान आराधनथी लखुं ।
शिवपद सुखश्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कही । काश कुसुम उप
मान । लोका लोकप्रकाशकर । ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी सासो
सासमे । करे कर्मनो खेह । पूर्व कोनी वरसां लगे । अज्ञानेकरे तेह ॥ ५ ॥
देश आराधक क्रिया कही । सर्व आराधकज्ञान । ज्ञान तणो महिमा घणो ।
अंग पांचमे जगवान ॥ ६ ॥ पंच माश लघु पंचमी । जावजीव उत्कृष्टी ।
पंच वरश पंच माशनी । पंचमी करो शुभदृष्टी ॥ ७ ॥ एकावनही
पंचनो ए । काउसगग लोगसस केरो । ऊजमाणुं करो जावशुं । टाले जव
फेरो ॥ ८ ॥ इण परें पंचमी आराहीयें ए । आणी जाव अपार । वरदत्त
गुण मंजरी परें । रंग विजय लहोसार ॥ ९ ॥ इति चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अष्टमीको चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ महा शुदि आठमनें दीने । विजया सुत जायो । तेम फागुण
शुदि आठमें । संजव चव आयो ॥ १ ॥ चइतर वदनी आठमें । जनम्या
रुषज जिणंद । दिहा पण ए दिन लही । हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥
माधवशुदि आठम दिनें । आठ कर्म करचा दूर । अजिनंदन चोथा प्रभु ।
पाम्या सुख जरपूर ॥ ३ ॥ एहीज आठम ऊजली । जन्या सुमति जिणं
द । आठजाति कलशें करी । न्हवरावे सुर इंद्र ॥ ४ ॥ जन्या जेठवदि
आठमें । मुनि सुव्रत स्वामी । नेम आपाठ शुदि आठमें । पंचमी गति
पामी ॥ ५ ॥ श्रावण वदनी आठमें । नमि जन्या जगज्जाण । तिम श्रावण
शुदि आठमें । पासजीनो निर्वाण ॥ ६ ॥ जाद्रवा वदि आठम दिनें
चविया स्वामी सुपास । जिन उत्तम पदपद्मनें । सेव्यांथी शिववास ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शाशन नायक वीरजी ! प्रभुकेवल पायो । संघ चतुर्विध थाप
वा । महसेन वन आयो ॥ १ ॥ माधव सित एकादशी । सोमल द्विजयज्ञ
इंद्रचूति आदें मल्या । एकादश विग्य ॥ २ ॥ एकादशसें चतुगुणा । तेह
नो परिवार । वेद अर्थ अवलो करे । मन अत्रिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवा
दिक संशय हरीए । एकादश गणधार । वीरें थाप्या वंदियें । जिन शासन
जयकार ॥ ४ ॥ मद्धि जन्म अर मद्धि पाश । वर चरण विलाशी ॥ ऋष
ऋ अजित सुमति नमी । मद्धी घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रन्न शिव
वास पास । ऋवन्नवना तोडी । एकादशी दिन आपणी । रिद्धि सगली जो
डी ॥ ६ ॥ दश खेत्रें त्रिहुं कालनां । दैठशै कल्याण । वरस अग्यार एका
दशी । आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अगीयार अंग लखावीयें । एकादश
पाठ । पूंजणी ठवणी विंटाणी । मसी कागल काठा ॥ ८ ॥ अगीयार
अव्रत ठान्वा ए । वहो पफिमा अगीयार । खिमाविजय जिन शासनें ।
सफल करो अवतार ॥ ९ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सीमंधर जिनवर सुखकर साहेब देव । अरिहंत सकलनी ।
प्राव धरी करूं सेव । सकलागम पारग गणधर प्राखित वाणी ।
जयवंती आणा ज्ञान विमल गुणखाणी ॥ १ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥
ए थुई चार वखत पाण कहेवायणे ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर जिनस्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर देव सुहंकर । मुनि मन पंकज हंसाजी । कुंथुअर
जिन अंतर जनम्या तिहुअणायश परशंसा जी । सुव्रत नमि अंतर वरदी
हा शिक्हा जगत निरासेंजी । उदय पेढाल जिनांतरमां प्रभु जाशे शिव
वहु पासें जी ॥ १ ॥ बत्रीश चउसठि चउसठि मलिया इग सय सठि
उक्किठा जी ॥ चउ अरु अरु मली मध्यम कालें वीस जिनेश्वर दिठा
जी ॥ दो चउ चार जघन्य दशजंबू धायई पुख्खर मजारें जी ॥ पूजो
प्रणमो आचारांगें प्रवचन सार उधरें जी ॥ २ ॥ सीमंधर वर केवल पा
मी जिनपद खवण निमित्तेंजी ॥ अर्थनी देशन वस्तु निवेशन देतां सु

एत विनीतेंजी । द्वादश अंग पूरवयुत रचिया गणधर लब्धि विकसिया
जी । अपञ्जवसिय जिनागम बंदो अक्षर पदना रसिया जी ॥ ३ ॥ आ
णा रंगी समकित संगी विविध जंग व्रतधारी जी । चउबिह संघ ती
स्थ रखवाली सहु उपद्रव हरनारी जी । पंचांगुली सुरी शासन देवी
देती तस जश रुचीजी । श्री शुजवीर कहे शिव साधन कार्य शकलमां
सिधीजी ॥ ४ ॥ ❀ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बीजतिथिकी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दिन सकल मनोहर बीज दिवस सु विशेष । राय राणा प्र
णमें चंद्र तणी ज्यां रेख । तिहां चंद्रविमानें शाश्वत जिनवर जेह । हु
बीज तणे दिन प्रणमुं आणि नेह ॥ १ ॥ अग्निंदन चंदन शीतल शीतल
नाथ । अरनाथ सुमति जिन वासुपूज्य शिव साथ । इत्यादिक जिनवर
जन्म ज्ञान निखाण । हुं बीज तणें दिन प्रणमूं ते सुविहाण ॥ २ ॥ पर
काश्यो बीजें दुविध धर्म जगवंत । जेम विमला कमला विउल नयन
विकसंत । आगम अति अनुपम जिहां निश्चय व्यवहार । बीजें सवि
कीजें पातिकनो परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी कमल सुकोमल
चीर । चक्रेसरि केसरी सरम सुगंध शरीर । कर जोनी बीजें हुं
प्रणमुं तस पाय । इम लब्धिविजय कहे पूरो मनोरथ माय ॥ ४ ॥ इति

॥ ❀ ॥ अथ पंचमीनी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावण शुदि दिन पंचमी ए । जनम्या नेम जिणंद तो । श्याम
वरण तन शोजतो ए । मुख शारदको चंद तो । सहस वरस प्रचु आउखो
ए । ब्रह्मचारी जगवंत तो । अष्ट करम हेलें हणीए । पोहोता मुक्ति मजार
तो । वासुपूज्य चंपापुरि ए । नेम मुक्ति गिरनार तो । पावापुरी नगरीमां
वली ए । श्री वीरतणुं निर्वाण तो । समेत सिखर वीश सिद्ध हुआ ए । शिर
वहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥ नेमिनाथ ज्ञानी हुवा ए । ज्ञाख्यो सार वचन
तो ॥ जीवदया गुण वेदनी ए । कीजें तास जतन तो । मृषा न बोलो मा
नवी ए । चोरी चित्त निवार तो । अनन्त तीर्थकर उम कहे ए । परहरियें
परनार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामें जहू जलो ए । देवीश्री अंबिका नाम तो । शा

सन सानिध्य जे करे ए । करै बलि धरमनां काम तो । तपगढ नायक गुण नि
लो ए । श्री विजय सेन सूरिराय तो । रिखन दास पाय सेवतां ए । सफ
ल करै अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ अथ अष्टमीनी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मंगल आठ करी जस आगल चाव धरी सुरराजाजी । आ
ठ जातिना कलश करीने न्हवरावें जिनराजाजी । वीर जिनेश्वर जन्म
महोत्सव करतां शिव सुख साधेजी । आठमनुं तप करतां अम घर मंग
ल कमला बाधेजी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी गजगंजन । अष्टापदपरे ब
लीयाजी । आठमें आठ सरूप विचारी । मद आठे तस गलियाजी । अ
ष्टमी गतिपरें पहोता जिनवर फरस आठ नहिं अंगजी । आठमनुं तप
करतां अम घर नित्य नित्य बाधे रंगजी ॥ २ ॥ प्रातीहारज आठ वि
राजे । समवसरण जिन राजेजी ॥ आठमे आठ शो आगम चाखी । जवि
मन संशय चांजेजी । आठे जे प्रवचननी माता पाले निरतीचारोजी ।
आठमनें दिन अष्ट प्रकारें जीवदया चित्त धारोजी ॥ ३ ॥ अष्ट प्रकारी
पूजा करीनें मानव जव फल लीजेजी । सिद्धाइ देवी जिनवर सेवी अ
ष्टमहासिद्धि दीजेजी । आठमनुं तप करतां लीजे निर्मल केवल ज्ञान
जी । धीर विमल कवि सेवक नय कहे तपथी कोडकल्याणजी ॥ ४ ॥

॥ ❀ अथ एकादशीनी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एकादशी अति रूअनी । गोविंद पूढे नेम । कोण कारण ए प
र्व मोहोडुं । कहो मुजशुं तेम । जिनवर कल्याणक अति घणां । एकशो
ने पंचाश । तेणें कारण ए पर्व मोहोडुं । करो मौन उपवास ॥ १ ॥ अ
ग्निआर श्रावक तणीप्रतिमा । कहै ते जिनवर देव । एकादशी एम अधिक
सेवो । वन गजा जिमेरेव । चौवीश जिनवर सयल सुखकर जैसा सुरतरु चं
ग । जेम गंगनिर्मल नीरजेहवुं करो जिनसुं रंग । अग्निआर अंग लखाविये ।
अगीयार पाठासार । अग्निआर कवली विंटाणां ठवणी पूंजणी सार । चाबखी
चंगी विविध रंगी शाखतणें अनुसार । एकादशी एम उजमो । जेम पामियें ज
वपार ॥ ३ ॥ वर कमलनयणी कमलवयणी कमल सुकोमल काय । जुजडंरु

चक्र अखरु जेहनें समरतां सुख थाय । एकादशी एम मन वशी गणि
हर्ष पंक्ति शीश । शामन देवी विघन- निवारो संघ तणां निश दीश ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्नातस्याचवदशनी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ स्नातस्या प्रतिमस्य मेरुशिखरे । शच्या विन्नोः शैशवे । रूपा
लोकन विस्मया हत रस भ्रांत्या भ्रमचक्षुषा । उन्मृष्टं नयन प्रजा धवलि
तं ह्रीरोदकाशंकया । वक्रं यस्य पुनः पुनः सजयति श्रीवर्द्धमानो जिनः ॥
॥ १ ॥ हंसां साहत पद्मरेणु कपिश ह्रीरार्णवां ज्ञो नृतैः । कुंजै रप्सरसां प
योधर ऋर प्रस्पार्धिभिः कांचनैः । येषां मंदर रत्नशैल शिखरे जन्माजिपे
कः कृतः । सर्वे सर्व सुरा सुरेश्वर गणै स्तेषां नतोहं क्रमान् ॥ २ ॥ अर्हद्
क्र प्रसूतं गणधर रचितं द्वादशांगं विशालं । चित्रं बह्वर्थं युक्तं मुनिगण वृष
त्रैर्धोरितं बुद्धिमद्भिः । मोहाग्रद्वारचृतं व्रत चरण फलं ज्ञेय चाव प्रदीपं ।
प्रत्तया नित्यं प्रपद्ये श्रुत मह मखिलं सर्व लोकैक सारं ॥ ३ ॥ निष्पंक
व्योमनील छुतिमल सदृशं बाजचंद्राज दंष्ट्रं । मत्तं वंदारवेण प्रसूत मदज
लं पूरयंतं समंतात् । आरूढो दिव्य नागं विचरति गगने कामदः कामरूपी ।
यद्गः सर्वानुच्रति दिशतु मम सदा सर्व कार्येषु सिद्धि ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री शत्रुंजय गिरि तीरथ सार । गिरिवर मांहे जेम मेरु उदार । ठा
कुरराम अपार । मंत्र मांहिं नवकारज जाणुं । तारा मांहे जेम चंद्र बखाणुं ।
जलथर मांहे जल जाणुं । पंखी मांहे जेम उत्तम हंस । कुल मांहे जिम
रूपजनो वंश । नाभि तणो जे अंश । ह्रमावंत मांहे जेम अरिहंता । तपशू
रा मुनिवर महंता । शत्रुंजय गिरि गुणवंता ॥ १ ॥ रूपज अजित संजव
अनिनंदा । सुमतिनाथ मुख पृनम चंदा । पद्म प्रज सुख कंदा । श्रीसुपा
र्य चंद्रप्रज सुविधी । शीतल श्रेयांस सेवो बहु बुद्धी । वासुपूज्य मति सुद्धी
विमल अनंत जिन धर्म ए शांती । कंथु अर मखि नमुं एकांती । मुनिसुव्रत
शुद्ध पंथी । नमी पाशने वीर चौवीश । नेम विना ए जिन त्रेवीश । सिद्ध
गिरि आव्या ईश ॥ २ ॥ ऋतराय जिन सार्थे बोले । स्वामी शत्रुंजय गिर
कुण तोले । जिननुं वचन अमोले । रूपज कहे सुणो ऋतराय । ठहरी पा

लंता जे नरजाय । पातिक चूको थाय । पशु पंखी जेइण गिरि आवे । जव
 त्रीजे ते सिद्धज थावे । अजरामर पद पावे । जिनमतमें शेरुंजो वखाण्यो ।
 ते में आगम दिलमांहे आण्यो । सुणतां सुख उस्त्राण्यो ॥ २ ॥ संघ पति
 जगत नरेसर आवे । सोवन तणां प्रासाद करावे । मणिमय मूरति ठावे । ना
 जिराया मरुदेवी माता । ब्राह्मी सुंदरी वहेन विख्याता । मूर्ति नवाणुं भ्राता
 गोमुखनें चक्रेसरी देवी । शेरुंजय सार करे नित्य मेवी । तपगढ ऊपर हेवी
 श्रीविजय सेन सूरीश्वर राया । श्री विजयदेवसूरी प्रणमी पाया । ऋषज दास
 गुणगाया ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥

॥ * ॥ अथ सीमंधर जिन स्तुति ॥ * ॥

॥ * ॥ महाविदेहखेत्रे सीमंधर स्वामी सोनाना सिंहासणजी । रूपानां
 कोशीशा विराजे रत्नना दीवा दीपेजी । कुंकुमवर्णी गहुंली विराजे मोतीना
 अहृत सारजी । त्यां बेठा सीमंधर स्वामी बोलै मधुरी वाणीजी ॥ १ ॥
 केशर चंदन जरीरे कचोली । कस्तूरी वरासजी । पहलीरे पूजा अमारीरे
 होजो जगम ते परजातजी ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥

॥ * ॥ अथ सामायक लेवा विधि ॥ * ॥

॥ * ॥ प्रथम उंचे आसनें पुस्तक प्रमुख सुंकीनें । श्रावक, श्राविका, कटा
 सणुं । सुहपत्ती, चरवलो लई । शुद्ध बस्त्रपहरी । जग्या पुंजी । कटासण ऊपर
 बेशी, सुहपत्ती नावा हाथमां सुख पासैं राखी । जमणो हाथ थापना जी सन्मु
 ख राखी । एक नवकार गणी (पंचिदिअ) कही । इत्थामि खमासमण देई । इरि
 या वहिया । तस्सउत्तरी । अन्नत्थ जससिएणं । कहै । एक लोगस्सनो (अथवा)
 चार नवकारनो काउसग्ग करै (पारी) प्रगट लोगस्स कहै । खमासमण
 देई । इत्थाकारेण संदिसह जगवन् सामायक सुहपत्ती पणिलेहुं ॥ इत्थं ॥
 इमकही । सुहपत्ती, तथा, अंगनी पणिलेहणना पंचाश बोल कही । सुहपत्ती
 पणिलेहीएँ । पढी खमासमण देई । इत्थाकारेण संदिसह जगवन् सामायक
 संदिस्सानुं ॥ इत्थं ॥ वली खमासमण देई । इत्था० ॥ सामायक ठानुं ॥ इ
 त्थं ॥ एम कही । बे हाथ जोडी । एक नवकार गणी । इत्थकार जगवन्
 पसाय करी सामायक दंरुक उच्चरावोजी । पढी गुरु प्रमुख वनेल करेमि

जंते कहे । पढी खमासमण देई । इच्छा० वैसणो संदिस्ताजं ॥ खमा०
इच्छा० ॥ वैसणो ठाजं ॥ खमा० इच्छा० ॥ सिझाय संदिस्ताजं ॥ खमा०
इच्छा० ॥ सझाय करं । इच्छा० एम कही । त्रण नवकार गणवा । पढी वे
धनी सझाय धर्म ध्यान करुं । इति सामायक लेवानी विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सामायिक पारवा विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ खमासमण देई । इरिया वही पम्किमाथी (यावत्) लोगस्स सूधी
कही ॥ खमा० ॥ इच्छा० ॥ मुहपत्ती पम्किहेहुं (एम कही) मुहपत्ती पम्किजे
ही । खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सामायिक पारं । यथाशक्ती । वजी खमास
मण देई ॥ इच्छा० ॥ सामायिक पारयुं तहत्ती कही । पढी जमणो हाथ
चरवला ऊपर अथवा कटासणा ऊपर थापी । एक नवकार गणी (सामाइय
वयजुत्तो०) कहिए ॥ पढी जमणो हाथ थापना सामो सवजौ राखीने एक
नवकार गणीअं ॥ इति सामायिक पारवानो विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ देवशिक प्रतिक्रमण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम सामायिक लीजें । पाणी वावरुं होय (तो) मुहप
त्ती पडि लेहवी । अने आहार वावरुं होय (तो) वांदणां वेदेवा । तिहा वी
जा वांदणांमां (आवसीआए) ए पाठन कहेवो । पढी यथा शक्ति पंचखला
ए करुं । पढी खमासमण देई । इच्छा० कही । वन्नेरायें (अथवा) पोते ।
चैत्यवंदन कहेवुं । पढी जंकिचि० । नमोऽथ्युणं० कही । ऊजाथईने । अरिहंतचे
इयाणं कही । एक नवकारनो काऊस्सगं करी । नमोऽर्हतं० कहीने । प्रथम
थुई कहेवी ॥ पढी । लोगस्स० सवनीए अरिहंत चेइयाणं कही । एक नवकार
नो काऊस्सगं पारीने । बीजी थुई कहेवी ॥ पढी पुखरवरदी० कही । सु
अस्स जगवओ करेमि काऊस्सगं । वंदणं० कही । एक नवकारनो काऊ
स्सगं पारी । बीजी थुई कहेवी । पढी सिघाणं बुघाणं कही । वेयावच्च ग
राणं० करेमि काऊस्सगं । अन्नत्थू० । कही । एक नवकारनो काऊस्सगं
पारी । नमोऽर्हतं० । कही । चौथी थुई कहेवी ॥ पढी वेशीने नमोऽथ्युणं कहेवुं
(पढी) चार खमासमण देवापूर्वकं । जगवान्, आचार्य, उपाध्याय, सर्व सा
धुभ्यः । प्रतं थोज वंदन करीये । पढी इच्छाकरेणं ॥ (देवसिक प्रतिक्रमण

ठानं) एम कही । जमणो हाथ, चवला अथवा कटासणा ऊपर थापीने । इहं
 सबस्सवि देवसिअं ॥ कहेवुं ॥ पढी ऊजा थई । करेमि जंते । इहामि ठामि
 काउसग्गं । जोमे देवसिअो ॥ तस्स उत्तरी० कहीनें ॥ अतीचारनी आठ
 गाथानो काउसग्ग करवो । आठ गाथा न आवडे तो आठ नवकारनो का
 उसग्ग करवो ॥ ते काउस्सग पारीनें लोगस्स कहवो । पढी बेसीनें । त्रीजा
 आवश्यकनी मुहपत्ती पडिलेहीनें । वांदणा बे देवां ॥ पढी ऊजा थईनें । इहा
 कारे० ॥ देवसिअं आलोउं ॥ इहं आलोएमि जोमे देवसिअो ॥ कहीने
 सात लाख कहेवा । पढी अठार पापस्थानक आलोइनें । सबस्सवि देवसि
 अ । कहीने बेसवुं । बेसीनें एक नवकार गणी । करेमि जंते । इहामि पफि
 क्कमिउं कहीने ॥ वंदित्तु कहेवुं ॥ पढी वांदणां बे देवा । पढी । अण्णुठिअोहं ।
 अण्णितर देवमिअं खामीनें । वांदणां बे देवा । पढी ऊजा थई आयरिय उ
 वझाए, कहीने । करेमि जंते० ॥ इहामि ठामि० जोमे देवसिअो० ॥ तस्स
 उत्तरी० ॥ कही । बे लोगस्स, अथवा, आठ नवकारनो काउसग्ग करवो । ते
 पारीनें लोगस्स कही । सबलोए अरिहंत चेइयाणं । वंदणा० कही । एक लोग
 स्स (अथवा) चार नवकारनो काउसग्ग पारीनें । पुखवरवरदी० ॥ सुअस्स
 जगवअो करेमि० ॥ वंदणा० करीनें । एक लोगस्स (अथवा) चार नवका
 रनो काउसग्ग करवो । ते पारीनें । सिघाणं बुघाणं० कही । सुअ देवया
 ए करेमि काउसग्गं । अन्नत्थू० कही । एक नवकारनो काउसग्ग
 करवो । ते पारी । नमोऽर्हत० कही । (पुरुषे) सुय देवयानी पहेली
 थुई कहेवी (अने) स्त्रीये, कमल दलनी पहेली थुई कहेवी । पढी
 खेत्र देवयाए करेमि काउसग्गं० ॥ एक नवकारनो काउसग्ग पारी ।
 नमोऽर्हत० कही । क्षेत्र देवतानी बीजी थुई । स्त्रीये (तथा) पुरुषे बनेनें
 कहेवी । पढी एक नवकार प्रगट गुणी (बेसीने) ठा आवश्यकनी मुह
 पत्ती पफिलेहीने । बे वांदणां दीजे (पढी) सामायक, चऊवीसथ्यो, वंदनक, प
 फिक्कमणं, काउसग्ग, अने पच्चख्खाण, करुंजुजी । एम ए उ आवश्यक संजा
 खा । पढी इहामो अणुसठिं । नमो खमासमणाणं० । कही । नमोऽर्हत०
 कहीनें पुरुष । नमोस्तु वर्धमानाय । कहे । अने स्त्रीयां संसार दावानी थुई त्रण

कहे । पत्नी नमोऽथ्युणं कही स्तवन कहेवुं (पत्नी) वरकनक कही जगवान् आदे
 वांदवा । पत्नी जमणो हाथ उपधी ऊपर थापी । अद्वाइजेसु कहेवुं । पत्नी दे
 वसिअ पायवित्तनो काउसग्ग चार लोगस्स (अथवा) शोल नवकारनो क
 रवो । ते काउसग्ग पारी । प्रगट लोगस्स कही । वेसीने । खमासमण देइ । इ
 ङ्गा० । सिज्जाय संदिसां । विज्जुं खमासमण देई । इङ्गा० सिज्जाय ज्जणुं । एय
 सिज्जायनो आदेश मागी । एक नवकार गणी । सिज्जाय कही । पत्नी एक
 नवकार गणी । खमासमण देई दुःखखल्लओ कम्मखल्लओ नो काउसग्ग ।
 चार लोगस्सनो संपूर्ण (अथवा) शोल नवकारनो करवो । ते एक वेसें
 (अथवा) पोतें पारीने । नमो ऽर्हत कही । लघुशांति कहीनें । प्रगट
 लोगस्स कहे (पत्नी) इरिया वही० ॥ तस्स उत्तरी० ॥ कही ॥ एक
 लोगस्स (अथवा) चार नवकारो काउसग्ग करी । प्रगट लोगस्स
 कहेवो । पत्नी चउक्कसाय० ॥ नमुऽथ्युणं० कही ॥ जावांति, वे । क
 हीने । ज्वसग्ग हरं० ॥ जयवीयराय० कही । मुहपत्ती पडिलेहवी । पत्नी
 इङ्गामि० ॥ इङ्गा० सामायिक पारुं यथाशक्ति । इङ्गामि० । इङ्गा का० ॥
 सामायिक पारुं, तहत्ति कही पत्नी जमणो हाथ उपधी ऊपर स्थापी । ए
 क नवकार गणीने सामाइअ वयज्जुत्तो कहेवुं । पत्नी थापेलि स्थापना
 होय तो एक नवकार गणी ज्जे । एवं प्रतिक्रमण विधि कह्यो । वा
 की अंतरविधि मोहोटाथी समजवो । इति देवसी प्रतिक्रमण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ राई प्रतिक्रमण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम पूर्वली रीतें सामायिक लेवूं । पत्नी । इङ्गा० । इङ्गा० । कही
 कुसुमिण दुसमिणनो काउसग्ग चार लोगस्सनो (अथवा) शोल नव
 कारनो करी । पारी । प्रगट लोगस्स कहेवो । पत्नी खमासमण देई ।
 जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन, जय वीयराय सुधी कहेवुं । पत्नी चार खमा
 सण पूर्वक । जगवान् । आचार्य । उपाध्याय । अनें सर्व साधु । प्रत्येकें
 वांदवा । पत्नी खमासमण वे देइ । सिज्जायनो आदेश मागी । एक नवकार
 गणीनें । जरेहे सरनी सिज्जाय कहीने (पत्नी) एक नवकार गणवो । पत्नी इङ्ग
 कार सुहराईनो पाठ कहेवो । पत्नी इङ्गाका० । राई प्रतिक्रमण ठाऊं । क

हीने । जमणो हाथ उपधी ऊपर थापीने । पढी । इहं सबस्सवि राइय दु
 च्चितिय० ॥ कही । नमोत्थुणं (तथा) करेमि जंतो कही । इहामि ठामि कान्त
 सग्गं० ॥ तस्स उत्तरी० कही ॥ एक लोगस्स (अथवा) चार नवकारनो का
 न्तसग्ग । पारीने । प्रगट लोगस्स कही । सबलोए अरिहंत० । कही । एक
 लोगस्स (अथवा) चार नवकारनो कान्तसग्ग करवो । पढी । पुख्खर
 वरदी० ॥ सुअस्स० ॥ वंदण० ॥ कही । अताचारनी आठ गाथानो (अथवा)
 न आवमे तो । आठ नवकारनो कान्तसग्ग पारी । सिघाणं बुघाणं कही
 ने । त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ती पफिलेही । वांदणां वे देवा । (तिहांथी
 लेने) अणुत्थिओ खामि । वांदणां वे दीजे (तिहां सुधी) देवसीनी रीते
 जाणवुं । पण (जे) ठेकाणे देवसिअं आवे (ते) ठेकाणे राइयं कहेवुं ।
 पढी आयरिअ उवझाए० ॥ करेमि जंतो० ॥ इहामि ठामि० ॥ तस्स उ
 त्तरी० कही ॥ तपचिंतामणि करतां न आवमे तो । चार लोगस्स (अथवा)
 शोल नवकारनो कान्तसग्ग करवो । ते पारी प्रगट लोगस्स कही । उठा
 आवश्यकनी मुहपत्ती पफिलेही । वांदणां वे देवा । (पढी) सकल तीर्थ वंदन
 करीने । यथाशक्तिये पञ्चखाण करवुं । पढी इहकारेण संदिसह जगवन् ।
 सामायिक, चन्वीसथो, वंदन, पफिक्रमण, कान्तसग्ग, पञ्चखाण, क
 र्खुं ठे जी । एम ठ आवश्यक संजारावा । पढी पञ्चखाण कर्खुं होय तो
 कर्खुं ठे जी (अने) धारखुं होय तो धारखुं ठे जी । एम कहेवुं । पढी इह
 मो अणुसंठिं० नमो खमासमणाणं० ॥ नमोऽर्हत्० । कहीने । विशाल
 लोचन० ॥ नमोत्थुणं० ॥ अरिहंत चेइयाणं० ॥ कही । एक नवकारनो
 कान्तसग्ग पारी । नमोऽर्हत् कही । कल्याणकंदं नी प्रथम थोय कहेवी
 पढी लोगस्स० । पुख्खरवरदी० ॥ सिघाणं बुघाणं० कही ॥ अनुक्रमे चार
 थोयो कहीए ठीए (तिहां सुधी) सर्व कहेवुं । पढी नमोत्थुणं० कही । जग
 वान् आदि चारने । चार खमासमणैवांदवा । पढी जमणो हाथ उपधी ऊपर
 थापी । अह्वाइजेसु कहेवुं । (पढी) सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन, स्तवन जयवीय
 राय० ॥ कान्तसग्ग, थोय, पर्यंत कहीये । तिहां सुधी करवुं ॥ पढी खमासमण
 पूर्वक श्रीसिघाचलजीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय, कान्तसग्ग० ॥

अने थोय कहीयें, ङियें । तिहां सुधी करुं । पत्ती सामायक पारखानी विधि
नीरीते सामायक पारखुं ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पक्खि प्रतिक्रमण विधि ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम देवसिक प्रतिक्रमणमां वंदित्तु कही रहियें (तिहां सुधी)
सर्व कहेवूं । पण चैत्यवंदन, सकजाऽहंतुं, कहेवूं । अने थोयो, स्यातस्यानी
कहेवी । पत्ती खमासमण देईने । इत्ताकारेण संदिसह जगवान् । देवसिअं आ
लोईअं पम्किंता । इत्ताकारेण ॥ पक्खि सुहपत्ति पम्फिलेहुं । एम कही सुह
पत्ती पम्फिलेहिये । पत्ती वांदणां वे दीजे । पत्ती इत्ताकारे ० संबुद्धा खामणे
णं अण्णुठिओहं अण्णितर । पक्खिअं खामेऊं इत्तं खामेमि पक्खिअं । पन्नरस
दिवसाणं । पन्नरस राइयाणं । जंकिंचि अपत्तियं ० कही । इत्ताकारेण सं ॥
पक्खिअं आलोएमि इत्तं आलोएमि । जो मे पक्खिअं ओ अईआरोकओ
कही । इत्ताकारेण सं ॥ पक्खी अतीचार आलोऊं (एम कही) वृद्धअतीचार
कहियें । पत्ती एवंकारे श्रावकतणे धर्मे श्री समकित मूल वाव्रत । एकशो चो
वीश अतीचार मांहे । जे कोई अतीचार । पक्क दिवस मांहे । सूख्म वादर
जाणतां अजाणतां हुओ होय तेमवे हुं मने वचने कायायें करी मिठामि
डुक्कं ॥ सबस्सविं पक्खिअं डुच्चित्तिअ । डुच्चासिय । डुच्चिठिअ । इत्ताकारेण
सदिसह जगवन् तस्स मिठामि डुक्कं ॥ इत्ताकारि जगवन् पसाओ करी प
क्खीय तप प्रसाद करोजी । एम उच्चर करी आवी रीतें कहिए ॥ चउथ्येण
एक उपवास । वे आंबिल । त्रण नीवि । चार एकासणा । आठ वे आसणा
वे हजार सणाय । यथाशक्ति तपकरी प्रवेश करयो होय (तो) पइठी कहीए
करवो होय (तो) तहत्ति कहीयें । न करवो होय (तो) अण बोल्या रही
अं । पत्ती वांदणा (वे) दीजे । पत्ती इत्ताका ० ॥ पत्तेअ खामणेणं अण्णुठि
ओहं अण्णितर । पक्खिअं खामेऊं । इत्तं खामेमि पक्खिअं । पन्नरस दिवसाणं ।
पन्नरस राइयाणं । जंकिंचि अपत्तियं ० ॥ पत्ती वांदणा (वे) दीजे । पत्ती दे
वसिअं आलोईअं पम्किंता । इत्ताका ० ॥ जगवन् ० पक्खिअं पम्फिसुं । स
म्मं पम्फिमामि ॥ इत्तं ॥ एम कही । करेमिअंते सामाड्यं कही ॥ इत्तामि
पम्फिमिऊं । जोमे पक्खिअं ० कहेवो । पत्ती खमासमण देई । इत्ताकारेण

संदि० ॥ पक्खिसूत्रपटुं । एम कही । त्रण नवकार गणी । साधु न होय तो
 त्रण नवकार गणीने । श्रावक वंदित्तु कहे । (पत्ती) सुअ देवयानी थुईकहेवी
 पत्ती हेठा बेसी । जमणो ढिंचण ऊजो राखी । एक नवकार गणी । करेमि
 जंतो० ॥ इत्थामि पडि० कही ॥ वंदित्तु कहेवुं ॥ पत्ती करेमिजंतो० इत्थामि
 ठामि काउसग्गं । जोमे पक्खिओ० ॥ तस्स उत्तरी० ॥ अन्नथ्य० ॥ कहीने
 बार १२ लोगस्सनो काउसग्ग करवो (ते लोगस्स) चंदेसुनिम्मलयरा, सूधी
 कहेवा ॥ (अथवा) अमतालीश नवकारनो । काउसग्ग करी पाखो ॥
 पारीनें । प्रगट लोगस्स कही । सुहपत्ती पफिलोहिनें । वांदणा बे दीजे । पत्ती
 इत्थाका० ॥ समाप्ति खामणेणं । अप्पुठ्ठिओहं अप्पितर० ॥ पक्खिअं
 खामेज्ज । इत्थं खामेमि पक्खिअं । पन्नरस दिवसाणं । पन्नरस राइ
 याणं । जिंकिंचि अपत्तियं० कही । पत्ती खमासमण देईनें । इत्थाका० ॥
 कही । पक्खि खामणा खामुं । एम कही खामणा चार खामवां ॥ पत्ती देव
 सी प्रतिक्रमणामा वंदित्तु कह्या पत्ती । बे वांदणां देईनें (तिहांथी) ते सामा
 यक पारीयें । तिहां सर्व सूधी देवसीनी पेठें जाणवुं । पण । सुअ देवयानी
 थुईनें ठेकाणें, ज्ञानादिनी थोयो कहेवी । स्तवन अजित शांतिवुं कहेवुं ।
 सज्जायनें ठिकाणें उवसग्गहरं (तथा) संसारदावानी थुई । चार कहेवी ॥
 अनें लघुशांतिनें ठेकाणे मोहटी शांति कहेवी ॥ * ॥ इति पक्खी प्रति० ॥

॥ * ॥ अथ चौमासी प्रतिक्रमण विधि ॥ * ॥

॥ * ॥ ये ऊपर कह्या सुजव पक्खिना विधि प्रमाणे करवुं (पण) एटलुं
 विशेष । जे बार लोगस्सना काउसग्गने ठेकाणे (वीश) लोगस्सनो काउस
 ग्ग करवो (अनें) पक्खिना आगारनें ठिकाणे । चउमाशीना कहेवा । यथा ।
 तपनें ठेकाणे । षठ्ठेणं बे उपवास । वार आंबिल । ष निवी । आठ एकाश
 णा शोल बे आसणा । चार हजार सज्जाय । ए रीते कहीए ॥ इति ॥

॥ * ॥ अथ संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि ॥ * ॥

॥ * ॥ एणऊपर लख्या सुजव । पक्खिना विधि प्रमाणे करवुं
 (पण) बार लोगस्सना काउसग्गने ठेकाणे । चालीश लोगस्स (अथवा) ए
 कशोनें शाठ नवकारनो काउसग्ग करवो (अनें) तपनें ठेकाणे । अठम जत्तं

(एटले) त्रण उपवास ठ आंबिल । नवनीवि । वार एकासणां । चौवीस वेआं सणां अने ठ हजार सप्ताय (ए रीते कहेहुं) अने पखिखना आंगारने ठेकाणें संवत्सरीना आंगार कहेवा ॥ इति पंच प्रतिक्रमण विधिः संपूर्णः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पडिलेहण करवानो विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवकार पंचदिअ कही । इरीयावही पम्किमवी । थापना होय तो नवकार पंचदिअ न कहेहुं । पढी तस्सउत्तरी कही । एक लोगस्स (अथ वा) चार नवकारनो काजसग करी । प्रगट लोगस्स कही । ऊजे पणें वेसी सुहपत्ति, चरवलो, कटासणुं, उत्तरासण, धोतीजं, कंदोरो, आदिनो पम्किलेहण करवूं । पढी काजो काढी । जीव कलेवर सचित्त आदि जोवुं । पढी काजो कहाफनार थापनाजी सन्मुख ऊजो रही । इरिया वही पम्किमें । पढी । का जो परठववा जग्या शोधी । त्रणवार अणुजाणह जस्सगो कही । काजो परठवे । पढी त्रण वार, वोसिरे, कहे ॥ इति पडिलेहण करवानो विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पञ्चखाण पारवानो विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम इरियावहियाए पम्किमीयें (पढी) जगंचितामणिनुं चइत्यवंदन । जयवीरराय सुधी करहुं (पढी) मन्हजिणाणंनी सप्ताय कही सुहपत्ती पम्किलेही । इठामि ० ॥ इठामि ० ॥ पञ्चखाण पारुं । यथाशक्ति इठामि ० ॥ इठामि ० ॥ पञ्चखाण पारयुं । तहत्ति । एम कही । जमणो हाथ, कटासणां (अथवा) चरवला ऊपर थापी एक नवकार गणी । पञ्चखाण करयुं होय ते कहेहुं । ते लखीयें तीयें ॥ उग्गएसूरे नमुकार सहिअं । पोरिसिं साठपोरिसिं । गंठिसहिअं सुंठिसहिअं पञ्चखाण करयुं चउबिहार । आंबिल, नीवि, एकासणुं, वे आसणुं, करयुं तीविहार । पञ्चखाण फासि अं । पालिअं । सोहिअं । तीरिअं । किट्टिअं । आराहिअं । जंच न आरा हिअं । तस्स मिठामि डुकमं । एमकही । एक नवकार गणवो ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीमहावीरजिन वंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सेवो वीरनें चित्तमां नित्यधारो । अरिक्कोधनें मन्नथी दूरवारो । संतोष वृत्ती धरो चित्तमांहिं । राग द्वेषथी दूर थाओ उठामि ॥ १ ॥ पड्या मोहना पासमां जेह प्राणी । शुद्ध तत्त्वनी वात तेणें न जाणी । मनु जन्म

पामी वृथा कां गमोढो । जैन मार्गं ठंभी नुलाकां प्रमोढो ॥ २ ॥ अलो
 प्री अमानी नीरागी तजोढो । सलोप्री समानी सरागी प्रजोढो । हरी ह
 रादि अन्यथी शं रमोढो । नदी गंग मूकी गलीमा पडोढो ॥ ३ ॥ केइ देव
 हाथें असि चक्र धारा । केइ देव घाले गले रुं माला । केइ देव
 उत्संगें राखे छे वामा । केइ देव साथें रमें वृंद रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे ले
 ई जपमाला । केइ मांसप्रह्नी महाविकराला । केइ योगिणी प्रोगिणी प्रोग
 रागें । केइ रुद्रणी गगनो होम मांगे ॥ ५ ॥ इसा देव देवी तणी आश
 राखे । तदा मुक्तिनां सुःखने केम चाखे । जदा लोभना थोकनो पार ना
 व्यो । यदा मधनो बिंदुओ मन्नभाव्यो ॥ ६ ॥ जेह देवलां आपणी आ
 श राखे । तेह पिंमनें मन्नशुं लेअ चाखे । दीन हीननी प्रीरु ते केम
 प्राजे । फुटो ढोल होये कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ भ्राता प्रजो
 मोह दाता । अलोप्री प्रचूने प्रजो विश्वख्याता । रत्न चिंता म
 णि सारिखो एह साचो । कलंकी काचना पिंडशुं मत राचो ॥ ८ ॥ मंद
 बुद्धी जेह प्राणी कहेढे । सवि धर्म एकत्व चूलो प्रमेढे । कीहां सर्षवाने
 कीहां मेरु धीरं । कीहां कायरानें कीहां शूरवीरं ॥ ९ ॥ कीहां स्वर्णथालं
 कीहां कुंजखंमं । कीहां कोद्रवानें कीहां खीरमंडं । कीहां खीरसिंधु कीहां
 द्वारनीरं । कीहां कामधेनु कीहां गगखीरं ॥ १० ॥ कीहां सत्यवाचा की
 हां कूडवाणी । कीहां रंकनारी कीहां रायराणी । कीहां नारकीनें कीहां
 देव प्रोगी । कीहां इंद्र देही कीहां कुष्ट रोगी ॥ ११ ॥ कीहां कर्म घाती
 कीहां कर्म धारी । नमो वीर स्वामी प्रजोअन्य वारी । जिसी सेजमां स्व
 मथी राज्यपामी । राचे मंदबुद्धि हरि जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अथिर सुःख सं
 सारमां मन्न माचै । जना मूढमा श्रेष्ठशुं इष्ट बाजे । तजो मोह माया ह
 रो दंजरोशी । सजो पुण्य पोशी प्रजो ते अरोशी ॥ १३ ॥ गति चार सं
 सार अपार पामी । आव्या आश धारी प्रचू पाय स्वामी । तुहों तुहों तु
 हीं प्रचु पर्मे रागी । प्रव फेरनी शृंखला मोह प्रागी ॥ १४ ॥ मानीये वीर
 जी अर्जते एक मोरी । दीजे दासकुं सेवना चरण तोरी । पुण्य उदय हुओ
 गुरु आज मेरो । विवेकें लह्यो में प्रचु दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ नवकारनो दंड ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ वंजित पूरे विविधं परं । श्री जिन शासन सार । निश्चे
 श्रीनवकार नित । जपतां जय जयकार ॥ १ ॥ अरुशठ अह्वर अधिक
 फल । नव पद नवे निधान । वीतराग श्रीमुख वदे । पंच परमेष्टि प्रधान
 ॥ २ ॥ एकज अह्वर एक चित्त । समरथां संपति थाय । संचित सागर सा
 तनां । पातक दूर पुलाय ॥ ३ ॥ सकल मंत्र शिर मुकुट मणि । सद्गुरु ज्ञापि
 तें सार । सो ज्ञावियां मन शुद्धुं । नित जपीयें नवकार ॥ ४ ॥ (दंड हाटकी)
 नवकार थकी श्रीपाल नरेशर पाम्यो राज्य प्रसिद्ध । समशान विषे शिव
 नाम कुमरनें सोवन पुरिसो सिद्ध । नवलाख जपता नरक निवारे पामें
 प्रवनो पार । सो ज्ञावियां जत्ते चोखें चित्तें नित जपीयें नवकार ॥ ५ ॥
 बांधी वरुशाखा ठीकें वेसी हेठल कुंरु हुताश । तस्करनें मंत्र समर्थ्यो
 श्रावके उड्यो ते आकाश । विधिरीतें जप्यां विषधर विष टाले टाले
 अमृत धार ॥ सो० ॥ ६ ॥ बीजोरा कारण राय महाबल व्यंतर दुष्ट
 विरोध । जेणें नवकारें हत्या टाली पाम्यो यहु प्रतिबोध । नवलाख जपतां
 थाये जिनवर इस्योढे अधिकार ॥ सो० ॥ ७ ॥ पल्लीपति शीख्यो
 सुनिवर पासें महा मंत्र मन शुद्ध । परजव ते राजसिंह पृथिवीपति पाम्यो
 परिगल रिद्ध । ए मंत्रथकी अमरापुर पोहतो चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ॥
 ॥ ८ ॥ संन्यासी काशी तप साधंतो पंचाग्नि परजाले । दीठो श्रीपास
 कुमारे पन्नग अधवलतो ते टाले । संजलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख इंद्र
 जुवन अवतार ॥ सो० ॥ ॥ ९ ॥ मनुशुद्धें जपतां मयणासुंदरी पामी प्रिय
 संयोग । इण ध्यानें कुष्ट टळ्युं जंत्रनुं रगत पित्तनो रोग । नि
 श्रेंशुं जपतां नवनिध थाये धर्म तणो आधार ॥ सो० ॥ १० ॥ वटमांहि
 कृष्ण जुजंगम घाल्यो । घरणी करवा घात । परमेष्टि प्रजावें हार फूलनो
 वसुधा मांहि विख्यात ॥ कमलावतीये पिगल कीधो पाप तणो परिहार
 ॥ सो० ॥ ११ ॥ ग्यणांगण जाती राखी गिहिणी पानी वाण प्रहार । पद
 पंच सुणांतां पांडुपति घर ते थड कुंतानार । ए मंत्र अमूलक महिमा मंदिर
 प्रवदुःख जंजणहार ॥ सो० ॥ १२ ॥ कंबल संवले कादव काढ्यां शकट

पांचशै माले । दीधे नवकारें गया देवलोके विलसे अमर विमान । ए मं
 त्रथकी संपति वसुधामां लही विलसे जैन विहार ॥ सो० ॥ १३ ॥
 आगे चौबीशी हुई अनंती । होशे वार अनंत । नवकार तणी कोइ आद
 न जाणे एम जाखे अरिहंत ॥ पूरव दिशि चारे आदि प्रपंचें समर्यांसंप
 तिसार ॥ सो० ॥ १४ ॥ परमेष्ठी सुरपद ते पण पामे जे कृत कर्म क
 ठोर ॥ पुंरगिरिऊपर प्रत्यक्ष पेख्यो मणिधरनें एकमोर । सह गुरु सन्मुख
 विधियें समरतां सफल जनम संसार ॥ सो० ॥ १५ ॥ सूजीकारोपण तस्कर
 कीधो लोहखरो परसिद्ध । तिहांसेठें नवकार सुणाव्यो पाम्यो अमरनी रुद्ध ।
 शेठनें घर आवी विघ्न निवारयो सुरें करी मनोहार ॥ सो० ॥ १६ ॥ पंचपरमेष्टि
 ज्ञानज पंचह पंच दान चारित्र ॥ पंच सिंहाय महा व्रत पंचहु पंच सुमति
 समकित्त । पंच प्रमाद विषय तजो पंचह पालो पंचाचार ॥ ॥ सो० ॥
 ॥ १७ ॥ कलश (ढण्य) नित जपीयें नवकार सार संपति सुखदाय
 क । सिद्ध मंत्र ए शाश्वतो एम जंपेश्री जगनायक । श्री अरिहंत सुसिद्ध
 शुद्ध आचार्य जणीजें । श्री उवझाय सुसाधु पंच परमेष्टि थुणीजें । नव
 कार सार संसारठे । कुशल लाजवाचक कहे । एक चित्तें आराधतां विधि
 रुद्धि वंढित लहे ॥ १८ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः नवकार ढंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुख कारण जवियण समरुं श्रीनवकार । जिन शासन आगम
 चनुदै पूरवसार । इण मंत्रनी महिमा कहितां नजहुं पार । सुरतरु जिम
 चितित वंढित फल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव सेव करै करजोर ।
 चुइ मंरुल विचरै तारै जवियण कोरु । सुरुंदै विलसै अतिसय जास अनंत ।
 पहिले पद नमियै अरि गंजन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पनरै जेदै सिद्ध थया
 जगवंत । पंचमि गति पुहता अष्ट करम करिहंत । कल अकल सरूपी
 पंचा नंतक जेह । जिनवर पाय प्रणमुं बीजैपद वलि एह ॥ ३ ॥ गज
 जार धुरंधर सुंदर ससिहर सोम । करि सारण वारण गुणठत्तीसे थोम । श्रुत
 जाण शिरोमणि सागर जेम गंजरी । तीजै पद नमियै आचारज गुण धीर
 ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगम सुत्र जणावैसार । तप विध संयोगे जाषै अरथ

विचार । मुनिवर गुण युक्ता ते कहियै ज्वजाय । चौथै पद नमियै अह
निश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पंचाश्रव टालै पालै पंचाचार । तपशी गुण धारी
वारी विषय विकार । तस थावर पीहर लोक मांहे जे साध । त्रिविधै ते
प्राणसुं परमारथं गुण लाध ॥ ६ ॥ अरि करि हरि सायण ऋयण चूत
वेत्तांल । सवि पापपणासै थास्ये मंगल माल । इण समरघां संकट दूरटले
तत्काल । जंपै जिण गुण इम सुरवर सीस रसाल ॥ ७ ॥ इति नवकार स्त०

॥ ❀ ॥ अथ श्रीनवकार मंत्र आत्म रक्षा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ परमेष्ठी नमस्कारं । सारं नव पदात्मकं । आत्मरक्षा करं वज्र
पंजरजं स्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं । शिरस्कं शिर सिस्थितं
। ॐ नमो सब सिद्धाणं । मुखे मुख पटंबरं ॥ २ ॥ ॐ नमो आयरि
याणं । अंगरख्या तिशायिनी । ॐ नमो ज्वझायाणं । आयुधं हस्तयो दृढं ।
ॐ नमो लोए सबसाहूणं । मोचके पादयो सुजे । एसो पंच नसुंकारो । शिला
वज्रमईतले । सब पावपणासणो । वप्रो वज्र मयोवही । मंगलाणंच स
वेसिं । खादि रंगार घातका । स्वाहां तंच पदं ग्येयं । पढमं हवड मंगलं ।
वप्रो परि वज्रमयं । पिधानं देहरक्षणे । महाप्रजावा रक्षेयं । कृद्रो पद्रव नाशनी
परमेष्ठी पदोद्रचूता । कथिता पूर्व सूरिभिः । यश्र्वेवं कुरुते रक्षां । परमेष्ठी पढै
सदा । तस्यनस्या झ्यं व्याधी । राधिश्चापि कटाचनः ॥ इति आत्मरक्षाः

॥ ❀ ॥ अथ श्री शंखेश्वर पार्श्वजिन तंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सेवो पाश संखेसरो मन शुद्धं । नमो नाथ निश्र्वं करी एक बु
द्धं । देवी देवतां अन्यनें शुं नमो गो । अहो जव्यलोको चुला कां
जमो गो ॥ १ ॥ त्रैलोकना नाथने शुं तजो गो । पड्या पाशमां चूतने कां
जजो गो । सुरधेनु तंभी अजा शुं अजो गो । महापंथ मूकी कुपंथें व्रजो
गो ॥ २ ॥ तजे कोण चितामणी काचमाटें । अहे कोण रासजने हस्ति
साटें । सुरद्रुम उपार कुण आक वावे । महा मूढ ते आकुला अंत पावे
॥ ३ ॥ किहां कांकरो ने किहां मेरुशृंगं । किहां केशरीने किहां ते कुरंगं
किहां विश्वनाथं किहां अन्य देवा । करो एकचित्तें प्रनु पाश सेवा ॥ ४ ॥
पूजो देव प्रजावती प्राणनाथं । सह जीवने जे करे ठे सनाथं । महा तत्व

जाणी सदा जेह ध्यावे । तेहनां दुःख दारिद्र दूरें गमावे ॥ ५ ॥ पामी मा
नुषोने वृथा कां गमो ठो । कुशीलें करी देहनें कां दमो ठो । नहीं मुक्तिवासं
विनां वीतरागं । जजो जगवंतं तजो दृष्टिरागं ॥ ६ ॥ उदयरत्न प्राखे स
दा हेत आणी । दयाप्राव कीजें मोहे दास जाणी । मोरे आज मोतीयडे
मेह वृथा । प्रनु पाश शंखेश्वरो आपतूठा ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीगौतमाष्टक ढंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीर जिणोसर केरो शीश । गौतम नाम जपो निशदीश । जो
कीजें गौतमनुं ध्यान । तो घर विलशै नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामें गि
स्विर चढे । मनवंडित लीला संपजे । गौतम नामें नावे रोग । गौतम नामें
सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंक्रमा । तस नामें नावे हूक्रमा । जूत
प्रेत नविमंके प्राण । ते गौतमनां करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामें निर्मल
काय । गौतम नामें वाधे आय । गौतम जिनशासन शणगार । गौतम ना
में जय जयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सुरहा घत गोल । मनवंडित कापड
तंबोल । घरेसुघरणी निर्मल चिंत । गौतम नामें पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौत
म उदयो अविचल प्राण । गौतम नाम जपो जग जाण । मोहोटा मंदिर
मेरुसमान । गौतम नामें सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोमानी जोड
वारू बिलशै वंडित कोड । महीयल मानें मोहोटा राय । जो तूठे गौतमना
पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले । उत्तम नरनी संगत मले । गौतम
नामें निर्मल ज्ञान । गौतम नामें वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहु ।
गुरु गौतमना गुण ठे बहु । कहे लावाय समय कर जोरु । गौतम
तूठे संपति कोड ॥ ९ ॥ इति ॥ १०९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री शोल सतीनो ढंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आदि नाथ आदें जिनवर वंदी । सफल मनोरथ कीजियें ए ।
प्रजातें ऊठी मंगलीक कामें । शोल सतीनां नाम लीजियें ए ॥ १ ॥ बाल
कुमारी जग हितकारी । ब्राह्मी जगतनी बेहेननी ए । घट घट व्यापक
अह्वर रूपें । शोल सतीमांहि जे वनी ए ॥ २ ॥ बाहुबल जगिनी सतीय
शिरोमणि । सुंदरी नामें रिषज सुता ए । अंग स्वरूपी त्रिनुवन मांहे । जे

ह अनोपम गुणलता ए ॥ ३ ॥ चंदनवाला बालपणायी । शीयलवती शुद्ध
 श्राविका ए । अरुदना बाकुला वीर प्रतिलाभ्या । केवल लही व्रत प्रावि
 का ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन बुआ धारिणी नंदनी । राजिमती नेम बल्लजा ए ।
 जोवन वेशे कामनें जीत्यो । संजम लेड देव दुल्लजा ए ॥ ५ ॥ पंच नर
 तारी पांरुव नारी । द्रुपद तनया वखाणीयें ए । एक शो आठे चीर पूराणां
 शीयल महिमा तस जाणीयें ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम । कौ
 शल्या कुलचंद्रिका ए । शीयल सल्लणी राम जनेता । पुण्य तणी प्रनालिका
 का ए ॥ ७ ॥ कोशविक ठामें शतानिक नामें । राज्य करे रंग राजीयो ए ।
 तस घर वरणी मृगावती सती । सुरनुवनें जश गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुजसा
 साची शीयले न काची । राची नही विषयारसें ए । सुखडुं जोतां पाप पु
 लाए । नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामनी । ज
 नकसुता शीता शती ए । जग सहु जाणे धीज करंतां । अनल शीतल थ
 यो शीयलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चालणी बांधी । कृवाथकी जल
 काढीयुं ए । कलंक उतारवा सतीय सुनद्रा । चंपा वार उवाढीयुं ए ॥
 ११ ॥ सुरनर वंदित शीयल अखंभित । शिवा शिवपद गामिनी ए । जेह
 ने नामें निर्मल थडयें । बलिहारी तस नामनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुरे पां
 मुरायनी । कुंतानामें कामिनी ए । पांरुव माता दशे दशारनी । बहेन पति
 व्रता पद्मनी ए ॥ १३ ॥ शीयलावती नामें शीलव्रत धारिणी । त्रिविधें
 तेहनें वंदीयें ए । नाम जपंतां पातिक जाए । दरिशाण, दुर्गित निकंदियें ए
 ॥ १४ ॥ निपधा नगरी नलहनरिंदनी । दमदंती तस गेहिनी ए । संकट पडतां
 शीयलज राख्युं । त्रिशुवन कीर्त्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अर्जाताजग
 जन पृजित । पुष्पचूजा नें प्रजावती ए । विश्व विख्याता कामितदाता । शो
 लमीसती पदमावती ए ॥ १६ ॥ वीरें प्राखी शाखें साखी । उदयरनन प्राखे सु
 दा ए । बाहाणुं वातां जे नर नणशे । ते जेशे सुख संपदा ए ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री तीर्थमाला स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शैलुंजय ऋषि समोसरथा । जला गुण नरचारे । सींधा साधु
 अनंत । तीर्थ ते नमुरे । तीन कल्याणक तिहां थया । सुगतें गयारे । ने

मीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो । गिरि सेहरोरे । जस्तें
 जराव्या बिंब ॥ ती० ॥ आबू चौमुख अतिजलो । त्रिजुवन तिलोरे । विम
 ल वसई वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो । रलीयामणोरे ।
 सीधा तीर्थकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखीये । हीये हरखीयेरे । सीधा
 श्री वासुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरी । रुद्धें जरीरे । मुक्ति गया
 महावीर ॥ ती० ॥ जेशलमेर जुहारीयें । दुःख वारीयेरे । अरिहंत बिंब अ
 नेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ वीकानेरज वंदीयें । चिरनंदीयेरे । अरिहंत देहरा आ
 ठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो शंखेश्वरो । पंचासरोरे । फलोधी थंजणपाश ॥
 ती० ॥ ५ ॥ अंतरीक अंजावरो । अमीजरौरे । जीरावलो जगनाथ ॥
 ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो । जात्रा करौरे । राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥
 ॥ ६ ॥ श्रीनाफोलाई जादवो । गोप्ती स्तवोरे ॥ श्रीवरकाणो पाश ॥ ती० ॥
 नंदीश्वरनां देहरा । बावन जलारे । रुचक कुंफले चार चार ॥ ती० ॥ ७ ॥
 शाश्वती अशाश्वती । प्रतिमा ठतीरे । स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीर्थ जात्रा
 फल तिहां । होजो मुज इहांरे । समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री राणकपुरजीनुं स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीराणपुरो रलीयामणुरे लाल । श्री आदीसर देव । मन मो
 हुरे । उत्तंग तोरण देहंरे ला० ॥ निरखीजें नित्यमेव ॥ म० ॥ १ ॥ च
 नवीश मंरुप चिहुं दिशेंरे ला० ॥ चतुमुख प्रतिमा चार ॥ म० ॥ त्रिजुव
 नदीपक देहरेरे ला० ॥ समोवरु नहीं संसार ॥ म० ॥ श्री० ॥ २ ॥
 देहरी चोराशी दीपतीरे ला० ॥ मांड्यो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ जलें
 जुहारया ज्ञेयरांरे ला० ॥ सूतां ऊठी सवेर ॥ म० ॥ श्री० ॥
 ॥ ३ ॥ देश जाणीतुं देहंरे ला० ॥ मोटो देश मेवारु ॥ म० ॥ लख्ख
 नवाणुं लगावि यारे ला० ॥ धन धनो पोरवारु ॥ म० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ ख
 स्तर वसई खांतशुरे ला० ॥ निरखंतां सुख थाय ॥ म० ॥ पांच प्राशाद बी
 जा वलीरे ला० ॥ जोतां पातिक जाय ॥ म० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ आज कृता
 स्थ हुं थयोरे ला० ॥ आज जयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवर
 तणीरे ला० ॥ दूरें गयुं दुख दंद ॥ म० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ संवत शोल

त्रियंतरैरे ला० ॥ मागशिर माश मजार ॥ म० ॥ राण पुं यात्रा करैरे
ला० ॥ समयसुंदर सुखकार म० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री सीमंधर जिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुक्खजवड विजयें जयैरे । नयरी पुंफ्रीगणी सार । श्री
सीमंधर साहिवारे । राय श्रेयांस कुमार । (जिणंदराय धरज्यो धर्म सनेह)
॥ १ ॥ (आंकणी) ॥ मोहोटा न्हाना अंतरोरे । गिरुआ नवि
दाखंत । शशि दारिशाण सायर वधैरे । कैख वन विकसंत ॥ जि० ॥ २ ॥
ठाम कुठाम न लेखवैरे । जग वरसंत जजधार । करदोय कुसुमें वासियैरे ।
गया सवि आधार ॥ जि० ॥ ३ ॥ राय नें रंक सरिखा गणें रे । उद्योतें श
शि सूर । गंगाजल ते विहु तणा रे । ताप करे सवि दूर ॥ जि० ॥ ४ ॥
सरिखा सहने तारवा रे । तिम तुमे ठो महाराज । सुजशुं अंतर किम क
रो रे । बांह ग्रह्यानी लाज ॥ जि० ॥ ५ ॥ सुख देखी टीळुं करे रे । ते न
वि होय प्रमाण । मुजरो माने सवि तणो रे । साहिव तेह सुजाण ॥ जि०
॥ ६ ॥ वृपजलंजन माता सत्यकी रे । नंदन रुक्रमणी कंत । वाचक जश
इम वीनवे रे । जयजंजन जगवंत ॥ जि० ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री महावीर स्वामीनुं हालरिऊं प्रारंज ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ माता त्रिशला कुत्रावे पुत्र पालणे । गावे हालो हालो हालख्वानां
गीत । सोना रूपानें वली रत्नं जनिउं पाजणुं । रेशम दोरी घूवरी वागे वुम
वुम रीत । हालो हालो हालो हालो मारा नंदनें ॥ १ ॥ जिनजी पार्थ प्रनुथी
वरस अदीशें अंतरें । होशे चोवीशमो तीर्थकर जिन परमाण । केशी स्वा
मी सुखथी एवी वाणी सांजली । साची साची हुड ते मारे अमृत वाण ।
हा० ॥ २ ॥ चौदे स्वपनें होवें चक्रीके जिनराज । वीना वारे चक्री नहि
हुवे चक्री राज । जिनजी पाश प्रनुना श्री केशी गणधार । तेहने वचनें
जाण्या चोवीशमा जिनराज । मारी कृखें आव्या तारण तरण जिहाज ।
मारी कृखें आव्या त्रण्य जुवन शिर ताज । मारी कृखें आव्या संव तीर
थनी लाज । हुंनो पुण्य पनोती इंद्राणी थइ आज ॥ हा० ॥ मुजनें ठो
होळो उपन्यो जे वेसुं गज अंवाणीये । सिंहासन पर वेसुं चामर उव ध

राय । ए सहु लक्ष्ण सुजने नंदन ताहरा तेजना । तेदिन संजार्हने आनं
 द अंग न माय ॥ हा० ॥ ३ ॥ करतल पगतल लक्ष्ण एक हजारनें आ
 ठ ठे । तेहथी निश्चय जाण्या जिनवर श्री जगदीश । नंदन जमणी जंगें
 लंढन सिंह बिराजतो । में पहले सुपने दीठो विशवा वीश ॥ हा० ॥ ५ ॥
 नंदन नवला बंधव नंदीवर्धनना तमे । नंदन प्रोजाइयोना देवरठो सुकुमाल
 हसशे प्रोजाइयो कही देवर माहरा लाफका । हसशे रमशेनें वली चुंटी
 खणशे गाल । हशशे रमशे नें वली वुंसा देशे गाल ॥ हा० ॥ ६ ॥
 नंदन नवला चेना राजाना प्राणेजठो । नंदन नवला पांचशें मामीना प्राणे
 ज ठो । नंदन मामलिआना प्राणेजा सुकुमाल । हशशे हाथे उ
 ढाली कहीने नाहना प्राणेजा । आंख्यो आंजी ने वली ट्वकुं करशे
 गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे टोपी आगलां ।
 रतने जमीआ जालर मोती कशवी कोर । नीला पीलानें वली राता स
 खे जातिनां । पहेरावशे मामी मारा नंद किशोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन
 मामा मामी सुखमली सहु लावशे । नंदन गजुवे प्ररशे लाडू मोती
 चूर । नंदन सुखमां जोइने लेशे मामी प्रामणां । नंदन मामी कहेशे जीवो
 सुख प्ररपूर ॥ हा० ॥ ९ ॥ नंदन नवला चेडा मामानी साते सती । मा
 री प्रत्रीजीने बेन तमारी नंद । ते पण गुंजो प्रखा लाखणसाई लावशे ।
 तुमनें जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजें
 लावशे लाख टकानो घूघरो । वली शूफा मेनां पोपट ने गजराज । सार
 स हंस कोयल तीतरने वली मोर जी । मामी लावशे रमवा नंद तमारे का
 ज ॥ हा० ॥ ११ ॥ लुपन कुमरी अमरी जलकलशें नवरावीआ ।
 नंदन तमने अमनें केलीघरनी मांहे । फूलनी वृष्टि कीधी योजन एकने
 मंमलें । बहु चिरंजीवो आशीष दीधी तुमने त्यांहे ॥ हा० ॥ १२ ॥ तम
 ने मेरू गिरिवर सुरपतियें नवराविआ । निरखी हरखी सुकृत लाप्र कमाय ।
 सुखमा ऊपर वारुं कोटी कोटी चंद्रमा ॥ हा० ॥ १३ ॥ वारुं ग्रह गणानो स
 सुदाय ॥ हा० ॥ १३ ॥ पण मूंकशुं । गजपर
 अंबानी बेसानी मोहोटे नागरखेलशुं ।

सूखमली लेशुं नीशाजी आने काज ॥ हा० ॥ १४ ॥ नंदन नवला मोहो
 टायाशोने परणावशुं । बहूवर सरखी जोनी लावशुं राजकुमार । सरखा
 वेवांइ वेवाणुंने पधरावशुं । वर बहू पोंखी लेशुं जोइ जोइने दीदार ॥ हा० ॥
 ॥ १५ ॥ पीअर सासर मारा बेहु पहा नंदन ऊजला । माहरी कूखें
 आव्या तात पनोता नंद । माहरे आंगण वृठा अमृत दूधै मेहुला । मा
 हरे आंगण फलिआ सुरतरु सुखना कंद ॥ हा० ॥ १६ ॥ इणि परें गा
 युं माता त्रिशला सुतनुं पालणुं । जे कोइ गाशे लेशे पुत्र तणा साम्राज ।
 बलीमोरा नगरें वरणव्युं बीरुं हालरुं । जय जय मंगल होजो दीपविजय
 कविराज ॥ हा० ॥ १७ ॥ इति० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ निंदावारक सशाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ निंदा मकरजो कोइनी पारकीरे । निदानां वोल्या महा पापरे
 वयर विरोध वाधे घणोरे । निंदा करतां न गणे माय बापरे ॥ नि० ॥ १ ॥
 दूर बलंती कां देखो लुहरे । पगमां बलती देखो सहु कोयरे । परना मैला
 में धोयां लूगडांरे । कहो केम ऊजला होयरे ॥ नि० ॥ २ ॥ आप सं
 जालो सहुको आपणोरे । निंदानी मूको परी टेवरे । थोने घणे अवगुणे
 सहु जरयारे । केहनां नलिया चुए केहनां नेवरे ॥ नि० ॥ ३ ॥ निंदा करे
 ते थाये नारकी रे । तप जप कीडुं सहु जायरे । निंदा करो तो करजो आ
 पणी रे । जेम बूटकवारो थायरे ॥ नि० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको
 तणोरे । जेहमां देखो एक विचाररे । कृष्णपरें सुख पामशोरे । समयसुं
 दर सुखकाररे ॥ नि० ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ इति० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री आनंदधनजी कृत स्तवन सं० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ करम परीक्षाकरण कुमरचल्योरे ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कृष्णजिनेश्वर प्रीतम माहरोरे । ऊन चाहुंरे कंत । रीज्यो
 साहेब संग न परिहेरे । जांगे सादि अनंत ॥ कृष्ण० ॥ १ ॥ प्रीत स
 गाईरे जंगमां सहु करे रे । प्रीत सगाई न कोय । प्रीति सगाईरे निरुपाधि
 के कहीरे । सोपाधिक धन खोय ॥ कृष्ण० ॥ २ ॥ कोई कंत कारण
 काष्ट प्रहण करेरे । मिलसुं कंतने धाय ए मेलो नवि कहीये संजवेरे ।

मेलो ठाम न ठाम ॥ ऋषभ० ॥ ३ ॥ कोई पति रंजन अति वणो तप करैरे । पति रंजन तन ताप । ए पति रंजनमें नवि चित्त धर्युरे । रंजन धातु मिलाप ॥ ऋषभ० ॥ ४ ॥ कोई कहे लीलारे अलख अलख तणीरे । लख पूरे मन आस । दोष रहित ने लीला नवि घटेरे । लीला दोष वि लास ॥ ऋषभ० ॥ ५ ॥ चित्त प्रसन्नैरे पूजन फल कह्युरे । पूज अखंफित एह । कपट रहित थई आतम अरपणारे । आनंद घन पद एह ॥ ऋष० ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अजित जिन स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मारुं मन मोह्युरे श्रीविमलाचलें ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

पंथडो निहाळुं रे बीजा जिनतणारे । अजित २ गुण धाम । जे तें जीत्यारे तेणे हुं जीतियोरे । पुरुष किस्सुं सुऊ नाम ॥ पंथ० ॥ १ ॥ चरम नयण करी मारग जोवतारे । चूलो सयल संसार । जेणे नयणे करी मारगजोइयैरे । नयण ते दिव्य विचार ॥ पंथ० ॥ २ ॥ पुरुष परंपर अनुभव जोवतां रे । अंधो अंध पु लाय । वस्तु विचारैरे जो आगमें करी रे । तो चरण धरण नही ठाय ॥ पंथ० ॥ ३ ॥ तर्क विचारें रे वाद परं परारे । पार न पहोचे कोय । अन्निमते वस्तु वस्तुगतें कहे रे । ते विरला जग जोय ॥ पंथ० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारें रे दिव्य नयण तणारे । विरह पड्यो निरधार । तरतम जोगेरें तरतम वासनारे । वा सित बोध आधार ॥ पंथ० ॥ ५ ॥ काल लवधि लही पंथ निहाळसुरे । ए आस्या अबिलंब । ए जन जीवैरे जिनजी जाणजारे । आनंद घन मत अंब ॥ पंथ० ॥ ६ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री संभवजिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रातनी रमीनें किहां थी आवियारे ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ संभवदेव त धुर सेवो सेवरे । लही प्रभु सेवन जेद । सेवन का रण पहेली चूमिकारे । अजय अद्वेश अखेद ॥ संभव० ॥ १ ॥ जयचंच लताहो जे परिणामनी रे । द्वेष अरोचक प्राव । खेद प्रवृत्तीहो करतां थाकीयें रे । दोष अबोध लखाव ॥ संभव० ॥ २ ॥ चरमावर्तहो चरम करण तथा रे । जव परिणति परि पाक । दोष टले वली दृष्टी खुले जलारे प्रापति प्रवचन वाक ॥ संभव ॥ ३ ॥ परिचय पातिक घातिक साधसूं

रे । अकुशल अपचय चेत । अथ अध्यात्म श्रवण मनन करीरे । परीशी
 लन नय हेत ॥ संभव० ॥ ४ ॥ कारण जोगेहो कारज नीपजेरे । एमां
 कोई न वाद । पण कारण विण कारज सार्धीरैरे । ए जिन मत उनमाद ॥
 संभव० ॥ ५ ॥ सुग्ध सुगम करी सेवन आदरेरे । सेवन अगम अनूप
 देजो कदाचित सेवक याचनारे । आनंदघन रस रूप ॥ संभव० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अग्निंदन जिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज निहेजोरे दीसे नाहलो ॥ ए चाळ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अग्निंदन जिन दरिशाण तरसीये । दरशाण दुर्लजदेव । मत २ जेदरे
 जो जई पूगीये । सहु थापे अह मेव ॥ अग्नि० ॥ १ ॥ सामान्ये करी दरशाण दोह
 लूं । निरणय सकल विशेष । मदमें घेरयोरे अंधो किम करे । रवि शशि रूप
 विलेख । अग्नि० ॥ २ ॥ हेतु विवादें हो चित्त धरी जोईये । अति पुरगम नय
 वाद । आगमवादें हो गुरुगमको नही । ए शवलो विषवाद ॥ अग्नि० ॥ ३ ॥
 घाती डूंगर आना अतिघणा । तुऊ दरिशाण जगनाथ । धीठाई करी मार
 ग संचरूं । सेंगू कोई न साथ ॥ अग्नि० ॥ ४ ॥ दरिशाण २ रस्तो जो फरूं
 तो रण रोज समान । जेहने पीपासा हो अमृत पाननी । किम चाजे विष
 पान ॥ अग्नि० ॥ ५ ॥ तरस न आवेहो मरण जीवन तणो । सीजे जो
 दरिशाण काज । दरिशाण दुर्लज सुलज कृपा थकी । आनंदघन महाराज
 ॥ अग्नि० ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री सुमति जिनस्तवन लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग वसंत (तथा) केदारो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुमति चरण कज आतम अरपणा । दरपण जिम अविकार ।
 सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जाणियें । परिसरपण सुविचार ॥ सु
 ग्यानी ॥ सुमति० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आतमा । बहिरात
 म धुरि जेद ॥ सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो । परमातम अविचेद ॥
 सु० ॥ सुमति० ॥ २ ॥ आतम बुद्धें हो कायादिक ग्रहो । बहिरातम अ
 वरूप । सुग्यानी । कायादिकनो हो साखी धर रह्यो । अंतर आतम रूप
 ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदेवो पूरण पावनो । वरजित सकल

उपाधि ॥ सुग्यानी ॥ अतिन्द्रिय गुण गण मणि आगरू । इय परमात्म
साध ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ ४ ॥ वहिरात्म तज अंतर आतमा । रूप थई
थिर जाव ॥ सु० ॥ परमात्मनुं हो आत्म जाववूं । आत्म अरण दाव
सु० ॥ सुमति० ॥ ५ ॥ आत्म अरण वस्तु विचारतां । अरमटले मति
दोष ॥ सु० ॥ परम पदारथ संपति संपजे । आनंदधन रस पोष सु० ॥
सुमति० ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री शीतलजिनस्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गुणह विसाला मंगलीक माला ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शीतल जिनपति ललित त्रिजंगी । विविध जंगी मन मो
हेरे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णता । उदाशीनता सोहेरे ॥ शी० ॥ १ ॥
सर्व जंतु हित करणी करुणा । कर्म विदारण तीक्ष्णारे । हाना दाना रहित
परणामी । उदाशीनता विक्ष्णारे ॥ शी० ॥ २ ॥ परदुःख वेदन इच्चा
करुणा तीक्ष्ण पर दुख रीजेरे । उदाशीनता उन्नय विजक्षण । एक ठामें
केम सीजेरे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अन्नयदान ते मज्जय करुणा । तीक्ष्णता
गुण जावेरे । प्रेरण विण कृत उदाशीनता । इम विरोध मति नावेरे ॥ शी० ॥
॥ ४ ॥ शक्ति व्यक्ति त्रिभुवन प्रभुता । निग्रंथता संयोगेरे । योगी जोगी व
क्ता मौनी । अनुपयोगि उपयोगेरे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु जंग त्रि
जंगी । चमत्कार चित्त देतीरे । अचरिजकारी चित्र विचित्रा । आनंदधन
पद लेतीरे ॥ ❀ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीकुंथुजिनस्तवनप्रारंभः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रागगुर्जरी अंबरदेहो सुरारी हमारो० ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मनहुं किमही न बाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥ जिम जिम
जतन करीनें राखुं । तिम तिम अलगुं जाजे हो ॥ कुं० ॥ १ ॥ रजनी वास
र वसती ऊजरु । गयण पायालें जाय । साप खायने सुखहुं थोथुं । एह
उखाणो न्याय हो ॥ कुं० ॥ २ ॥ सुगतितणा अत्रिजाषी तपीया । ज्ञानने
ध्यान अभ्यासें । वयरीहुं कांड एहहुं चिते । नाखे अवलें पासें हो ॥ कुं०
॥ ३ ॥ आगम आगम धरने हार्थे । नावे किरणविध आंकुं । किहां कणे

जो हठकरी हटकूं। तो व्याज ताणी परें वांकूं हो ॥ कुं० ॥ ४ ॥ जो ठग कहुं तो ठगतो न देखुं। साहुकार पण नाही। सर्व मांहेने सहुथी अल गुं। ए अचरिज मन मांही हो ॥ कुं० ॥ ५ ॥ जे जे कहुं ते कान न धारे। आपमते रहे कालो ॥ सुर नर पंक्ति जन समजावे। समजे न महा रोसालो हो ॥ कुं० ॥ ६ ॥ में जाएयुं ए लिंग नपुंसक। सकल मरदनें ठेले। वीजी वाते समरथ ठे नर। एहनें कोडन जेले हो ॥ कुं० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तेणें सगळुं साध्युं। एह वात नही खोटी। एम कहे साध्युं ते नवी मानुं। ए कहिवतठे मोटी हो ॥ कुं० ॥ ८ ॥ मनडुं पुराराध्य ते वस आणुं। ते आगमथी मतिआणुं। आनंदघन प्रनु माहरुं आणो। तो साचुं करी जाणुं हो ॥ कुं० ॥ ९ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ देव वांदवानो विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम डरियावही पडिकमवाथी मांणीनें (यावत्) लोगस्स कही पत्नी उत्तरासण करी। चैत्यवंदन। नमुत्थुणं कही, अरुधुं जयवीअराय। आजव मखंका सूधी हाथ जोनी। कहे। (वली) चैत्यवंदन, कहीने। नमुत्थुणं। कही, (यावत्) चार थोयो कहीये ठीयें तिहां सधी वधुं कहेवुं। पत्नी नमुत्थुणं कही। (वली) चार थोयो कहीयें त्यां सुधी वधुं कहेवुं। पत्नी नमुत्थुणं; (तथा) वे जावंती कही। स्तवन कही। अरुधुं जयवीअराय आजवमखंका सूधी कही। पत्नी चैत्यवंदन कही। नमुत्थुणं कही। (आखो) जय वीय राय कहेवो ॥ इहां सवारें देव वांदवां। (तेमां) मन्ह जिणाणं नी सझाय कहेवी। अने मध्यान्हे (तथा) सांजे देव वांदवामां सझाय न कहेवी ॥ इति देव वांदवानो विधि ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ज्ञान विमलजी कृत, चउमाशी देववंदन विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम डरियावही पन्तिकमी काउसगग करी। लोगस्स० कही एक खमासमण देई। उठाका० श्री कृष्णजिन आराधनार्थ चैत्यवंदन करुं। एम कही चैत्यव० करे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री आदि जिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम जिनेसर कृष्ण देव। सबळी चविया। वदि चउथें

आषाढनी । शक्रे संस्तविया । अठमी चैत्रह वदि तणी । दिवसें प्रनुजा
या । दिहा पण तिणहीज दिने । चउनाणी थाया । फागण वदि इग्या
रसी ए । ज्ञान लहे शुभ्र ध्यान । महा वदि तेरशें शिव लह्या । परमानंद
निधान ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इहां नमुत्थुणं । अरिहंत चेइयाणं । वंदण वत्तिया कही ।
एक नवकारनो कावसग्ग पारी । ४ थुई कमसें कहियें । ते लिखिये ठीयें ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय जोफो प्रारंभः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ऋषभ जिन सुहाया श्री मरुदेवी माया । कनक वरण का
या मंगला जासजाया । वृषभ लंठन पाया देवनर नारी गाया । पण
सय धनु ठाया ते प्रनु ध्यान ध्याया ॥ १ ॥ ए तीरथ जाणी जिन त्रेवी
श उदार । एक नेम विना सवि समवसरया निरधार । गिरि कमणें आ
वी पोहता गढ गिरनार । चैत्री पूनम दिनें ते वंदूं जय कार ॥ २ ॥
ज्ञाता धर्म कथांगें अंत गरु सुत्र मजार । सिद्धा चले सीधा बोलया
बहु अणगार । ते माटें ए गिरि सवि तीरथ शिरदार । जिन जेते थावे ।
सुख संपति विस्तार ॥ ३ ॥ गौमुख चक्रेश्वरी शासननी रखवाल । ए ती
रथ केरी सानिध करे संप्राल । गिरुओ जस महिमा संप्रति कालें
जास । श्रीज्ञान विमल सूरी नामे लील विलास ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इहां । नमुत्थुणं जावती (वे) कही नमोर्हतं कही स्तवन कहेडुं ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीआदिजिन स्तवन प्रारंभः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ललनानी देशी) आदि करन अरिहंतजी । उलगनी अवधार
ललना ॥ प्रथम जिणोसर प्रणमीयें । वंजित फल दातार ॥ ललना ॥ १ ॥
आदिकरण अरिहंतजी (ए आंकणी) उपगारी अवनी तले । गुण अनंत
प्रगवान ॥ ललना ॥ अविनाशी अक्षयकला । वरते अतिशय धाम ॥
ललना ॥ आ० ॥ २ ॥ गृहवासें पण जेहनें । अमृत फलनो आहार ॥ ल
लना । ते अमृत फलनें लहै । ए जुगतुं निरधार ॥ ललना ॥ आ० ॥ ३ ॥ वंश
इहाग ठे जेहनो । चढतो रस सुविशेष ॥ ललना ॥ प्रस्तादिक थया केवली
अनुभव फल रस देख ॥ ललना ॥ आ० ॥ ४ ॥ नात्रिराय कुल मंरुणो

मरु देवी सर हंस ॥ ललना ॥ ऋषभदेव नित वंदियें । ज्ञान विमल अघतं
स ॥ ललना ॥ ॥ ५ ॥ इति श्रीऋषभ जिन स्त० ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पत्नी जय वीरराय अर्धो कहवुं । एक खमासमण देई । उच्चा०
श्री अजितनाथजी आराधनार्थ चैत्यवंदन करुं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अजित नाथ चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुदि वैशाखनी तेरशें । चविया विजयंत । माह शुदि आठमे
जनमिया । बीजा श्री अजित । माहशुदि नवमें थया । पोषी इग्यार
स । उज्वल उज्वल केवली । थया अक्षय कृपारस । वैशाख शुक्ल पचमी
दिने ए । पंचम गति लह्याजेह । धीर विमल कविरायनो । नय प्रणमे धरी
नेह ॥ २ ॥ इति ॥ पत्नी नमोत्थुणं अरिहंत चे० कही । एक नवकारको
कावसग्ग करके । शुईकी गाथा कहै (इसी तरै सब ठिकाणें विध करवो) ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अजित जिन पतीनो । देह कंचन जरीनो । चविकजन नगीनो
जेहथी मोहलीनो । हुं तुज पदलीनो । जेम जलमांहे मीनो । नवि होय
ते दीनो । ताहरे व्यानें पीनो ॥ १ ॥ इति अजित नाथ थोय ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री संजवनाथ चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सत्तम त्रैवेयक थकी । चविया श्री संजव । फागुण शुदि आ
ठम दिनें । शुदि चउदसी अजिनव ॥ १ ॥ मृगशिर मासें जनमीया । त
णी पुनम संजम । कार्तिक वदी पंचमी दिनें । लहे केवल निरूपम । पंच
मी चैत्रनी उज्वली ए । शिव पोहोता जिनराज । ज्ञान विमल प्रनु प्रणम
तां । सीजे सगला काज ॥ ३ ॥ इति चैत्य वंदनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन संजववार । लंडनें अश्वधार । चवजलनिधि तारु । काम
गद तीव्र दारु । सुरतरु परिवारु । दूसमाकाल मारु । शिव सुख किरता
रु । तेहना ध्यान सारु ॥ १ ॥ इति थोय समाप्त ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अग्निनंदन जिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जयंत विमान थकी चव्या । अग्निनंदन राया । वैशाख शुदि चौथें
माघ सुदि बीजे जाया । माहाशुदि वारशें ग्रहिय दिख्ख । पोषशुदि चतुदस ।
केवल शुदि वैशाखनी । आठमे शिव सुख रस । चतुथा जिनवरनें नमी ए ॥
चतुमाति भ्रमण निवार । ज्ञान विमल गणपति कहे । जिन गुणनो नही पार ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तुति प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अग्निनंदन वंदो । साम्य माकंद कंदो । नृप संवर नंदो । व
र्षिता शेष कंदो । तम तिमिर दिणंदो । लंठनें वानरिंदो । जस आगल
मंदो । सौम्य गुण सार दिंदो ॥ १ ॥ इति थोय ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री सुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावण शुदि बीजे चव्या । मेहलीनें जयंत । पंचमी गति दाय
क नमुं । पंचम जिन सुमति । शुदि वैशाखनी आठमें । जनम्या तिम सं
जम । शुदि नवमी वैशाखनी । निरुपम जस शम दम । चैत्र इग्यारस कुज
ली ए । केवल पामें देव । शिव पाम्या तिणे नवमीयें । नय कहे करो तस
सेव ॥ १ ॥ इति चैत्य वंदन ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुमति सुमति आपें दुःखनी कोरि कापे । सुमति सुजन
व्यापे । बोधिनु बीज व्यापे । अविचल पद थापे । जाप दीप प्रतापें ।
कुमति कदही नावें । जो प्रनु ध्यान व्यापे ॥ १ ॥ इति सुमति जिन ० ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री पद्म प्रज्ञ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवम ग्रेवेयकथी चव्या । माहावदि षठ दिवसें । कातीवदि बा
रसें जनम । सुर नर सवि हरषे । वदि तेरस संजम ग्रहे । पद्मप्रज्ञ स्वामी
चैत्री पूनम केवली । वलि शिवगति पामी । मृगशिर वदि इग्यारसें । रक्त
कमल समवान । नय विमल जिन राजनुं । धरीयें निरमल ध्यान ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पद्मप्रज्ञ सोहावे । चित्तमां नित्य आवे । सुगति वधु मनावे ।

रक्त तनु कांति पावे । दुःख निकट नावे । संतती सौख्य पावे । प्रभु
गुणगण ध्यावे । अष्ट महा सिद्धि थावे ॥ १ ॥ ❀ ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री सुपार्श्वजिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ षष्ठ अवेयकथी चवी । जिनराज सुपास । जादखा वदि आठ
मे । अवतरिया खास । जेठ सुकल बारसी जणया । तस तेसे संजम । फा
गुण वदि षठे केवली । शिव लहे तस सत्तमि । सत्तम जिनवर नामथी ए ।
साते ईति समंत । ज्ञान विमल सूरि नितु लहे । तेज प्रताप महंत ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ फले कामित आशे नामथी दुःख नाशे । महिम महि प्रकाशे सा
तमा श्री सुपासे । सुरनर जस दास । संपदानो निवास । गाय ऋषि गुणरास
जेहना धरी ज्वास ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री चंद्र प्रज्जिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चंद्रप्रज्ज जिन आठमा । चंद्रप्रज्ज सम देह । अवतरीया विजयं
तथी । वदि पंचमी चैत्रेह । पोष वदि बारसें जनमीया । तस तेसे साध
फागुण वदिनी सातमे । केवल निराबाध । जाद्रव सातम शिव लह्या ए ।
पूरी पूरण ध्यान । अष्ट महासिद्धि संपजे । नय कहे जिन अजिधान ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुभ्र नरगति पामी उद्यमें धर्मधामी । जिन नमो शिरनामी
चंद्र प्रज्ज नाम स्वामी । सुऊ अंतरजामी जेहमां नहिय खामी । शिवगति
चरगामी सेवना पुण्ये पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सुविधिनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गोरा सुविधि जिणंद नाम । वीछं पुफ्फ दंत । फागुण वदि नव
में चव्या । मेहली सुर आनंत । मृग शिर वदि पंचमें जणया । तस षठें
दिह्या । काती शुदि त्रीजे केवली । दिये बहु परें शिह्या । शुदि नवमी जा
द्रवा तणी ए । अजर अमर पद दोय । धीर विमल सेवक कहे । ए नमतां
सुखहोय ॥ १ ॥ इति स्तवनं ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुविधि जिन ऋदंत । नाम बली पुष्प दंत । सुमति तरुणि
कंत । संतथी जेह संत । कीयो कर्मपुरंत । लहि लीला वरंत । ऋव ज
लधि तरंत । तेनमीजे महांत ॥ १ ॥ इति थोय ॥ ❀ ॥ ९ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री शीतलनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्राणत कल्पथकी चव्या । शीतल जिन दशमा । वदि वैशा
षनी ठठे । जाणि दाघज्वर प्रशम्या ॥ महावदि बारस जनम दिख्या । तस
बारसें लीध । वदि पोष चनुदश दिने । केवली परसिध । वदि बीजे वै
शाखनी ए । मोहू गया जिनराज । ज्ञान विमल जिनराजथी । सीजे स
गला काज ॥ १ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुण शीतल देवा वालही तुझ सेवा । जेम गज मन रेवा ।
तुंही देवाधि देवा । पर आण वदेवा शमठे नित्यमेवा । सुख सुगति लहे
वा हेतु दुःख खपेवा ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ १० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री श्रेयांसनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अच्युत कल्पथकी चव्या । श्रेयांस जिणंद । जेठ अंधारी दि
वस ठठे । करत बहु आनंद । फाणुण वदि बारसें जनम । दीहा तस ते
रस । केवली माह अमावसि । देसना चंदन रस । वदि आवण त्रीजे ल
ह्या ए । शिव सुख अखय अनंत । सकल समीहित पूरणो । नय कहे ए
ऋगवंत ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सविजिन अवतंस । जास इख्याग वंश । विजित मदन कंस
शुद्ध चारित्रहंस । कृत ऋय विध्वंस । तीर्थनाथ श्रेयांस । वृषन्न ककुद अं
श । ते नमुं पुण्य वंश ॥ १ ॥ ❀ ॥ ११ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री वासु पूज्य चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्राणतथी इहां आविया । ज्येष्ठ शुदी नवम । जनम्या फाणु

ए चौदशी । अमावसी संजम । माह शुद्धि बीजे केवली । चौदशि आपा
ठी । शुद्धि शिव पाम्या कर्म कष्ट । सवि दूरे काढी । वासुपूज्य जिन वारमा
ए । विद्रुम रंगे काय । श्री नयविमल कहे इस्युं । जिन नमतां सुख थाय ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वसुदेव नृप तात । श्री जयादेवी मात । अरुण कमलगात ।
महिष लंढन विख्यात । जसगुण अवदात । शीत जाणे निवात । होय नित
सुखशात । ध्यावतां दिवस रात ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ १२ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विमलनाथ चैत्यवन्दन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अछम कल्पथकी चव्या । माधव शुद्धि वारस । शुद्धि महात्रीजे
जाया । तस चोथे व्रत रस । शुद्धि पोष ठठे लह्या । वर निर्मल केवल ।
वदि सातमि आपाढनी । पाम्या पद अविचल । विमल जिणेसर वंदिअं
ए । ज्ञान विमल करी चित्त । तेरसमो जिन नितु दिये । पुण्य परिघल
वित्त ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विमल विमल जावे वंदतां दुःख जावे । नव निधि घर आ
वे विश्वमां मान पावे । सुवर लंढन फावे ज्ञोमिजर स्वेद थावे । मनु
विनति जणावे । स्वामितुं ध्यान ध्यावे ॥ १३ ॥ इति विमलनाथ स्तुति ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अनंतनाथ चैत्यवन्दन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्राणत थकी चविया इहां । श्रावणवदि सातम । वैशाखवदि
तेरसी दिनें । जनम्या चउदस रातम । वदि वैशाखे चउदसि । केवल पुण्य पा
म्या । चैत्रशुद्धि पंचमीदिने । शिववनिता काम्या । अनंतजिनेश्वर चउदमा
ए । कीधा दुष्मन अंत । ज्ञानविमल कहेनामथी । तेज प्रताप अनंत ॥ १४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अनंत जिन नमीजे कर्मनी कोट जीजे । शिव सुख फल ली
जे सिद्धि लीला वरीजे । बोधि बीज मोह दीजे एटुं काज कीजे । सुज
मन अति रीजे स्वामितुं कार्य सीजे ॥ १ ॥ ❀ ॥ १४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री धर्मनाथ जिन चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वैशाख सुदि सातमे । चविया श्री धर्म । विजय थकी माह मास
नी । शुदि त्रीजे जनम । तेरस माहिं ऊजली । लीये संजम नार । पोषि
पूनमे केवली । गुणना जंडार । जेठी पांचमि ऊजली ए । शिवपद पाम्या
जेह । नय कहे ए जिन प्रणमतां । वाधे धर्म सनेह ॥ १५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धर्म जिन पतीनो ध्यान रस मांहे जीनो । वररमाण शचीनो ।
जेहने वर्ण लीनो । त्रिनुवन सुख कीनो लंठने वज्र दीनो । नवि होय ते
दीनो जेहने तुं वसीनो ॥ १ ॥ ❀ ॥ इति ॥ १५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ श्री शांतिनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जाद्रवा वदि सातम दिने । सब्बथी चविया । वदि तेरस जेठे
जाया । दुःख दोहग समीया । जेठि चउदस वदि दिने । लीये संजमवेम ।
केवल उज्जल पोसनी । नवमी दिन खेम । पंचम चकी परवडा ए । शोल
मा श्रीजिनराज । जेठ वदि तेरशें शिव लह्या । नय कहे सारो काज ॥ १६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन पति जयकारी पंचमो चक्रधारी । त्रिनुवन सुखकारी सप्त
जय ईतिवारी । सहस चउसठनारी चउद रत्नाधिकारी । जिन शांति जीतारी
मोहे हस्ति मृगारी ॥ १ ॥ शुभ्र केशर घोली मांहे कर्पूर चोली । पेहरी सीत
पटोली वासियें गंधधूली । जरी पुष्पपटोली टालीयें दुःख होली । सवि
जिनवर टोली पूजीयें जाव लोली ॥ २ ॥ शुभ्र अंग इग्यार तेम उपांग
वलि बार । मूल सुत्रते चार नंदी अनुयोगघार । दशपयन्न उदार ठेदखद व्रत्ति
सार । प्रवचन विस्तार जाष्य निर्युक्तिसार ॥ ३ ॥ जय जय जय नंदा जैन
दृष्टी सुरिंदा । करे परमानंदा टालता दुःखछंदा । ज्ञानविमल सुरिंदा साम्य
माकंद कंदा । वरविमल गिरिंदा ध्यानथी नित्य जहा ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (मोतीमानी देशी) सकल समीहित सुरतरु कंदा । शांति कर

श्री शान्ति जिणंदा । साहिवा जिनराज हमार । मोहना जिनराज हमार ॥ सा० ॥ (ए आंकाणी) त्रिकरण शुद्ध चरण तुज विलगो । पलक मात्र न रहं हिवे अलगो ॥ सा० ॥ १ ॥ विलगो ते अलगो केम जाशे । ठंडो पण तुहें नवि ठंडाशे ॥ सा० ॥ प्रभु तुहें कोइशुं नेह न लावो । वीतराग कही सवि समजावो ॥ सा० ॥ २ ॥ बीजा अवर कही एम समजे पण गोरु दीधायी रीजे ॥ सा० ॥ बालकना हठथी नवि चाले । जे मांगे ते मावित्र आले ॥ सा० ॥ ३ ॥ अक्किखांची मन मांहे आणयो । सहज स्वप्नावें पण में जाणयो ॥ सा० ॥ माहरे एक प्रतिज्ञा साची । तुम पदसे वा अंके जाची ॥ सा० ॥ ४ ॥ कवजे आव्यातो वृदीजें । जेह सुह मांगे तेहज दीजें ॥ सा० ॥ अजेद पण जो मनमां मलशो । कवजेथी प्रभु तो नीकलशो ॥ सा० ॥ ५ ॥ अखखय जाव निधी तुम पास । आपी दासने पूरो आश । ज्ञान विमल समकित प्रभुताई । दीधी साहेव एह वडाई ॥ सा० ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री कुंथुनाथ जिन चैत्यवन्दन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावण वदि नवमी दिनें सव्वथी चविया । वदि चउदश वेशा खनी जिन कुंथु जणीया । वदि पंचमी वैशाखनी लीये संजम चार । शुद्धि त्रीजें चैत्रहतणी लहे केवल सार । पडवा दिन वैशाखनीए पाम्या अविचल ठाण । ठठा चक्री जयकरु ज्ञानविमल सुख खाण ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन कुंथु दयाला गग लंठन सुहाला । जस गुण शुद्ध माला कंठे पेहरो विशाला । नमति ऋवि त्रिकाला मंगल श्रेणि माला । त्रिभुवन तेजाला ताहरे तेज माला ॥ १७ ॥ इति कुंथुनाथ जिन स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अरनाथ चैत्यवन्दन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सरवारथी आविया फाणुण शुद्धि वीजें । मृगशिर शुद्धि दशमी जणया अरदेव नमीजे । मृगशिर शुद्धि एकादशी संजम आदरीयो काती उऊत्त वारसें । केवल गुण वरीप्रो । शुद्धि दशमी मृगशिर तणी ए शिवपद लहे जिननाथ । सत्तम चक्रीनें नमुं नय कहे जोमी हाय ॥ १८ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अरजिन ए जुहारुं कर्मनो क्लेश वारुं । अहनिश संजारुं ताह
रुं नाम धारुं । कृत जय जय कारुं प्राप्त संसार सारुं । नविहोय ते सारुं
आपणो आप तारुं ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री मल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चव्या जयंत विमानथी फागुण शुदि चतुर्थे । मृगशिर शुदि
इग्यारसें जनम्या निग्रंथे । ज्ञान लह्या एकणदिनें कल्याणक तीन । फागु
ण सुदि बारसें लहे शिव सदन अदीन । मल्लिजिणेसर नीलनाए । उगणी
शमा जिनराज । अणपरण्या अणचूप पद । नवजल तरण जहाज ॥ १९ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन मल्ली महिला वानठे जेहनीला । ए अचरिज लीला स्त्री
तणें नाम पीला । दुशमन सवि पील्या स्वामि जोठे वसीला । अविचल
सुख लीला दीजियें सुणि रंगीला ॥ १९ ॥ इति मल्लिजिन स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री मुनि सुव्रत जिन चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अपराजितथी आविया । श्रावण शुदि पूनम । आठम जेठ
अंधारनी । थयो सुव्रत जनम । फागुण शुदि बारस व्रते । वदि बारसें ज्ञान
फागुणानी तेम जेठनी । नवमी कृष्ण निर्वाण । वर्ण श्याम गुण उज्जवा । ति
हुयण करे प्रकाश । ज्ञान विमल जिनराजना । सुरनर नायक दास ॥२०॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मुनि सुव्रत स्वामी हुं नमुं शीश नामी । मुज अंतर जामी का
मदाता अकामी । दुःखदोहग वामी पुण्यथी सेव पामी । शम्या सर्व दा
रामी राज्यता पूर्ण पामी ॥ १ ॥ इति ॥ २० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री नमीनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आशो शुदि पूनम दिने प्राणतथी आया । श्रावणवदि आ
ठम दिनें नमी जिनवर जाया । वदि नवमी आषाढनी थया तिहां अणगा

र । मृगाशिर शुद्धि इग्यारसें वर केवल धार । वदि दशमी वैशाखनी ए । अखय अनंता सुख । नय कहे श्री जिननामथी । नासे दोहग दुख ॥ २१ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमी जिनवर मानो जेह नही विश्वगानो । सुत वप्रा मानो पुण्य केरो खजानो । कनक कमल वानो कुंज ठे जे कृपानो । सविभुवन प्रमानो तेहशुं एक तानो ॥ २१ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री नेमीनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अपराजितथी आविया । काती वदि वारस । श्रावण शुद्धि पंचमी जया । यादव अवतंस । श्रावण सुद्धि ठे संजमी । आसोज अमावस नाण । शुद्धि आपाढनी आठमे । शिवसुख जहे प्रमाण । अरिठ नेमि अणपरणीया ए । राजिमतीना कंत । ज्ञान विमल गुण एहना । लोकोत्तर व्रतंत ॥ २२ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गया शखागारें शंख निज हाथ धारें । कियो शब्द प्रचारें विश्व कंष्यो तिवारें । हरि संशय धारे । एहनी कोड सारे । जयो नेम कुमारे । बालथी ब्रह्म चारे ॥ १ ॥ चार जंबू घ्रीपें विचरंता जिन देव । अरुधात की खंफे सुरनर सारे सेव । अरु पुष्कर अरथें इणिपरें वीस जिनेश । संप्रति ए सोहे पंच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण शम जवजल निधिने तारे । कोहादिक मोटा मढतणा जय वारें । जिहां जीवदया रस स रस सुधारस दाख्यो । जवि जाव धरीनें चित्त करीनें चाख्यो ॥ ३ ॥ जिन शासन सान्निध्य कारी विचन विनारे । समकित दृष्टी सुर महिमा जास वधारे । शेत्रुंज गिरि सेवो जिम पामो जवपार । कवि धीर विमलनो शिष्य कहे सुखकार ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रहो रहोरे यादव दो वनीया । दोवनीयां दोचार वनीयां । रहो रहोरे यादव० ॥ (ए आकणी) । मोज महिराण शिवादेवी जाया । तुमें ठो आधार अम्वडीयां ॥ १ ॥ रहो० ॥ नाह विवाह चाह करीआए । क्युं जावत

फिर रथ चनीयां ॥ रहो० ॥ पशुय पोकार सुणीय किय करुणा । गोमदी
 ए पशुपंखी चनीयां ॥ रहो० ॥ २ ॥ गोद विठानं में बली जातं । करुं वीन
 ति चरणे पनीयां ॥ रहो० ॥ पियुविण दीहते वरिस समोवड । न गमें
 स्वपनमें सेजडीयां ॥ रहो० ॥ ३ ॥ विरह दिवानी विलपति जोवन । वानी
 वनघर सेरडीयां ॥ रहो० ॥ अष्टजवांतर नेह निवाहत । नवमे जवते वीळ
 नीयां ॥ रहो० ॥ ४ ॥ सहसा वनमांहे स्वामि सुणीनें । राजुल रैवत गिरि
 चनीयां ॥ रहो० ॥ पियुकर निजशिरें हाथे देवा । व्रतचाखे चारित्र शेलडीयां ॥
 रहो० ॥ ५ ॥ जादववंश विचूषण नेमजी । राजुल मीठी वेलनीयां ॥ रहो० ॥
 ज्ञानविमल गुणे दंपती निरखत । हरषत होत मेरी आंख नीयां ॥ रहो० ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री पार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कृष्ण चोथ चैत्रहतणी प्राणतथी आया । पोषवदि दशमी ज
 नम त्रिनुवन सुख पाया । पोषवदि इग्यारशें लहे मुनिवर पंथ । कमठासुर
 उपसर्गनो टाल्यो पलीमंथ । चैत्रकृष्ण चोथह दिनें ए । ज्ञानविमल गुण
 नूर । श्रावण शुदि आठमें लहा । अविचल सुख जरपूर ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जलधर अनुकारें । पुण्य वल्ली वधारे । कृत सुकृत संचारे वि
 धननें जे विनारे । नवनिधि आगारें कष्टनी कोडि वारे । मुऊ प्राणाधारे
 मात वामा मल्हारे ॥ १ ॥ अर जनम सुहावे वीर चारित्र पावे । अनुजव
 लयलावे केवल ज्ञान पावे । षट्जे कल्याण संप्रतिजे प्रमाणें । सवि जिनवर
 प्राण श्री निवासाहि ठाण ॥ २ ॥ दश विधि आचार ज्ञानना जिहां विचार
 दश सत्य प्रकार पंचखाणादि विचार । मुनि दश गुण धार जेजया जिहां
 उदार । ते प्रवचन सार ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दश दिशि दिशि पाला
 जे महा लोग पाला । सुरनर महिपाला शुद्ध दृष्टी कृपाला । नय विमल
 विशाला ज्ञान लढी मयाला । जय मंगल माला पास नामें सुखाला ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ थारे माथे पचरंगी पाध सोनेरो ढोगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥

प्रभुपासजिणोसर चुवन दिनेसर संकरो ॥ साहिवजी ॥ ली
 ला अलवेसर धीरम मंदर चूधरो ॥ साहिवजी ॥ तुं अगम अगोचर कृत
 शुचि सुंदर संवरो ॥ सा० ॥ पद नमित पुरंदर ततुं षवि निरमल जलधरो ।
 सा० ॥ १ ॥ तुं अह्य अरूपी ब्रह्मसरूपी ध्यानमां ॥ सा० ॥ ध्याये जे
 जोगी तुमगुण जोगी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ व्यवहार प्रकासी निश्रयवासी
 निजमतें ॥ सा० ॥ जिन आतम दरसी अमल अजेसी नयमतें ॥ सा० ॥
 ॥ २ ॥ षट् दर्शन ज्ञासे युक्ति निरासे शासनें ॥ सा० ॥ स्यादवाद विशा
 लें सहज समाजे जावनें ॥ सा० ॥ तुं ज्ञाननें ज्ञानें आतम ध्यानें आत
 मा ॥ सा० ॥ परमागम वेदी जेद अजेदी नही तमा ॥ सा० ॥ ३ ॥
 एक अनेके बहुत विवेके देखिये ॥ सा० ॥ आतम ततकामी अगुण अ
 कामी लेखिये ॥ सा० ॥ सविगुण आरामी जो बहु नामी ध्यानमां ॥ सा० ॥
 आपेगत नामी अंतरजामी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ ४ ॥ तुं अनीयत चारी नि
 यत विचारी योगमां ॥ सा० ॥ अध्यातम सेली एम बहु फेली आगमें ॥
 सा० ॥ तुं धर्म संन्यासी सहज विलासी समगुणें ॥ सा० ॥ मोहारि विना
 शी तुं जित काशी कविज्ञे ॥ सा० ॥ ५ ॥ ज्ञान दर्शन खायक गुणमणी
 लायक नाथ ठे ॥ सा० ॥ दुर्गति दुःख घायक गुणनिधि दायक हाथ ठे ॥
 सा० ॥ जित मन मथ सायक त्रिचुवन नायक रंजणो ॥ सा० ॥ अनेकांति
 एकांती तुं वेदांती अगंजणो ॥ सा० ॥ ६ ॥ ध्यानानलयोगें पुदगल जोगें तें
 दद्या ॥ सा० ॥ अंतररिपु हणीया मूलथी खणीया नविरह्या ॥ सा० ॥ तुंहेतु
 समीयो सुखर नमियो सहकहे ॥ सा० ॥ ए जगथी न्यारो चरित्र तुमारो कृणलहे
 ॥ सा० ॥ ७ ॥ इम तुम गुण शुणीये कर्मने हणीये पलकमां ॥ सा० ॥ पण नवि
 अवगणिये सेवक गणीये ललकमां ॥ सा० ॥ वामाचे नंदा त्रिचुवन उंदा सं
 थुणे ॥ सा० ॥ ज्ञानविमल सूरिदा तुमपय वंदा गुण जणे ॥ सा० ॥ ८ ॥ इति ॥ ॥

॥ ॥ अथ श्री वर्धमान जिन चैत्यवन्दन ॥ ॥

॥ ॥ शुद्धि आपाढ षट् दिवसें प्राणतथी चवीया । तेस चैत्रह शुद्धि
 दिने त्रिशलाये जणीया । मृगशिर वदि दशमी दिने आपे संजम आराधे

शुद्धि दशमी वैशाखनी वर केवल साथै । काती कृष्ण अमावसीए । शिव गति करे उद्योत । ज्ञान विमल गौतम लहे । पर्व दीपोत्सव होत ॥ २४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ लह्यो ज्वजल तीर धर्म कोटीर हीर । दुरति रज समीर मोह मूसार सीर । दुरित दहन नीर मेरुथी अधिक धीर । चरम श्री जिनवीर चरण कल्पद्रु कीर ॥ १ ॥ इम जिनवर माला पुण्य नीर प्रवाला । जग जंतु दयाला धर्मनी शास्त्र शाला । कृत सुकृत सुगाला ज्ञान लीला विशाला सुरनर महिपाला वंदता ठे त्रिकाला ॥ २ ॥ श्री जिनवर वाणी द्वादशांगी रचाणी । सगुण रयण खाणी पुण्य पीयूष पाणी । नवम रस रंगाणी सिद्धि सुखनी निशाणी । दुह पीलण वाणी सांजलोजाव जाणी ॥ ३ ॥ जिनमत रखवाला जे वली लोग पाला । समकित गुणवाला देव देवी कृपाला । करो मंगल माला टालिने मोह हाला । सहज सुख रसाला बोध दीजे विशाला ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज गईथी हुं समवसरणमें ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वंदो वीर जिणेसर राया । त्रिशला माता जायाजी । हरि लंठन कंचन वनकाया । सुज मन मंदिर आयाजी ॥ वंदो वीर ० ॥ १ ॥ दुषम समये शासन जे हना । शीतल चंदन ढायाजी । जे सेवतां जविजन मधुकर । दिन दिन होत स वायाजी ॥ वंदो ० ॥ २ ॥ ते धन्य प्राणी सदगति जाणी । जस मनमां जिन आयाजी । वंदन पूजन सेवन कीधी । तेकाजननी मायाजी ॥ वंदो ० ॥ ३ ॥ कर्म कठिन जेदन बलवत्तर । वीर विरुद जिन पायाजी । ए कल मल अतुली बल अरिहा । दुशमन दूर गमायाजी ॥ वंदो ० ॥ ४ ॥ वंजित पूरण संकट चूरण तुं मात पिता तुं सहायाजी । सिंहपरें चारित्र आराधी । सुजश निशान ब जायाजी ॥ वंदो ० ॥ ५ ॥ गुण अनंत जगवंत त्रिराजे । वर्धमान जिनराया । जी । धीर विमल कवि सेवक नय कहे । शुद्ध समकित गुण दायाजी ॥ वंदो ० ॥ ५ ॥ इति ॥ इहां । पूरण जय वीयराय कहेवो ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री शाश्वता अशाश्वता जिन चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल मंगलकार एही । सिद्ध सकल पयजाण । स्याद्वाद सा

धन पद एही अध्यातम गुणठाण ॥ १ ॥ (सहीए नमो जिणाणं) ॥ २ ॥ ए
 (आंकणी) ॥ विहुं तेरलख्ख सग्ग कोमि जवणवडं । सासय जिणहरमाणं ।
 तेरशें नव्याशी कोमी मग्गसठि विंवह परिमाणं ॥ ३ ॥ सही० ॥ मेरु
 वैताढ्य वखारा कंचन । यमक कुंभद्रह जाणुं । एकत्रीश ओगण्यासी
 जिनवर । मानवलोकें वखाणुं ॥ ४ ॥ स० ॥ त्रिलख डक्यासी सहस चारसो
 ज्याशी अधिक विंव जाणुं । रुचक कुंडल नंदीसर प्रमुखें । सुंदर अशी चेइया
 णुं ॥ ५ ॥ स० ॥ अरुशत शय सहसा चालीसा । विंबतणुं परिमाणं ।
 सरवाले वत्रीशसें गुण सठी । तिर्यक् लोकें चेइयाणं ॥ ६ ॥ स० ॥ प्रतिमा
 त्रण लख सहस एकाणुं । चउसय तेवीस परिमाणं । साठ चौवारा अवर
 त्रिवारा । रुचक कुंड नंदीठाणं ॥ स० ॥ वार देवलोकें नवप्रेवेयकें । अ
 नुत्तर पंच विमाणं । लाख चोराशी सहस सत्ताणुं । त्रेवीश चेई जाणुं
 ॥ ७ ॥ स० ॥ एकसो बावन कोमि लख चोराणुं । सहस चुमालीस
 आणुं । सातशें साठ ऊपर उर्ध्व लोकें । जिन पन्निमा मन आणुं ॥ ९ ॥
 ॥ स० ॥ त्रिनुवन मांहे सासय जिनहर । सगवन्न लख्ख वसें व्याशी । आठ
 कोमि अथ प्रतिमा संख्या । सुणजो सम कित वासी ॥ १० ॥ स० ॥ पन्न
 रशें कोडी वैतालीश कोमी । तेम अठ्ठावन्न लख्खा । ठत्रीश सहस अशी व
 लि साधिक । सासय विंबनी संख्या ॥ ११ ॥ स० ॥ एकसो वीश त्रिवारें
 प्रतिमा । चोमुखें शत चौवीश । पांच सत्ता तिहां साठ वधारो । एकशत
 अशी जगीश ॥ १२ ॥ स० ॥ ऋषन्न चंद्रानननें वर्धमान । वारिखेण
 चउनामें व्यंतर ज्योतिषी मांहे असंख्या । जिन घर पन्निमा मानें ॥ १३ ॥
 स० ॥ सकल सुरामुर जावना जावे । समकित गुण दीपावे । परित्त संसार
 करी शिव जावे । कुमति तेम न जावे ॥ १४ ॥ स० ॥ पातालेनें तिर्यक
 लोकें । पणसय धणु परिमाण । कर्पे सग्गकर पणसय धणु माणुं । सासय
 असासय जाण ॥ १५ ॥ स० ॥ तीर्थ विशेष वली शासय विणु । शेट्टंजा
 दिकें बहुला । ते सविहूने त्रिविधें नमतां । पातक जाये सगला ॥ १६ ॥
 स० ॥ ज्ञानविमल प्रनुनाम जपंता । लहीये कोडि कट्याण । मनह
 मनोरथ सगला सीजे । जनम सफल सुविहाण ॥ १७ ॥ स० ॥ जयहर

जगवंताणं जयतुर । नमो जिणाणं सहीए । नमो अविचल आदि गराणं ।
सहीए नमो अरिहंताणं ॥ १८ ॥ सही० ॥ इति श्री सर्वजिन नमस्कारः ॥
(इहां) एक लोगस्सनो काउस्सग्ग “चंदेसु निम्मलयरा” सूधी एक जण करे
ते काउस्सग्ग पारी । पढी चार थोयो कहेवी (ते लखीयें गीयें.) ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ऋषभदेव नमुं गुण निर्मला । दूध मांहे जिम जेवी सीतोपला ।
विमल शील तणा सिणगारणे । जवजव मुज्जे चित्ते रुवै ॥ १ ॥ जेह अनंत
थया जिनकेवली । जेह हसे विचरंतां जेवली । जेह असासय सासय त्रिहुं
जगें । जिन पफिमा प्रणमुं नित जगमगे ॥ २ ॥ सरस आगम हीर महोदधी
त्रिपदी गंग तरंग करी वधी । जविक देह सदा पावन करे । डुरित ताप
रजो मल अपहरे ॥ ३ ॥ जिनप शासन चासन कारिका । सुर सुरी जिन
आणा धारिका । ज्ञान विमल प्रचुतायें दीपता । डुरित दुष्ट तणा जय जीप
ता ॥ ४ ॥ इति श्री शाश्वत अशाश्वत जिन स्तुति ॥ २५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ अथ विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इहां एकजण मोटी शांति कहे (अने) बीजा सर्व काउ
सग्गमां सांजलै । पढी सर्वे जणा काउसग्ग पारीने । प्रगट एक लोगस्स
पूरो कहै । पढी बेसीनें, एकवीश नवकार, प्रगटपणे सर्व जण गणे (पढी)
सर्वेजण, सुख थकी आवी रीतें कहेः—श्रीशेडुंजायनमः ॥ १ ॥ श्रीपुंमरीकाय
नमः ॥ २ ॥ श्री सिद्ध क्षेत्राय नमः ॥ ३ ॥ श्री विमलाचलाय नमः ॥ ४ ॥
श्री सुरगिरये नमः ॥ ५ ॥ श्री महागिरये नमः ॥ ६ ॥ श्री पुण्यराशये न
मः ॥ ७ ॥ श्रीपर्वताय नमः ॥ ८ ॥ श्री पर्वतैद्राय नमः ॥ ९ ॥ श्री महा
तीर्थाय नमः ॥ १० ॥ श्रीशाश्वताय नमः ॥ ११ ॥ श्रीदृढशक्तये नमः
॥ १२ ॥ श्री मुक्तिनिलयाय नमः ॥ १३ ॥ श्रीपुष्पदंताय नमः ॥ १४ ॥
श्री महापद्माय नमः ॥ १५ ॥ श्री पृथ्वीपीठाय नमः १६ ॥ श्री सूरज
द्र गिरये नमः ॥ १७ ॥ श्री कैलासगिरये नमः ॥ १८ ॥ श्री पातालमू
लाय नमः ॥ १९ ॥ श्री अकर्मकत्रेय नमः ॥ २० ॥ श्री सर्वकामपूर

णाय नमः ॥ २१ ॥ ० ॥ ए सिद्धगिरीनां (२१) नाम सर्वने मुखे प्रगट कही
ने (पत्नी) पांच तीर्थना पांच स्तवन कहेवां ते लंकीयें तीर्थें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम श्री सिद्धगिरी स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नीलनी रायण तरूतले । साहेलनीयां । पीलना प्रचुजीना पाय
गुण मंजरीयां । ऊजले ध्यानें ध्याइयें ॥ सा० ॥ 'अेहीज सुगति' उपाय ।
गुण० ॥ १ ॥ शीतनी ढायारें वैसीयें ॥ सा० ॥ रातडो करी मनरंग ॥ गु
ण० ॥ १ ॥ नाही धोई निर्मल थई ॥ सा० ॥ पहेरी वस्त्रादिक चंग ॥ गुण०
॥ २ ॥ पूजीयें सोवन फूलने ॥ सा० ॥ नेह धरीनें अेह ॥ गु० ॥ ते त्री
जे जवे शिवलहे ॥ सा० ॥ थाये निर्मल देह ॥ गु० ॥ ३ ॥ प्रीत धरी प्र
दक्षिणा ॥ सा० ॥ दीअे अेहनें जे सार ॥ गुण० ॥ 'अंजंग प्रीति होअे
जेहने ॥ सा० ॥ जवजव तुम आधार ॥ गुण० ॥ ४ ॥ कुसुम पत्र फल
मंजरे ॥ सा० ॥ शाखा थरुने मूल ॥ गुण० ॥ देवतणा वासा अेठे ॥ सा० ॥
तीरथनें अनुकूल ॥ गुण० ॥ ५ ॥ तीरथ ध्यान धरी मनें ॥ सा० ॥ सेवो
एहने उवाहि ॥ गुण० ॥ ज्ञानविमल गुरु जाखियो ॥ सा० ॥ शेडुंजा
महातम मांहि गुण० इति श्री शेडुंजा स्तवनं ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री गिरनार तीर्थस्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ देखी कामनी दोयके कामें व्यापीयो हो० के का० ॥ ए चाल ॥
॥ ❀ ॥ नेमनिरंजन देवके सेव सदा करूं हो लालके ॥ से० ॥ अहनिस
ताहरू ध्यानके दिल माहे धरूं हो लाल ॥ दिल० ॥ शंख लंढन गुणखाणके
अंजन वानठे हो० के ॥ अं० ॥ राजिमतीना कंतके पराया विणु अेठे हो० ॥
पर० ॥ १ ॥ तुंहीज जीवन प्राणके आतमरामठेहो० के ॥ आत० ॥ माहरे परमा
धारके ताहरू नामठे हो० के ॥ ता० ॥ समुद्र विजयना नंदन नितुनित वंदता
होके० नित० ॥ कीजीयें करुणा वंतके कर्म निकंदना हो० के ॥ कर्म० ॥
॥ २ ॥ जीत्यां मनमथ राज रही गढेऊपरै हो० के ॥ रही० ॥ पहेरी शीज स
नाह उदास ऐसी धरै हो० उदा० ॥ सवि जिनवरमां स्वामि तुहें अ
धिकं करचुंही० ॥ तुहें० ॥ कुमरपणें धरी धीर महाव्रत उचस्था हो० के ॥
महा० ॥ ३ ॥ आठ जवांतर नेहजे तेह ऊवेखीनें होजा० ॥ तेह० ॥ करु

णा कीधी केवल पशुवां देखीनेहो० के ॥ पशु० ॥ पूरण पाली प्रीत वली निज
 नारनेहो० ॥ वली० ॥ आपी संजम नार पोहोचानी पारने हो० ॥ पो० ॥ ४ ॥
 जण जणशुं जे प्रीत करे ते जन वणाहो० ॥ करे० ॥ निरवाहे धरी नेहके ते
 विरजा सुण्या हो० ॥ ते वि० ॥ राजिमतीनो कंत वखाणे कविजना हो० ॥
 वखा ॥ तुह्नेतो दीधो ठेहके तेहना थिरमना हो० के ॥ तेहना० ॥ ५ ॥ जादव
 नाथ सनाथ करो मुजने सदाहो० ॥ करो० ॥ दिअो मुज शिर हाथ होवे जेम
 संपदा हो० ॥ होवे० ॥ जलि जलि मरे पतंग दीवानें मन नही हो० ॥
 दीवा० ॥ नाणें मन असवार घोडो दौमे सहीहो० ॥ घोडो० ॥ ६ ॥ सवजा
 साथे प्रीत निवलनें नवि कही हो० ॥ निवल० ॥ पण लागीजे थोमी, किहां
 जात्रे वही हो० ॥ किहां० ॥ जे सज्जनशुं होय ते प्रीत न मंजीयेहो० के ॥
 प्रीत० ॥ तुमचा मुनि ज्यारे होत्रे तो, कर्मनें मंजीयेहो० के ॥ कर्म० ॥ ७ ॥
 तो दुशमन होय दूर, कोणे नविगंजीयेहो० ॥ कोणे० ॥ प्राणाधार पवित्रके, द
 रशन दीजीयेहो० के ॥ दर० ॥ ज्ञानविमल सुखपूर, मलीनें कीजीये हो०
 म० ॥ ८ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री आवृतीर्थ स्तवन० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चालो चालोने राज गिरिधर रमवा जइयें (ए चाल) ॥ ❀ ॥
 ॥ ❀ ॥ आवो आवोने राज श्री अर्बुद गिरिवर जइयें ॥ श्री जिनवर
 नी प्रीति करीनें आतम निर्मल थइयें ॥ आवो० ॥ आंकणी ॥ विमल व
 सहीना प्रथम जिणेसर । सुख निरखें सुख पइयें । चंपक केतकी प्रमुख
 कुसुम वर । कंठे टोकर ठवियें ॥ आवो ॥ १ ॥ जिमणे पासे लुणग वसही
 श्री नेमीसर नमीयें । राजि मती वर नयणें निरखी । दुःख दोहग सवि गमी
 यें ॥ आवो० ॥ २ ॥ सिद्धाचल श्री ऋषभ जिणेसर । रैवत नेम समरी
 यें । अरे दो वसिनी यात्रा करता । विहुं तीर्थ चित्त धरीयें ॥ आवो० ॥ ३ ॥
 मंरुप मंरुप विविध कोरणी । निरखी हियडै ठरियें । श्री जिन वरना बि
 ब निहाली । नरप्रव सफलो करीयें ॥ आवो० ॥ ४ ॥ अविचल गढ
 आदीश्वर प्रणमी । अशुभ करम सवि हरीयें । पाश शांति निरखी जब
 नयणें । मन मोह्यो डुंगरीयें ॥ आवो० ॥ ५ ॥ पाजें चढतां उजम

वाधे । जेम घोडे पाखरीयें । सकल जिनेसर पूजी केशर । पाप पडल सवि
हरीयें ॥ आवो० ॥ ६ ॥ अकेण ध्यानं प्रचुने ध्यातां । मनमांहि नवि मुरीयें
ज्ञान विमल कहे प्रचु सुपसायें । सकल संव सुख करियें ॥ आवो० ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अष्टापद गिरि स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अष्टापद गिरि यात्रा करणकुं । रावण प्रतिहरी आया । पुष्प
क नामें विमानें वेशी । मंदोदरी सुहाया ॥ १ ॥ श्री जिन पूजीयें लाल ।
समकित निर्मल कीजें । नयणें निरखी हो लाल । नरत्रव सफजो कीजें ।
हीयमे हरखी लाल । समता संग करीजे । (आंकणी) चउमुख चउगति ह
रण प्रसादें । चउवीसे जिनवैठा । चउदिशि सिंहासन समनासा । पूखदिशि
दोय जिछा ॥ श्री० ॥ २ ॥ संत्रव आदें दक्षिण चारे । पश्चिमे आठ सुपासा ।
धर्म आदि उत्तर दिशि जाणो । एवं जिनचउवीशा ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वैठा सिंह
तणें आकारै । जिन हर ऋते कीधा । स्यण विव मूरति थापीनें । जगजश
वाद प्रसिद्धा ॥ ४ ॥ करे मंदोदरी राणी नाटक । रावण तांत बजावे । मादल वी
णा ताल तंबूरो । पगरव ठम ठम कावे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ ऋक्ति जावें एम नाटक
करतां । तूटी तंती विचालें । साधी आप नसा निज करनी । लघु कलाशुं
ततकालें ॥ श्री० ॥ ६ ॥ द्रव्य जावशुं ऋक्ति न खंडी । तो अह्य पद साध्युं
समकित सुरतरु फल पामीनें । तीर्थकर पद लाध्युं ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इणि
परें ऋविजन जे जिन आगें । बहुपरें जावना जावे । ज्ञान विमल गुण तेह
ना अह निश । सुर नर नायक गावे ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इति० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री समेत शिखर स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समेत शिखर गिरि जेटीयेंरे । मेढवा ऋवना पास । आत
म सुख वरवा ऋणीरे । ए तीर्थ गुण निवासरे ॥ १ ॥ ऋवियां से
वो तीर्थ अहे । समेत शिखर गुण गेहरे ॥ ऋवि० ॥ से० ॥ (ए आ
कणी) ॥ समेत शिखर कजपें कह्योरे । वीश टुंक अधिकार । वीश तीर्थकर
शिव वर्यारे । बहु सुनिनें परिवाररे ॥ ऋ० ॥ २ ॥ से० ॥ सिद्ध खेत्र मां हे व
स्यारे । जाखे नय व्यवहार । निश्चय निज स्वरूपमांरे । दोय नय प्रचुजीना
सार ॥ ऋ० ॥ ३ ॥ से० ॥ स० ॥ आगम वचन विचारतारै । अति दुर्ग

मनयवाद । वस्तु तत्व जिणे जाणीयेरे । ते आगम स्यादवादरे ॥ ज० ॥ ४ ॥
 से० ॥ स० ॥ जय रथ राय तणी परेरे । जात्रा करो मनरंग । जव दुःखने
 देइ अंजलीरे । थाये सिद्धि वधूनो संगरे ॥ ज० ॥ ५ ॥ स० ॥ समकित युत
 जात्रा करैरे । तो शिव हेतु थाय । जव हेतु किरिया त्यागथीरे । आतम गुण
 प्रगटायरे ॥ ज० ॥ ६ ॥ से० ॥ जेह समयें सम कित थयोरे । तेह समयें
 होय नाण । ज्ञान विमल गुरु ज्ञाखीयोरे । आवश्यक ज्ञाध्यनी वाणरे ॥
 ज० ॥ ७ ॥ से० ॥ स० ॥ इति चौमाशी देववंदन विधिः ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री पर्युषणपर्व स्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सत्तरजेदी जिन पूजा रचीनें स्नात्रमहोत्सव कीजैजी । ढोल द
 मामा जेरी नफेरी जलरिनाद सुणीजैजी । वीरजिन आगल जावना जावी
 मानवजव फल लीजैजी । परब पञ्चसण पूरव पुण्ये आव्या इम जाणी
 जैजी ॥ १ ॥ मास पास वली दशम पुवालस चत्तारी अठ कीजै
 जी । ऊपर वलि दशदोय करीनें जिन चौवीश पूजीजैजी । बन्ना कल्पनो
 ठठकरीनें वीरवखाण सुणीजैजी । परवानें दिन जन्म महोत्सव धवल मं
 गल वरतीजैजी ॥ २ ॥ आठ दिवसलगे अमर पलावी अठमतुं तप कीजै
 जी । नागकेतुनी परे केवल लहिये जो सुजजावे रहियेजी । तेजाधर दिन
 त्राण कल्याणक गणधर वाद वदीजैजी । पास नेमीसर अंतर त्रीजे रुषत्र च
 रित्र सुणीजैजी ॥ ३ ॥ बारशे सुत्रनें समाचारी संवत्सरी पम्कामियेजी ।
 चैत्यप्रवानी विधिसुंकीजै सकल जंतुनें खामीजैजी । पारणानें दिन सामीव
 त्सल कीजै अधिक वनाईजी । मान विजय कहै सकल मनोरथ पूरो देवी
 सिधाईजी ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री नेम राजीमती बारमाशो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सीयालै खाद्द जलीरे लाल (ए चाल) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तोरणथी रथ फेरीयोरे लाल । नीठुर नेम कुमार । प्रेमविलूधी प
 दमणी हो लाल । वीनवै राजुलनार ॥१॥ (हो रंगीला नेम, सुणमांहरी अर
 दास) । सहीयांसुं राजुल कहै हो लाल । मगसिर नायो पीउ । प्रीतम विण
 हिवमाहरो हो लाल । धीरज न धरै जीव ॥ २ ॥ हो० ॥ पोसमहीनो आ

वीयो हो जाल । आयो मोडुख दैण । तो सूरतनें सांवलाहो जाल । देखण
तरसेनेण ॥ ३ ॥ हो० ॥ माहमहीनो सीपमैहो जाल । प्रीतसंग पोढे नारि
प्रीतम विणहुं एकली हो जाल । केमरहुं निरंधार ॥ ४ ॥ हो० ॥ होली
खेलै हेतसुरे जाल । फागुणमें नरनारी । हुं किणसुं खेळूं हिवै हो जाल । पास
नही जरतार ॥ ५ ॥ हो० ॥ चैतमहीनें चांदणीरे जाल । संजोगण सुख
दैण । विरहणनें बालम विनारे जाल । रोवत जावै रेण ॥ ६ ॥ हो० ॥ वन
हरीया वैसाखमेंरे जाल । मांजरही महकाय । अरजसुणी अवला तणी हो
जाल । तपत मिटावो आर्ड ॥ ७ ॥ हो० ॥ जेठ तपै लु आकरो हो जाल ।
दाऊ कोमल गात । ससनेही साहिव विनारे जाल । कृण पृठै मुज्वात ॥ ८ ॥
हो० ॥ आसाढे काली घटा हो जाल । उनमि आयो मेह । कंत मिल्या नि
ज नारसुरे जाल । धरती मिलीया मेह ॥ ९ ॥ हो० ॥ श्रावण चमकै दाम
नी हो जाल । धनवरसे ऊरुजाड । उण रूत सूतां एकली हो जाल । क्युं क
रि रेण विहाड ॥ १० ॥ हो० ॥ काली कावाहण मिली हो जाल । चाद्र
वडै वरखंत । अरज सुणीनें साहिवा हो जाल । पूरो मोमन खंत ॥ ११ ॥
हो० ॥ आशोजे आंसूऊरै हो जाल । नाह विना निसि दीस । सारन पूठि
साहिबे हो जाल । राखिरह्यो मनरीस ॥ १२ ॥ हो० ॥ काती द्रिढ गती
करेरे जाल । जाइ मिली गिरनार । देखी सुख निज नाहनो हो जाल । सफ
ल गिणें अवतार ॥ १३ ॥ हो० ॥ संयमले पीठ सें हथै होजाल । पांमे न
वनो पार । उणपर पालै प्रीतनी हो जाल । धन धन ते नरनारि ॥ १४ ॥ जे
कीधी पसुऊपरे हो जाल । मो परिकरिज्यो देव । चंदनणी द्योकरि दयाहो
जाल । प्रचुचरणारी सेव ॥ १५ ॥ हो० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
इति श्री नेमिराज्जल वारै मासो संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
॥ ❀ ॥ अजीमगजे नेमिजिन नूतन चैत्य प्रतिष्ठा स्त० ॥ ❀ ॥
॥ ❀ ॥ केशरियाने ज्वाजको० (उस चालमें) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज सखि प्रचु दरशण में पायो । मेरो रोम रोम हुलसायो

आ० ॥ अनंत काल नव जल माहि नमतां । मिथ्या मत प्रमायो । कुमति
 नारसंग इतउत मोलत । चेतन बहु दुःख पायो ॥ आ० ॥ १ ॥ पुन्य संयो
 गै नरनवपामी । सुमति नार संग चायो । हीनपुण्यते मोह पकरकै । विषय क
 षाय रमायो ॥ आ० ॥ २ ॥ सुगुरु प्रसादै प्रजुगुण महमा । श्रवण सुणी
 हरषायो । अवसर पाय नेम पद पंकज । अलि जिम चित्त लुजायो ॥ आ०
 ॥ ३ ॥ समुद्र बिजै सिवादेवीके नंदन । सहु सुर नर दिल जायो । इंद्र इं
 द्राणी मंगल गावत । मोतियन चोक पुरायो ॥ आ० ॥ ४ ॥ धन्य
 धनी धन्यजाग हमारो । आनंद आज सवायो । तारण तरण बाल ब्रह्मचारी
 नेम जिनंद वधायो ॥ आ० ॥ ५ ॥ पूरव देश अजीमगंजमें । श्री संघ
 चित्त नुमायो । स्थापना चैत्य विंव की करने । जिनध्रम जगदीपायो ॥ आ०
 ॥ ६ ॥ सिखि सागर रजनीस नंद सन् । माधव सुद मुनि जायो । श्री जिन
 चंद सुरिंदके श्री बर । हितप्रिय मोहन गायो ॥ आ० ॥ ७ ॥ १९४३, वै। सु ।
 ७ ॥ अजीमगंजे पंचायती श्री नेमिजिन नूतन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवनं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवपद स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ जीया चतुर सुजाण । नवपदके गुण गायरे ॥ जी० ॥ नवपद
 महिमा जगमें मोटी । गणधर पारन पायरे जी० ॥ १ ॥ कर्म निकाचित
 दूर करणकों । सुंदर सुध नपायरे ॥ जी० ॥ २ ॥ इनको पुष्ट आलंबन करतां
 अजरामर सुखपायरे ॥ जी० ॥ ३ ॥ ए जिननए आगामी होयगे । नवप
 द संग पसायरे ॥ जी० ॥ ४ ॥ परम कृमा शिव रमणी वरके । शमर श
 मर गुणगायरे ॥ जी० ॥ ४ ॥ इतिपदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ सकल शाश्वता अशाश्वता चैत्य नमस्कार स्त० ॥❀॥

॥ ❀ ॥ सद्भक्त्या देवल्लोके रवि शशि जुवने व्यंतराणां निकाये । नद
 त्राणां निवाशे ग्रहगण पटले तारकाणां विमाने । पाताले पन्नगेंद्र स्रुटिक
 मणिकणे ध्वस्तसांद्रां धिकारे । श्री मत्तीर्थ करणां प्रति दिवस महं तत्र चै
 त्यांनिबंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचक गिरवरे कुंभले हस्तिदंते । वहारे
 कुट नंदीश्वर कनक गिरौ नैषधे नीलवंते । चित्रेशैले विचित्रे यमक गिरवरे
 चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ २ ॥ श्री० ॥ श्री शैले वंध्य शृंगे विमल गिरवरे अर्बुदे पाव

के वा । सम्मते तारकेवा कुलगिरि शिखरे षापदे स्वर्ण शैले । सह्याद्रौ चोङ्क
यंते विपुल गिरवरे गुङ्गरे रोहणाद्रौ ॥ ३ ॥ श्री० ॥ आषाढे मेदपाटे हित
तट मुकटे चित्रकोटे त्रिकोटे । लाटे नाटेच धाटे विकट घन तटे देवकूटे
विराटे । कर्णाटे हेमकूटे निकट तरकटे चित्रकोटेच जोटे ॥ श्री० ॥ ४ ॥
श्री माले मालवेवा मलपति निखले मेखले पिम्बलेवा । नेपाले नाह
लेवा कुवलय तिलके सिंघले मेखलेवा । डहले कोशलेवा विगलित
सलिले जंगलेवा तवाले ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अंगे वंगे कर्लिंगे सुगत जनपदे
सुप्रियागे तिलंगे । गौमे चौमे मुरेंद्रे वर तर द्रविमे उद्रीयाणे पुरेंद्रे । आद्रे
माद्रे पुरिद्रे द्रवियल कुवले कर्नि कुब्जे सुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥
चंपायां चंद्र मुख्यां गजपुर मथुरा पत्तने चोङ्कयिन्यां । कौशंब्यां कौशला
यां कनक पुरवरे देवगिर्यां सकाश्यां । नासिक्ये राजगेहे दशपुर नगरे ऋद्वले
तांमलिप्यां ॥ ७ ॥ श्री० ॥ स्वर्गे मर्त्यत रूहे गिरि शिखर इन्दे स्वर्नदी
नीरतीरे । शैलाग्रे नागलोके जलनिधि पुलने चूरुहाणां निकुंजे । ग्रामे एण्ये
वनेवा स्थल जल विषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ ८ ॥ श्री० ॥ इत्थं
श्री जैन चैत्यं स्तुति मति मनसा ऋक्तिभ्राजां प्रसिधात् । प्रोद्यत्कल्याण
हेतुः कलि मलि हरणे ये पठंते विशिष्टं । तेषां श्री तीर्थ यात्रा फल मति
मतुलं जायते मानवानां । कार्यं सिद्धिं स्तवोच्चैः प्रभवति सततां चित्त मानंद
कारी ॥ ९ ॥ इति श्री तीर्थ माला स्तुति संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री आदिजिन आरती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अपहरा करती आरती जिन आगै । हारे जिन आगेरे जिन
आगे । हारे एतो अविचल सुखना मांगे । हारे नाञ्जीनंदन पाश ॥ अप
हरा० ॥ १ ॥ ताथेई नाटक नाचती पाय ठमके । हारे दोयचरणे जांजर
जमके । हारे सोवन घूवरी घमके । हारे लेती फूदनी बाल ॥ अप०
॥ २ ॥ तालमृदंगने वांशली रुफवीणा । हारे रूना गावंती स्वरजीणा ।
हारे मधुर सुरा सुर नयणां । हारे जोती सुखसुं निहाल ॥ अप० ॥ ३ ॥
धन्य मरुदेवी मातनें प्रभुजाया । हारे तोरी कंचन वरणी काया । हारे मेंतो
पूरवपुन्ये पाया । हारे तोरो देख्यो दीदार ॥ अप० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन

परमेश्वर प्रभुप्यारो हारे प्रभु सेवक हुं बुं तारो । हारे प्रबो प्रवना दुख
ना वारो । हारे तुमे दीनदयाल ॥ अप० ॥ ५ ॥ सेवकजाणी आपणो चित्त
धरजो । हारे मोरी आपदा सगली हरजो । हारे मुनि माणक सुखीउ क
रजो । हारे जाणी पोतानुं बाल ॥ अप० ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्राद्ध दिन कृत्य (तथा) देव वंदन चाष्यमें
मंदर जाणेंकी पूजन करनेकी विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम श्रावक दो च्यार घनी रात्ररहते उठके (प्रथम) दिलमें न
वकार मंत्रका स्मरण करै ॥ में कोणहुं, क्या मेरी जातिहै, क्या मेरा कृत्य
है, क्या मेरा धर्महै (इत्यादि) धर्म जागरणासें दिलकों सावचेत करै (पीठे)
मलमूत्रकी बाधा दूर करके, अंगशुचीचूत करै ॥ सामायक, प्रतिक्रमणादि
करके, विधिसंयुक्त घरदेराशरकी पूजाकरै (पीठे) यथाशक्ती अढा वस्त्र
आचूषण पहरके, घोना, हाथी, रथ, पालखी, सिपाई, नोकर, चाई, बंधु
(इत्यादि) परिवार सहित पूजाके लायक, फल फूल प्रमुख, उत्तम, द्रव्य हाथ
में लेके । प्रव्यजीवोंकों मोक्ष मार्ग दिखाता हुआ, जिनशाशनकी प्रजाव
ना करता हुआ, जिनमंदर जावै । जिनमंदरमें प्रवेश करके १० त्रिक विधि
शाचवन करै (सो १० त्रिक लिखतेहै) (पहिला त्रिक) ३ निस्सही)
कहणेंका (जिसमें) १ निस्सही, जिनमंदरमें पैशतेही कहै (कहे पीठे)
संसार घर संबंधी कुठरी कार्य विचारणा न करै ॥ १ ॥ (दूसरी) निस्सही,
प्रदक्षिणा तीन दिये पीठे कहै । जिन मंदरमें फूटा टूटा ठीककरानेंकी
सारसंज्ञाल रक्खीथी सोजीठोमें । इहां द्रव्य पूजा करणी मोकली रही
॥ २ ॥ तीसरी निस्सही कहे पीठे, निकेवल जाव पूजा करै । पिण द्रव्य
पूजा न करै ॥ ❀ ॥ यह प्रथम निस्सही त्रिक कहा ॥ ❀ ॥ ॥

॥ ❀ ॥ (दूसरा त्रिक) ज्ञान त्रिककी आराधना करनेकों प्रचूके द
क्षिणावर्त्तसें तीन प्रदक्षिणादेवै ॥ ❀ ॥ (तीसरा त्रिक) मूल नायकजीके
बिंबकों पंचांग मिलाके, तीन बेर नमस्कार करै ॥ ३ ॥ (चौथा त्रिक) प्र
चूकी अंग १ । अग्र २ । जाव ३ ॥ त्रिविध प्रकार पूजा करै ॥ (अब
निस्सही किये पीठे । कृत्य, अकृत्य (तथा) पूजा विधि, संक्षिप्त लिखतेहैं ॥

निस्सही किये पीठे, मनोगुप्ती, वचन गुप्ती, काय गुप्ती, करके युक्त रहे । पां चो इंद्रियांको बशमें रखै । गमनां गमनमें उपयोगी रहे । गीतादिक अन्य का सुनके चित्तमें व्याकुलता न रखे । कुञ्जी देव कार्यकों ठोरुके और कार्यकी विचारणा न करे । राज कथादि संपूर्ण विकथा ठोरे । जन्म (और) कर्मके, अनुगत वचन न बोले (अर्थात्) कोईके माता पितादिक का किया थका, खोटा कार्यकों प्रगट न करे (तथा) कर्मानुगत वचन आंधेकों आंधा, गोलैकों गोला (इत्यादि वचन) नबोलै ॥ निस्सही किये पीठे, जिन मंदरमें धर्म संयुक्त, आत्म हितकारी, प्रमाणोपेत वचन बो लना चाहिये ॥ (जिसनें) मन, वचन, कायाके, खोटे व्यापारोंका निषेध अपनी आत्मासें कियाहे (उसके जावसें) निस्सही होय (और) जिसनें दूषणका त्याग न कियाहे । उसके केवल शब्द उच्चारण मात्र, द्रव्य निस्सही होय (इसवांस्ते) पूजायोग्य उत्तम वस्त्र पहरके, आठतहके उज्ज ल वस्त्रसें सुखकोश बांधे । धूपादिकसें अंग अपना सुध करे । जावसें, दूशरी निस्सही कहते, सुलगुंजरैमें प्रवेश करे । जयणा संयुक्त पूजा करे । पूजा करते हुए, शरीरमें खाज न खुणें । खेल खंखार न करे । निकेवल भगवानकी स्तवनामें चित्त रखे । प्रथम सुगंधयुक्त जल पंचामृतसें स्नात्र करावै । सु कमाल अठ्ठा कोमल सुगंध युक्त वस्त्रसें भगवानका अंगलूहे । कपूर क स्तूरी मिश्रित सुध केशर चंदनका विलेपनकरै ॥ सुभ्रवर्णा, सुभ्रगंध युक्त, जी वादि रहित, निर्दोस। गुलाब, चंपा, चंपेली, केवला, जाई, जुई, मोगरादिक पुष्पसें पूजा करे । अष्टांग धूप अग्रवत्ती खेवै ॥ मंगलदीप करे । अखंरु उज्जल अहृतासें प्रचूके सन्मुख अष्ट मंगलीक लिखै ॥ दर्पण १ । चद्रास ण २ । वर्धमान सरावसंपुट ३ । श्रीवत्स ४ । मन्वयुग ५ । कलश ६ । स्वस्तिक ७ । नंदावर्त्त ८ । (ऐसा) अष्ट मंगलकी रचना करे । पंच वर्ण फूलोंसे अष्ट मंगलीक पूजे । सुंदर कुंकम मिश्रित चंदनसें हत्थोदेवै । उत्तम नैवेद्य चढावै । अठ्ठा खाद्य फल चढावै । (इत्यादि) पूजाकीविधि, आरती पर्यंत । राय प्रशोणी, ग्याताधर्म कथा, जीवाग्निगमादि, सिद्धांतोंमें लिख्ये सुजत्र करे (पीठे) अंतरंग प्रतीसें प्रचूके सन्मुख नाटक करै ॥ (जैसें)

देवेंद्र, दानवेंद्र नारद, इनोंने (तथा) उदाई राजाकी, राणी अजावतीनें
द्रोपदीनें नाटक किया (और) रावण प्रमुख, कई जीवोंनें अष्टापदादि
ऊपर नाटक करके, तीर्थकर गोत्र उपार्जन किया (तैसें) प्रचूके सन्मुख
शंकारहित होके । उत्तम पुरुष नाटक करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अब) जल चंदन पुष्पादिकसें पूजा करै (सो) अंगपूजा
॥ १ ॥ प्रचूके सन्मुख नैवेद्य प्रमुख चढावै (सो) अग्र पूजा ॥ २ ॥ प्र
चूके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक करै (सो) ज्ञाव पूजा
॥ २ ॥ (यह द्रव्य पूजाका विचार गर्भिर्नत चोथा त्रिक कहा) ॥ ❀ ॥
(अब पांचमा त्रिक) ॥ ❀ ॥ तीन अवस्था विचारणी ॥ पिनस्थ (१) प
दस्थ (२) रूपातीत ॥ ३ ॥ इसमें पिनस्थ अवस्थाके तीन जेद ॥ जन्मा
वस्था ॥ १ ॥ राज्यावस्था ॥ २ ॥ श्रमणावस्था ॥ ३ ॥ (और) केवल अ
वस्थाको विचार करणा (सो) पदस्थ अवस्था ॥ निरंजनाकार (सो)
सिधावस्था । तिसकुं रूपातीत अवस्था कहतेहै ॥ ❀ ॥ (अबठठात्रिक)
तीन दिशा गोरुके प्रचूके सामनें निजर रखै । उर्ध्व १ ॥ अध २ ॥ तिर
गी ३ ॥ दहणी । वांइ । पिठानी । निजर नही करै ॥ ❀ ॥ (अब सातमा
त्रिक) तीन बेर धरती प्रमार्जकै । उस ठिकाणें चैत्यवंदन करै ॥ ❀ ॥
(अब आठमा त्रिक) ॥ ❀ ॥ वर्णादिक तीन संपदाका ॥ हरफशुद्ध उ
च्चारण करै (सो) वर्ण शुद्धि ॥ १ ॥ हरफोंके अर्थपर आलंबन रखै
(सो) अर्थशुद्धि २ ॥ आलंबन एक जिन प्रतिमाका रखै (सो)
मन शुद्धि ॥ ३ ॥ ❀ ॥ (अब नवमात्रिक) ॥ ❀ ॥ तीन मुद्रा
करनी ॥ जोग मुद्रा १ ॥ जिनमुद्रा २ ॥ मुक्ताशुक्ति मुद्रा ३ ॥ (इसमें)
जोग मुद्रा किसकुं कहते है ॥ पद्म कोशाकारै । दोनुं हाथ परस्पर अंगु
ली मिलानी । एजोग मुद्रायें सक्रस्तव कहिये १ ॥ काउसग्ग मुद्रा (सो)
जिन मुद्रा २ ॥ (और) दोसीपका जोना तिस आकार हाथ रखना । (सो)
मुक्ता शुक्तिमुद्रा ३ ॥ इस मुद्रासें प्रणिधान (जय वीयराय) इत्यादि करै
(अब दशमात्रिक) ॥ ❀ ॥ प्रणिधान तीन ॥ जिन बंदन प्रणिधान १ ॥
मुनि वंदन प्रणिधान २ । प्रार्थना प्रणिधान ३ ॥ इसमें (जो) जावंति चे

इयाई (इत्यादि) इहसंतो तत्थ संताई (तक) जिन वंदन प्रणिधान ? ॥
 जावति केवि साहु (इत्यादि) तिविहेण तिदंरु विरियाणं (इहां तक) सु
 नि वंदन प्रणिधान २ ॥ जय वीयरायसें (लेके) आज्ञवम खंमा तक । प्रा
 र्थना रूप प्रणिधान ३ ॥ ❀ ॥ (ऐसैं दशत्रिकका पहला द्वार कहा) ॥❀॥
 (अब पांच अजिगमन साचवणेंका दूसरा द्वार कहतेहैं) ॥ ❀ ॥ सचित्त
 द्रव्य कुशमादिक अपनेपास होय, उसकुं अलग रख देना ? ॥ (और)
 राज चिन्ह, मुगट, ढत्र, खमूग, चामर, पाडुका, अचित्त वस्तू गोमना । आ
 चूषण प्रमुख पहस्था रखना २ । मन एकाग्र करना ३ ॥ एक पट्ट उत्तरासंग
 करना ४ ॥ जिन विंव देखतेही (नमो जुवण वंधुणो) ऐसैं नमस्कार करना
 ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ए दूसरा द्वार कहा ॥ ❀ ॥ (अब तीसरा द्वार दो दिशीका)
 पुरष दहणी दिशा बैठा । जगवंतकों वांदे ॥ स्त्री वांड दिश बैठके जगवंत
 को वांदे ॥ ❀ ॥ (अब चौथा द्वार तीन अजिग्रह) ॥ ❀ ॥ अजिग्रह देव
 वांदणामें कहाहे ॥ (जघन्य) नव हाथ दूर बैठके देव वांदे ? ॥ (मध्यम)
 नव हाथसें उपरांत बैठके देव वांदे २ ॥ (उत्कृष्ट) ६० हाथ दूर बैठके
 देव वांदे ३ ॥ (अब पांचमा द्वार चैत्यवंदनका) ॥ ❀ ॥ (सो) जघन्य १॥
 मध्यम २ ॥ उत्कृष्ट ३ ॥ तीन जेद हे (तिहां) एमो अरिहंताणं (इत्या
 दिक कहके) वा । एक दोय गाथाका नमस्कार कहके । शक्रस्तव कहना
 (ए जघन्य चैत्य वंदन ?) जिस देव वंदनमें स्थापनार्हत स्तवदंरुक ।
 नमोत्थुणंसें (लेके) अरिहंत चेइयाणं (इत्यादिक संपूर्ण कही) एक
 स्तुति कहै (सो) ॥ मध्यम चैत्यवंदन (तथा) कोई आचार्य कहै ॥ पांच
 दंरुक सहित । थूई गाथा (४) कहै (सो) मध्यम चैत्यवंदन कहिये ॥ (तथा)
 विधिपूर्वक शक्रस्तवादि पांच दंरुक । जय वीयराय पर्यंत । आठे थुई ए
 देव वांदे । (सो) उत्कृष्ट चैत्य वंदन कहिये ॥ ❀ ॥ (अब षठा द्वार
 पंचांग प्रणिपात करै । दो जानु । दो हाथ (और) मस्तक (ए) पांच
 अंग मिलायके जमीनमें लगावै ॥ ❀ ॥ (अब सातमा द्वार) ॥ ❀ ॥ जय
 न्यै एक गाथासें लेकर उत्कृष्ट एक सो आठ श्लोक (तथा) काव्यसें प्रचू
 की स्तवना करै ॥ ❀ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मोटी पंचतीर्थ आरती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पहली रे आरती प्रथम जिणंदा । शत्रुंजय मंरुण रुषन्न जिणं
 दा ॥ जय जय आरती आदिजिणंदकी ॥ दूसरी आरती मरुदेवी नंदा ।
 जुगला धरम निवार करंदा ॥ जय० ॥ १ ॥ तीशरी आरती त्रिचुवन मो
 हे । रत्न सिंघासन मारा प्रनुजीनें सोहे ॥ जय० ॥ चौथी आरति नित्य
 नवी पूजा । देव रुषन्न देव अवर न दूजा ॥ जय० ॥ २ ॥ पांचमि आर
 ति प्रनुजीनें प्रावे । प्रनुजीना गुण सेवक इम गावे ॥ ज० ॥ ३ ॥ ❀ ॥
 आरती कीजें प्रनु शांति जिणंदकी । मृगलंठनकी में जातं बलिहारी ।
 जय जय आरती शांति तुमारी । विश्वसेन अचिराजीको नंदा । शांति
 जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ जय० ॥ ४ ॥ आरति कीजें प्रनु नेम जिणंद
 की । शंख लंठनकी में जातं बलिहारी ॥ आ० ॥ समुद्रविजय शिव
 देवीको नंदा । नेमि जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ॥ ५ ॥ आरति
 कीजै प्रनु पाश जिणंदकी । फणंदलंठनकी में जातं बलि हारी ॥ आ० ॥
 अश्वसेन वामा देवीको नंदा । पाश जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ०
 ॥ ६ ॥ आरति कीजै महावीर जिणंदकी । सिंह लंठनकी में जातं ब
 लिहारी ॥ आ० ॥ शिंघारथ त्रिशलाको नंदा । वीरजिणंद मुख पूनम
 चंदा ॥ आ० ॥ ७ ॥ आरति कीजें प्रनु चौवीश जिणंदकी । चौवीश
 जिणंदकी में जातं बलिहारी । चरणकमल नित सेवत इंदा । चौवीश जिण
 द मुख पूनम चंदा ॥ आ० ॥ ८ ॥ कर जोमी सेवक इम बोले । नदि
 कोइ माहरा प्रनुजीनें तोले ॥ आ० ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ।



